अमेरिका की संस्कृति

लेखक

ब्रैडफोर्ड स्मिथ

अनुवादक

कृष्णचन्द्र

यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड

रामनगर, नई दिल्ली ।

प्रकाशक का निवेदन

संयुक्त राज्य अमेरिका की भौतिक उन्नति को देखकर आम तौर पर यह समझा जाता है कि अमेरिकन लोग भौतिकवादी हैं और नैतिक मूल्यों में उनका अधिक विश्वास नहीं है। लेकिन वस्तुस्थिति यह नहीं है। अमेरिका ने आर्थिक और भौतिक क्षेत्रों में उन्नति कर अपनी जनता के जीवन-स्तर को बहुत ऊँचा उठा लिया है जिसका परिणाम यह है कि वहाँ अधिकांश संख्या मध्यवित्त वर्ग की है। भौतिकवादी दृष्टिकोण अमेरिकन लोगों का विशिष्ट लक्षण नहीं है, बल्कि वह मध्य-वित्त वर्ग का लक्षण है, चाहे वह किसी भी देश में हो। यही कारण है कि इस मध्यवित्त वर्ग की बहुसंख्या की वजह से ही लोग भूल से अमेरिकन संस्कृति को भौतिकवादी संस्कृति समझ लेते हैं।

अमेरिकन संस्कृति में छः आधारभूत तत्त्व हैं—व्यक्तिवादिता, स्वैच्छिक संगठन, संघवाद, प्रति-सन्तुलन, विभिन्न तत्त्वों और वर्गों की पारस्परिक क्रिया-अनुक्रिया और उसके द्वारा अन्तिम संश्लेषण और ऐक्य। यह छः-सूत्री प्रक्रिया अमेरिका के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन में हर स्तर पर नजर आती है और यह अमेरिका के इतिहास की देन है।

इस प्रक्रिया को भली भाँति समझ लेने के बाद इस भ्रम का सहज में निराकरण हो सकता है कि अमेरिकन संस्कृति भौतिकवादी संस्कृति है।

अमेरिका ने जिस जीवन-पद्धति का बीजारोपण किया है और जिस उन्मुक्त समाज की नींव रखी है उसमें सक्रियता और गतिशीलता है, वर्तमान अन्याय के प्रति असहिष्णुता और भविष्य के प्रति आशावादिता है और वह आध्यात्मिक, मानसिक, शारीरिक और भौतिक शक्तियों से अनुप्राणित है।

अमेरिकन संस्कृति को समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि उसका स्वर भावात्मक है, अभावात्मक नहीं; प्रेमपरक है, घृणापरक नहीं। वह विनाश करना नहीं चाहती, निर्माण करना चाहती है। वह एक वर्ग को दूसरे वर्ग से लड़ाना नहीं चाहती, वर्ग-भेद को ही खत्म कर देना चाहती है। अमेरिकन इतिहास की एक विशिष्टता यह है कि उसमें हमेशा पड़ोसी के साथ अच्छे सम्बन्धों और सहयोग का उद्योग किया गया है। इससे अमेरिका मधुर पड़ोसीचारे का अभ्यस्त हो गया है और अब वह एक ऐसी स्थिति में पहुँच गया है, जहाँ सारा विश्व ही उसका पड़ोसी है।

लेखक ने अमेरिकन संस्कृति के इस रूप को इस पुस्तक में विभिन्न पहलुओं से समझाने का प्रयत्न किया है और इसमें उसे सफलता भी प्राप्त हुई है। अमेरिका की संस्कृति की विशद जानकारी देने के साथ-साथ यह पुस्तक उसके सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्तियों का निराकरण करने में सहायता देगी, ऐसी आशा है।

विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ
१.	संस्कृति का स्वरूप	१
२.	देश-दर्शन	१२
३.	अनेक राष्ट्रों का राष्ट्र	२५
४.	पारिवारिक जीवन	४६
५.	अमेरिकन चरित्र	७६
६.	सामुदायिक जीवन	१०६
७.	शिक्षा	१३७
८.	राजनीति	१७१
९.	प्राचुर्यमय जीवन	२००
१०.	कलाएँ	२४७
११.	सामूहिक प्रचार-माध्यम	२८४
१२.	मनोरंजन	३०९
१३.	विज्ञान और मानव	३२१
१४.	हम किधर जा रहे हैं ?	३३९
१५.	विश्व की एकता और संयुक्त राज्य	३६१

संस्कृति का स्वरूप

हरेक सभ्यता एक परीक्षण है और संघर्ष में विजयी होकर जीवित रहना ही उसकी सफलता की कसौटी है। संयुक्त राज्य अमेरिका की सभ्यता और अन्य अधिकतर सभ्यताओं में यह अन्तर है कि वह प्रारम्भ से ही एक सोच-समझ कर किया गया चेतन परीक्षण रही है। प्लाइमाउथ और बोस्टन को प्रारम्भ में छोटे-छोटे धार्मिक कस्बों के रूप में बसाना, महाद्वीपीय कांग्रेस की स्थापना, संविधान द्वारा संस्थापित संघीय प्रशासन, जैकसन द्वारा प्रतिपादित लोकतन्त्र, टेडी रूज़वेल्ट का यथायोग्य व्यवहार, फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट की नई आर्थिक नीति, मार्शल योजना और ट्रूमेन सिद्धान्त—ये सभी चीजें अच्छे परिणामों और लाभों की दृष्टि से किये गये चेतन परीक्षण ही थीं।

यूरोप के लोगों को अमेरिका में आकर जिन नई परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, उन्होंने उन्हें नये-नये प्रयोग और परीक्षण करने के लिए मजबूर किया। प्रारम्भिक तीर्थयात्रियों ने अमेरिका की भूमि पर कृषि का परीक्षण किया, किन्तु वह सफल तभी हुआ जब उन्होंने अपने मूल निवासी इंडियन मित्र स्क्वाँटो से यह सीख लिया कि उन्हें उसमें मछली की खाद देनी चाहिए और जब उन्होंने हर व्यक्ति को यह अनुमति दे दी कि वह सामुदायिक भंडार के बजाय अपने ही लिए उसका उत्पादन करे। विलियम ब्रैडफोर्ड ने प्लाइमाउथ में अपने प्रारम्भिक वर्षों का जो रोचक वर्णन किया है उसमें उन्होंने बताया है कि किस प्रकार उन्हें और उनके मित्रों को वन्य जीवन के तरीकों को सीखते हुए एक के बाद एक असफलताओं का सामना करना पड़ा। अमेरिका में प्रारम्भ में आकर बसे अंग्रेजों

संस्कृति का स्वरूप

हरेक सभ्यता एक परीक्षण है और संघर्ष में विजयी होकर जीवित रहना ही उसकी सफलता की कसौटी है। संयुक्त राज्य अमेरिका की सभ्यता और अन्य अधिकतर सभ्यताओं में यह अन्तर है कि वह प्रारम्भ से ही एक सोच-समझ कर किया गया चेतन परीक्षण रही है। प्लाइमाउथ और बोस्टन को प्रारम्भ में छोटे-छोटे धार्मिक कस्बों के रूप में बसाना, महाद्वीपीय कांग्रेस की स्थापना, संविधान द्वारा संस्थापित संघीय प्रशासन, जैकसन द्वारा प्रतिपादित लोकतन्त्र, टेडी रूज़वेल्ट का यथायोग्य व्यवहार, फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट की नई आर्थिक नीति, मार्शल योजना और ट्रूमेन सिद्धान्त—ये सभी चीजें अच्छे परिणामों और लाभों की दृष्टि से किये गये चेतन परीक्षण ही थीं।

यूरोप के लोगों को अमेरिका में आकर जिन नई परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, उन्होंने उन्हें नये-नये प्रयोग और परीक्षण करने के लिए मजबूर किया। प्रारम्भिक तीर्थयात्रियों ने अमेरिका की भूमि पर कृषि का परीक्षण किया, किन्तु वह सफल तभी हुआ जब उन्होंने अपने मूल निवासी इंडियन मित्र स्क्वांटो से यह सीख लिया कि उन्हें उसमें मछली की खाद देनी चाहिए और जब उन्होंने हर व्यक्ति को यह अनुमति दे दी कि वह सामुदायिक भंडार के बजाय अपने ही लिए उसका उत्पादन करे। विलियम ब्रैडफोर्ड ने प्लाइमाउथ में अपने प्रारम्भिक वर्षों का जो रोचक वर्णन किया है उसमें उन्होंने बताया है कि किस प्रकार उन्हें और उनके मित्रों को वन्य जीवन के तरीकों को सीखते हुए एक के बाद एक असफलताओं का सामना करना पड़ा। अमेरिका में प्रारम्भ में आकर बसे अंग्रेजों

की कितनी ही बस्तियाँ इन परीक्षणों में नष्ट हो गईं या उन्हें बिल्कुल छोड़ देना पड़ा, और तब कहीं जेम्सटाउन और प्लाइमाउथ के लोग संघर्ष में जीवित रहना सीख सके।

इस प्रकार अमेरिकनों को प्रारम्भ से ही नये विचारों को स्वीकार करने, उन्हें आजमाने, असफल होने और सफलता के लिए पुनः प्रयत्न करने की शिक्षा लेनी पड़ी।

लिंकन ने अपने सर्वोत्तम भाषण में अमेरिकन आदर्श को सार रूप में बताते हुए उसे एक ऐसा परीक्षण कहा था, "जिसका प्रयोजन सब मनुष्यों के जन्मतः समान होने के सिद्धान्त को सिद्ध करना है।" उसके इन शब्दों ने हरेक अमेरिकन के हृदय को झंकृत कर दिया था। उसने कहा था कि "हमारा गृह-युद्ध यह सिद्ध करने के लिए एक कसौटी है कि क्या इस आदर्श को साकार करने के लिए स्थापित किया गया राष्ट्र चिरकाल तक जीवित रह सकता है।"

फिर भी अमेरिकनों को आम तौर पर अपनी निज की संस्कृति की बहुत कम प्रतीति है और हमारे विदेशी मित्रों को तो उसकी और भी कम समझ है। शायद वे जानते तो बहुत कुछ हैं, किन्तु समझते कम हैं। हमारे जीवन की ऊपरी सतह की अभिव्यक्तियों को लोग खूब जानते हैं। उदाहरण के लिए भौतिक वस्तुओं की विविधता और बाहुल्य को, हमारे औद्योगिक और सैनिक संस्थानों की शक्ति को, व्यापार और निजी व्यवसाय को हमारे देश में दिये जाने वाले महत्त्व को, हमारे नारी समाज की दिखावे की प्रवृत्ति को और हमारे बच्चों के सबल शारीरिक गठन को लोग भली भाँति जानते और स्वीकार करते हैं। किन्तु वे इन सब के पीछे विद्यमान भावना को नहीं जानते। अमेरिकन लोगों के व्यवहार और अमेरिका की रीति-नीति का अध्ययन करने वाले लोग अक्सर ऊपर की सतह पर ही रुक जाते हैं और उसकी प्रशंसा या निन्दा करने लगते हैं—वे उस

ऐतिहासिक या सांस्कृतिक स्वर-मालिका को नहीं जानते, जिस पर वह रागिनी रची गई है।

दूसरी कठिनाई यह है कि किसी एक अमेरिकन व्यक्ति में जो भी प्रवृत्तियाँ या आदतें वे देखते हैं, उन सभी को वे "अमेरिकन" प्रवृत्ति या स्वभाव कहने लगते हैं। उदाहरण के लिए, यह कहा जाता है कि अमेरिकन लोग भौतिकवादी होते हैं, किन्तु अधिकतर अमेरिकन लोग क्योंकि मध्यम वर्ग के हैं, इसलिए यह सम्भव है कि भौतिकवादी होना केवल अमेरिकन लोगों की स्वभावगत विशेषता न हो, बल्कि सभी जगह के मध्यम वर्ग में यह प्रवृत्ति पायी जाती हो। विदेशी लोग जिस अमेरिकन को एक आक्रामक प्रकृति के, शोरो-गुल करने वाले, शुद्ध आचारवादी, सतर्क और आवश्यकता से अधिक खाने-पीने वाले व्यक्ति के रूप में देखते हैं, उसमें ये सब गुण अमेरिकन होने के कारण ही हों, यह आवश्यक नहीं है। यह सम्भव है कि उसमें ये गुण उसके धन्धे, पारिवारिक पृष्ठभूमि, धर्म, आयु या उसकी दौलत का परिणाम हों। ऐसी दशा में जहां भी इस प्रकार की पेशागत या धर्मगत पृष्ठभूमि होगी या इस तरह की आर्थिक समृद्धि होगी, वहीं इस प्रकार के गुण पाये जाएँगे।

फिर भी कुछ आदतें, प्रवृत्तियाँ, प्रेरणाएँ, भावनाएँ, महत्त्वाकांक्षाएँ, विश्वास और निष्ठाएँ ऐसी हैं जो अमेरिकनों की चरित्रगत विशेषता हैं और इसी प्रकार कुछ ऐसी संस्थाएँ, समूह, संगठन और कार्य-कलाप भी हैं जो अमेरिकन समाज की विशेषता हैं। इन सबको समझने के लिए संस्कृति के अर्थ को समझने की आवश्यकता है।

संस्कृति क्या है ?

संस्कृति का अर्थ है किसी समाज की जीवन-पद्धति, जिसमें उसकी शिल्प-कला, विश्वास और मान्यताएँ, संचित ज्ञान और वे मूल्य भी आ जाते हैं, जिनके लिये उस समाज के सदस्य जीते हैं। इसके अलावा उसकी विकसित कलाएँ, पारिवारिक जीवन, सन्तान-पालन, विवाह

और प्रणय की प्रथा, शिक्षा, व्यवसाय और शासन—अर्थात् उसकी शेप समूची विरासत भी जो उसके सदस्यों को उपलब्ध है या हो सकती है, उसके अन्तर्गत आ जाती है।

इस प्रकार किसी संस्कृति की पूरी कल्पना मन में वनाने के लिए हमें सारे समाज को देखना पड़ता है। इससे यह वात स्पष्ट हो जाती है कि हम किसी समुदाय के सामुदायिक व्यवहार को उसकी संस्कृति के ताने-वाने के अंग के रूप में ही देख सकते हैं। अव तक संयुक्त राज्य अमेरिका के वारे में जो कुछ लिखा गया है उसका वहुत-सा अंश इस दृष्टि से अपर्याप्त है, क्योंकि उसमें "अमेरिकन" लोगों की कुछ खास प्रवृत्तियों का पृथक् रूप में वर्णन किया गया है और समूची अमेरिकन संस्कृति में उनका क्या और कहाँ स्थान है, यह वताये विना उन पर नैतिक दृष्टि से फैसले देने की चेष्टा की गई है। किसी देश के लोगों को "भौतिकवादी", या "धन का प्रेमी" या "अत्यधिक लैंगिक प्रवृत्ति वाला" या "अत्यधिक मिलनसार" कहना उनकी वास्तविक पृष्ठभूमि को समझे विना उनके सम्वन्ध में नैतिक निर्णय देना है।

किसी समाज के व्यक्तियों का वर्गीकरण और संगठन अनेक प्रकार से किया जाता है। उसके हर सदस्य का आयु और लिंग की दृष्टि से, सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से और विशिष्ट पेशे की दृष्टि से एक खास स्थान होता है। इसी तरह अपने परिवार में और शिक्षा संस्था, विरादरी, गुप्त संगठन, खेल, क्लव और ट्रस्टी मण्डल आदि विविध संस्थानों और संघों में भी उसकी अपनी जगह होती है। लेकिन इन विभिन्नताओं और वर्गीकरणों के वावजूद उस समाज के सभी सदस्यों में कुछ सर्व-सामान्य व्यवहार होते हैं। लेकिन इस सामान्य व्यवहार के साथ-साथ उनमें कुछ ऐसी अनुक्रियाएँ भी होती हैं, जो उस समाज के भीतर किसी विशिष्ट सामाजिक समुदाय की विशेपता होती हैं।

संस्कृति व्यक्तित्व का एक निश्चित स्वरूप वनाने में सहायक होती है। साथ ही वह अपनी सीमा के भीतर विविध प्रकार के व्यक्तित्वों

का निर्माण भी करती है। लेकिन इस व्यापक विविधता के बीच म भी एक राष्ट्रीय चरित्र को स्पष्ट रूप में पहचाना जा सकता है, क्योंकि उस संस्कृति के भीतर हर व्यक्ति एक सर्व-सामान्य विरासत से प्रभावित होता है। इस प्रकार किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय चरित्र या स्वभाव को खोजना उस समय तो सर्वथा उचित होता है, जब हम यह मान लेते हैं कि यह चरित्र या स्वभाव उसकी संस्कृति का परिणाम होता है, किन्तु जब हम उसे किसी विशिष्ट रक्त या जाति आदि का परिणाम मान कर चलते हैं, तब हम राष्ट्रीय चरित्र की सही खोज नहीं कर सकते।

संयुक्त राज्य में अमेरिकन माता-पिता से उत्पन्न बच्चा यदि शैशव में ही फ्रांस ले जाया जाए और वहाँ किसी फ्रेंच परिवार में पाला-पोसा जाए तो टैकनिकल दृष्टि से उसकी राष्ट्रीयता चाहे कुछ भी हो, वह बड़ा होकर फ्रेंच ही होगा। इसी तरह यदि एक चीनी शिशु एक अमेरिकन परिवार में पाला-पोसा जाए तो वह अमेरिकन की भाँति ही सोचेगा, बोलेगा और काम करेगा। वह देखने में भी अमेरिकन ही लगेगा, क्योंकि आहार और जलवायु उसे खुश्क और कठोर बना देंगे और उसके चेहरे की बाहरी अभिव्यक्ति भी उस परिवार के जैसी हो जायेगी जिसमें उसका पालन-पोषण हुआ होगा। यद्यपि उसका ढाँचा और त्वचा का रंग उसके माँ-बाप की भाँति मंगोल जाति के ढाँचे और रंग के सदृश ही रहेगा, तो भी उसके रवैये, उसकी आदतें और आकांक्षाएँ उसके पालनकर्ता परिवार के ही समान होंगी।

इस प्रकार एक राष्ट्र के लोगों को समझने के लिए हमें उनकी भौतिक परिस्थितियों (भौगोलिक स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक साधन, खाद्य पदार्थों की उपलब्धि, शक्ति के स्रोत और औद्योगिक विकास), मानवीय प्रभावों (माता-पिता, नाते-रिश्तेदार, मित्र, पड़ोसी, सहकर्मी, अध्यापक, पुलिस और अन्य अधिकारी), उनकी संस्थाओं (परिवार, स्कूल, चर्च, अमीर-उमराव, सरकार और व्यवसाय), उनकी कलात्मक

अभिव्यक्तियों, विचार-धारा (राष्ट्रीय या स्थानीय रीति-रिवाज, संविधान, धर्म, सामूहिक निष्ठा और पूर्वजों के पूजा सम्बन्धी विचार) और तीन बुनियादी आवश्यकताओं—आत्म-रक्षा, आत्म-प्रजनन और आत्माभिव्यक्ति—की प्राप्ति के उनके तरीकों पर विचार करना चाहिए।

हरेक संस्कृति एक पेचीदा ताना-बाना है, जिसका हरेक भाग दूसरे के साथ गुथ कर बुना हुआ है। हम अपने मन में अर्थतन्त्र और प्रशासन या शिक्षा और मनोरंजन आदि में जो भेद करते हैं, वह वास्तविक उतना नहीं होता, जितना कि ऊपरी होता है। हम अपनी अर्थ-व्यवस्था की तब तक व्याख्या नहीं कर सकते, जब तक कि यह न बताएँ कि टैक्स लगाने, अन्तर्राज्यीय व्यापार पर नियन्त्रण करने और श्रमिक विवादों को निबटाने आदि के कामों में सरकार क्या भाग अदा करती है। किन्तु हमारे मन की भी अपनी सीमाएँ और मर्यादाएँ हैं, इसलिए हमें मानवीय ताने-बाने को, संस्कृति के ताने-बाने को तोड़कर अलग-अलग वस्तुओं में विभाजित कर देना पड़ता है। तब हम उसे फिर एक समय ताने-बाने की बुनती के रूप में देखने का प्रयत्न कर सकते हैं।

संस्कृतियों का संकट

आज अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान इतना द्रुत और आसान हो गया है कि हम अन्य संस्कृतियों के साथ पहले की अपेक्षा अधिक सम्पर्क में आ सकते हैं। पन्द्रह लाख से अधिक अमेरिकन प्रतिवर्ष यूरोप जाते हैं। अपने देश से बाहर निकले बिना भी हम यह सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं, क्योंकि आज पचास हजार छात्र और विदेशी विशेषज्ञ हम लोगों के बीच में हैं।

संस्कृतियों का यह आदान-प्रदान उन्हें उद्दीपित और समृद्ध करता है। वास्तव में इस आदान-प्रदान और संकर से ही सभ्यता ने तरक्की की है। ग्रीस ने पूर्व के प्राचीन साम्राज्यों से जो कुछ सीखा, उसने उनकी संस्कृति को अधिक उर्वर बनाया और पोषण प्रदान किया। रोम ग्रीक संस्कृति के सम्पर्क में आने से ही अपनी बर्बरतापूर्ण सभ्यता

से ऊपर उठ सका। उत्तरी यूरोप ने भी रोमन संस्कृति के सम्पर्क पर ही अपनी सभ्यता का भवन खड़ा किया। अन्धकारमय युगों के बाद इस्लाम के सम्पर्क और विस्तृत प्राचीन साहित्य के पुनरध्ययन ने समूचे यूरोप में एक नयी संस्कृति को पुष्पित और पल्लवित किया। संयुक्त राज्य को यहूदी-ग्रीक-रोमन-यूरोपियन संस्कृति की ही विरासत नहीं मिली, बल्कि संसार के सभी भागों—अफ्रीका, एशिया, स्पेनिश अमेरिका और मूल-निवासी इंडियनों की संस्कृतियों ने भी उसे प्रभावित किया।

हमारे भोजन में जर्मनी, मैक्सिको, जापान और इटली, सभी जगह के भोज्य पदार्थ सम्मिलित हैं। इण्डियनों ने हमें मक्का और स्क्वैश (एक प्रकार का कद्दू) पैदा करना और सकोटैश (मक्का और सेम का बना एक खाद्य पदार्थ) खाना सिखाया। हमारे सारे देश में चीनी भोजनालयों का कारोबार खूब चल रहा है और सभी बड़ी दुकानों पर सोयाबीन की चटनी, सेवइयाँ और चोमीन आदि चीनी खाद्य पदार्थ बिकते हैं। यह हो सकता है कि ये वस्तुएँ अपने शुद्ध मूल रूप में न हों और अमेरिकनों ने उनमें कुछ परिष्कार कर लिया हो, क्योंकि यह परिवर्तन और परिष्कार संस्कृतियों के सम्पर्क और मिश्रण का अनिवार्य परिणाम है।

हमने अपना अधिकतर संगीत इटली और जर्मनी से, चित्रकला फ्रांस से, न्याय की धाराएं इंग्लैण्ड से और अपना लोक-संगीत अफ्रीकी स्वर-लहरियों से लिया है।

लेकिन संस्कृतियों का यह संकर जहाँ उन्हें समृद्ध बनाता है, वहाँ उसमें कुछ खतरे भी हैं। सांस्कृतिक सम्मिश्रण से कभी-कभी संकेत और अभिव्यक्तियों में गड़बड़ी हो जाती है। उदाहरण के लिए भारत में जाकर हम जब बातचीत में अपना सिर दायें-बायें हिलाते हैं तो उसका अर्थ 'नहीं' समझा जाता है, जब कि वास्तव में हमारा अभिप्राय उससे 'हां' होता है। इसी तरह जब किसी जापानी से पूछा जाता

कि है 'क्या तुम नहीं गये ?' और वह उसका उत्तर 'हाँ' देता है तब उसका अभिप्राय वास्तव में 'नहीं' होता है।

संकेतों की यह गड़बड़ी उस समय और भी गम्भीर हो जाती है, जब हम भूल से यह समझ लेते हैं कि उन संकेतों से हमारे प्रति असौजन्य प्रकट किया गया है या हमें धोखा दिया गया है।

जापान में ऐसी कोई भी बात कहना असभ्यता और अविनय समझा जाता है जो किसी को पीड़ा या दुःख पहुँचाने वाली हो। लेकिन सभ्यता और दूसरे का खयाल रखने की यह कोमल और सूक्ष्म भावना स्पष्टवादी अमेरिकनों को अक्सर बेईमानी और कपट प्रतीत होती है।

जर्मन लोग उच्च पद और उच्च अधिकारी का सम्मान करने के लिए जिस आदर और नम्रता का प्रदर्शन करते हैं, वह अमेरिकनों को बहुत अजीब और बेढंगी प्रतीत होती है, क्योंकि वे हरेक को ही समान दृष्टि से देखने का प्रयत्न करते हैं और ऐसा दिखाने की चेष्टा करते हैं कि कोई ऊँचा-नीचा दर्जा नहीं है। अमेरिकनों के इस व्यवहार से ऐसा लगता है, मानों उनमें गम्भीरता बिल्कुल नहीं है, इसलिए उससे एक चिढ़ भी पैदा होती है।

सांकेतिक अभिव्यक्तियों की यह गड़बड़ होने के बाद दो भाषाओं के मिश्रण से शब्दों के अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है और उसके बाद यदि दो विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के लोगों में तलवारें खिंच जाएँ और एक तलवार दूसरी तलवार से आ मिले तो भी कोई आश्चर्य नहीं। इसलिए आज जिस अन्तर्राष्ट्रीय संसार में हम रहे हैं, उसमें यह पहले हमेशा से अधिक महत्त्वपूर्ण है कि हम इन संकेतों के अर्थ को ठीक-ठीक समझें। अन्यथा विदेश यात्रा की जो बाढ़ आई हुई है वह मित्रता से कहीं अधिक दुश्मनी पैदा करेगी।

विदेश में रहना या यात्रा करना बड़ा नाजुक काम है। जिन लोगों के पास समझने-बूझने और सौहार्द स्थापित करने के साधनों का अभाव है, उनकी खुशी अनजान स्थानों पर जाकर बहुत जल्दी गायब हो

जाती है और वे बहुत चिड़चिड़े हो उठते हैं और आलोचना करने लगते हैं। अमेरिकन लोग इस दोष का एक बड़ा उदाहरण हैं और उनके बारे में विदेशों में अक्सर यह कहा जाता है कि वे अमेरिकन ढंग का भोजन, बिस्तर और गाड़ियाँ न मिलने की शिकायत करते रहते हैं। लेकिन यह बात नहीं है। अगर अमेरिकन लोग अपने देश और अन्य देशों के बीच भिन्नता और अन्य देशों की विशिष्टता को देखने के लिए बाहर नहीं जाते तो फिर और किस लिए जाते हैं ?

लेकिन विदेशों में जाकर आलोचना और शिकायत करने वाले ये अमेरिकन लोग अपने देश में किसी भी प्रकार की आलोचना को सुनना नहीं चाहते। इसीलिए अपने देश में आने वाले विदेशियों को वे प्यार करते हैं, उनका आतिथ्य-सत्कार करते हैं और उन्हें अमेरिकन जीवन के सौन्दर्य और सुख-सुविधाओं का अनुभव कराते हैं। लेकिन वे किसी भी तरह की आलोचना पसन्द नहीं करते। अमेरिका में जाकर जब कोई व्यक्ति कोई आलोचना करता है तो हमेशा लोग यही कहते हैं कि "तब ये आलोचक लोग जहाँ से आये हैं, वहीं लौट क्यों नहीं जाते ?"

दो विभिन्न संस्कृतियों के लोगों में एक दूसरे को समझ सकने की क्षमता के इस अभाव को देख कर लगता है कि लोगों के विदेश यात्रा करने का एक कारण शायद यह है कि वे विदेशों में जाकर अपने मन को यह समझाने का यत्न करते हैं कि अपना देश ही सबसे अच्छा है। इस तरह नये परिवेश और नई परिस्थितियों की आलोचना करना यात्रा का एक अनिवार्य अंग है, बल्कि उसका अधिक शिक्षाप्रद अंग है।

विदेशों में जाकर वहां की विभिन्नताओं की आलोचना करने का एक कारण शायद यह भी है कि आदमी को घर की याद सताती है, उसे लगता है कि अपने देश के, अपने घर के, सुरक्षित और निरापद आश्रय से टूट कर वह दूर जा पड़ा है और उसे यह भय होता है कि कहीं वहाँ वह असफल न हो जाए। यह आलोचना यात्री की आन्तरिक अनुभूतियों को

नई परिस्थितियों और नये परिवेश पर प्रक्षिप्त करती है। जब को भारतीय अमेरिका में आकर कहता है 'कि अमेरिकन भोजन बेस्वा और बेलज्जत है' तो उसका वास्तविक अभिप्राय यह होता है : "मैं भारतीय भोजन पसन्द करता हूँ। इसके अलावा, वेटरैस का व्यवहार सम्मानपूर्ण नहीं है, न्यूयार्क के लोग अंग्रेजी नहीं समझ सकते और अगर वे मेरी अच्छे लहज़े में बोली गई अंग्रेजी को भी आसानी से नहीं समझ सकते, तब जिस विश्वविद्यालय में मैं जा रहा हूँ वहाँ क्या मैं अच्छी छाप डाल सकूँगा और क्या मैं अच्छे अंकों से परीक्षा पास कर सकूँगा ?"

जिस तरह फ्रॉयड ने लोगों को यह समझा कर कि वे अपने आप को और दूसरों को व्यक्ति के रूप में समझें, भय और दुःख से मुक्त किया, उसी तरह संस्कृति के स्वरूप की सही अवधारणा भी लोगों को यह समझने में सहायता देती है कि जो भिन्नताएं उन्हें सांस्कृतिक समूहों में विभक्त करती हैं वे उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, जितनी कि उनके भीतर अन्तर्निहित मानवता, जो उन सबको मिलाती और एक करती है। संस्कृति के स्वरूप को समझकर यदि हम इन भेदों और असमानताओं का अध्ययन करें तो संसार में एक राष्ट्र के लोग दूसरे राष्ट्र में अधिक सौहार्द से रह सकेंगे और लोग आज की अपेक्षा कहीं अधिक संख्या में और अधिक बार दूर-दूर के स्थानों की यात्रा करने लगेंगे।

किसी राष्ट्र का जीवन उसके इतिहास, भूगोल, जलवायु, भाषा, संस्थाओं और रीति-रिवाजों से भी अधिक होता है। कुछ हद तक वह एक रहस्य होता है, क्योंकि सामाजिक विज्ञानों ने जो कुछ उन्नति की है, उसके बावजूद कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिनका उत्तर वे नहीं दे सकते। उदाहरण के लिए ऐसा क्यों होता है कि एक राष्ट्र के लोग वर्ग-भेद युक्त समाज को पसन्द करते हैं, जबकि उनका पड़ोसी राष्ट्र बिल्कुल साम्यवादी होता है ? क्यों एक राष्ट्र अधिक जीवन्त और सक्रिय होता है और दूसरा राष्ट्र आरामपसन्द और काहिल होता

है ? इन प्रश्नों के समाधान के लिए जो उत्तर दिए जाते हैं उनमें से अधिकतर उत्तर इतने सामान्य होते हैं कि उनसे समाधान नहीं हो पाता।

अमेरिकन संस्कृति उन संस्कृतियों में से है जिनका वर्णन कर सकना बहुत कठिन है, क्योंकि इसकी जड़ें बहुत अधिक हैं, उसके उद्गम और उसमें आकर मिलने वाली धाराएँ बहुत अधिक हैं। यह एक नाटक नहीं है, बल्कि विविध कार्यक्रमों से युक्त एक विचित्रानुष्ठान है, जो आज मनोरंजन का एक विशिष्ट साधन समझा जाता है। हम यह पसन्द करते हैं कि उसमें हर एक चीज़ का थोड़ा-थोड़ा सा अंश हो और इन अंशों से मिलकर बना यह मिश्रण खूब आकर्षक, उग्र और ओजस्वी हो।

देश-दर्शन

जब सूर्य सागर के उस पार से ऊपर उठकर पथरीले तट पर और तट के निकटवर्ती मेन द्वीप पर अपना आलोक फैलाने लगता है, उस समय भी कैलिफोर्निया में अँधेरा छाया रहता है। वहाँ उषा की लाली उभरने में अभी तीन घंटे की देरी होती है। इस तरह दो महासागरों के बीच में एक विशाल भूखण्ड फैला हुआ है। अभी हाल तक यह भू-खण्ड एक विशाल गैर-आबाद वीरान वन था, पर आज वह संसार के सभी भागों से आकर बसे लोगों का घर बन गया है। ये लोग यहाँ देश-देशान्तर से आकर जमा हो गये हैं, फिर भी वे अपने आप को एक राष्ट्र और एक देश कहते हैं।

धर्म, भाषा, रंग, व्यवसाय, परम्परा, जल-वायु, रहन-सहन आदि बहुत-सी चीजें उन्हें विभिन्न वर्गों में बाँटती हैं। न्यू इंग्लैण्ड के ग्रामीण गणराज्यों में लोग आज भी अपना शासन उसी तरह स्वयं चलाते हैं, जैसे तीन सौ वर्ष पूर्व चलाते थे। वे अपने भीतर से ही ऐसे प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं, जो कस्बे की वार्षिक बैठक में मतदाताओं द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुसार साल भर तक बिना किसी वेतन के या नाम-मात्र के वेतन पर साल भर तक कस्बे का कारोबार चलाते हैं। लेकिन इन ग्रामीण गणराज्यों से एक घंटे की मोटर यात्रा की दूरी पर ही ऐसे विशाल औद्योगिक नगर अवस्थित हैं, जहाँ यूरोप के अनेक भागों से श्रमिकों के आगमन ने बिल्कुल भिन्न किस्म के समाज की स्थापना कर दी है जिसकी समस्याएँ और तनाव-खिंचाव ग्रामीण समाज से सर्वथा भिन्न हैं।

जो लोग यह कहते हैं कि अमेरिकन जीवन एक खास किस्म का जीवन है, उन्होंने अमेरिकन जीवन को अधिकतर न्यूयार्क की कॉकटेल पार्टियों में ही देखा है। किन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका को सही तौर पर जानने का एकमात्र तरीका यह है कि उसके एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा की जाये, और वह भी ट्रेन या विमान से नहीं, बल्कि कार से आराम-आराम से की जाये।

न्यू इंग्लैण्ड से यात्रा प्रारम्भ कीजिये, जहाँ नये ढंग के द्रुतगामी राजपथ बहुत कम हैं और जहाँ आपको हर पाँच मील पर अपनी गाड़ी को धीमा करना पड़ेगा, ताकि आप एक ऐसे संकरे कस्बे में से आहिस्ता-आहिस्ता रेंग कर निकल सकें, जिसकी सड़कें कभी भी आज के व्यस्त यातायात की दृष्टि मे नहीं बनाई गई थीं। यह दुर्भाग्य की बात है कि राजमार्ग से गुज़रते हुए अक्सर आपको नगर का सब से गन्दा भाग नजर आयेगा—डिब्बों की तरह बने कारखाने, पुराने जमाने की जीर्ण-शीर्ण इमारतें, जो अब सरायों और घटिया होटलों का काम देती हैं या नगर की मुख्य सड़क पर ईंटों और लकड़ी के खोखों के बने पुराने और भद्दे मकानों के सामने लगी दुकानें। किन्तु यह सम्भावना भी है कि आपको बिल्कुल हाल में बने नये ढंग के रिहायशी मकान देखने को मिलें। अमेरिका में युद्ध के बाद से मकानों का निर्माण बहुत तेज़ी से हुआ है और उसने सारे देश का चेहरा बदल दिया है। इन नये मकानों में जमाने के रुझान की एक झलक मिलती है। वे आडम्बरहीन और सीधे-सादे हैं; इनकी खिड़कियाँ खूब चौड़ी और बड़ी हैं मानो मित्रता की भावना के साथ बाहरी दुनिया में खुलती हों। ये मकान सड़क के साथ एक-दूसरे के पास-पास बने होते हैं और ये सड़कें और ये गलियाँ भी समकोण पर एक-दूसरे से तनकर बनी हुई नहीं होतीं, बल्कि अक्सर उनमें कुछ तिरछापन होता है।

उनके पास किसी जगह एक नया बाजार होगा और उस बाजार में एक विशाल और कई मंजिलों का सुपरमार्केट भी होगा, जहाँ

गृहिणियां बच्चा गाड़ी में अपने बच्चों को डालकर लम्बे गलियारों के बीच में घूम कर दोनों ओर काफ़ी ऊँचाई तक करीने से सजाकर रखे डिब्बाबन्द खाद्य पदार्थों की मन-मुताबिक खरीद करेंगी। द्वार पर एक क्लर्क रोकड़ के रजिस्टर के साथ उनके सामान और मूल्य की जांच कर उन्हें बाहर विदा करेगा और दूसरा क्लर्क सहायता की आवश्यकता होने पर उनका सामान उनकी गाड़ी तक पहुँचायेगा। लेकिन गृहिणियाँ यहाँ आम तौर अपना काम आप देखती हैं। मज़दूरी आज इतनी महँगी चीज़ हो गई है कि, जहाँ ग्राहक अपनी फिक्र आप कर सकता है, वहाँ उसका अपव्यय नहीं किया जा सकता। फिर भी आज सेवा-व्यवसायों में पहले हमेशा की अपेक्षा अधिक अमेरिकन लगे हुए हैं।

न्यू इंग्लैंड से जैसे ही यात्री न्यूयार्क में प्रवेश करता है, वैसे ही उसकी गाड़ी एक ऐसे उद्यानपथ पर आ जाती है, जो लगभग सौ मील तक पहाड़ी प्रदेश में से गुजरता है। जिस पर न कहीं कोई स्टॉप है, न यातायात की सांकेतिक रोशनियाँ और न कोई ट्रक। सारा यातायात इतने आराम और निर्विघ्नता से चलता है कि सप्ताहान्त की छुट्टियों के दिनों या यातायात के व्यस्त घंटों को छोड़ कर गाड़ी स्वयं विशाल न्यूयार्क नगर के मध्य से भी आराम से फिसलती चली जाती है और बिना कहीं रुके या बिना किसी प्रकार के विलम्ब के पश्चिम की ओर न्यूजर्सी मार्ग पहुँच जाती है। इसके बाद उसके साथ लगे पेनसिलवेनिया मार्ग से मुड़कर सीधा ओहायो की सीमा तक पहुँचा जा सकता है। ये सड़कें द्रुत गति से यात्रा के लिए बनाई गई हैं, इंजीनियरों ने इनका निर्माण बड़ी खूबसूरती से किया है और जिस प्रदेश में से ये गुजरती हैं वह साफ-सुथरा है और उस पर अमेरिका की खूबसूरती को अक्सर बदसूरती में बदल देने वाले बड़े-बड़े इश्तहारों के बोर्ड कहीं नहीं लगे हैं।

यद्यपि ये सीधे मार्ग एक वरदान हैं, तो भी सिर्फ इन मार्गों के कारण ही यात्रा आसान नहीं हो जाती। हर पेट्रोल स्टेशन पर बढ़िया

नक्शे मिल सकते हैं। इन नक्शों को देख कर चाहे जिस नम्बर के मार्ग को पसन्द कर उससे यात्रा की जा सकती है। यदि पहले से ही मार्गों के बारे में जानकारी और सलाह प्राप्त करनी हो तो वह किसी भी तेल कम्पनी को एक पत्र डाल कर प्राप्त की जा सकती है।

कार जैसे-जैसे पश्चिम की ओर बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे जमीन की शक्ल ही नहीं, मिट्टी का रंग भी बदलता जाता है। न्यूजर्सी में मिट्टी पीली और रेतीली है, पेनसिलवेनिया में लाल, फिर ओहायो में भूरी और इलिनॉय में गहरी काली। जमीन जितनी किस्मों की है, उसका उपयोग और उस पर किया जाने वाला निर्माण कार्य भी उतनी ही किस्मों का है। पेनसिलवेनिया में सफेद खलिहान नजर आते हैं जिनकी मेहराबें साफ और सुन्दर होती हैं और दरवाजे हरे रंग से पुते होते हैं और पश्चिम के राज्यों में ऊँची मीनारों के-से अनाज भंडार होते हैं।

यही नहीं, सभी जगह मोटल (मार्गों पर बने हुए ऐसे होटल जहाँ यात्री के ठहरने और अपनी मोटर रखने, दोनों की व्यवस्था होती है) भी मिल जाएँगे। वर्षा के बाद जैसे जगह-जगह कुकुरमुत्ता उग आता है, उसी तरह मुख्य सड़कों के साथ-साथ स्थान-स्थान पर ये मोटल सिर उठा कर खड़े हो गये हैं और यात्रियों और पर्यटकों के लिए आराम और सुख-सुविधा की व्यवस्था करने में पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण उनमें निरन्तर सुधार हो रहा है। पश्चिम में मोटल सस्ते भी हैं और अच्छे भी और उनमें फर्श पर बिछे कालीनों से लेकर मुफ्त टेलीविजन, अखबार, बर्फ और स्वचालित हीटर तक सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। उनमें नया फर्नीचर, साफ और अच्छे वस्त्र और गर्म पानी आदि की व्यवस्था में तो कोई सन्देह ही नहीं है।

पूर्व के भीड़-भरे नगर तो सिर्फ वस्त्र की किनारी की तरह हैं जिसके परे एक महाद्वीप फैला हुआ है। जितना पश्चिम की ओर बढ़ते जाएँगे, नगर अधिकाधिक छोटे होते जाएँगे, क्योंकि यह एक विस्तीर्ण महाद्वीप है, जिसके आगे नगर छोटे और महत्त्वहीन हैं। घूमते हुए घर-

घराते पहियों के नीचे से जैसे-जैसे मील पर मील पीछे जाएँगे, वैसे-वैसे जमीन का चेहरा बदलता जाएगा। यहाँ तक कि कन्सास में भी, जो सूखे, बेरौनक और नितान्त कल्पनाहीन मैदान के सौन्दर्यरहित टुकड़े के रूप में मशहूर है, वैचित्र्य और विविधता भरी पड़ी है। इसकी काली और उर्वर धरती के खेतों में पतझड़ में भी शरत् काल की गेहूँ की फसल के नन्हें पौधे वसन्त की तरह हरियाली के साथ लहलहाते हैं। यहाँ मिसिसिपी के उस पार एकान्त क्षितिज तक धरती फैली हुई है और क्षितिज की समूची गोल रेखा के भीतर सिर्फ दो या तीन ही मकान दिखाई पड़ते हैं। जब आप कस्बों के पास पहुँचते हैं तब आप देखते हैं कि वे बिलकुल साधारण और श्रीहीन हैं; दूकानों का अगला भाग बिल्कुल सामान्य ढंग का और कलाहीन है, छोटे-छोटे डिब्बों के आकार के मकान हैं और गिरजाघरों के शिखरों से भी ऊपर तक फैले मीनारों के ढंग के अनाजघर हैं।

न्यू मैक्सिको पहुँच कर आप को यह मालूम होता है कि वहाँ नदियों के भीतर से धूल के बादल उठ रहे हैं। इन नदियों में महीनों तक पानी की एक बूँद नहीं होती। सड़कों के एक छोर से दूसरे छोर तक घास के उभरे हुए गोले-से फैले रहते हैं। यहाँ जुते हुए खेतों का स्थान ऊँची-नीची भूरी पहाड़ियाँ ले लेती हैं, जिन पर कहीं-कहीं छोटे पेड़ उगे होते हैं। सड़क के पास की सूखी मिट्टी में सिर्फ सेज घास होती है और वह भी मुर्दा और सूखी प्रतीत होती है।

एरिज़ोना में जहाँ-तहाँ बिखरी पहाड़ियाँ चिनी हुई दीवारों की तरह ऊपर उठती पत्थर की चट्टानों और उनमें पत्थर के घिसने से बने खम्भे प्राचीन ध्वस्त नगरों के खंडहर से लगते हैं। यहाँ पेड़ का नाम भी नहीं है, नागफनी तक नहीं!

लेकिन जहाँ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ आ जाते हैं और गहरी खड्डें दिखाई पड़ती हैं, वहाँ पेड़ फिर नजर आने लगते हैं। एक खड्ड की घाटी में संसार की छः विभिन्न जलवायुओं में से पाँच के पेड़ और पौधे एक

दूसरे के आस-पास उगे हुए हैं। वहाँ आप उत्तर के सर्द और नम जलवायु में पाये जाने वाले सदाबहार पौधे देखेंगे, किन्तु एक कदम आगे बढ़ते ही मरुस्थल के गर्म और खुश्क मौसम के नागफनी और यूका के पौधे आपको मिलेंगे। यह इलाका चरागाहों का है। यहाँ सड़कों के दोनों ओर लोहे के जंगले लगाकर पशुओं को उनसे दूर रखा जाता है। पशु इन जंगलों को फाँद नहीं सकते।

यहाँ सारे दिन आकाश मेघाच्छन्न नहीं रहता और चिलचिलाती धूप सूखी धरती को तपाती रहती है। पशु झाड़ियों के बीच से हरे पत्ते खाने के लिए मुँह मारते रहते हैं।

साथ ही यह विराट् प्राकृतिक दृश्यों का प्रदेश भी है—यहीं ग्रैंड कैन्यन (Grand Canyon) है जिसकी विस्मयकारी और मोहक भव्यता ही लम्बी यात्रा को सार्थक बनाने के लिए काफ़ी है। यहाँ अलग-अलग बसे हुए इण्डियन लोगों के कस्बे हैं, जहाँ अब भी जीवन का ढर्रा बिलकुल पुराना है। इन कस्बों में इण्डियनों की अपेक्षा 'आँग्लो' लोग अधिक प्रतीत होते हैं। इन आँग्लो लोगों की स्त्रियाँ भड़कीले स्कर्ट और ब्लाउज़ पहनती हैं और पुरुष अक्सर पुराने ढंग के बाल कटवाते हैं और सिर पर रंगीन पगड़ी बाँधते हैं। यहाँ सड़कों पर बने पेट्रोल स्टेशन अब व्यापारिक केन्द्र बनते जा रहे हैं, जहाँ पेट्रोल की अपेक्षा इण्डियन लोगों के बनाये कम्बल, दरियाँ, जेवर और मृगचर्म के जूते बेचने की कोशिश अधिक की जाती है।

यह समझना भ्रम होगा कि यहाँ जमीन मैदानी और समतल है, कारण मिसिसिपी से ही कुछ चढ़ाई आरम्भ हो जाती है। न्यू मैक्सिको और एरिज़ोना की ऊँचाई समुद्रतल से एक मील है और ग्रैंड कैन्यन में आप समुद्रतल से सात हजार फुट से भी अधिक ऊँचाई पर होते हैं।

सत्तर मील से अधिक तेज रफ्तार से चलते हुए भी आप को ऐसा लगेगा जैसे इस सफर का अन्त कभी नहीं होगा, यह लम्बा ऊसर टुकड़ा कभी खत्म नहीं होगा। इस विशाल पठार पर मनुष्य अधिक

सफलता प्राप्त नहीं कर सका है। अगर दो व्यक्ति मोटर चलाने वाले हों तो इस प्रदेश को पार करने में आठ या दस दिन लग जाएँगे। इससे कम समय में इसे पार करना दुःसाध्य है। यदि आप इस इलाके के दर्शनीय स्थानों को भी देखने लगें तो इस प्रदेश को पार करने में करीब दो सौ गैलन पेट्रोल खर्च आ जाएगा। कितनी ही बार आप को इंजन के पुर्ज़ों में चिकनाई का तेल देना पड़ेगा, कम से कम दो बार तेल बदलना होगा और हर बार रुकने पर मोटर के आगे के शीशे को साफ करना पड़ेगा, क्योंकि सत्तर मील प्रति घंटा की गति से भागते हुए इस शीशे से टकराकर सैकड़ों अभागे कीट-पतंगे मौत के जाल में फँसे हुए होंगे। कार से यह आशा की जाती है कि वह बिना कहीं लड़खड़ाये या फेल हुए तीन हज़ार मील लम्बी यह यात्रा पूरी कर सकेगी। अमेरिकन लोग यह मानकर चलते हैं कि उनकी कार में यान्त्रिक दृष्टि से कोई त्रुटि नहीं है।

अमेरिकन के पास अगर कार न हो तो उसका क्या हाल होगा? यही उसका घोड़ा है और यही उसका टैंक, जिससे वह विशाल वन प्रदेशों और लम्बी दूरियों पर विजय प्राप्त कर सकता है। उसके इंजन की घरघराहट और पहियों की सरसराहट उसकी कविता है, उसका चमकीला रोगन और काँच की तरह चमकता सफेद क्रोम उसे वैसे ही प्रिय हैं, जैसे एक जंगली को उसके मूँगा, मनके और आरसी। कार चमकीली और सुन्दर वस्तुओं के प्रति उसके प्रेम की अभिव्यक्ति है। उसकी ताकत ही उसकी शक्ति और ढाल है, क्योंकि यदि उसका मालिक और अधिकारी उस पर चीखता चिल्लाता है या उसकी पत्नी उसे डाँटती-फटकारती है तो उसके पास भी सौ घोड़ों की ताकत है जो उसके दाएँ पाँव की तली के नीचे पड़ी धैर्य से उस वक्त का इन्तजार कर रही है, जब वह उसे तीव्रगति से यातायात की एक लम्बी धारा से आगे पहुँचाकर और लम्बी दूरी को पल भर में ही पार करके पत्नियों और मालिकों से उसकी श्रेष्ठता और उच्चता सिद्ध कर सकेगी।

इस प्रकार पश्चिम की ओर यात्रा करना मानो अमेरिका के इतिहास की पुनरावृत्ति करना है, क्योंकि अमेरिकन लोग हमेशा पश्चिम की ओर आगे बढ़ते रहे हैं। पश्चिम की ओर जाना उस काम को आगे बढ़ाना है जिसे हमारे पूर्वजों ने प्रारम्भ किया था।

यह ज्ञान और विद्या के हर क्षेत्र में एक नया सबक सीखना भी है। तरह-तरह की जमीनें, नदियाँ, मैदान और पर्वतमालाएँ भूगोल और भूगर्भ-शास्त्र के पन्नों को बलात् हमारी आँखों के सामने खोलती चली जाती हैं। इस यात्रा में आप हिरण, बारहसिंगा, भैंसा, खरगोश, प्रेयरी प्रदेश का कुत्ता, लंगूर और न जाने कितनी और किस्मों के प्राणी अपने-अपने विशिष्ट प्रदेशों में देखेंगे। रास्ते में अधिकतर यूरोपीय देशों के लोग, मैक्सिकन, इण्डियन, जापानी आदि आपको मिलेंगे। जलवायु भी रास्ते भर बदलता जाएगा। पूर्व में आकाश का कोई भरोसा नहीं, अभी वह बिल्कुल स्वच्छ है और पल भर में मेघों से घिर जाता है और पश्चिम का मौसम बिल्कुल साफ और वर्षाहीन होता है। विभिन्न नदियों की प्रणालियाँ, भूमि और उसके निवासियों का सम्बन्ध, कल-कारखाने और कन्सास के किसी मैदान में एकाएक किसी तेल के कुएँ का ऊँचा शिखर—ये सब और इसी तरह की हजारों और चीजें आप को शिक्षा देती हैं।

स्थानों के नामों से भी बहुत कुछ जाना जा सकता है। मैसाचुसेट्स से कैलिफोर्निया तक सर्वत्र मोनोंगाहेली, सस्केहान्ना, मिसिसिपी और मिसूरी आदि नदियों या कनैक्टिकट, अर्कन्सास और ओकलाहामा आदि राज्यों के सुन्दर नामों में इण्डियन संस्कृति की छाप स्पष्ट नजर आती है। पूर्व में आप नगरों के बोस्टन, हार्टफोर्ड और न्यूयार्क आदि अंग्रेजी नाम सुनते हैं और पश्चिम में पहुँचकर साइराक्यूज़, रोम, कार्थेज और उटिका आदि प्राचीन साहित्य से लिए गए नाम आप को सुनने को मिलते हैं। ओहायो, इंडियाना और इलिनॉय में फिर आप को स्प्रिंगफील्ड और सलेम आदि वही अंग्रेजी नाम मिलते हैं जिन्हें

इंग्लैंड से आकर बसे लोग अपने साथ लाये थे। स्पेनिश इलाके में प्रवेश करने पर हमें सान्ता फे, अल्बुकर्क, लास वेगास, लास एंजेलेस आदि स्पेनिश नाम सुनने को मिलते हैं।

पश्चिम में प्राकृतिक दृश्य की सर्वथा नई-नई आकृतियों के लिए भी बट, अरोयो, कैन्यन, वाश और गल्च आदि नये नाम रखे गए हैं।

और उसके बाद हमें इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिलता है कि इन्सान रेगिस्तान को कैसे नखलिस्तान में बदल सकता है और यह दृश्य सबसे अधिक विस्मयकारी है।

एरिज़ोना के उत्तर-पूर्वी कोने में सड़क इधर-उधर फैली पहाड़ियों के बीच से बल खाती हुई जाती है। इसके बाद आप फिर नीचे उतरते हैं और जैसे ही आप मोड़ लेते हैं, विशाल हूवर बाँध आपके सामने फैला होता है जिसने अपने अंक में ग्रैंड कैन्यन तक फैली विराट् जल राशि को समेटा हुआ है। यह बाँध इस सूखे प्रदेश पर आने वाली वसन्त की बाढ़ों को रोकता है। वह अमूल्य अमृत-जल से सूखी धरती को सींचता है, जहाँ खिलते फूल मुस्काते हैं। उससे उत्पन्न बिजली साढ़े सात लाख व्यक्तियों की आवश्यकता पूरी करती है। जल के प्रवाह को नियन्त्रित कर के यह बाँध नदी के साथ-साथ नीचे बने अन्य छोटे बाँधों की जलराशि को भी नियन्त्रित करता है। इन छोटे बाँधों से भी बिजली पैदा की जा सकती है और खेतों की सिंचाई की जा सकती है।

हूवर बाँध से लास वेगास (नेवाडा) तक केवल पच्चीस मील का सफर है, किन्तु इस थोड़ी सी दूरी में भी आपको स्वतन्त्र लोकतन्त्रीय जीवन की झाँकी मिल जाती है। एक ओर आप एक संघीय परियोजना की कल्पना को साकार होता देखते हैं, जो स्थानीय प्रशासनों के साथ सहयोग कर समस्त जनता को लाभ पहुँचाती है और दूसरी ओर आप को एक ऐसा नगर दिखाई देता है जो जुआ खेलने वालों का स्वर्ग है, जहाँ चमकीली

रोशनियों से आकाश जगमगाता है। सार्वजनिक संगीत-शालाओं और नाट्यगृहों में श्रोताओं और दर्शकों की भीड़ लगी रहती है और शराब की नदियों में निरानन्द और नीरस जीवन को डुबा दिया जाता और उसके बाद उसकी कुत्सा को और भी शान-शौकत के पर्दे में छिपाने की कोशिश की जाती है।

लास वेगास से कुछ मील दूर पहुँचते ही आप कैलिफोर्निया में प्रवेश करते हैं। अब विशाल महाद्वीप का एक बड़ा भूखंड आपके सामने पछाड़ खाकर लेटा हुआ है, किन्तु पूर्वी कैलिफोर्निया भी एरिज़ोना और नेवाडा की भाँति रूखा है, जहाँ नंगे और ऊँचे-नीचे पहाड़ हैं, भूरी रेगिस्तानी मिट्टी पर नागफनी और सेज की झाड़ियां है और फिर जूनियर के बौने पेड़ हैं, इसलिए हम अभी उस प्रदेश से दूर हैं जो हमारी आशाओं का केन्द्र है।

सान बर्नार्डिनो पर रेगिस्तान खत्म हो जाता है। मटमैली हरी सेज की झाड़ियों का स्थान पाम के निकुंज और नारंगी के बगीचे ले लेते हैं, जोशुआ के वृक्षों की टेढ़ी-मेढ़ी टहनियाँ और जुनिपर की गहरे हरे रंग की शाखाएँ आँखों को तृप्त करती हैं। नंगी धरती की जगह जल से सिंचित हरे-भरे मैदान आ जाते हैं और सब ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है।

अब खाली और निर्जन प्रदेश हमारी पीठ के पीछे रह जाता है, क्योंकि हमारी आँखों के सामने हरा-भरा। देश है और जहाँ प्रकृति उदार और हरी-भरी है, वहाँ लोगों की भीड़ स्वयं जमा हो जाती है। यहां सड़कें चौड़ी हैं और यातायात चार समानान्तर धाराओं में फिसलता और बहता चला जाता है। नगर एक दूसरे से मिले हुए हैं। सिर्फ उनकी सीमा पर बने नारंगी के बगीचे और सड़क के दोनों ओर लगी पैठें ही इन्हें एक दूसरे से अलग करती हैं। यहाँ भी पहाड़ ऊँचे-नीचे हैं, किन्तु बाइबिल के शब्दों में, यहाँ की घाटियाँ अनाज की लहलहाती भरपूर फसलों से हँस और गा रही हैं। यही अमेरिकन लोगों के

पश्चिम की ओर कूच का लक्ष्य, अमेरिकनों के साहसपूर्ण अभियान की भौगोलिक सीमा है।

कैलिफोर्निया में सिर्फ फलों के बगीचे और हरे-भरे खेत ही नहीं हैं, और न वहाँ केवल हॉलीवुड का स्वप्न-लोक या विचित्र और अद्भुत धार्मिक सम्प्रदाय ही है। आज कैलिफोर्निया एक विशाल औद्योगिक क्षेत्र बन गया है—इतना विशाल कि लॉस एँजेलेस आज क्षेत्र-विस्तार की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा नगर है, यहां इस अकेले नगर में इतनी कारें हैं कि कुछ पूरे राज्यों में भी उतनी कारें नहीं हैं और देश में धूम-कुहरे की सबसे बड़ी समस्या भी यहीं है।

इस सारे प्रदेश को पार करना नीरस भी है और सरस भी, रोज़मर्रा का साधारण सफर भी है और एक नवीन चुनौती भी। किताब पढ़ कर जितना कुछ यहाँ जाना जा सकता है, उससे भी अधिक यहाँ इस सफर में आँखों से देख कर जाना और सीखा जा सकता है। किन्तु एक बात निश्चित है : यहाँ हर चीज पर देश की विशालता की स्पष्ट छाप है। यह देश इतना विशाल है कि यहाँ सब तरह की प्राकृतिक दृश्यावली दिखाई देती है, तरह-तरह के लोग, तरह-तरह के मौसम और आबो-हवा, तरह-तरह के रोजगार और धन्धे, और कितने ही प्रकार के लोक-जीवन, बोलचाल, पहरावे, विश्वास, मनोरंजन, प्रशासन, अपराध, उदारता और कृपणता और अच्छाई और बुराई की झलक मिलती है।

लेकिन इस देश को बीचों-बीच से पूर्वी छोर से पश्चिमी छोर तक पार करते हुए इस विविधता का एक अंश ही देखने को मिलता है। इस यात्रा में वे अन्तर्देशीय जल-मार्ग नहीं मिलते, जो ग्रेट लेक्स के रास्ते यूरोप से शिकागो तक या मैक्सिको की खाड़ी से दो हजार मील ऊपर सेंट पॉल, मिनेसोटा तक माल ले जाते हैं। इस सफर में दो हजार मील लम्बा वह पैदल मार्ग भी कहीं नहीं आता जो मेन से जॉर्जिया तक ऐपलेचियन पर्वतमाला के भीतर से गुजरता है। दक्षिण का वह प्रदेश भी, जहां चौड़ी नदियाँ मंद गति से बहती हैं, जहाँ पुराने ढंग के सुन्दर भव्य-

भवन भी हैं और जीर्ण-शीर्ण ढहती दीवारों वाले दरिद्र आवास-गृह भी हैं, जहाँ पुराने जमाने के सवन्ना नगर में प्रतिमाओं से शोभित चौक हैं और जहाँ फ्लोरिडा का चपटा और अर्धोष्ण प्रायद्वीप है। टेक्सास का अन्तहीन विशाल प्रदेश, लुइसियाना के काईभरे दलदली इलाके, उत्तर-पश्चिम के विस्तीर्ण जंगल, पहाड़ी सिआटल के चमकीले हरे मैदान, गोल्डन गेट से धीरे-धीरे ऊपर उठते ढलानों से चिपटा सान फ्रांसिस्को का सौन्दर्य, और रोशनियों के कण्ठहारों से सजे उसके पुल—ये सभी इस यात्रा मार्ग से दूर रह जाते हैं। मनुष्य पूरे एक जन्म में भी इस सारे विशाल देश को देख पाने की आशा नहीं कर सकता।

संयुक्त राज्य का क्षेत्रफल उसकी महाद्वीपीय सीमाओं के भीतर तीस लाख वर्ग मील है। इस भूमि का चालीस प्रतिशत भाग चरागाह के रूप में, अठाईस प्रतिशत वन के रुप में, बाईस प्रतिशत कृषि-भूमि के रूप में है और शेष दस प्रतिशत पर मकान और सड़कें बनी हैं। तीस प्रतिशत भूमि पर संघीय सरकार का स्वामित्व है—इसका अधिकतर भाग राष्ट्रीय वन प्रदेश के या चरागाहों के रूप में अथवा राष्ट्रीय उद्यानों के रूप में है जिसमें ग्रैंड कैन्यन, कार्ल्सबाड की कन्दराएँ और यलोस्टोन के गर्म सोते आदि कितने ही प्रकृति के महान् आश्चर्य छिपे हुए हैं। पाँच करोड़ साठ लाख एकड़ का विशाल प्रदेश, जो इंग्लैंड, स्काटलैंड और वेल्स के संयुक्त क्षेत्र के लगभग बराबर है, इण्डियनों के लिए सुरक्षित है।

प्रकृति की इस समृद्ध विरासत में जितनी किस्मों के वन्य जीव-जन्तु हैं, उतनी किस्मों के संसार में और कहीं भी नहीं हैं। संयुक्त राज्य की अन्न की उपज भी विशाल है—सन् १९५४ में तीस अरब बुशल मक्का, एक अरब बुशल गेहूँ और साढ़े पैंतीस करोड़ बुशल आलू पैदा हुआ। इसी वर्ष २५ अरब पौंड मांस का उत्पादन हुआ और इतनी ही खपत भी।

कोयला, पेट्रोलियम, इस्पात, बिजली, ताँबा, रूई, लकड़ी और कितनी ही अन्य वस्तुओं के उत्पादन में संयुक्त राज्य का स्थान पहला है। अतीत में इसने से बहुत-सी प्राकृतिक सम्पदाओं का उसने क्रूरता से दोहन

और अपव्यय किया है या संसार को अत्याचार से आत्मरक्षा करने या युद्धध्वस्त प्रदेशों को फिर से आबाद करने में सहायता देने के लिए उन्हें खर्च किया है। फिर भी उसकी मिट्टी, उसकी खानें और जंगल आज भी प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर हैं और साथ ही वह इस सम्पदा को सुरक्षित रखने की आवश्यकता को पहले से अधिक महसूस करता है।

बाहर से आने वाले पर्यटकों को आम तौर पर ऐसा लगता है कि अमेरिका में जीवन की एक निश्चित पद्धति है। अमेरिकन सिनेमा-फिल्मों और रेडियो कार्यक्रमों, मोटरों और वस्त्रों की राष्ट्रव्यापी बिक्री, डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थों और पत्र-पत्रिकाओं के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि सब अमेरिकन बहुत कुछ एक-जैसे हैं और एक ही ढंग से काम करते हैं। संस्कृति के अनेक पहलू ऐसे हैं जिनमें वे सब समान रूप से साझी हैं। किन्तु इस समानता का अर्थ यह नहीं है कि वे अपनी विभिन्नताओं का आनन्द नहीं ले सकते। वरमौंट का किसान, दक्षिणी राज्यों का बटाईदार खेतिहर, मिसिसिपी का नाविक, कन्सास का दूकानदार, शिकागो का प्रोफेसर, टेक्सास का पशुपालक या तेल कारखानों का कर्मचारी, नीग्रो कारखाना-मजदूर, ग्रीस से आकर बसा रेस्तोराँ-मालिक, पोलिश पूर्वजों से उत्पन्न चिकित्सक, उत्तर-पश्चिम का जापानी माता-पिता से उत्पन्न निसेई बागान मालिक—ये सभी अमेरिकन हैं, फिर भी एक-दूसरे से भिन्न हैं।

अराजकता और अव्यवस्था पैदा किये बिना विविधता को बनाये रखना, लोगों को अपनी व्यक्तिगत विशेषता को कायम रखते हुए एक सर्वसामान्य संस्कृति में सूत्रबद्ध करना ही क्या मानवीय संस्कृति का एक उच्चतर लक्ष्य नहीं है? और, क्या संस्कृति की यही कसौटी नहीं है कि वह अधिकाधिक किस्म के लोगों को अपने भीतर आत्मसात् करे और उन्हें इस विविधता का आनन्दोपभोग कराते हुए एक समाज के सक्रिय सदस्य होने की शक्ति और आनन्द उपलब्ध कराये? और, क्या यही उन विविध जातियों और वर्गों के नर-नारियों की, जो अमेरिका की जनता के अंग हैं, सबसे बड़ी सफलता नहीं है?

अनेक राष्ट्रों का राष्ट्र

मानवीय इतिहास की यह अभूतपूर्व घटना थी। इटली और आयरलैंड से, जर्मनी और रूस से, ग्रीस और बालकन देशों और स्कैण्डिनेवियन देशों से लोग अपने गाँवों को, जहाँ उनके परिवार और पूर्वज चिरकाल से रहते आये हैं, और जहाँ ज्ञात रीति-रिवाजों और परिचित चेहरों ने उनके चारों ओर एक सुरक्षित दुर्ग बना दिया है, छोड़-छोड़ कर यहाँ चले आये।

विशाल जन-समुदायों के एक जगह से उखड़ कर दूसरी जगह आवाद होने, जिन लोगों ने कभी यात्रा नहीं की थी, उनके सीमाओं और अधिकारियों की वाधाओं को पार कर यूरोपीय वन्दरगाहों तक पहुँचने के लिए उठाये गये कष्टों और अपमानों की और अमेरिकन वन्दरगाहों में पहुँच कर एक नये देश में हैरान और परेशान होने एवं धोखेवाजों और धूर्तों का शिकार होने की इस मानवीय कहानी को आँकड़े ठीक-ठीक वयान नहीं कर सकते। फिर भी इन कष्टों और संकटों के वावजूद १८५० में ही अमेरिका में आने वाले इन आवासियों की संख्या ३,७०,००० वार्षिक हो गई थी। हालाँकि यह संख्या अटलांटिक महासागर के दोनों तरफ की परिस्थितियों के अनुसार घटती-वढ़ती रहती थी, तो भी रुझान इसमें वृद्धि का ही था। सन् १६०५ तक प्रति वर्ष वाहर से आने वाले लोगों की संख्या दस लाख से भी अधिक हो गई, और यह संख्या तव तक निरन्तर वढ़ती गई जव तक कि प्रथम विश्वयुद्ध ने इन्सानों की इस वाढ़ को रोक नहीं दिया। युद्ध के वाद इस वाढ़ में जव फिर वृद्धि होने लगी तो कानून ने इसे फिर कम कर दिया। अधिकतर अमेरिकन यह अनुभव करने लगे कि अव उनके सामने मुख्य काम यह है कि जितने

लोग अब तक यहाँ आ चुके हैं, उन्हीं को भली भाँति आत्मसात् किया जाए। फिर भी बाहर से आने वाले आवासियों का यह ताँता अब भी जारी है। अब भी करीब दो लाख व्यक्ति हर वर्ष संयुक्त राज्य में बाहर से आ रहे हैं। इस विशाल राष्ट्र के लिए यह संख्या भले ही बहुत बड़ी न हो, तो भी वह इतनी तो है ही कि उससे ओटावा के बराबर आकार का एक पूरा शहर आबाद हो जाए।

सन् १८२० से १९५३ तक करीब चार करोड़ व्यक्ति इस देश में बसने के लिए बाहर से आये—४५ लाख ग्रेट ब्रिटेन से, इससे कुछ अधिक आयरलैण्ड से, २५ लाख स्कैंण्डिनेविया से, लगभग ५० लाख इटली से, ६५ लाख जर्मनी से और ८० लाख व्यक्ति मध्य और पूर्वी यूरोप के उन भागों से आये, जिनकी सीमाओं में बार-बार इतने परिवर्तन हुए कि यह कहना सहज नहीं है कि कहाँ से कितने व्यक्ति आये।

इसका परिणाम यह हुआ कि संयुक्त राज्य अमेरिका अनेक राष्ट्रों का एक राष्ट्र बन गया, एक ऐसा देश, जहाँ संसार की सब प्रमुख भाषाएं बोली जाती हैं और जहाँ आज भी म्यूनिख जैसे जर्मन, मैड्रिड जैसे स्पेनिश और ज़ूरिख जैसे स्विस नगर आपको मिल सकते हैं। डिट्रॉयट के बीचों-बीच हैमट्राम्क नामक नगर है, जो सर्वथा पोलिश है और उसकी अपनी सरकार भी है। लॉस एंजेलेस संसार का दूसरे नम्बर का सब से बड़ा मैक्सिकन नगर है। चीन से बाहर जिन नगरों में सब से अधिक चीनी आबादी है, इनमें सान फ्राँसिस्को भी शामिल है, जहाँ चीनियों का अपना अस्पताल है, डाकखाना है, थियेटर हैं, रेडियो स्टेशन और दैनिक समाचार-पत्र हैं और अपना अलग टेलीफोन एक्सचेंज भी है, जहाँ आपरेटर, छः चीनी भाषाएँ बोलते हैं और अपने सब टेलीफोन मालिकों के नाम और नम्बर कण्ठस्थ रखते हैं। शिकागो का स्थान इटालियन आबादी के लिहाज से मिलान के बाद और पोलिश आबादी के लिहाज से वारसा के बाद आता है।

इडाहो राज्य में पिरेनीज़ पर्वतमाला के इस ओर सब से बड़ी बास्क (विस्के के निवासी) लोगों की कालोनी है। स्विट्ज़रलैंड से आकर बसे लोगों ने ग्रीन सिटी (विस्कोंसिन) को संसार की स्विस 'पनीर' राजधानी बना दिया है।

न्यू मैक्सिको द्विभाषी राज्य है, जहाँ सरकारी सूचनाएँ स्पेनिश और अँग्रेज़ी, दोनों भाषाओं में चिपकाई जाती हैं और जहाँ राज्य का संविधान दोनों भाषाओं में सम्पुष्ट किया गया था। न्यू मैक्सिका में अभी तक पुराने स्पेनिश ज़माने के गाँव चले आ रहे हैं जहाँ अँग्रेज़ी भाषा का एक भी शब्द सुनाई नहीं पड़ेगा। एरिज़ोना में एक-तिहाई ज़मीन पर इण्डियनों का कब्ज़ा है और उनमें से बहुत से अभी तक अपने पूर्वजों का-सा ही जीवन-यापन कर रहे है।

न्यूयार्क हमारा सबसे अधिक विविधतापूर्ण नगर है। वहाँ अँग्रेज़ी से भिन्न भाषाओं में दो सौ पत्र प्रकाशित होते हैं। न्यूयार्क की ८० लाख की आबादी में से अधिक से अधिक या तो विदेशज हैं या विदेशी माता-पिता की सन्तान हैं। सब से अधिक विदेशज इटालियन और रूसी हैं, जिनकी संख्या लगभग चार-चार लाख है। नगर की चौथाई आबादी यहूदियों की है, जो अनेक देशों से आकर यहाँ बसे हैं और इनमें से बहुत-से तो कई पीढ़ियों से यहाँ रहते आ रहे हैं। न्यूयार्क संसार का सब से बड़ा यहूदी नगर है। और निःसन्देह नीग्रो, प्यूर्टोरिकन, हाइटियन और मैक्सिकन लोग भी बहुत बड़ी संख्या में यहाँ रहते हैं। न्यूयार्क की हार्लेम बस्ती के मध्य में संयुक्त राज्य की सब से अधिक फिनिश आबादी रहती है।

यूरोप के सभी राष्ट्रों ने और एशिया, अफ्रीका एवं अन्य अमेरिकी क्षेत्रों के अनेक देशों ने संयुक्त राज्य अमेरिका के निर्माण में योग दिया है। वे सभी अमेरिकन हैं, क्योंकि, जैसा कि राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने एक बार कहा था, "हम सभी यहाँ आप्रवासी हैं।"

अनेकता में एकता

सत्रहवीं शताब्दी में जब यूरोपीय आप्रवासियों की पहली लहर प्रारम्भ हुई तो कोलम्बस द्वारा यूरोपीय संसार के लिए खोजे गये इस महाद्वीप में आधा दर्जन राष्ट्रों ने पदार्पण किया और उसके तट पर अपने पाँव टिकाने के अड्डे बनाये। स्पेनिश लोग अमेरिका के तट पर उतर कर भीतर दक्षिण-पश्चिम की ओर और तट के साथ-साथ कैलिफोर्निया की ओर बढ़े। फ्रैंच लोगों ने मिसिसिपी नदी और उसके प्रवेश का सबसे पहले अन्वेषण किया और न्यू ऑर्लियन्स शहर बसाया, जहाँ पुरानी बस्ती में उनकी संस्कृति अभी तक पृथक् और स्पष्ट रूप में विद्यमान है। लुइसियाना के दलदली प्रदेशों में अभी तक फ्रैंच ही मुख्य भाषा है।

डेलवारा में सब से पहले स्वीडिश लोग आकर बसे थे और उन्होंने उसका नाम न्यू स्वीडन रखा था। न्यूयार्क, जैसा कि सभी जानते हैं, पहले डच लोगों के पास था और उसके बाद उन्हीं से अँग्रेज़ों ने उसे लिया। और पेनसिलवेनिया के अधिकतर भाग में १७२० में ही जर्मन लोग भारी संख्या में आ बसे थे और वे 'पेनसिलवेनिया डच' कहलाते थे, हालाँकि वैसे उस पर जर्मनी का कभी अधिकार नहीं रहा।

किन्तु संयुक्त राज्य में यूरोप से आकर बसने वालों में सबसे अधिक आबादी ब्रिटिश लोगों की है। हमारी आधी आबादी इंगलैंड, स्काटलैंड, वेल्स और उत्तरी आयरलैंड से आकर बसे लोगों की है। अमेरिकी जीवन-पद्धति का आधारभूत ढाँचा भी मुख्यतः अंग्रेज़ों की ही देन है। यहाँ की भाषा, कानून, पारिवारिक नाम, सरकार और शासन के प्रति रवैया और साहित्य, ये सभी चीजें असन्दिग्ध रूप से ब्रिटिश संस्कृति से ली गई हैं। प्रश्न यह है कि यह संस्कृति अन्य सभी प्रभावों से पराभूत होने से कैसे बची रह गई ?

सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रारम्भ की वे बस्तियाँ, जिनसे संयुक्त राज्य अमेरिका राष्ट्र का उद्भव और विकास हुआ, मुख्यतः

अंग्रेज़ बस्तियाँ थीं। अमेरिका में ब्रिटेन से आकर बसे औपनिवेशिक लोग १७० वर्ष तक ब्रिटेन के राजा की प्रजा रहे। उनकी जड़ें, उनकी भाषा, उनकी संस्थाएँ और प्रथाएँ, यहाँ तक कि ब्रिटिश ताज का प्रतिरोध करने का उनका तरीका, ये सभी विशुद्ध अँग्रेज़ी थे। वे अपने आपको औपनिवेशिक या अमेरिकन प्रजा समझने के बजाय अंग्रेज़ समझते थे, इसीलिए वे ब्रिटिश पार्लियामेंट में प्रतिनिधित्व अपना अधिकार मानते थे और उनका कहना था कि "अगर उन्हें प्रतिनिधित्व नहीं मिलेगा तो वे टैक्स भी नहीं देंगे।"

जेम्सटाउन में स्थापित सर्वप्रथम अँग्रेज़ बस्ती का आयोजन और समर्थन ब्रिटिश शासन के अनेक बड़े आदमियों ने किया था। इस बस्ती को ब्रिटेन के राजा का शासपत्र (चार्टर) भी प्राप्त था। अँग्रेज़ों की दूसरी स्थायी बस्ती प्लाइमाउथ थी, जो मुख्यतः इंग्लैंड के उत्तर से आये किसानों के हाथ में थी। इन लोगों को अपनी स्वतन्त्र सत्ता पर गर्व था और वे अपनी ज़मीनों को अपनी मिल्कियत बनाये रखने के लिए और एंग्लिकन चर्च और ब्रिटेन के राजा के आदेशों की परवाह किये बिना बाइबिल की अपनी निज की स्वतन्त्र व्याख्या के अनुसार पूजा और धर्माचरण करने के लिए कृत-संकल्प थे। प्लाइमाउथ इस प्रकार की पहली धार्मिक बस्ती थी। इसके बाद पहले सलेम में, फिर बोस्टन, प्रोविडेन्स और न्यू हैवन में और उसके उपरान्त कनैक्टिकट के साथ-साथ भीतर की ओर और भी कई छोटी-मोटी बस्तियाँ बस गई, जो सब एक-दूसरे से स्वतन्त्र और अलग थीं। समूचे न्यू इंग्लैंड में ग्राम गणराज्यों का विकास हुआ, जो शासन की छोटी और सुगठित इकाइयों के रूप में फलने-फूलने लगे।

समूचे औपनिवेशिक काल में, जो हमारी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के बाद के काल के बराबर लम्बा है, अमेरिका में आने वाले आप्रवासियों में अधिकतर इंग्लैंड के लोग थे या उत्तरी आयरलैंड में बसे स्कॉट लोग। बीस लाख गुलाम इस काल में संयुक्त राज्य में

आये, और उनका आगमन अमेरिकन संस्कृति को रूप प्रदान करने के लिए महत्त्वपूर्ण भी था, किन्तु फिर भी उसने क़ानून, भाषा और शासन में अँग्रेज़ों के प्रभुत्व को चुनौती नहीं दी।

यद्यपि अमेरिका में आये अँग्रेज़ों और स्कॉट लोगों में कई किस्म के लोग थे, किन्तु दो बातों में उन में समानता थी—एक यह कि अपने देश में वे अपनी स्थिति से सन्तुष्ट नहीं थे और दूसरी यह कि उनके पास अपने लिए नया जीवन-पथ बना लेने की क्षमता और साधनों की कमी नहीं थी। विलियम ब्रैडफोर्ड, जॉन विन्थ्रोप, विलियम पेन और लॉर्ड बाल्टीमोर जैसे ऊँची श्रेणी के लोग अमेरिका में ऐसे धार्मिक नगर बसाने की कल्पना लेकर आये थे, जहाँ उनके धार्मिक विश्वास पूर्ण अभिव्यक्ति पा सकेंगे। दूसरे लोग अपने लिए उपलब्ध जीवन की सीमित परिस्थितियों—परिवार के पालन-पोषण के लिए पर्याप्त ज़मीन का अभाव, ज़मींदारों के अत्याचार या भारी कर-भार—से बचने और अधिक अच्छी परिस्थितियाँ और सुअवसर पाने के लिए देश छोड़कर यहाँ आये थे।

विलियम स्टाउटन ने लिखा था : "ईश्वर ने एक समूचे राष्ट्र को चलनी में छान डाला था, ताकि वह इस नये वन्य प्रदेश में बोने के लिए उत्तम किस्म का बीज भेज सके।" और उसका यह कहना सही था। नई बस्तियों में बसने के लिए उस समय जो विकट परिस्थितियाँ थीं वे उपयुक्त व्यक्तियों की छाँट के लिये अपने निज के सिद्धान्त लागू करती थीं।

संयुक्त राज्य में विदेशियों का आप्रवास पहले से ही अन्तर्राष्ट्रीय था। प्रारम्भिक तीर्थयात्रियों के साथ वालून और फ्लेमिश लोग यहाँ आये। जेम्सटाउन में इटालियन, डच और पोलिश लोग आकर बसे। फ्रांस से आये ह्यूगेनोट (प्रोटेस्टेंट) लोग अमेरिका की कॉलोनियों में पहले-पहल आकर बसे—इन्हीं के वंशजों ने पॉल रेवर, फेनिल और ड्यू पोंट आदि अनेक प्रसिद्ध अमेरिकन परिवार संयुक्त राज्य को दिये।

जर्मन प्रोटेस्टेंट, खासकर मेनोनाइट और मोरावियन आदि अत्याचार-पीड़ित ईसाई सम्प्रदायों के लोग, विलियम पेन की सहिष्णुता की छत्र-छाया में पेनसिलवेनिया में आ बसे। अटलांटिक तट के साथ-साथ बसी सभी कालोनियों में अंग्रेजी संस्कृति विविध प्रकार की अन्तर्राष्ट्रीय वासनाओं से सुवासित थी।

सन् १६५४ में पहले-पहल यहूदी लोग मनहट्टन द्वीप में आये। किन्तु इस द्वीप ने १६४६ में ही यह संकेत दे दिया था कि किसी दिन वह विश्व की विभिन्न संस्कृतियों को पिघला कर उनकी एक सम्मिश्रण संस्कृति का निर्माण करने वाली एक रासायनिक प्रयोगशाला का पात्र बन जायगा। उस समय तक बारह विभिन्न राष्ट्रों के लोग इसमें आ बसे थे।

अमेरिकन संस्कृति का सार-तत्त्व यह है कि वह अनेक तत्त्वों के मिश्रण से बनी है, फिर भी वह असन्दिग्ध रूप से एक नई संस्कृति है—वह एक सर्वथा नया सृजन नहीं है, किन्तु उसमें उन सब संस्कृतियों के पराग का परिमल है, जिनके मिलने से वह बनी है। किन्तु यह सम्मिश्र संस्कृति बिना किसी संघर्ष, शक्ति-परीक्षा या शर्मनाक अन्यायों के नहीं बनी। डचों ने स्वीडिश लोगों को डेलेवारा से निकाल बाहर किया, किन्तु बाद में स्वयं उन्हें भी अँग्रेजों के हाथों वहाँ से बाहर निकलना पड़ा। सौ वर्ष तक फ्रेंच और ब्रिटिश लोगों में उत्तरी अमेरिका पर अधिकार के लिए लड़ाई चलती रही, क्योंकि दोनों में से कोई भी दूसरे को इस गैर-आबाद वन प्रदेश में अपना साझी बनाने को तैयार नहीं था। उन्होंने इण्डियनों को भी अपने इस संघर्ष में घसीट कर लपेट लिया और यूरोप में शक्ति और सत्ता के संघर्ष के उपोत्पादन के रूप में प्रारम्भ हुई इस लड़ाई को खूब क्रूर और नृशंस बना दिया।

पेरिस की संधि (१७६३) ने जब उत्तर की ओर से आक्रमणों के खतरे को टाल दिया तब महाद्वीप के सारे पूर्वी भाग पर अंग्रेजों का नियन्त्रण था, क्योंकि स्पेन को, जो काफी विलम्ब से इस लड़ाई में

फ्रांस के साथ शरीक हुआ था, फ्लोरिडा छोड़ देना पड़ा था (सन् १७८३ में फ्लोरिडा फिर कुछ समय के लिए स्पेन के हाथ में चला गया और बाद में संयुक्त राज्य ने उसे स्पेन से खरीद लिया।) इसलिए स्वभावतः इस प्रदेश में शासन, धर्म और पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध में अंग्रेज़ लोगों के विचारों का ही प्राधान्य था। किन्तु डचों के अच्छे रहन-सहन के शौक ने, फ्रेंच लोगों की वीरता और शौर्य ने, मूल निवासी इंडियनों की बुद्धिमत्ता और भद्रता ने, नीग्रो लोगों के संगीत और विषादपूर्ण भावुकता ने, स्कॉट लोगों की मितव्ययिता और कठोर श्रम ने और फ्रेंच प्रोटेस्टेंटों की धैर्यपूर्ण कारीगरी और शिल्प ने अंग्रेज़ों के इन तौर-तरीकों को अपने-अपने योगदान से और भी समृद्ध बनाया।

अँग्रेज अमेरिका में अमेरिकन बन गए। उन्होंने इण्डियनों की भाँति शिकार खेलना और खेती करना सीखा। उन्होंने इण्डियनों की भाँति लड़ना भी सीखा—अपनी इस नई सीखी युद्ध विद्या के कारण ही ये अमेरिकन अँग्रेज़ क्रान्ति में ब्रिटिश सेना पर हावी रहे।

अटलांटिक तटवर्त्ती प्रदेश के पश्चिम में स्थित विस्तीर्ण क्षेत्र को, जिसकी विशालता पर सहज में विश्वास नहीं होता था, आबाद करने का अवसर आने पर फिर बहुत बड़ी संख्या में लोगों की शक्ति और दासता की आवश्यकता पड़ी। जब प्लाइमाउथ की छोटी-सी बस्ती ने कनैक्टिकट नदी पर अपना व्यापारिक केन्द्र स्थापित किया और टामस हुकर ने अपने धार्मिक सम्प्रदाय को वनवासी इण्डियनों में फैलाते हुए उसी नदी के तट तक पहुँचा दिया, तब पश्चिम की ओर बढ़ने के लिए हलचल और गति विधि प्रारम्भ हो गई।

कनाडा के ब्रिटिश लोगों के हाथों में आ जाने पर, पश्चिमी प्रदेश और भी अधिक आकर्षक हो उठा। लोग वरमोंट में जाकर आबाद हो गये और न्यूयार्क में पहले से जो इलाके बसे हुए थे उनकी आबादी और भी सघन हो गई। क्रान्ति खत्म हो जाने पर उत्तर-पश्चिमी प्रदेश (टैरिटरी अर्थात् ऐसा इलाका जो बाकायदा संयुक्त राज्य अमेरिका का

अंग नहीं बना था, किन्तु जिस पर शासन उसी का था) की ओर उन नौजवानों का ध्यान आकृष्ट हुआ, जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लिया था। न्यू इंगलैण्ड से ओहायो कम्पनी ऑफ असोसियेट्स के सदस्य ओहायो नदी के तट पर मैरियेट्टा में अपनी पहली बस्ती बसाने के लिए गए। पेनसिलवेनिया से येनोनाईट और अथक परिश्रमी स्कॉच-आयरिश लोग पश्चिम की ओर जा बसे। इलिनॉय, विस्कौंसिन, मिशिगन और इण्डियाना में भी नई-नई बस्तियाँ आबाद होने लगीं। इसके बाद जैफर्सन द्वारा विशाल लुइसियाना प्रदेश के खरीद लिए जाने पर एक और बड़ा क्षेत्र अन्वेषण और बसाने के लिए खुल गया। इस तरह सीमा फिर पश्चिम की ओर खिसकने लगी।

सीमा क्षेत्र

अमेरिकन लोगों के लिए फ्रंटियर (सीमा) शब्द का अर्थ उससे सर्वथा भिन्न है, जिस अर्थ में यह शब्द यूरोप में इस्तेमाल किया जाता है। यूरोप में 'फ्रंटियर' का अर्थ है वह स्थान जहाँ देश की भूमि खत्म होती है, जहाँ प्रहरी पहरा देते हैं और जिसे लाँघने से पूर्व हर व्यक्ति को अपने परिचयपत्र और अनुमतिपत्र दिखाने पड़ते हैं। किन्तु अमेरिका में 'फ्रंटियर' का अर्थ है स्वतन्त्रता, नये-नये अवसर और फैलने और आगे बढ़ने के लिए स्थान। अमेरिकनों के लिए फ्रंटियर का अर्थ वह स्थान नहीं, जहाँ किसी देश के लोग रुक जाते हैं, बल्कि उनके लिए फ्रंटियर एक उन्मुक्त द्वार है, जो आगे बढ़ने का आमन्त्रण देता है। उनके लिए फ्रैंटियर वह स्थान नहीं है जहाँ लोगों को अपने अनुमतिपत्र और परिचयपत्र दिखाने पड़ते हैं, बल्कि उनके लिए वह ऐसा स्थान है, जिसे वे चाहें तो अपने कागज़ात दिखाये बिना चुपचाप लाँघ सकते हैं। वह ऐसी जगह है, जहाँ सभ्यता अपने बँधे-बँधाए तौर-तरीकों के साथ अभी तक नहीं पहुँची, जहाँ विशाल खुला उन्मुक्त प्रदेश है, जिसमें लोग अपने कानून स्वयं बना सकते हैं।

चाहे कोई व्यक्ति पश्चिम की ओर बढ़ने का विचार न करता तो भी यह अनुभूति, कि उधर आगे बढ़ने और फैलने के लिए अभी विशाल प्रदेश पड़ा है, अमेरिकनों के मन और रुझाव को प्रभावित करती रहती थी। अमेरिकनों के विचार में सीमा सभ्यता के उस पार एक ऐसा प्रदेश था, जहाँ मनुष्य का नहीं, प्रकृति का राज्य था, जहाँ विशाल नदियाँ अनन्त आकाश और निर्मल स्वच्छ हवा मानवीय छल-कपट से उत्पन्न बुराइयों को बहाकर दूर ले जाते हैं।

पश्चिम की ओर नये अधिवासियों की एक के बाद एक लहरें आने लगीं। पहले वन्य जीव-जन्तुओं को पकड़ने और उनका शिकार करने वालों के जत्थे, फिर वहाँ आबाद होने वाले अग्रगामी लोगों के दल, और उसके बाद स्थायी रूप से बसने वाले किसानों के झुण्ड वहाँ पहुँचे और अन्त में जहाँ-तहाँ विरल और छुटपुट बसे घर कस्बों और शहरों में परिणत हो गये।

प्रारम्भ में लोग पश्चिम की ओर चार मुख्य मार्गों से किसी एक से जाते थे। पहला मार्ग था दक्षिण अटलांटिकवर्त्ती राज्यों से मैक्सिको की खाड़ी के साथ-साथ; दूसरा दक्षिणी पर्वतों को पार कर टेनेसी और पुराने दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश में प्रवेश का; तीसरा ओहायो घाटी में जाने का; और चौथा ग्रेट लेक्स के साथ-साथ बने रास्तों से पश्चिम में जाने का। इन चार बड़े मार्गों से आगे जाकर फिर सुविधानुसार लोग छोटे-मोटे रास्तों से किसी भी उपयुक्त स्थान पर जा बसते थे।

सन् १८४० में जब फिर बड़े पैमाने पर प्रशान्त महासागर के तट तक पश्चिम की ओर कूच प्रारम्भ हुई, तब भी भौगोलिक स्थिति और सुविधाओं के अनुसार ही मैदानों और पहाड़ों को पार करने के लिए कुछ मार्ग बने। इसके काफी समय बाद जाकर कहीं मैदानी राज्यों के आबाद होने पर बाकायदा सड़कें और रास्ते कायम हुए।

जो लोग पश्चिम की ओर आबाद होने के लिए आगे बढ़ गये थे, उनकी जगह अधिकतर नवागन्तुक आप्रवासियों ने ली। सन् १८२० और

१८३० के दशकों में इन नये आप्रवासियों ने पश्चिमी न्यूयार्क, पेनसिलवेनिया और ओहायो में पुराने लोगों के द्वारा खाली की गई जमीन पर अधिकार किया। इससे अगले दशक में ये लोग भी मिसूरी, इलिनॉय और दक्षिणी विस्कौंसिन की ओर आगे बढ़ गये। इससे बाद के दो दशकों में वे पूर्वी आयोवा और मिनेसोटा में और उससे अगले दशक में प्रेयरी प्रदेशों तक जा पहुँचे।

एक लम्बे अरसे से यह बात सत्य रही है कि नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश करने की इस क्षुधा और प्रसार की आकांक्षा ने अमेरिकन चरित्र के निर्माण में बहुत बड़ा योग दिया है। फ्रेडरिक जैक्सन टर्नर ने अपना यह विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था कि इस वृत्ति ने अमेरिकनों में स्वतन्त्रता, स्वावलम्बन और व्यक्ति वादिता को बढ़ावा दिया।

यद्यपि प्रारम्भ में लोग व्यक्तिगत रूप से नई-नई जमीनें पाने की आकांक्षा से पश्चिम की ओर जाते थे, किन्तु बाद में जब स्थायी तौर पर कस्बे और शहर आबाद करने का वक्त आया तब वहाँ लोगों को बसाने के लिए कम्पनियाँ या सोसाइटियाँ बनाई गई। कभी-कभी ये कम्पनियाँ और सोसाइटियाँ बाकायदा अपनी नई बस्तियों के लिखित संविधान तैयार करती थीं जिनमें मेफ़्लावर काम्पैक्ट (मेफ्लावर समझौता) में प्रयुक्त शब्दों जैसी शब्दावली का प्रयोग किया जाता था। कभी-कभी ये नई बस्तियाँ इतनी छोटी होती थीं और उनका हर निवासी एक-दूसरे से इतना परिचित होता था कि लिखित नियमों की आवश्यकता पड़ती ही नहीं थी। वेस्टर्न एमिग्रेशन सोसाइटी ने मैदानों को पार कर कैलिफोर्निया में नई बस्तियाँ बसाई और ओरेगन एमिग्रेशन सोसाइटी ने आयोवा टेरिटरी में नये इलाके बसाये। चाहे कोई भी सोसाइटी या कम्पनी होती, यह आवश्यक था कि उसका संगठन खूब अच्छा हो, अन्यथा नई बस्तियों को सुरक्षित और सफल ढंग से बसाना सम्भव नहीं था। सोने की खोज के लिए दौड़-धूप के दिनों में कैलिफोर्निया में पहुँचने के लिए बनाई गई अनेक कम्पनियों ने तो बाकायदा अपने

विस्तृत संविधान तैयार किये थे और वर्दियाँ निर्धारित की थीं। ये कम्पनियाँ अपने साथ अपने डाक्टर, भूगर्भशास्त्री, पादरी, खनिज-विशेषज्ञ और मैकेनिक आदि भी ले गई थीं।

प्रारम्भिक अमेरिकन समाज की विशिष्टता उन कठोर परिश्रमी व्यक्तियों के कारण नहीं थी, जिन्हे सर्वप्रथम अग्रगामी होने का गर्व था बल्कि उन असंख्य कामों के कारण थी, जिन्हें लोग मिलकर करते थे—ये काम थे—मिलकर खलिहान बनाना, इकट्ठे होकर अनाज को कूटना और छड़ना, सेब के पेड़ों को तराशना, सूअरों का शिकार करना, सड़कें बनाना और मक्का के भुट्टों से दानों को अलग करना। मिलकर सहयोग से किये गये ये काम नीरस और कठोर श्रम नहीं मालूम होते थे, बल्कि मनोविनोद बन कर आनन-फानन में हो जाते थे और सामाजिक कार्यों का रूप धारण कर लेते थे।

यूरोप से आकर आप्रवासी लोग अक्सर एक ही इलाके में इकट्ठे बसते, अपने गिरजाघर बनाते, सभा-सोसाइटियाँ गठित करते, अखबार चलाते और परस्पर सहयोग से सांस्कृतिक क्रिया-कलापों का आयोजन करते। सामूहिक सहकारिता और स्वेच्छाप्रदत्त सहायता की यह भावना सारे संसार के ग्रामों में व्याप्त रही है। इसलिए आप्रवासी लोगों का एक विशाल वर्ग इससे भली भाँति परिचित और अभ्यस्त था, क्योंकि अपने देशों में ये लोग अक्सर कृषि करते थे, खेतों में एक-दूसरे के काम में हाथ बँटाते रहे थे और सामाजिक अनुष्ठानों के द्वारा मिलकर आमोद-प्रमोद करते थे।

सन् १८८२ तक अधिकतर आप्रवासी लोग जर्मनी, स्कैण्डिनेविया और ब्रिटिश द्वीपों से आये थे। बहुत-से अंग्रेज आप्रवासी मिसिसिपी नदी की घाटी में चले गये, जहाँ उन्होंने एक ऐसे प्रदेश में जो धीरे-धीरे जर्मन बनता जा रहा था, अंग्रेज संस्कृति को कायम रखने में सहायता दी। सन् १८९६ के बाद उत्तरी यूरोप से आने वालों की अपेक्षा दक्षिणी और पूर्वी यूरोप से आने वालों की संख्या अधिक बढ़ गई और प्रथम

विश्वयुद्ध से पूर्व के दस वर्षों में तो इन लोगों का अमेरिका में आगमन एक बाढ़ में परिणत हो गया। बहुत-से आप्रवासी अनिवार्य सैनिक भर्ती से बचने के लिए भाग कर अमेरिका आये थे, अतः इन लोगों के आन्दोलन ने अमेरिका की पृथक्तावादी नीति (मनरो सिद्धन्त) को और भी बल प्रदान किया।

एक नवयुवक नार्वेजियन ने १८४९ में लिखा था कि "यहाँ यह नहीं पूछा जाता कि तुम्हारा पिता कौन था, यहाँ सिर्फ एक ही प्रश्न किया जाता है कि तुम कौन हो। यहाँ स्वतन्त्रता इन्सान को माँ के दूध के साथ घुट्टी के रूप में मिलती है और संयुक्त राज्य का हर नागरिक उसे साँस लेने के लिए आवश्यक हवा की तरह अनिवार्य समझता है।"

यद्यपि सब मिलाकर आप्रवासी लोग यहाँ आकर प्रसन्नता अनुभव करते थे, क्योंकि यहाँ उनको अपने श्रम का मूल्य मिलता था, उन्हें खरीदारी करने के लिए आमन्त्रित किया जाता था, उन्हें पूरी स्वतन्त्रता थी और किसी रूढ़ि का पालन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता था, तो भी तो वे भीतर-ही-भीतर यह अनुभव करते थे कि वे भी पूर्ण रूप से अपने आप को इस देश के साथ एकाकार नहीं कर सकेंगे। अपनी निज की संस्कृति से वे स्वेच्छा से उच्छिन्न होकर आये थे और इस नई संस्कृति में भी वे बेगाने और पराये थे। छिन्न-मूल होने की इस भावना ने अमेरिकन संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला।

आप्रवासी यह अनुभव करते थे कि दोनों दिशाएँ उन्हें अपनी ओर खींच रही हैं। उन्हें ग्रामीण जीवन की सुखद उष्णता प्यारी लगती थी, किन्तु जब कठोर सत्य और यथार्थ उनके सामने आ खड़ा होता तो वे अनुभव करते कि वे उस स्थिति से आगे बढ़ चुके हैं। वे महसूस करते कि उनके पुराने मूल्यों पर प्रहार किया जा रहा है, इसलिए वे उनकी रक्षा के लिए कमर कसकर तैयार हो जाते। यदि वे अमेरिकन जीवन-पद्धति को अपनाने का प्रयत्न करते और अधिक अच्छे रिहायशी इलाके में बसने

के लिए जाते तो उन्हें यह कहकर अनादृत किया जाता कि यहाँ उनकी आवश्यता नहीं है और वे ज़बर्दस्ती यहाँ घुसे आ रहे हैं।

नई संस्कृति का अंगीकार

इसलिए इन आप्रवासियों ने अपनी सब आशाएँ अपनी सन्तानों पर लगा दीं। लेकिन इसमें भी उन्हें एक दुविधा का सामना करना पड़ा: कारण, तत्त्वतः उनके बच्चे अमेरिकन थे। वे यह नहीं चाहते थे कि उनके माता-पिता उन्हें अपनी पुरानी संस्कृति की शिक्षा दें; अपने पुराने देश के अनुशासन को उन पर थोपें। स्कूल में वे यह अनुभव करते थे कि अंग्रेजी संस्कृति और इंग्लैंड से आये लोगों का सम्मान सबसे अधिक किया जाता है। खेल के मैदान में वे यह अनुभव करते कि उनके पुराने देशों की संस्कृति को डागो, कैनक और मिक आदि अनादर-सूचक शब्दों से अभिहित किया जाता है।

सभी किशोरों और नवयुवकों की भाँति वे भी अमेरिकन बन जाने के लिए उत्सुक थे। उनके माता-पिता भी पुराने तौर-तरीकों का सम्मान नहीं करते थे, किन्तु कोई नया प्रतिमान और आदर्श उनके सम्मुख न होने के कारण वे अभी तक उन्हीं से चिपटे हुए थे। लेकिन उनसे अगली पीढ़ी ने इन पुराने तौर-तरीकों को बिलकुल ही तिरस्कृत कर ठुकरा दिया। और तीसरी पीढ़ी ने अनुभव किया कि पुरानी संस्कृति का यह तिरस्कार और परित्याग अमेरिकन तौर-तरीकों का एक अंग बन गया है, क्योंकि इस पीढ़ी को उसके माता-पिताओं से भी अच्छी शिक्षा मिली थी और उससे उसकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति भी उनसे अच्छी हो गई थी।

अधिकतर नये अमेरिकन बच्चे राष्ट्रवादी बन जाते थे, क्योंकि उन्हें यह आशा रहती थी कि इससे पुराना अमेरिकन समाज उन्हें अधिक अच्छी तरह से अपना लेगा। अनेक प्रेक्षकों की दृष्टि में आज अमेरिकनों में राष्ट्रवादिता की जो उत्कट भावना दिखाई देती है उसका मूल कारण यही है। कभी-कभी तरुण लोग अपने आप को अपने घृणित मूलोद्गम

से ऊँचा उठाने के लिए गिरोह बना लेते थे और जो लोग उनसे इसलिए भेद-भाव करते थे कि उनका किसी ऐसे देश से आए लोगों और संस्कृति के बीच में जन्म हुआ है, जिन्हें हिकारत की नजर से देखा जाता है, उनसे वे अपनी रक्षा करते थे। ये गिरोह आसानी से बदमाशों के गिरोहों में परिणत हो जाते। इन तरुणों को अपने शारीरिक बल के सिवाय और किसी चीज का भरोसा नहीं था, इसलिए सफलता की सामान्य अमेरिकन आकांक्षा से प्रेरित होकर ये लोग ऐसी राजनीति में घुस जाते थे, जहाँ शारीरिक बल उनके लिए सहायक होता था। अथवा वे अपने सुन्दर शारीरिक गठन और सबल देह के कारण खिलाड़ी बनकर खेलों में उच्च शिखर पर पहुँच जाते थे। यही कारण है कि फुटबाल की टीमों में ऐसे पोलिश खिलाड़ियों के नाम बहुत आम हो गये थे जिनका उच्चारण भी आसानी से नहीं किया जा सकता था। बहुत-से तरुणों ने अमेरिका की उत्तम शिक्षा-प्रणाली का लाभ उठाकर ऊँचे पेशों की शिक्षा प्राप्त की और समाज में अपने लिए आदर और सम्मान का स्थान बनाया।

माता-पिता के विदेशीपन को तिरस्कृत कर ये नौजवान अब विवाह के लिए उत्सुक रहते थे, क्योंकि इससे उन्हें अपने परिवार के सम्बन्धों का बन्धन काट कर अपना निज का विशुद्ध अमेरिकन घर बसाने का अवसर मिलता था। प्रेम और प्रणय रूढ़िवादिता से मुक्ति का एक प्रतीक बन गया और इस प्रकार अमेरिकन जीवन-पद्धति में रोमांटिक प्रेम पर बल दिया जाने लगा। रोमांटिक प्रेम और प्रेमी-युगल ही अमेरिकन परिवार का आधार बन गये।

दो पीढ़ियों के बीच में विच्छेद और दरार पड़ जाना वैसे ही बहुत करुणाजनक होता है किन्तु इन विदेशज अमेरिकनों और उनकी अमेरिका में उत्पन्न सन्तानों का यह विच्छेद तो और भी अधिक मार्मिक और करुणाजनक था। कुछ लोग इस विच्छेद को किसी भी तरह सहन नहीं कर सके। परिणाम यह हो गया कि तरुण पीढ़ी के कुछ लोग दरिद्र और भिखारी बन गये, कुछ को नशे की लत लग गई,

या वे जुआ, अपराध और पागलपन के शिकार हो गये। फिर भी अगर एक व्यक्ति जीवन में असफल हुआ तो उस के मुकाबले एक दर्जन व्यक्ति सफल भी हुए। सब मिलाकर अमेरिका में आये आप्रवासी लोग असाधारण सफलता के साथ अमेरिकन बन गये। यदि हम ब्राज़ील और न्यू साउथ वेल्स में आकर बसे जर्मनों की संयुक्त राज्य में आकर बसे जर्मनों से तुलना करें तो यह बात और भी स्पष्ट हो जाएगी। ब्राज़ील में बसे जर्मन अब भी जर्मन भाषा बोलते हैं, जर्मनों की तरह सोचते हैं और जर्मन दृष्टि से ही वोट देते हैं। इसी तरह न्यू साउथ-वेल्स में बसे जर्मन लोग मिसूरी में बसे जर्मनों से कहीं अधिक जर्मन हैं, हालाँकि वहाँ अंग्रेजी समाज के साथ उनका सम्पर्क कहीं अधिक है। इसका कारण क्या है?

जॉन डेफेरारी की कहानी पर जरा विचार कीजिए। नौ वर्ष की बाल्यावस्था में उसने बोस्टन की गलियों में फेरी लगा कर फल बेचना शुरू किया था। उसका पिता इटली से अमेरिका में बसने के लिए आया था। उसे आठ सन्तानों का पालन करना था, जिनमें से जॉन सबसे बड़ा था। लड़का जानता था कि बोस्टन की बहुत-सी बड़ी फर्में स्टेट स्ट्रीट में हैं। उसने निश्चय किया कि जहाँ धन अधिक है, वहीं उसके लिए बाजार भी सब से अच्छा है। वहाँ सारे फल बेचकर खाली टोकरी लिए वह घर लौटता और सारे पैसे अपने पिता को दे देता।

आठवीं कक्षा के बाद उसने स्कूल छोड़ दिया, किन्तु अध्ययन जारी रखा। वह जानता था कि उसके ग्राहक स्टेट स्ट्रीट में पूंजी का विनि-योग कर खूब पैसा कमाते हैं। उनके व्यापार-व्यवसाय को समझने के लिए उसने सार्वजनिक पुस्तकालय से किताबें लीं; लेकिन अपना फल बेचने का काम जारी रखा। सोलह वर्ष की आयु में उसकी हैसियत एक घोड़ा-गाड़ी खरीदने की हो गई। तीन वर्ष बाद उसने फानिल हॉल के पास फलों का थोक व्यापार प्रारम्भ कर दिया। उस समय भी कानूनी

तौर पर वह नाबालिग था, इसलिए उसने दूकान के दरवाजे पर अपने पिता के नाम का बोर्ड लगाया। जल्दी ही उसका व्यापार खूब चल निकला। सन् १८६० में उसने सार्वजनिक पुस्तकालय के पास बोयलसटन स्ट्रीट में एक बड़ी दूकान खोल दी। रात को वह पुस्तकालय से अपने प्रिय विषयों—फल, पूँजी-विनियोग, स्थावर सम्पत्ति का धन्धा, कानून और सफल व्यवसायियों के जीवन—के बारे में पुस्तकें लेकर पढ़ता। उसने अनुभव किया कि वह अन्य देशों से डिब्बा वन्द फल मँगा कर और उन्हें होटलों, रेस्तोराँओं, जहाजों और सम्पन्न लोगों के घरों पर वेच कर अच्छा पैसा कमा सकता है।

जब तक उसके पास व्यवसाय में लगाने के लिए पैसा आया, तब तक अपने अध्ययन से उसने कुछ आधारभूत निष्कर्ष निकाल लिए। एक निष्कर्ष यह था कि पैसा उसी व्यवसाय में लगाना चाहिए, जिसे ऐसे लोगों ने चलाया हो, जिनका जीवन अर्थतन्त्र की सबसे निचली सीढ़ी से प्रारम्भ हुआ हो। उसका तर्क यह था कि "यदि इन्सान स्वयं अच्छा है तो उसका व्यवसाय भी अच्छा ही होगा। "उसका दूसरा निष्कर्ष यह था कि जमीन और स्थावर सम्पत्ति में पैसा लगाना सबसे सुरक्षित है। उसने छोटे-छोटे मकान खरीदना और उन्हें नये सिरे से सुधार कर दूसरों को उनमें कमरे किराये पर देना प्रारंभ किया।

अस्सी वर्ष की उम्र में पहुँचते-पहुँचते जॉन डेफेरारी चालीस लाख डालर का आदमी बन गया। यह अनुभव कर कि वह हमेशा जीवित नहीं रहेगा, उसने यह सोचना आरम्भ किया कि वह इस सम्पत्ति का क्या करे। यह जानने के लिए कि दूसरे लोगों ने क्या किया था, उसने फिर पुस्तकालय की शरण ली। किन्तु इस बार जो कुछ उसने पढ़ा उससे उसकी तसल्ली नहीं हुई। वह बोस्टन के तरुणों के लिए कुछ कर जाना चाहाता था, ऐसे तरुणों के लिए जिनमें उसी की तरह महत्त्वाकांक्षाएँ और काम की स्फूर्ति थी। उसने उन बैंकों में, जहां उसने अपना सारा धन बांटकर जमा कराया हुआ था, सावधानी से पूछताछ शुरू की।

कोई भी व्यक्ति वहाँ यह नहीं जानता था कि यह सीधा-सादा बूढ़ा लखपति है।

अन्त में उसे एक ट्रस्ट का अधिकारी ऐसा मिल गया जो उसे जँचा और उसे उसने अपना अभिप्राय समझा दिया। उसने कहा, "जो कुछ मेरे पास है, वह मुझे बोस्टन से मिला है। इसलिए मैं बोस्टन के गरीब बच्चों के लिए कुछ कर जाना चाहता हूँ। मैं इन्सानों को अपने समय के सदुपयोग के लिए प्रोत्साहन देना चाहता हूँ।"

जिस पुस्तकालय ने उसे सहायता दी थी, उसे जॉन डेफेरारी ने दस लाख डालर दिये। उसने कहा कि इस धन को व्यवसाय में लगा कर और बढ़ाया जाए और जब वह बीस लाख डालर बन जाय तो उसका आधा लगाकर उसमें एक जॉन डेफेरारी विंग बना दिया जाए। जब बाकी धन फिर बढ़ कर बीस लाख डालर हो जाए तब उसकी आय को ट्रस्टी, जैसा उचित समझें, उपयोग करें।

यह दान करने के बाद, एक आप्रवासी का यह लड़का, जो अपने ही प्रयत्न से बड़ा आदमी बना था, अपने बहुत से मकानों में से एक के एक छोटे-से कमरे में अपना शेष जीवन शान्ति से बिताने लगा। इस एकान्त जीवन में अपने ठिकाने का पता भी उसने किसी को नहीं बताया।

जॉन डेफेरारी के जीवन में कुछ सीमाएँ भी थीं और ये सीमाएँ भी उसकी वित्तीय सफलता की भाँति ही, जो उसकी दृष्टि में किसी मनुष्य के अमेरिकन होने का प्रमाण थीं, शिक्षाप्रद थीं। अपने माता-पिता और पूर्वजों की मितव्ययिता की वृत्ति को जॉन किसी भी तरह छोड़ नहीं सका। उसने कभी एक छदाम भी अनावश्यक रूप से खर्च नहीं किया। जहाँ वह पैदल जा सकता था, वहाँ वह कभी भाड़े की गाड़ी पर नहीं गया। अपने मकानों और दुकानों की मरम्मत वह स्वयं करता। और अपना हिसाब-किताब भी स्वय रखता। उसने टेलीफोन नहीं रखा, जहाँ तक होता चिट्ठी-पत्री भी नहीं करता और

अपना व्यापारिक कामकाज स्वयं व्यक्तिशः जाकर करता। अपना खाना वह स्वयं पकाता। उसने अपने आप को जीवन की सुख-सुविधाओं और आराम से वंचित रखा और जिन्दगी भर कुँआरा रहा।

अमेरिकनों की सफलता का रहस्य यह था कि अमेरिका में प्राकृतिक साधनों का अक्षय भंडार था और वहाँ व्यापार-वाणिज्य के लिए अवसर भी असीमित थे किन्तु सफलता पाने के लिए किसी अमेरिकन को जो संघर्ष करना पड़ता था, वह उसकी कठोर श्रम से उपार्जित धन को खर्चने की इच्छा और सामर्थ्य को छीन लेता था। ग्रामवासियों के मन में बेकारी या मन्दी का जो भय बैठा रहता है, उसे दूर करने और सफलता पाने के लिए पैसा खर्च करने की भी आवश्यकता उन्हें अनुभव कराने में एक पीढ़ी का वक्त अभी लगेगा।

आत्मसात्करण

प्रथम विश्व-युद्ध के बाद अनेक अमेरिकन यह सोचने लगे थे कि यूरोप से लोगों के आव्रजन को रोकने या कम करने का वक्त अब आ गया है। उस समय संयुक्त राज्य की कुल आबादी का आठवाँ भाग विदेशज था। इस आठवें भाग का भी तीन-चौथाई हिस्सा शहरों में रहता, बल्कि अधिकतर शहरों की भीड़ भरी गन्दी बस्तियों में रहता, जहाँ इन लोगों के बच्चे आसानी से अपराधी बन सकते थे।

इसलिए एक ओर अमेरिकन जनता के सामने सामाजिक समस्याओं की चिन्ता थी और दूसरी ओर युद्ध के बाद उसमें उत्कट राष्ट्रवादिता आ गई थी और संसार भर में लोकतन्त्र की रक्षा के नाम पर लड़े गये इस युद्ध के परिणामों से उसे निराशा भी हुई थी। इसके बाद जबर्दस्त मन्दी आ गई। इन सब कारणों से उन्होंने यूरोप से लोगों के आव्रजन पर कठोर प्रतिबन्ध लगाने की आवश्यकता महसूस की। सन् १९२१ में और उसके बाद सन् १९२४ में कांग्रेस ने इस आव्रजन पर कुछ प्रतिबन्ध लगाये। सन् १९२९ में एक कानून बना कर विभिन्न राष्ट्रों से अमेरिका में आव्रजन के लिए कोटे निर्धारित कर दिये गये। इसमें

ब्रिटिश द्वीप पुंज और उत्तरी यूरोप के लोगों के साथ रियायत कर उन के लिए आव्रजकों के औरों से ऊँचे कोटे नियत किये गये। यद्यपि आव्रजकों का कुल कोटा डेढ़ लाख से कुछ ही अधिक था, तो भी वास्तविक आव्रजन इससे कहीं अधिक था, क्योंकि जो लोग पहले से ही आप्रवासी के रूप में यहाँ रहते थे, वे अपने बच्चों को इस कोटे के बिना भी बुला सकते थे।

आप्रवासी और अमेरिकन संस्कृति

आप्रवास का अमेरिकन संस्कृति पर शुरू-शुरू में एक असर यह हुआ कि पुरानी दुनिया के प्रति, जहाँ से ये लोग आये थे, उनकी निष्ठा बनी रही और उस के कारण वे उसके ध्येयों का समर्थन करते थे। किन्तु दूसरी पीढ़ी ने अपने पूर्वजों के देशों के प्रति अपनी निष्ठा का परित्याग कर दिया, लेकिन साथ ही वह उन देशों के साथ लड़ाई करने का भी विरोध करती थी। यह भावना ही अमेरिका में भविष्य में अपनाई जाने वाली पृथक्तावादी नीति के मूल में थी। फिर भी इस आव्रजन और आप्रवास का दीर्घकालिक प्रभाव यह प्रतीत होता है कि आज अमेरिकन लोग विश्व के मामलों में अपनी बहुत बड़ी जिम्मेदारी समझते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि आज विश्व का जो भाग अपना जीवन-स्तर ऊँचा उठाने और साम्राज्यवादी नियन्त्रण से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रहा है, उसके अधिकतर हिस्सों से आये नर-नारियों ने ही अमेरिका बनाया और आज की शक्तिशाली स्थिति में पहुँचाया है।

आप्रवासियों के आने से देश को रेलों, नगरों और सड़कों के निर्माण के लिए जन-शक्ति मिल गई और इस जन-शक्ति की बदौलत ही एक सीधी-सादी अर्थ-व्यवस्था को अत्यधिक उद्योग-सम्पन्न अर्थ-व्यवस्था में बदला जा सका। नये आप्रवासियों ने पुरानी जमीनें, जिन्हें खेती के लिए बेरहमी से उपयोग कर ऊसर बना दिया गया था, लेकर उन्हें फिर अपने परिश्रम से उर्वर बनाया।

नये अमेरिकनों ने अमेरिका का खाद्य उत्पादन बढ़ाने में ही योग नहीं दिया, बल्कि अपने पुराने देशों में प्रचलित विविध खाद्य पदार्थों और रुचिकर व्यंजनों से अमेरिकन पाक-कला को भी समृद्ध बनाया। स्पैगेटी, गूलैश, वील कटलेट (वीनेरश्नित्जेल), चो मीन, करी, शीश-कबाब, स्कैलोपिनी, पिजा, बुइलाबेस, चिली कॉन कार्न और इसी तरह के अन्य सैकड़ों स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ और व्यंजन अमेरिका को आप्र-वासियों की ही देन हैं।

इन आगन्तुक अमेरिकनों ने कला और शिल्प में भी अमित योगदान किया है। हमारे प्रारम्भिक लेखकों में से अनेक के पूर्वज इंग्लैण्ड या अन्य देशों के निवासी थे—जैसे मैलविल, व्हिटमैन, थोरो, फ्रेनो आदि। नीग्रो लोगों ने अमेरिकन संगीत में मौलिक योगदान किया है और यह योगदान भक्ति संगीत, काम के समय गाये जाने वाले लोक-गीतों, जाज़ संगीत और 'पोर्गी एण्ड बैस' आदि नाट्य संगीत—सभी में है। हमारे कुछ अत्युत्तम गायक और अनेक अच्छे लेखक नीग्रो हैं। जर्मन और इटालियन अपने साथ अपना संगीत-प्रेम लेकर इस देश में आये—वे संगीत सुनने के ही शौकीन नहीं थे, बल्कि उन्होंने हमारे आज के वाद्य-वृन्दों और ओपेरा कम्पनियों को कितने ही कुशल गायक और रंगमंच कलाकार दिये।

और यहूदियों का योगदान तो बहुत व्यापक है। अमेरिका के वस्त्र-व्यापार पर एक तरह से उनका नियन्त्रण है, और सामूहिक प्रचार के साधनों और वैज्ञानिक और कला-सम्बन्धी उपलब्धियों पर भी उनका स्पष्ट प्रभाव है। व्यापार-वाणिज्य में कुशल होने के कारण यहूदी शहरों और कस्बों में फैल गये और जगह-जगह उन्होंने बने-बनाये कपड़ों और धातु के बर्तनों और मशीनों की दूकानें खोलीं; लांडरियाँ स्थापित कीं और अनेक प्रकार की खुदरा बिक्री की दूकानें खोलीं। स्ट्रौस, गिम्बेल, गुगेनहाइम, फ्रोमान और रोजेनवाल्ड आदि कितने ही धनी यहूदी अमे-रिकन घरानों के पूर्वजों ने गलियों में फेरी लगा कर सामान बेचते हुए

अपना जीवन प्रारम्भ किया था और आज वे अपने परिश्रम से धनी बन गये। अमेरिकन जीवन को समृद्ध बनाने वाले हजारों यहूदियों में उच्चतम न्यायालयों के जज, नोबेल पुरस्कार विजेता, रंगमंच अभिनेता, उच्चकोटि के गायक, लोक-संगीत के रचयिता, नाटककार, फिल्म जगत् के नेता, सरकारी अधिकारी और प्रमुख उद्योगपति आदि शामिल हैं।

हमारे देश में नाना देश-देशान्तरों से लोग बसने के लिए आये हैं, इसलिए हमारी संस्कृति में विविधता और वैचित्र्य का आकर्षण है। आज भी न्यू इंग्लैंड और दक्षिण के पर्वतीय क्षेत्र में कुछ ऐसे छोटे कस्बे हैं, जहाँ के लोग अब तक पुराने ब्रिटिश तौर-तरीकों और ढर्रे से चिपटे हुए हैं, किन्तु इससे ये कस्बे अपने आप में आकर्षण की वस्तु बन गये हैं क्योंकि वे उन पुराने दिनों की याद दिलाते हैं; जिनके अवशेष आज यहाँ दुर्लभ हैं। न्यू मैक्सिको के इस्पानो-अमेरिकन कस्बों की भाँति चीनियों, इटालियनों और जापानियों की बस्तियाँ भी आज बहुत कम रह गई हैं। आज ठेठ अमेरिकन नगरों और कस्बों में हमें एक दर्जन विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।

किसी छोटे-से कस्बे की मुख्य सड़क पर दृष्टिपात कीजिए तो उसमें आप को इस विविधता के दर्शन होंगे। उदाहरण के लिए बेनिंगटन (वरमौंट) में डिब्बाबन्द फलों, मिठाइयों और केक-बिस्कुट आदि का व्यापार ग्रीक लोगों के हाथों में है। इसी तरह वहाँ नॉर्थ स्ट्रीट के कोने पर दो बढ़िया रेस्तोराँ और एक दर्जी की दूकान भी ग्रीक लोगों की है। एक इटालियन परिवार जूतों की मरम्मत की दूकान चलाता है। सिगार की दूकान एक सिसिली-वासी की है। यहूदी लोग कपड़े की दूकानें, एक फार्मेसी और एक धातु के सामान और मशीनरी की दूकान चलाते हैं। इन सब किस्मों के व्यापार में यांकी लोग भी शामिल हैं। एक अत्युत्तम दूकान का मालिक सीरियन है। फ्रेंच-कनाडियन लोग परचून की दूकानें और पेट्रोल पम्प चलाते हैं। एक छापाखाना एक ऐसे अमेरिकन के

हाथ में है, जिसके पूर्वज हालैण्ड से आये थे। वकीलों में आपको अगोस्तिनी, लेविन, मोरिसी, बार्बर और होल्डन आदि नाम मिलेंगे जो विविध राष्ट्रीय पूर्वजों की याद दिलाते हैं। इनमें से कितने ही परिवार पीढ़ियों से वरमौंट में रहते आये हैं और कुछ अभी हाल में ही यहाँ आये हैं। अमेरिका में आज वे सब लोग परस्पर प्रेम और शान्ति से रह रहे हैं, जो अपने पुराने देशों में सदियों तक आपस में लड़ते-झगते रहे हैं। यह कोई छोटी सफलता नहीं है।

यह समन्वय और सम्मिश्रण स्थापित करने में हम यह ठीक-ठीक निश्चय नहीं कर सके कि क्या हमें लोक-पर्वों, विभिन्न जातीय संगठनों, विविध भाषाओं के स्कूलों और विभिन्न जातियों के पृथक् चर्चों को प्रोत्साहन देना चाहिए, या एक सर्व-सामान्य संस्कृति पर बल देना चाहिए। हमारे सामने यह प्रश्न हमेशा रहा है कि क्या हमें पुरानी दुनिया की लोक-प्रथाओं को समुन्नत और प्रोत्साहित करना चाहिए या उन्हें सदा के लिए तिरस्कृत कर देना चाहिए।

सम्भवतः अपने बहुत्ववादी और फलवादी दृष्टिकोण से, जो अमेरिकनों की विशेषता है, हमने ये दोनों ही मार्ग अपनाये। हालैण्ड (मिशिगन) और पेला (आयोवा) के कस्बों में जब ट्युलिप फूलों का उत्सव मनाया जाता है तब वहाँ के लोग कुछ समय के लिए डच बन जाते है परन्तु उत्सव समाप्त होते ही वे फिर अमेरिकन हो जाते हैं। टारपन स्प्रिंग्स (फ्लोरिडा) में ग्रीस से आये लोग अपना सागर पूजा उत्सव मनाते हैं, किन्तु जैसे ही क्रास का महासागर की लहरों के बीच से उद्धार कर लिया जाता है, जीवन फिर से सिनेमा, रोटरी और टेलीविजन की दुनिया में लौट आता है। इटली और पोलैंड से आये अमेरिकनों की यह विशेषता है कि जैसे ही उनकी दूसरी और तीसरी पीढ़ियां नगर परिषद् या विभिन्न नागरिक मंडलों की सदस्य बनीं कि वे अपने पुराने देशों के साथ लगाव छोड़ कर विशुद्ध अमेरिकन बन जाते हैं। किन्तु भाषा और धर्मशास्त्र के भेद-भाव मिट जाने पर

भी व्यक्तिगत धर्म की मान्यताओं के परम्परागत जीवन-क्षेत्र में विभिन्न संस्कृतियों में अन्तर बना ही रहता है। लेकिन यह बात नये आगन्तुकों के बारे में ही नहीं, पुराने अमेरिकनों के बारे में भी सही है।

यद्यपि नवागन्तुक आप्रवासी को जीवन में अपनी राह बनाने के लिए अनेक बाधाओं और विरोधों का सामना करना पड़ता है, किन्तु ये कठिनाइयाँ उसके मार्ग को अवरुद्ध नहीं करतीं, बल्कि सफलता पाने के लिए यह चुनौती उसके उत्साह और साहस को और भी बढ़ाती है। इसका प्रमाण यह है कि आज अमेरिका में जो लोग सामाजिक जीवन में शिखर पर पहुँचे हुए हैं, उनमें से कितने ही या तो आप्रवासी थे या आप्रवासियों की सन्तान।

जुलियस लेमान की कहानी इसका एक सुन्दर उदाहरण है। एक तरुण के रूप में वह बावेरिया से न्यूयार्क आया था, जहाँ उसने काम करते-करते पढ़ लिख कर शादी की और अपनी तीन पीढ़ियों को फलते-फूलते देखा। वह बहुत सम्पन्न नहीं हुआ, किन्तु उसने अच्छा जीवन-यापन किया। बानवे वर्ष की आयु में जब उसकी मृत्यु हुई तो वह अपनी वसीयत में सिर्फ दो बड़ी रकमों का उल्लेख कर गया : एक थी एक हजार डालर की राशि, जो वह जर्मनी में अपने माता-पिता की कब्रों की देखभाल के लिए छोड़ गया और दूसरी थी ६० हजार डालर की रकम, जो वह संयुक्त राज्य की सरकार को दे गया, क्योंकि "वह और उसकी पत्नी संयुक्त राज्य के नागरिक होने के नाते अमेरिका में प्राप्त जीवन के वरदानों के लिए उसके प्रति ऋणी" थे।

—०—

पारिवारिक जीवन

अमेरिका में पारिवारिक जीवन की एक विशेषता यह है कि यहाँ परिवार बहुत छोटा होता है—पिता, माता और बच्चे। संसार के अनेक भागों में परिवार बहुत बड़ा होता है। दादा-दादी, उनके लड़के और उनके परिवार सब एक घर में रहते है। लेकिन अधिकतर पश्चिमी संसार की भाँति संयुक्त राज्य में विवाह का बन्धन ही परिवार का केन्द्र होता है और हर विवाह से एक नया पृथक् परिवार बन जाता है। व्यक्ति अपने माता पिता के परिवार में जीवन प्रारम्भ करता है, जिसका वह विवाह करने और अपना पृथक् परिवार स्थापित करने के बाद भी सदस्य रहता है। विवाह के बाद अपनी पत्नी के परिवार के साथ भी उसका सम्बन्ध हो जाता है और अपने साला-साली और सलहजों या ननद-भौजाई आदि के परिवारों के साथ भी उसका दूर का कुछ सम्बन्ध रहता है। इस प्रकार अमेरिकन पुरुष या स्त्री का सम्बन्ध अनेक परिवारों से रहता है। किन्तु एक बार शादी हो जाने के बाद उसके लिए सब से अधिक महत्त्व उसी नये परिवार का होता है जो उसके विवाह से बनता है। उसी के प्रति उसका सब से अधिक दायित्व होता है। किन्तु आम तौर पर अपने माता-पिता के परिवार के साथ भी उसका गहरा लगाव रहता है।

लेकिन माता-पिता यह ध्यान रखते हैं कि वे नये परिवार में किसी तरह का हस्तक्षेप न करें। माता-पिता में से जब किसी एक की मृत्यु हो जाती है तो दूसरा या तो अकेला रहता है, या अपनी किसी बहन के पास चला जाता है अथवा बूढ़ों की देखभाल के लिए स्थापित किसी आश्रम में चला जाता है। अमेरिका में जीवन की सारी आयोजना यौवन

और चंचल गति के लिए होती है, इसलिए आम तौर पर बाल-बच्चों वाले युवा गृहस्थी अपने साथ बूढ़े विगत-यौवन माता-पिता को बहुत कम रखते हैं। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि माता-पिता और भाई-बहन के साथ उनका सम्बन्ध घनिष्ठता और आन्तरिकता का नहीं रहता। माता-पिता बच्चों के पास और बच्चे माता-पिता के पास अवसर आते-जाते हैं और अगर वे एक-दूसरे से बहुत दूर के स्थनों पर रहते हैं तो वे एक हफ्ता-दस दिन एक-दूसरे के यहाँ काट भी आते हैं।

बहुत से लोग बड़े परिवारों पर गर्व अनुभव करते हैं—वे केवल अपने भाइयों और ससुराल वालों को ही नहीं, चचेरे-ममेरे भाई-बहनों, चाचाओं और मामाओं एवं उनके रिश्तेदारों से भी, जिनके साथ उनका अपना खून का रिश्ता नहीं होता, अपना सम्बन्ध मानते हैं। खास तौर से भाई-बहनों में, और दादा-दादी या नाना-नानी का पोता-पोती और नाती-नातिनों से गहरा प्रेम होता है। लोग आम तौर पर अपने नाती-पोतों की भारी संख्या पर गर्व करते हैं और यह अनुभव करते हैं कि वे एक बड़े परिवार के वयोवृद्ध परिपालक हैं। खास कर धन्यवाद दिवस के अवसर पर परिवार का यह बन्धन और मोह और भी बढ़ जाता है, जब लड़के-बाले और नाती-पोते उत्सव-समारोह और पुनर्मिलन के लिए दूर-दूर से अपने 'पारिवारिक गृह, में एकत्र होते हैं।

लेकिन कौन-सा पारिवारिक गृह ? अमेरिकन प्रणाली इस मामले में पक्षपातरहित है। परिवार का नाम पति के नाम पर चलता है, इसलिए पति के परिवार को ही एक तरह से प्राथमिकता मिलती है। किन्तु सभ्यता और सौजन्य का तकाजा है कि पत्नी को भी और उसके द्वारा उसके परिवार को भी सम्मान दिया जाए। दादा-दादी और नाना-नानी दोनों ही नाती-पोती को समान दृष्टि से अपना समझते हैं। इसीलिए इस सौजन्य और शालीनता को भी दोनों में पक्षपात-रहित होकर बांटा जाता है। यदि बच्चे धन्यवाद दिवस पर

एक के परिवार में जाते हैं तो बड़े दिन (क्रिसमस) के त्योहार पर दूसरे के परिवार में। यदि एक बच्चे का नाम पितृ-कुल के नाम पर रखा जाता है तो दूसरे बच्चे का मातृ-कुल के नाम पर (हालाँकि आज-कल माता-पिता वही नाम रखना पसन्द करते हैं जो बोलने-सुनने में आसान हो)।

जब संयुक्त राज्य कृषि-प्रधान देश था, उस समय परिवार एक उत्पादक इकाई होता था, और कम-से-कम परिवार का एक लड़का अवश्य ही खेती का काम-काज देखने के लिए घर पर रहता था। किन्तु आज परिवार 'उत्पादक इकाई' नहीं, 'उपभोक्ता इकाई' है। इसलिए एक ही छत के नीचे यानी एक ही घर में बड़े परिवार को रखना तर्कसंगत और सम्भव नहीं रहता। इसके अलावा अविवाहित बुजुर्गों या विधवाओं और विधुरों की समस्या अब भी बनी हुई है और उसे हल करने में अधिक सफलता नहीं मिली।

कुछ लोगों का ख़याल है कि अमेरिकन परिवार एक कमजोर और शिथिल संगठन है, क्योंकि उसमें छोटी-छोटी इकाइयों में बँट जाने की प्रवृत्ति है या स्कूल, न्यायालय अथवा युवक-संगठन आदि अन्य संस्थाओं और संगठनों ने उसे उसके कुछ कामों से वंचित कर दिया है। लेकिन यह ख़याल गलत है।

एक व्यावसायिक समाज में यह देखा गया है कि उसमें परिवार व्यवसाय-व्यापार की अपेक्षा अधिक स्थायी संगठन बना रहता है। जितने व्यापार-व्यवसायों को दीर्घ काल तक टिकते देखा गया है, उससे कहीं अधिक परिवारों को दीर्घ काल तक टिकते देखा गया है।

इस में सन्देह नहीं कि परिवार ही सब से पहले शैशव में बच्चे को शिक्षा देता है, असहाय अवस्था में उसे रक्षा और पोषण प्रदान करता है, उसे एक विशेष धर्म में दीक्षित करता है, उसे सही संस्कृति और व्यवहार की शिक्षा देता है और मनोविनोद और व्यक्ति-व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धों का सबसे पहला पाठ पढ़ता है। परिवार के

द्वारा ही बच्चा समाज में अपना पहला स्थान बनाता है, भले ही बड़ा होने पर वह उस स्थिति से नीचे गिर जाए या और ऊँचा उठ जाए। बच्चे बहुत जल्दी अपने माता-पिता से यह सीख लेते हैं कि उनकी सामाजिक स्थिति क्या है और सामाजिक स्थिति की इस भावना को वे स्कूल में भी कायम रखते हैं, जहाँ वह और बद्धमूल होती है। समाज में व्यक्ति की स्थिति एक पेचीदा और अव्यक्त फारमूले पर आधारित रहती है जिसमें पिता का काम-धन्धा, आमदनी, परिवार की पृष्ठभूमि, निवासस्थान, नागरिक क्रिया-कलाप और शहरी व्यवस्था के मामलों में हिस्सा, धर्म, किसी स्थान पर निवास की अल्पकालिकता या दीर्घकालिकता और मूल जाति आदि शामिल हैं।

परिवार में घर का सामान भी शामिल है—सबसे पहले स्वयं घर का स्थान है (हमारे देश में ५६ प्रतिशत परिवारों के पास अपने निज के घर हैं), और उसके बाद ऐसी चीजों का जिन पर माता-पिता को गर्व होता है, जैसे उनकी कार, घर में काम आने वाली मशीनें और उपकरण और वंश-परम्परा से चली आ रही पैतृक वस्तुएँ, जो परिवार को अतीत से बाँधती हैं। इसके अलावा परिवार की कुछ अदृश्य सम्पदाएँ भी होती हैं—जैसे माता-पिता द्वारा बच्चों को सुनाई जाने वाली अपने यौवन के दिनों की कहानियाँ या परिवार के कुछ विशिष्टजनों की कहानियाँ—यानी उस बूढ़ी चाची की कहानी जो पचानवे वर्ष की दीर्घ आयु तक जिन्दा रही और इस बात पर हैरान थी कि उसके सब मित्र और परिचित इतनी छोटी आयु में ही क्यों चल बसे। लेकिन इस सब से अधिक सबल वस्तु है यह ज्ञान और अनुभूति कि परिवार सन्तान-प्रजनन और यौवन सम्बन्ध के रिश्ते की एक अद्भुत और विलक्षण इकाई है और परस्पर एक ऐसे अविच्छेद्य बन्धन में बंधी हुई है कि उसके हर एक सदस्य का काम सारे परिवार को प्रभावित करता है।

अमेरिकन परिवार की एकता और अखंडता का एक सुनिश्चित कारण है उसके सब सदस्यों की समानता, हालाँकि अनेक विदेशी लोग इसी को अमेरिकन परिवार की कमजोरी का कारण समझते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि अमेरिका में ऐसे अनेक परिवार हैं जिनमें पिता अपनी सन्तानों से बिना किसी आपत्ति या सवाल-जवाब के पूर्ण आज्ञा-पालन चाहता है, जहाँ पत्नी को घरेलू खर्च के मामले में दखल या राय देने का कोई अधिकार नहीं होता, जहाँ बच्चों की जरा-सी गलती पर ही पिटाई हो जाती है या माँ किसी और बात पर बिगड़ने पर चिड़चिड़ेपन में अपना गुस्सा उन पर उतारती है। किन्तु सब मिलकर अन्य संस्कृतियों की तुलना में अमेरिकन परिवारों में सब सदस्यों की समानता का अधिक पालन किया जाता है।

यह समानता पति-पत्नी के विवाह से प्रारम्भ होती है। आजकल अधिकतर पति-पत्नी विवाह-बन्धन में बराबर के साझेदार के रूप में प्रवेश करते हैं। आम तौर पर पत्नी तब तक काम करती है, जब तक उसकी पहली सन्तान पैदा नहीं होती और कभी-कभी बच्चों के बड़े होने और अपना आपा स्वयं सँभालने लायक होने के बाद वह फिर कहीं काम करने लग जाती है। जो भी हो, घर पर वह पूरे दिन भर काम करती ही है, क्योंकि केवल धनी लोगों के घर पर ही नौकर होते हैं और घरेलू यान्त्रिक उपकरणों की सहायता से भी पाँच-छः व्यक्तियों के परिवार को चलाना और साथ ही अपने नागरिक कर्त्तव्यों को निभाना तब तक सम्भव नहीं है जब तक पत्नी सारे दिन स्वयं काम न करे।

अमेरिकन पति कह सकता है कि अमेरिकन परिवार में एक और किस्म की समानता और सन्तुलन भी है, वह यह कि कमाता वह है और खर्च उसकी पत्नी करती है। स्त्रियों की पत्रिकाएँ और दिन के समय चलने वाले रेडियो और टेलिविजन कार्यक्रम आम तौर पर

वस्तुओं के विज्ञापन और स्त्रियों की रुचि की वस्तुओं पर आधारित होते हैं और इसी दृष्टि से बनाये जाते हैं।

नई कार या अमेरिकन उद्योगों में निर्मित कोई दूसरी सुन्दर वस्तु खरीदने के लिए स्त्री को कुछ समय के लिए फिर से काम पर जाना पड़ सकता है और उसका पहले काम कर चुकना और भविष्य में उसके पुनः काम पर जाने की सम्भावना ऐसी चीजें हैं जो विवाह में समानता को कायम रखने में और भी सहायक होती हैं।

यह सही है कि परिवार में अब भी पति ही मुखिया होता है। किन्तु पति का नेतृत्व केवल सांकेतिक होता है, जब कि पत्नी घर की वास्तविक मुखिया होती है। सम्पत्ति—घर या कार आदि—आम तौर पर पति और पत्नी दोनों के नाम से खरीदी और बनाई जाती है। हिसाब-किताब की जाँच अक्सर दोनों मिलकर करते हैं और मासिक घरेलू खर्च के बिलों की अदायगी और आय-कर का हिसाब स्त्रियाँ करती हैं।

अमेरिकन विवाह और परिवार की ये विशिष्टताएँ ही स्त्री-पुरुष की समानता स्थापित करती हैं। विवाह हो जाने के बाद विवाहित जोड़ा एक अलग परिवार बन जाता है जिसमें पति और पत्नी दोनों एक-दूसरे की भावनात्मक आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं। वे पारस्परिक घनिष्ठता और आन्तरिक सम्बन्ध चाहते हैं और इस सम्बन्ध और ऐक्य का उपभोग प्रेमी, माता-पिता, साथी, सहकर्मी, सह-उपभोग और जीवन की मंजिल के सहयात्रियों के रूप में बाँट कर करते हैं। अमेरिकन विवाह की एक समस्या यह है कि उससे बहुत-सी आवश्यकताओं की पूर्ति की आशा की जाती है। यह समझा जाता है कि विवाह तीन बुनियादी आवश्यकताओं—सन्तान प्रजनन, सामाजिक कार्य-कलाप और आपसी मानसिक निभाव—को बिना बाहरी सहायता के पूरा कर सकेगा।

बच्चों का प्रशिक्षण

माता-पिता जिस समानता की भावना के साथ विवाहित जीवन में प्रवेश करते हैं, वह उनकी सन्तानों में भी जाती है। यद्यपि यह स्पष्ट है कि माता-पिता को ही अपनी सन्तानों का मार्ग-दर्शन और नियमन करना होगा, तो भी अमेरिकन लोग यह यत्न करते हैं कि उन्हें जल्दी-से-जल्दी स्वतन्त्र और स्वावलम्बी बना दें। बच्चों को अपने शृंगार और प्रसाधन आदि की शिक्षा अमेरिका में अन्य देशों की अपेक्षा कुछ पहले देनी प्रारम्भ कर दी जाती है, (हालाँकि पहले इससे भी जल्दी प्रारम्भ की जाती थी) और जो बच्चे नहाने-धोने, शारीरिक सफाई और शृंगार-प्रसाधन आदि में जल्दी निपुण हो जाते हैं उनकी प्रशंसा की जाती है। माताएँ अन्य बच्चों के साथ अपने बच्चों की तुलना करती हैं और उन्हें यथा सम्भव अपने पड़ोसियों के बच्चों से जल्दी चलना, बोलना और परिपक्व होना सीखने के लिए प्रोत्साहन देती हैं। किन्तु मनोवैज्ञानिक अध्ययन से पता चला है कि बच्चों को इतनी तेजी से सब कुछ सीखने के लिए प्रेरित करना अच्छा नहीं है और पढ़ी-लिखी माताओं पर इस अध्ययन के निष्कर्ष का असर भी पड़ा है।

शिशु-पालन में कुछ बातें ऐसी भी हैं जिनसे उनकी वैयक्तिक पृथक्ता, स्वतंत्रता और समानता को बल मिलता है। उदाहरण के लिए हम बच्चों को आम तौर पर माँ का दूध न पिलाकर बोतल से दूध पिलाते हैं जिस से शिशु एक पृथक् व्यक्ति बन जाता है। इसी तरह से बच्चे का अपना अलग कमरा, अपनी कुर्सी और अपने खिलौने भी उसे एक पृथक् व्यक्ति के रूप में विकसित करते हैं। यदि घर में एक से अधिक बच्चे होते हैं तो उन सबकी अपनी अलग-अलग चीजें होती हैं। घरों को गर्म रखने की व्यवस्था होने से बच्चे को सर्दी से बचने के लिए मोटे और भारी-भरकम कपड़ों का बोझ नहीं उठाना पड़ता। इससे भी बच्चे हल्के रहते हैं और आजादी अनुभव करते हैं और उन्हें आजादी

के महत्त्व को समझने और आजादी माँगने में सहायता मिलती है। यह सम्भव है कि बच्चे के माता-पिता अभी नौजवान हों और यह भी सम्भव है कि बच्चा यौन सम्बन्धों से अनजाने में ही पैदा न हुआ हो, वल्कि योजनापूर्वक उसका प्रजनन किया गया हो। परिवार में बच्चों की संख्या अक्सर वाकायदा योजनापूर्वक सीमित रखी जाती है ताकि बहु-सन्तति के परिणामस्वरूप बच्चे अच्छी तालीम, अच्छे कपड़ों, डाक्टरी देख-भाल और मनोरंजन की सुविधाओं से वंचित न हों।

माता-पिता से आशा की जाती है कि वे अपने सब बच्चों को एक ही नज़र से देखेंगे और किसी के साथ पक्षपात नहीं करेंगे, हालाँकि यह सम्भव है कि बच्चे उन्हें निष्पक्ष न समझें। सामान्यत: बच्चे अपने माता-पिता की सम्पत्ति में समानता का उपभोग करते हैं।

बचपन से ही उन्हें स्वयं सोचने-विचारने और घर के निर्णयों में हिस्सा बँटाने का प्रोत्साहन दिया जाता है। उन्हें अपने लिए स्वयं मन के अनुकूल चुनाव करने का अवसर दिया जाता है और यदि उनसे कोई ऐसा काम करने को कहा जाता है जिसे वे पसन्द नहीं करते तो आम तौर पर यह जरूरी समझा जाता है कि उन्हें जबरन आज्ञापालन के लिए मजबूर न किया जाए, बल्कि जो काम करने के लिए उनसे कहा जाता है, उसका कारण उन्हें समझाया जाए। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि अमेरिकन परिवार लोकतन्त्री समाज है, जिसमें हर व्यक्ति के अपने अधिकार और कर्त्तव्य हैं, जिसमें पिता विधायक (कानून बनाने वाला), माता प्रशासक और बच्चे मतदाता सदस्य हैं। वास्तव में यह अमेरिकन संस्कृति की विशेषता है कि इसमें पारिवारिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक, सभी पहलू इतने गुँथे हुए हैं कि उन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता और इसीलिए उन्हें पृथक्-पृथक् रूप में वर्णन करना भी सम्भव नहीं है। बच्चे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और लोक-तन्त्र के सिद्धान्तों के बारे में स्कूल में जो कुछ सीखते हैं, उन्हें घर पर

भी लागू करना जल्दी ही सीख लेते हैं। इसी तरह घर में उन्हें माता-पिता से अपनी समस्याओं और अभिरुचियों में जो दिलचस्पी मिलती है, उसे वे स्कूलों में अध्यापकों से भी पाने की आशा करते हैं।

स्कूल और माता-पिता बच्चों में जो बहुत-से विचार भरने का प्रयत्न करते हैं और जिन्हें बच्चे स्वयं जल्दी ही एक-दूसरे को सिखाने लगते हैं, उनमें एक महत्त्वपूर्ण विचार है इन्साफ और ईमानदारी का। यह विचार हमारे बच्चों में इतनी छोटी उम्र से आ जाता है कि हम उसे गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त की भाँति स्वाभाविक प्राकृतिक नियम समझने लगते हैं।

इन्साफ और ईमानदारी का तकाज़ा है कि कमज़ोर आदमी का ख़याल रखा जाए, अपनी टीम के साथ छल न किया जाए, नियमों का पालन किया जाय, अनुचित लाभ न उठाया जाए, खेल में जीत के लिए वफादारी से पूरी कोशिश की जाए और खिलाड़ीपन की भावना से हार को भी जीत की तरह मनस्विता से स्वीकार किया जाए और जीत पर गर्व न किया जाए। खेल की समाप्ति पर हारने वाली और जीतने वाली, दोनों टीमें एक दूसरे का हिप-हिप हुर्रे आदि ध्वनियों से अभिनन्दन करती हैं। खेल के मैदान में सीखी यह भावना हमारे राजनीतिक आन्दोलनों में भी चलती है, जहाँ हारने वाला अपनी हार को मनस्विता से अंगीकार कर विजेता को बधाई देता है और अपने अनुयायियों से विजेता का साथ देने के लिए कहता है।

अगर एक छोटा बच्चा अपने साथी से खिलौना छीनने की कोशिश करता है तो माँ शायद उसे वैसा न करने के लिए कहेगी, "क्योंकि उसके पास वह पहले से ही था।" जिसके पास जो वस्तु पहले से है, उस पर उसके स्वामित्व का सम्मान किया ही जाना चाहिए। किन्तु यदि बच्चा बहुत देर तक अपने पास वह खिलौना रखे रहे तो माँ उससे कह सकती है कि "तुम इससे बहुत देर खेल चुके हो, अब यह जॉनी को खेलने को दे दो।" जिसके पास जो वस्तु है, उसे दूसरों के साथ बांट

कर उसका उपयोग करना चाहिए। इस तरह हमारे बच्चे जीवन के प्रारम्भ में ही स्वामित्व और साझेदारी, प्रतिस्पर्धा और सहयोग की शिक्षा पा जाते हैं। हमारी सारी संस्कृति में इस बात के स्पष्ट चिह्न और लक्षण हैं कि हम प्रतिस्पर्धा में कम क्रूर होते जा रहे हैं और स्वेच्छा से सहयोग अधिक करते हैं और इस प्रकार प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों का समन्वय करने की चेष्टा करते हैं। इनमें से श्रम-सम्बन्ध आदि कुछ लक्षणों का हम बाद में वर्णन करेंगे।

ईमानदारी और इन्साफ की भावना में एक और भी वांछनीय लक्ष्य निहित है और वह है मिलकर काम करने की भावना। एक स्वेच्छया निर्मित समाज में दोनों पक्षों द्वारा स्वीकृत नियमों के अनुसार एक सर्व-सामान्य लक्ष्य को पाने के लिए मिलकर प्रयत्न करना संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इस भावना की शिक्षा खेल के मैदान से प्रारम्भ होती है और उसका अन्त जीवन के ऐसे सहयोगी और सहकारी दलों में होता है जिनके बल पर हम व्यापार-व्यवसाय, विज्ञान और नागरिक प्रगति आदि के क्षेत्रों में उन्नति कर सके हैं; और सामूहिक प्रचार के साधनों में भी अब व्यक्तिगत सृजन का स्थान कलाकारों के दलों ने ले लिया है।

बाल-प्रशिक्षण में नैतिकता पर बहुत बल दिया जाता है। घर, स्कूल, गिरजा और युवक संगठन—सभी में नैतिकता की शिक्षा दी जाती है। स्काउट बनने वाले लड़कों को यह पाठ कण्ठस्थ करना पड़ता है कि "स्काउट को विश्वासयोग्य, वफादार, सहायक, मित्रतापूर्ण, सौजन्यशाली, दयालु, आज्ञाकारी, प्रसन्नचित्त, मितव्ययी, बहादुर, साफ-सुथरा और बड़ों का सम्मान करने वाला होना चाहिए।" पैंतीस वर्ष बाद भी स्काउट यह पाठ बिना रुके ठीक-ठीक लिख सकता है, यह इस बात का प्रमाण है कि इस शिक्षा का उस पर स्थायी असर पड़ा है। बाइबिल और धर्मग्रन्थों की शिक्षाएँ भी पुराने परम्परागत

ढंग से पाले गये बच्चे पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं और उसके मन में उनकी प्रतिध्वनि होती रहती है।

उचित और अनुचित की धारणाएँ बहुत जल्दी ही बच्चे के मन में बद्धमूल कर दी जाती हैं और यदि वह इन धारणाओं की उपेक्षा करता है तो यह बात उसके मन में स्पष्ट रहती है कि वह पकड़ा जाएगा और उसे सजा दी जायेगी। हो सकता है कि कोई दुष्ट साथी उसे बाइबिल की दस शिक्षाओं के बाद यह ग्यारहवीं शिक्षा भी दे कि "अपराध करते हुए पकड़े मत जाओ।" किन्तु अपवाद रूप में कुछ मानसिक विकृतियों के अवसरों को छोड़ कर शेष सब समय बच्चे में आज्ञाकारिता की आदत इतनी प्रबल होगी कि वह कानून का उल्लंघन करेगा ही नहीं।

अमेरिकन लोग बच्चे के प्रशिक्षण को बहुत महत्त्व देते हैं और उसमें बड़ी गम्भीरता से रुचि लेते हैं। इसके लिए वे इस विषय की पत्रिकाएँ और बुलेटिन पढ़ते हैं, लैक्चर सुनते हैं और अन्य माता-पिताओं से विचार-विनिमय करते हैं। वे बाल-शिक्षण का काम वैज्ञानिक ढंग से करना चाहते हैं, किन्तु क्योंकि वैज्ञानिकों के विचार भी इस बारे में हमेशा बदलते रहते हैं, इसलिए उनका ऐसा कर पाना कठिन हो जाता है। एक माँ ने इसीलिए खिन्न होकर एक बार कहा था, "मैंने बालमनोविज्ञान की पुस्तकें पढ़ना छोड़ दिया है।" किन्तु फिर भी छोटी उम्र की माँ को, जो अपने बुजुर्ग माँ-बाप से दूर है, शिशु और बालक के पालन के बारे में अपने निज के बालपन की स्मृतियों के सिवाय और कोई ज्ञान नहीं होता, इसलिए उसे अन्ततः विशेषज्ञों का ही सहारा लेना पड़ता है।

परिवार में माँ की भूमिका सबसे बड़ी होती है। पाँच या छः वर्ष की आयु तक बच्चा एक तरह से दिन के अधिकतर भाग में माँ की ही अधीनता और देख-रेख में रहता है, अपने आनन्द और मनोरंजन एवं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उस पर निर्भर रहता है

और उसी के अनुशासन में उसका दिन बीतता है। यदि दादा-दादी नजदीक हों, तो भी माँ-बाप उनका हस्तक्षेप बहुत अधिक पसन्द नहीं करते, क्योंकि अमेरिकन समाज इतना सचल और परिवर्तनशील है कि एक पीढ़ी की परम्पराएँ दूसरी को पुरानी और दकियानूसी प्रतीत होती हैं, बल्कि कभी-कभी वह उन्हें हानिकर भी समझती है।

यह बात कुछ हद तक बड़ी कारुणिक है कि अमेरिकन माता-पिता अपने बच्चों को जिस स्वतन्त्रता की शिक्षा देते हैं, वही एक दिन उन्हें उनसे अलग कर देती है। क्या यह सम्भव है कि यह आने वाली स्वतन्त्रता ही बच्चे के प्रति माँ-बाप के रुख को नर्म कर देती हो और वे यह सोचकर कि एक दिन वह स्वतन्त्र होकर उनसे दूर हो जाएगा, एक व्यक्ति के रूप में उसका अधिक सम्मान करते हों ?

जो भी हो, अमेरिकन जीवन में अनेक प्रकार के दबाव ऐसे हैं, जो माता-पिता और सन्तान के सम्बन्ध को कमजोर करते हैं। उसकी शिक्षा का और काफी हद तक उसके मनोरंजन का भी भार स्कूल अपने ऊपर ले लेता है। वह बच्चे के दाँत, आँख और स्वास्थ्य की परीक्षा कराता है, उसे रोग से बचाने के लिए इंजेक्शन आदि की सिफारिश करता है और यदि माता-पिता उसे चश्मा लगवाने या उसके दाँतों का इलाज कराने में समर्थ नहीं होते, तो वह उसकी भी व्यवस्था करता है। जिन बच्चों को विशेष चिकित्सा या परिचर्या की आवश्यकता होती है, उन्हें चिकित्सालयों में भेज दिया जाता है, जहाँ उनका शारीरिक और मानसिक, दोनों प्रकार का इलाज किया जाता है। बालचर और गर्ल गाइड संगठन एवं धार्मिक सम्प्रदायों की सभा-सोसाइटियाँ उन्हें मनोरंजन और सामाजिक मेल-मिलाप का अवसर प्रदान करती हैं। छुट्टियों के दिनों में बच्चा अपने घर में रहकर उसके साथ कुछ ममत्व पैदा कर सकता है, किन्तु उसे यह सुविधा भी अमेरिका में नहीं मिलती, क्योंकि स्कूलों के ग्रीष्म शिविर उन्हें छुट्टियों में भी घर से दूर खींच ले जाते हैं। खाली समय में बच्चे को कुछ अंश कालिक

काम करके पैसा कमाने का अवसर मिल जाता है। इससे भी परिवार पर उसकी निर्भरता कम होती है और उसमें स्वावलम्बी होने की भावना पैदा होती है।

हमारे अर्थतन्त्र में जो परिवर्तन हुआ है और जिसके फलस्वरूप हमारी अर्थ-व्यवस्था अभाव और अल्पता की अर्थ-व्यवस्था से बाहुल्य की अर्थ-व्यवस्था में परिणत हो गई है, उसने भी माता-पिता और सन्तान के सम्बन्ध को कमजोर किया है। जब हमारे समाज में काम कम था और कर्मचारियों को मालिक के शिकंजे में रहना पड़ता था, उस समय पिता घर पर वैसा ही अनुशासन कायम रखता था, जैसा कि दफ्तर या कारखाने में मालिक उस पर रखता था। वह बच्चे को माता-पिता या अपने ऊपर वालों की अधीनता में रहने की शिक्षा देता था ताकि वह संघर्ष में जीवित रह सके। लेकिन आज बाहुल्यमयी अर्थ-व्यवस्था में आदमी काम को तलाश नहीं करता, बल्कि काम ही आदमी को तलाश करता है। इसलिए आज किसी को भी किसी की अधीनता और दबाव स्वीकार करने की जरूरत नहीं है।

विदेशी लोग यह खयाल कर सकते हैं कि इस मामले में हमने उचित सीमा का उल्लंघन कर डाला है। वे कह सकते हैं कि हमारी संस्कृति बच्चे पर केन्द्रित है जिससे हमारी सारी अभिवृत्ति बच्चों जैसी हो गई है, हमने स्वतंत्रता देकर बच्चों को बिगाड़ दिया है; जब उन्हें चुप रहना चाहिए तब हम उन्हें बोलने देते हैं, जब इन्हें आज्ञा-पालन करना चाहिए तब हम उन्हें आदेश के विरुद्ध दलीलें करने से नहीं रोकते और जब उन्हें गुरुजनों के प्रति नम्रता का बर्ताव करना चाहिए तब हम उन्हें उनके साथ उच्छृंखलता और धृष्टता का व्यवहार करने देते हैं। खास तौर से शहरों में, जहां कि पति की भांति पत्नी को भी पैसा कमाने के लिए बाहर काम पर जाना पड़ता है, बच्चे पर कोई अंकुश और अनुशासन नहीं रह जाता और उसके परिणामस्वरूप कभी-कभी उसकी आदतें बिगड़ जाती हैं और वह अपराधी बन जाता है।

यदि हम यह अभियोग स्वीकार भी कर लें, तो भी हम केवल यही उत्तर दे सकते हैं कि संस्कृति एक व्यापक ताना-वाना है और हम अपने बच्चों को स्वतन्त्रता की शिक्षा इसलिए देते हैं कि भविष्य में हमारे प्रतियोगितापूर्ण समाज में उससे स्वतन्त्रता की आशा की जाती है। किन्तु इसका एक कारण और भी है जो हमारी जीवन-पद्धति में अधिक गहरा विंधा हुआ है और वह है किशोरावस्था और यौवन के प्रति हमारा प्रेम। हमारा हर काम हमारे इस यौवन-प्रेम की ओर संकेत करता है और उसे दृढ़तर वनाता है। हमारा सारा कथा-उपन्यास साहित्य युवक-युवतियों के प्रेम पर आधारित है। स्त्रियाँ अपने यौवन को अक्षुण्ण वनाये रखना चाहती हैं, इसलिए वे अपनी सही आयु नहीं बतातीं। बूढ़ी दादियाँ और नानियाँ भी मानो खोये हुए यौवन को फिर से लौटा लाने के लिए जी-तोड़ मेहनत करती हैं, वे युवतियों की तरह छरहरी वनने का यत्न करती हैं, उन्हीं के-से वस्त्र पहनती हैं, वैसा ही शृंगार-प्रसाधन करती हैं और उन्हीं की भाँति चंचल सामाजिक जीवन में सचल रहना चाहती हैं। पुरुष भी सोचते हैं कि चालीस वर्ष की आयु के वाद अधेड़ अवस्था में शायद दफ्तर और कल-कारखाने उन्हें काम पर रखने में हिचकिचाएँ, इसलिए वे भी खूब वन-ठन कर रहने का प्रयत्न करते हैं ताकि चिर-युवा वने रह सकें।

हम यौवन को इतना मूल्यवान क्यों समझते हैं ?

इसके कारण अनेक और सूक्ष्म हैं। इसमें सन्देह नहीं कि अमेरिका को वसाने के लिए वहुत कड़ा परिश्रम करने वाले युवकों की आवश्यकता थी। प्रारम्भ में जो लोग 'तीर्थ-यात्री' वन कर अमेरिका में आये थे, वे सव वीस से चालीस वर्ष तक की आयु के युवक थे। कप्तान जॉन स्मिथ जव अमेरिका पहुँचा था तव उसकी आयु २७ वर्ष थी। संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना करने वाले लोगों में, जिन्होंने स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर किये थे, जैफर्सन की आयु ३३, हैनकॉक की ३९ और टामस लिच, जूनियर की आयु केवल २७ वर्ष थी। इस देश

का निर्माण युवकों की बलिष्ठ मांसपेशियों ने किया था और आज उसके उद्योग जो तरक्की कर रहे हैं, उसके लिए भी यौवन की स्फूर्ति और बल से सम्पन्न युवकों की ही आवश्यकता है।

हमारा समूचा दृष्टिकोण और विचारधारा भविष्याभिमुख है: हम उस भावी स्वर्ग का निर्माण करने में जुटे हुए हैं, जिसमें सिर्फ युवक ही पहुँच सकेंगे। इसलिए युवक हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्रतीक बन गये हैं और यही कारण है कि अपने राष्ट्रीय जीवन में हम प्रगति, पूर्णता की चेष्टा, अग्रसर होने की प्रवृत्ति, सजीव प्रतिस्पर्धा, फुर्तीले परिपुष्ट युवा खिलाड़ियों, स्नान की चुस्त पोशाक पहने सुन्दर सुडौल देहवाली युवतियों, बलदायी औषधियों, यौवन का उभार दिखाने वाली तंग अंगिया, मोटापा घटाने वाली रेचक दवाओं, और बुढ़ापे को छिपाकर यौवन को उभारने वाली बहु-विज्ञापित पोशाकों पर इतना बल देते हैं।

हमारा राष्ट्रीय खेल वेसबॉल भी यौवन, फुर्ती, तीव्र गति और गेंद पर नज़र रखने के लिए शरीर और मन की एकाग्रता पर बल देता है। राष्ट्रीय संगीत जाज़ भी मानो यौवन की अद्भुत भाषा है—उसकी लय, ताल-सुर, थाप, थिरकन, आरोह-अवरोह, आवर्त्तन और सबसे बढ़ कर उसमें भरी उमंग, सब के सब यौवन के प्रतीक हैं। धर्म में भी पिता की तरह परिपालक बूढ़े देवता की हम उपासना नहीं करते, हम आराधना करते हैं शक्ति और ओज से परिपूर्ण नितान्त पार्थिव तरुण देव-पुत्र की, यहां तक कि उसके शिशुरूप की भी। ईसा की सूली पर चढ़ी मूर्त्ति हमें उतना आकृष्ट नहीं करती, जितना उसके शैशव की मूर्त्ति करती है।

नारी का स्थान

आजकल हमारे देश में लड़की तब तक अपनी आजीविका स्वयं कमा सकती है, जब तक कि वह विवाह कर पति न पा ले, और उसके बाद आवश्यकता पड़ने पर वह पति का परित्याग कर फिर अपने पांवों

पर भी खड़ी हो सकती है। पति-परित्याग की यह आशंकित सम्भावना ही नारी को पति से सम्मान दिलाती है। आज हमारे देश में काम करने वाली स्त्रियों में से आधी विवाहित हैं। इसलिए अमेरिका में स्त्री कृषि-प्रधान युग की भाँति आज भी परिवार की एक आर्थिक निधि है। इसका परिणाम यह होता है कि पति भी घर के कामकाज में पत्नी को सहायता देता है और इस प्रकार पुरुष और स्त्री दोनों के काम बहुत-कुछ एक-जैसे हो गये हैं। परिवार में अधिकार और सत्ता दोनों के हाथ में बराबर है और दोनों में से जो दबंग और प्रभावशाली होगा चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, वही नेतृत्व को अपने हाथ में ले लेगा और यह भी सम्भव है कि नेतृत्व में भी दोनों समान साझेदार हों।

स्त्रियाँ कई महत्त्वपूर्ण दृष्टियों से पुरुषों से आगे हैं। स्त्री मत-दाताओं की संख्या पुरुष मतदाताओं से २४,००,००० अधिक है। स्त्रियां पुरुषों से अधिक दीर्घजीवी होती हैं। सन् १९५२ में जो लड़की पैदा हुई थी उसकी जीवन की आशा ७३ वर्ष है, जबकि उसी वर्ष उत्पन्न लड़के की जीवन की आशा ६७ वर्ष ही है। स्त्रियों को फोड़े, हृदय रोग और इसी तरह की अन्य अनेक बीमारियाँ पुरुषों से कम होती हैं। जो कानून किसी समय स्त्री-पुरुष में भेद करता था, वही आज दोनों को बराबर अधिकार देता है, बल्कि कुछ मामलों में वह स्त्रियों को तरजीह देता है। स्त्रियाँ सरकारी पदों के लिए चुनी जा सकती हैं और हाल में ही वे राजदूत और मन्त्री तक के ऊँचे पदों पर नियुक्त हो चुकी हैं। पूँजी-विनियोग में भी वे पुरुषों से कुछ आगे (५१·६ प्रतिशत) हैं।

आज भी अनेक मामलों में पुरुष उनका सम्मान करते हैं। दरवाजे में से उन्हें पहले निकलने दिया जाता है, मेज पर उन्हें पहले बैठाया जाता है और खाना भी उन्हें पहले परोसा जाता है। परिवार में वही सामाजिक निर्णय में पंच होती हैं, वही यह निर्णय करती हैं कि किसका घर में आतिथ्य किया जाए (हालांकि इसमें वे पुरुष की भी अनुमति

ले लेती हैं), कहाँ रहा जाए और किसी को कोई उपहार दिया जाए या नहीं।

वे भी उन विश्वविद्यालयों में जा सकती हैं जहाँ लड़के पढ़ते हैं और वही विषय पढ़ सकती हैं जो पुरुष पढ़ते हैं। वे अब उन होटलों में भी जा सकती हैं, जिनमें पहले केवल पुरुषों को ही प्रवेश की अनुमति थी। वे कोमलांगी होने पर भी कठोर परिश्रम वाले खेलों में हिस्सा ले सकती हैं, अपने पतियों का चुनाव स्वयं कर सकती हैं और यह भी निर्णय कर सकती हैं कि कितनी सन्तानें पैदा की जाएँ। आजकल तो वे पोशाक चुनने में भी स्वतन्त्र हैं। वे चाहें तो पतलून पहन सकती हैं और चाहें तो निकर या जांघिया ही पहन सकती हैं। वे अपने संगठनों और समितियों के द्वारा नागरिक कार्य-कलापों और गति विधियों का निर्देशन कर सकती हैं—आज ६५ प्रतिशत स्त्रियाँ किसी-न-किसी सेवा संगठन की सदस्य हैं। क्लबों, व्याख्यानों, संगीत कार्यक्रमों और निजी अध्ययन से आज स्त्रियाँ हमारे सांस्कृतिक जीवन पर छायी हुई हैं।

विदेशी प्रेक्षक यह खयाल कर सकते हैं कि स्त्रियों का अमेरिकन समाज पर प्राधान्य या प्रभुत्व है। किन्तु स्त्रियाँ इसका उत्तर यह दे सकती हैं कि अभी तक उद्योग, प्रशासन या शिक्षा के क्षेत्रों में उनके पास काफी संख्या में ऊंचे पद नहीं हैं; अच्छे वेतन वाले प्रायः सभी काम पुरुषों के हाथ में हैं और एक जैसा काम करने पर भी पुरुषों से उन्हें कम वेतन मिलता है और घर से बाहर काम करने पर भी उनसे यह आशा की जाती है कि वही घर का भी कामकाज करें। वे यह भी कह सकती हैं कि अभी तक किसी ने ऐसी कोई विधि आविष्कृत नहीं की है जिससे स्त्रियों के बजाय पुरुष बच्चे पैदा कर सकें।

पत्नी से आशा की जाती है कि वह खाना बनाएगी; बच्चे पैदा करेगी; सन्तानें पालेगी; घर की सफाई करेगी; परिवार के सामाजिक कामों की देखभाल करेगी; खरीदारी करेगी; बच्चों को स्कूल, संगीत-

शाला और स्काउट समारोहों में मोटर से पहुँचाएगी और वहाँ से वापस लाएगी; बाग-बगीचा संभालेगी; समाज-सेवा करेगी; क्लब में जाएगी; अच्छा पड़ोसी-चारा निभाएगी और सबसे बढ़कर पति की सखी, सचिव, सहधर्मिणी और यौन सम्बन्धों की साथिन बनेगी।

नारीत्व का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है। बहुत-सी स्त्रियाँ जब अपने लिए नई आजादियों और नई जिम्मेदारियों को पाने का प्रयत्न करती हैं तो नारीत्व से दूर चली जाती हैं। इससे कुछ स्त्रियाँ बेचैन हो जाती हैं और अपनी इस आन्तरिक अशान्ति को छिपाने के लिए दिन-रात अपने आपको काम में खपाये रखती हैं। किन्तु नारी ने भी बीरान अमेरिका को आबाद करने में पुरुष के साथ मिलकर योग दिया था, उसने भी जंगल काटे थे और पुरुष की बगल में रहकर लड़ाई लड़ी थी। अपनी इस पुरानी शक्ति और दृढ़ता से अब वह अपने नये आधुनिक जीवन के साथ भी ताल-मेल कायम कर रही है।

पुरुष आज भी मुख्यतः बाहर जाकर आजीविका उपार्जन करते हैं और स्त्रियाँ घर को बनाती हैं। किन्तु धीरे-धीरे अब दोनों के काम में एकता और समानता आती जा रही है, जिससे समाज में दोनों वर्ग समान होते जा रहे हैं। यदि अमेरिकन जीवन में सजीव विकास का कोई एक सिद्धान्त काम कर रहा है तो वह है समानता की दिशा में प्रगति, फिर चाहे वह नर-नारी के बीच हो, पिता-पुत्र के बीच हो, वर्ग-वर्ग के, नौकर-मालिक के, अध्यापक-छात्र के, या बेयरा और ग्राहक के बीच हो। कभी-कभी यह समानता इतनी बढ़ जाती है कि बाहर के लोग होटल में बेयरा के समानता और सुपरिचय के भाव को उद्धतता और टैक्सी-ड्राइवर के आत्मीयता भरे बातूनीपन को उच्छृंखलता समझने लगते हैं। किन्तु हमारे लिए ये उसकी इस भावना के द्योतक संकेत हैं कि "मैं भी तुमसे उन्नीस नहीं हूँ और संभव है, तुम से इक्कीस ही होऊँ।"

पुराने रूढ़िवादी कह सकते हैं कि विवाह और दाम्पत्य में यह समानता ही अमेरिका में तलाकों की भारी संख्या का कारण है—यहाँ करीब बीस प्रतिशत विवाह तलाक से विच्छिन्न हो जाते हैं। दूसरे लोग इसके लिए उत्तरदायित्व-हीनता या अधार्मिकता को दोषी ठहराते हैं, हालांकि आज गिरजाघर में जाने वालों की संख्या पहले हमेशा से अधिक है।

तलाक अल्प आय वाले श्रमजीवी और कर्मचारी वर्ग में अधिक पाया जाता है, जबकि मध्यवर्ग के लोगों या डाक्टरी, वकालत अथवा इंजीनियरिंग आदि पेशों में लगे लोगों में वह अपेक्षाकृत कम है। छोटे कस्बों की अपेक्षा बड़े शहरों में, दक्षिण और उत्तरपूर्व की अपेक्षा पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में, और शिक्षितों की अपेक्षा अशिक्षितों में वह अधिक है।

जो भी हो, यह निश्चित है कि स्त्री-पुरुष इच्छा के विरुद्ध असन्तोषजनक दाम्पत्य सम्बन्ध में बँधे रहने को तैयार नहीं हैं। वे दुःखमय जीवन बिताने के बजाय तलाक का सामाजिक कलंक ओढ़ने के लिए अधिक उद्यत रहते हैं। तलाक की घटनाएँ आम-फहम हो जाने से अब तलाक देना कलंक या लांछन नहीं समझा जाता। फिर भी सब प्रकार की मनोवैज्ञानिक सहायताएं देने और विवाह को सफल बनाने की सुनिश्चित योजनाएँ बनाने के बावजूद तलाकों की संख्या कम क्यों नहीं हो रही ?

कानून से विवाह और तलाक, दोनों को कठिन बनाने का प्रयत्न किया गया है। कानून ने अब सामान्य नियम को बदलकर यह व्यवस्था कर दी है कि यदि पति और पत्नी दोनों ही व्यभिचार जैसे तलाक-योग्य अपराध के दोषी हों तो तलाक की अनुमति नहीं दी जाएगी। यह अनुमति तभी दी जा सकती है जब कोई एक पक्ष ही इस अपराध का दोषी हो। बत्तीस राज्यों ने यह भी कानून बना दिया है कि केवल पति या पत्नी की गवाही अथवा एकतरफा बयान के आधार पर ही तलाक की स्वीकृति नहीं दी जाएगी। सिर्फ नेवाडा इसका अपवाद है

और यही कारण है कि इतनी अधिक संख्या में लोग तलाक लेने-देने के लिए रेनो जाते हैं।

आजकल अधिकतर तलाक विवाह के बाद तीसरे साल लिये जाते हैं और उनमें से दो-तिहाई तलाक लेने वाले निःसन्तान पति-पत्नी होते हैं। इस प्रकार ये लोग विवाह सम्बन्ध को अवश्य तोड़ते हैं, पर बने-बनाये परिवार को नहीं तोड़ते। इसके अलावा तलाक लेने वालों में से सत्तर प्रतिशत फिर विवाह कर लेते हैं और यह आशा करते हैं कि उनका नया विवाह सफल होगा। अमेरिका में युवक-युवतियाँ अपने लिए जीवन-संगी का चुनाव जिस तरह मनमाने ढंग से बिना किसी निश्चित सिद्धान्त के करते हैं, उससे इतनी बड़ी संख्या में तलाकों का होना कदापि आश्चर्यजनक नहीं है। सिर्फ वही तलाक अधिक गम्भीर होते हैं जिनमें सन्तानों का भी विच्छेद और बिछोह हो जाता है।

अपराधवृत्ति—बाल या वयस्क ?

तलाक के कारण 'टूटे परिवारों के बच्चों में सुरक्षित और स्थिर परिवारों के बच्चों की अपेक्षा सामाजिक आचार के स्तर के सम्बन्धों में अधिक सन्देह पैदा होते हैं और वही इस आचार के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। जिन बच्चों के साथ उनकी जाति या ऊँच-नीच के कारण भेदभाव किया गया है और जो गन्दी बस्तियों में पले हैं, उनके लिए जीवन और भी कठोर होता है। ये बच्चे स्कूल और समाज में दूसरों के साथ किये जाने वाले पक्षपातपूर्ण व्यवहार को बहुत स्पष्टता और गहराई से अनुभव करते हैं। इसलिए अपने साथ भेदभाव करने वाली संस्थाओं से अलग हो जाते हैं और फिर उन पर प्रहार करने के लिए परस्पर संगठित हो सकते हैं। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की प्रशंसा सुनने और उसे देशभक्ति का काम बताये जाने के कारण वे उन संस्थाओं के प्रति विद्रोह कर अपनी ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करते और उसमें आत्म-सन्तोष अनुभव करते हैं। सबसे अधिक गम्भीर अपराध वे हैं, जिन्हें विभिन्न जातीय वर्ग गरीबी, अज्ञान और भेदभाव से प्रताड़ित

होकर, समाज में फिर से सन्तुलन स्थापित करने के लिए सिर्फ इस कारण अपनाते हैं कि उनके पास इसके सिवा और कोई मार्ग नहीं होता।

बच्चों में अपराध-वृत्ति का फैलना अमेरिकन समाज की एक बहुत बड़ी कमजोरी और असफलता है। इसके जो कारण ऊपर बताये गये हैं, वास्तविक कारण उनसे बहुत अधिक गहरे और जटिल हैं। युद्ध और युद्ध के बाद की स्थिति; खराब आवास-व्यवस्था, माता-पिता का मजदूरी करना और काम की खोज में एक स्थान पर न रह कर इधर-उधर भटकते रहना; गरीबी और झगड़ालू परिवार की दुःखद परिस्थितियों की क्षति-पूर्ति के लिए किसी लोम-हर्षक कार्य की आकांक्षा और नित्य बदलते नैतिक पैमानों के कारण नैतिकता की किसी एक सुनिश्चित और स्थिर धारणा का अभाव—ये कुछ ऐसे कारण हैं जो बाल-अपराध-वृत्ति के पोषक हैं। यह समझना भूल है कि बाल-अपराध बच्चों की सामान्य विकृति है जिसका निवारण साधारण दंड से किया जा सकता है। बाल-अपराध के कारणों की जड़ वास्तव में समाज के भीतर है। जातीय या वर्गीय भेदभाव, पृथक्करण, गरीबी और अज्ञान को जितना अधिक नियन्त्रित किया जाएगा, बाल-अपराध उतने ही कम होंगे। जो नागरिक गन्दी बस्तियों के उन्मूलन और अच्छी आवास-व्यवस्था और मनोरंजन के साधनों के विरुद्ध मत देता है और जो समाज में जाति और वर्ग के आधार पर भेदभाव करता है, वही असल अपराधी है। ऐसे लोग अक्सर यह स्वीकार नहीं करते कि भेदभाव और असमानता को खत्म करना बाल-अपराधों का इलाज है, बल्कि वे यह तर्क देते हैं कि समाज के दलित और शोषित वर्ग में चूंकि बाल-अपराध की वृत्ति है, इसलिए उसे भेदभाव के द्वारा अपने से दूर रखना चाहिए।

यद्यपि यह समस्या बहुत गम्भीर है तो भी अमेरिकन लोग विश्वास-पूर्वक कह सकते हैं कि इसका समाधान असम्भव नहीं है, क्योंकि अपने सुदीर्घ इतिहास में अमेरिकनों ने कितने ही देशों और जातियों के आप्रवासियों को अपने साथ आत्मसात् किया है। जैसे-जैसे लोगों

के आम रहन-सहन का स्तर ऊँचा हो रहा है, इस समस्या के हल में भी सहायता मिल रही है। इसी तरह सामाजिक विज्ञानों की सहायता से प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्त्ता भी बाल-अपराध की समस्या का अध्य-कर रहे हैं। इस दिशा में एक अन्य कदम बाल-न्यायालयों की स्थापना है, जो अपराधी बालकों को अपराधी की तरह दंड देने के बजाय सहानु-भूतिपूर्वक उनकी समस्याओं पर विचार कर और आवश्यकतानुसार उनके मानसिक रुझान में परिवर्त्तन कर, उनको सुधारने का प्रयत्न करते हैं।

देश में बाल-अपराध की समस्या के सुधार के लिए कितनी ही योजनाओं पर अमल हो रहा है। पेनसिलवेनिया में बाल-अपराध न्याया-लय के न्यायाधीश ने अपनी रोटरी क्लब को यह प्रेरणा दी कि वह बाल-सुधार के लिए सुधार संघ की स्थापना करे, जो किसी भी प्रकार का आर्थिक लाभ उठाए बिना यह काम करे और इसके लिए धन-संग्रह कर एक सुधार-अधिकारी नियुक्त करे। उसके बाद उसने एक स्वयं-सेवक समिति बनाने का सुझाव दिया जिसके सदस्य आवश्यकता पड़ने पर सुधार-अधिकारी को सहायता दें। इस कार्यक्रम का एक उद्देश्य जनता को यह समझाना था कि बाल-समस्याएँ सारे समाज की सम-स्याएँ हैं और बाल अपराधों को रोकने के लिए दंड से बेहतर यह है कि इन अपराधों के कारण दूर किए जाएँ। यह अमेरिकन जीवन की ही एक विशेषता है कि एक न्यायाधीश ने इस समस्या के हल के लिए सरकार का आश्रय लेने के बजाय जनता के एक स्वेच्छयानिर्मित स्वयंसेवी संगठन की सहायता ली। सरकार इस समस्या के हल के लिए मानसिक चिकित्सकों या इसी प्रकार के अन्य पेशेवर लोगों की सहायता तो दे सकती है, परन्तु वह समाज को या किसी विशेष संगठन को इस बात के लिए प्रेरित नहीं कर सकती कि वह सारे समाज के सामान्य कल्याण और हित को दृष्टि में रखकर पहले अपने सदस्यों की

मदद से, और फिर अन्य लोगों की भी सहायता लेकर इस तरह की समस्याओं के समाधान का उद्योग करे।

सुधार-अधिकारी को यहाँ जिन बहुत-से बच्चों के मामलों को अपने हाथ में लेना पड़ा, उनमें से एक बालक फ्रैंक था। यह लड़का अक्सर घर और स्कूल से भाग जाता था और अनेक छोटी-मोटी चोरियाँ भी कर चुका था। अधिकारी ने उसके मामले का अध्ययन कर मालूम किया कि फ्रैंक गणित में होशियार है। उसने उसे स्कूल के समय के बाद करने के लिए एक ऐसा काम दिला दिया, जिसमें वह अपनी गणित की योग्यता का उपयोग कर सकता था। उसने यह भी मालूम किया कि फ्रैंक को पुरानी कारों की मरम्मत का बहुत शौक है। जब इस सुधार संघ को किसी दानी ने १९४० के माडल की एक पुरानी कार दान में दी तो फ्रैंक के लिए दूसरा महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाया गया। फ्रैंक अब इन दोनों कामों में इतना व्यस्त रहता था कि समाज-व्यवस्था का प्रतिरोध करने या उसे चुनौती देने का वक्त ही उसे नहीं मिलता था। उसकी जो शक्ति और भावनाएँ उसे गम्भीर अपराधों की ओर ले जा सकती थीं, वही अब अच्छे कामों में लग गईं।

किशोर वय के बालकों को सबसे अधिक आवश्यकता इस अनुभूति की है कि समाज को उनकी आवश्यकता है और वे प्रौढ़ों और वयस्कों की दुनिया में कुछ उपयोगी काम कर सकते हैं। इसलिए समाज में उपयोगी और लाभकारी काम की उनकी इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए सारे देश में अनेक सफल कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं। इनमें से कुछ काम स्वयं किशोरों ने ही चलाए हैं। पैस्काक (न्यू जर्सी) में एक अस्पताल की बहुत अधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही थी, जिसके लिए धन-संग्रह करने को किशोरों का संगठन बनाया गया। इस संगठन ने धन-संग्रह के लिए नृत्य कार्यक्रमों के आयोजन से लेकर डायरेक्टरियाँ बाँटने और एक मकान के मॉडल के प्रदर्शन के टिकट बेचने तक, सभी तरह के काम किए। किशोरों को थोड़ा-सा पथप्रदर्शन

देकर ही उनकी शक्ति को उपयोगी कामों में लगाया जा सकता है। इससे किशोरों को परिपक्व होकर समाज के जीवन में अपना उपयुक्त स्थान बनाने में भी सहायता मिलती है।

वृद्ध नागरिक

बाल-समस्या के साथ-साथ देश में वृद्धों की भी समस्या है। दोनों की समस्याओं का कारण एक ही है और वह है उनकी उपेक्षा। हमारा द्रुतगामी, गतिशील और कठोर-परिश्रमी औद्योगिक समाज अभी तक किशोरों और वूढ़ों की शक्ति और योग्यता को उपयोग में लाने के लिए कोई उपयुक्त रास्ता नहीं निकाल सका है। किशोरों को ऐसे ज़िम्मेदारी के काम नहीं मिलते, जिनमें वे अपनी शक्ति का उपयोग कर सकें। इसी तरह वूढ़े भी अपने उपयुक्त कामों से अपने आपको वंचित अनुभव करते हैं। लोगों से ६५ वर्ष की आयु में और हो सके तो ६० ही वर्ष की आयु में कामों से अवकाश ग्रहण कर लेने की आशा की जाती है।

हाल में ही वूढ़ों की संख्या में काफी वृद्धि हो जाने से एक नई किस्म की चिकित्सा-प्रणाली—वृद्ध-चिकित्सा—प्रारम्भ हुई है। साथ ही इन वयोवृद्धों को काम में लगाए रखने के लिए कुछ सामुदायिक कार्यक्रमों की भी शुरुआत हुई है। समाजसेवी संगठनों द्वारा उनके लिए क्लवें बनाई जा रही हैं और उन्हें अपने लिए खेल, शिल्प, नृत्य, शौकिया काम या पढ़ने के अथवा बैठकर गपशप करने के प्रोग्राम बनाने का प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

एक महिला ने अपने वूढ़े पिता पर इस तरह के कार्यक्रम का प्रभाव देखकर एक वार कहा : "उनकी अब कई तरह के कामों में दिलचस्पी हो गई है। अब वे विल्कुल नई किस्म के आदमी हो गए हैं।"

स्वयं एक वूढ़े ने भी कहा : "यह तो खूब आश्चर्यजनक वात रही। यकीन मानो मेरे लिए तो इससे स्वर्ग ही धरती पर उतर आया है।"

सरकार द्वारा प्रारम्भ किए गए सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम ने भी स्थिति को बहुत बदला है। जो लोग पहले यह समझते थे कि बुढ़ापे में उन्हें दूसरों पर निर्भर रहना पड़ेगा, वे अब इस कार्यक्रम के अन्तर्गत पेन्शन आदि मिलने से बहुत सुखी अनुभव कर रहे हैं। यद्यपि यह पेन्शन बहुत मामूली होती है तो भी उससे बूढ़े पति-पत्नी आसानी से अपना सीधा-सादा निर्वाह कर सकते हैं, बशर्ते कि उनके पास अपना निज का घर हो और विधुर या विधवा भी बुढ़ापे में अपने लड़के या लड़की के साथ रहते हुए इससे अपना खर्च स्वयं दे सकते हैं। जिन लोगों को बुढ़ापे में अधिक शारीरिक असमर्थता के कारण देख-रेख और परिचर्या की जरूरत होती है वे गैर-सरकारी संगठनों या व्यक्तियों द्वारा चलाये जाने वाले वृद्ध परिचर्या-गृहों में रहने जा सकते हैं। ये वृद्ध परिचर्या-गृह यद्यपि हाल में ही प्रारम्भ किए गये हैं तो भी देश में ये आम हो गये हैं। यहाँ चालीस डालर या इससे अधिक प्रति सप्ताह देकर आदमी बुढ़ापे में मजे से रह सकता है और सब प्रकार की चिकित्सा, सेवा और परिचर्या पा सकता है। बूढों में सबसे अधिक दयनीय दशा सम्भवतः उन लोगों की है जो बड़े शहरों में कमरे किराये पर लेकर रहते हैं, जिनका जीवन अकेलेपन में बीतता है, जो रेस्तोराँ में जाकर अकेले दो-चार गस्से खाकर किसी तरह अपने आपको जीवित रखते हैं या पार्कों में जाकर कबूतरों को दाना चुगा कर जीवित प्राणियों के साथ सजीव सम्पर्क की अपनी अतृप्त आकांक्षा को पूरा करने का यत्न करते हैं। किन्तु अब ऐसे बूढ़ों के लिए भी साथी जुटाने की अधिकाधिक व्यवस्था की जा रही है।

डाक्टरी या किसी अन्य पेशे में लगा व्यक्ति अवकाश ग्रहण करने के बाद बुढ़ापे में अपने पेशे के ज्ञान से समाज की सेवा भी कर सकता है। सभी नगरों और कस्बों में ऐसे स्वयंसेवी संगठन भरे पड़े हैं, जो नागरिकों का स्वास्थ्य सुधारने, उनके मनोरंजन की व्यवस्था करने और उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए तरह-तरह के आयोजन करते हैं। इन

सभी संगठनों को स्वयंसेवी लोगों की आवश्यकता होती है। बूढ़े नागरिक लोग स्वयंसेवक के रूप में जो काम करते हैं उससे समाज का जीवन और भी समृद्ध होता है।

सामाजिक विज्ञान-वेत्ताओं का कहना है कि पुरानी पीढ़ी की प्रतिष्ठा और प्रभाव अब पहले जैसा नहीं रहा और कुछ हद तक यह बात सही भी है। फिर भी बूढ़े दादा या नाना अपने लड़कों के सलाहकार और नाती-पोतों के खेल के साथी के रूप में आज भी परिवार में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अमेरिकन बच्चे दादा-नाना के यहाँ जाने पर या उनके अपने यहाँ आने पर बहुत खुश होते हैं। बच्चे नानी या दादी के सिलाई और पकवान बनाने के काम को खूब पसन्द करते हैं और उनके मुँह से पुराने जमाने की कहानियाँ बड़े चाव से सुनते हैं। बूढ़ों को बच्चों के साथ घुलने-मिलने के लिए वक्त निकाल कर बड़ी खुशी होती है, क्योंकि दोनों में एक बड़ी समानता है; दोनों ही जीवन की तेज गति से घूमने वाली चकरघिन्नी के किनारे पर खड़े हैं—बच्चे उसमें प्रवेश करने के लिए और बूढ़े उससे बाहर निकलने के लिए। बूढ़ों में बच्चों के लिए एक बड़ा रोमांचक रहस्य छिपा रहता है—वे उन्हें अनदेखे अतीत का मूर्तिमान इतिहास समझते हैं। बूढ़े लोग उस परिवार की, जिस पर बच्चे आश्रित होते हैं, सुरक्षा, स्थायित्व और सतत-प्रवाह की गारंटी हैं। किसी परिवार में लोगों का सत्तर या अस्सी वर्ष की लम्बी आयु भोगना उसकी प्रतिष्ठा, इज्जत और शक्ति को बढ़ाता है। और यह बात आज भी पहले की भाँति विद्यमान है।

यद्यपि परिवार के बहुत-से काम आज अन्य संस्थाओं ने ले लिए हैं, फिर भी परिवार ही अपने सदस्यों के भावनात्मक जीवन का केन्द्र है, वही उनकी गहरी निष्ठाओं और वफादारियों का मध्यवर्ती बिन्दु है, उनकी सर्वप्रथम और फलतः सबसे प्रबल अभिवृत्तियों का स्रोत और लोकतन्त्र की शिक्षा का प्रशिक्षण-स्थल है। माता-पिता कभी-कभी अपने अज्ञान या निराशा से उनमें अनेक हानिकर अभिवृत्तियाँ

या स्वंये पैदा कर देते हैं। फिर भी माता-पिता द्वारा दिए गए इस प्रशिक्षण से, चाहे वह कितना ही दोष-पूर्ण हो, ले-दे की प्रवृत्ति का द्वार खुल जाता है और आदान-प्रदान की यह प्रवृत्ति हर व्यक्ति में होनी चाहिए। जब यह प्रवृत्ति अपना काम अच्छी तरह करने लगती है तब वह देश में ऐसे नागरिक तैयार करती है जो अपने परिवार से पाये प्रेम को समूचे मानव समाज के साथ अपने व्यवहार में उंड़ेलने के लिए उद्यत रहते हैं।



अध्याय : पाँच

अमेरिकन चरित्र

जिस तरह अँग्रेजों, तुर्कों और चीनियों के चरित्र की कोई एक निश्चित बनत नहीं बताई जा सकती, वैसे ही अमेरिकनों के चरित्र की भी कोई एक बनत नहीं है। अमेरिका में व्यक्तित्व किसी एक निश्चित आकार का नहीं है, बल्कि वह बहुत पेचीदा और विविधतापूर्ण है क्योंकि यहाँ नाना जातियों और नाना संस्कृतियों से लोग आये हैं, संसार के सभी भागों से आप्रवासियों की लहरें एक के बाद एक यहाँ आती रही हैं और यहाँ के विविध प्रदेश भी एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं। फिर यहाँ धार्मिक विश्वास भी अनेक प्रकार के हैं और उनके अनुयायियों पर उनके असर भी अलग-अलग ढंग के हैं। फिर विभिन्न पीढ़ियों ने भी अमेरिकन व्यक्तित्व में विविधता और वैचित्र्य ला दिया है—पहली पीढ़ी आप्रवासी की थी और दूसरी उसकी सन्तानों की और तीसरी इन सन्तानों की भी सन्तानों की।

यद्यपि लोगों में इन सभी विभिन्न और विविध अमेरिकनों को एक में ही मिलाने और गड़बड़ा देने का प्रलोभन रहता है, तो भी जो लोग अधिक गहराई में जाते हैं, वे अमेरिकन जीवन में पायी जाने वाली इस विविधता और आत्म-विरोधों पर हैरान रह जाते हैं। यह सही है कि अमेरिकन लोग सब मिलाकर काम में बड़े परिश्रमी होते हैं, किन्तु वे खेल और आत्म-विनोद में भी कम हिस्सा नहीं लेते। वे संसार के किसी भी अन्य देश के लोगों की अपेक्षा यात्रा करने, बाहर जाकर छुट्टी मनाने, शिकार खेलने, खेल खेलने, पीने-पिलाने, धूम्रपान करने, सिनेमा और टेलीविजन देखने और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने में समय और धन अधिक खर्च करते हैं। लेकिन इसके बावजूद वे गिरजाघरों,

समाज-सेवाओं, अस्पतालों और सभी प्रकार के दान-पुण्य के कामों पर भी अधिक पैसा खर्च करते हैं। वे हमेशा जल्दी में रहते हैं, फिर भी दूसरों से अधिक विश्राम करते हैं। वे व्यक्ति के अधिकारों के प्रति सजग रहते हैं और साथ ही आदतन रूढ़िवादी भी होते हैं। वे बड़प्पन और महानता की पूजा करते हैं, परन्तु साथ ही छोटे आदमी की भी, चाहे वह व्यापार में हो या किसी अन्य क्षेत्र में, इज्जत करते हैं।

सफलता का लक्ष्य

एक बात जिसे सभी लोग स्वीकार करते हैं, स्वयं अमेरिकन भी, यह है कि अमेरिका के लोग सफलता को बहुत महत्त्व देते हैं। सफलता का अर्थ भौतिक समृद्धि पाना ही नहीं है, बल्कि किसी भी प्रकार का बड़ा सम्मान या इज्ज़त पाना है। यदि कोई लड़का व्यापारी बनने के बजाय धर्म-प्रचारक बनना पसन्द करे तो उसमें कुछ बुराई नहीं है किन्तु धर्म-प्रचारक बनने के बाद वह जितने बड़े चर्च में और जितने बड़े जन-समुदाय के सामने धर्मोपदेश करेगा, उतना ही वह सफल समझा जाएगा।

अमेरिकानों में सफलता की पूजा की इस भावना के अनेक कारण है। उदाहरण के लिए शुद्धाचारवादियों का यह विश्वास था कि काम करना अपने आप मे तो अच्छा है ही, लेकिन इसलिए वह और भी अच्छा है कि उसका जो पुरस्कार मिलता है, वह ईश्वर के प्रेम का प्रतीक है। दूसरी बात यह है कि अमेरिका एक विशाल देश है और प्राकृतिक सम्पदाओं के विपुल भंडार के कारण उसमें बसने और सफलता पाने के अवसर भी असाधारण रहे हैं। वहां कोई ऐसी स्थिर और सुस्थापित समाज-व्यवस्था नहीं थी जो ऊँच-नीच का वर्ग-भेद करती, इसलिए हर आदमी को अपने प्रयत्न, उद्यम और अध्यवसाय से बड़ा और सफल बनने का अवसर था।

यहां आने वाले आप्रवासी इस बात के लिए दृढ़-संकल्प थे कि पुरानी दुनिया में जिन वस्तुओं से वे वंचित रहे थे, उन्हें नई दुनिया

में प्राप्त करके रहेंगे और उनकी सन्तानें इस बात के लिए कटिबद्ध थीं कि वे और भी सफलता प्राप्त कर और वर्गहीन अस्थिर समाज में और भी ऊँची सीढ़ी पर चढ़कर आप्रवासीपन का चिह्न अपने ऊपर से उतार फेंकेंगी। अमेरिका में यूरोप की भाँति लड़के परिवार के भीतर माता-पिता की विशेष कृपा या प्रेम पाने के लिए प्रयत्न नहीं करते, बल्कि बाहरी दुनिया में अपने मन के मुताबिक चुने हुए मार्ग पर चलकर सफलता पाने का उद्योग करते हैं।

जो समाज प्रतिस्पर्धा को इतना महत्त्व देता है, उसका आक्रामक होना स्वाभाविक है, हालाँकि कानून, उसकी आक्रामकता को एक निश्चित सीमा में बाँध देते हैं। उसमें एक प्रकार की कठोरता होती है, जो उसकी अर्थव्यवस्था के लिए तो अच्छी चीज है, किन्तु कुछ व्यक्तियों के लिए वह कष्टकर हो सकती है। जिन दिनों हम लोग निरन्तर आगे बढ़ते हुए अमेरिका को आबाद कर रहे थे, उन दिनों हमारे अस्तित्व को बचाये रखने के लिए यह आक्रामक वृत्ति आवश्यक थी, परन्तु आज वह समाज के लिए खतरनाक हो सकती है। जो कारखाना-मजदूर अपने आगे बढ़ने के रास्ते को बन्द पाता है और वर्षों तक निरन्तर एक ही काम पर लगा रहता है, उसकी आगे बढ़ने की आक्रामक वृत्ति जातीय घृणा या कारखाने के मालिकों से झगड़े के रूप में बाहर उभर सकती है और यह भी सम्भव है कि वह शराबी बनकर, दुर्घटनाओं में लिप्त होने की प्रवृत्ति अपनाकर या रुग्ण-तांत्रिक व्यवहार करके अपने ही विरुद्ध आक्रामक बन जाये।

सफलता को बहुत अधिक महत्त्व दिया जाने के कारण सफलता के पुरस्कार भी बहुत ऊँचे हैं। संयुक्त राज्य में लोग धन को सिर्फ धन की खातिर नहीं चाहते; धन केवल सफलता का प्रतीक या साधन मात्र है। मनुष्य का दर्जा और सामाजिक स्थिति बढ़ने के साथ-साथ उसकी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती जाती हैं। सैकड़ों स्वयं-सेवक संस्थाएँ उससे उदार दान की आशा करती हैं। ये संस्थाएँ इस दान से समाज

की सेवा करती है। प्रतिष्ठित व्यक्तियों के परिचय ग्रन्थ पर एक नज़र डालिये तो आपको ऐसे कितने ही प्रतिष्ठित और प्रमुख व्यापारियों के नाम मिल जाएँगे, जिनका सम्बन्ध सार्वजनिक सेवा और कल्याण के लिए संगठित बहुत-सी समितियों और धंधों से होगा।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि सफलता और प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्न करने की यह वृत्ति असल में अपने अन्दर विद्यमान भयों और अन्दरूनी खोखलेपन पर विजय पाने का ही एक उपाय है। एक सचल और गतिशील समाज में एक परिश्रमी और अध्यवसायी व्यक्ति दूसरों के साथ अपनी तुलना या प्रतिस्पर्धा करने और यथासम्भव आगे बढ़ने की प्रवृत्ति से किसी भी तरह बच नहीं सकता।

इस प्रकार की सामाजिक प्रणाली उन लोगों के लिए अवश्य अच्छी है जिनमें सफल होने की क्षमता और लगन है, किन्तु साधारण किस्म के आदमी के लिए वह अच्छी नहीं है। ऐसे समाज में असफलता का भय, प्रतिस्पर्धियों का डर और आत्मसम्मान की हानि की आशंका साधारण व्यक्ति के लिए दुर्वह बोझ बन सकती हैं। इसलिए ये लोग प्रेम की अत्यधिक आकांक्षा करने लगते हैं ताकि मन पर पड़े इस बोझ और तनाव को कम कर सकें। इस तरह प्रेम और सफलता को वे परस्पर जोड़ देते हैं। गोरर का खयाल है कि अधिकांश अमेरिकन वयस्क होने से पूर्व ही यह धारणा बना लेते हैं कि सफल होने का अर्थ है प्रेम का पात्र होना और प्रेम का पात्र होने के अर्थ है सफल होना। इस धारणा को बनाने में माताओं का भी हाथ रहता है, क्योंकि वे स्कूल में सफल होने पर बच्चों को प्यार करती हैं और असफल होने पर प्यार नहीं करतीं।

बच्चे के लिए एक वर्ग से ऊपर उठकर दूसरे वर्ग में जाने पर कोई रोक नहीं है, उनके लिए यह बाधा नहीं है कि उसे केवल अपने पैतृक व्यवसाय को ही अपनाना पड़ेगा और न उनकी शिक्षा के लिए कोई सीमा है, इसलिए सिद्धान्ततः यह समझा जाता है कि उनके लिए

उपलब्धि और सफलता की भी कोई सीमा नहीं है। ऐसी दशा में ऐसी कोई जगह नहीं है, जहाँ पहुँचकर बच्चा यह कह सके कि मैं अपनी मंजिल पर पहुँच गया हूँ और अब मेरा काम सिर्फ इस मंजिल पर दृढ़ता से जमे रहना है। सिद्धान्ततः कोई भी लड़का देश का राष्ट्रपति बन सकता है, इसलिए उसका यह नैतिक दायित्व हो जाता है कि वह उसके लिए प्रयत्न करे। मनुष्यों को उनके वर्ग से नहीं, उनकी उपलब्धि और सफलता से नापा जाता है। धनी या उच्च वर्ग में पैदा होना कोई गर्व की बात नहीं है, असली परख और कसौटी यह है कि जिस जगह से मनुष्य प्रारम्भ करता है, वहाँ से वह कितना आगे बढ़ा है।

अमेरिकन काम से प्यार करते हैं। काम उनके लिए मांस और शराब की तरह आवश्यक और प्रिय है। हाल के कुछ वर्षों में उन्होंने खेलना भी सीखा है, परन्तु खेल को भी वे काम बना लेते हैं। उदाहरण के लिए यदि उन्हें बर्फ पर स्की से फिसलने का खेल खेलना है तो वे उसे भी खेल की तरह नहीं खेलेंगे, बल्कि उसमें इतने जोर से अपने आपको झोंक देंगे कि उससे एक घोड़ा भी मर जाए। छुट्टी मनाने के लिए वे यात्रा पर जाएँगे, पर एक-एक दिन में पाँच-छः सौ मील का सफर कर डालेंगे। प्राकृतिक दृश्य का आनन्द लेने जाएँगे तो साठ मील प्रति घंटे की चाल से मानो उड़ते जाएँगे, सिर्फ तभी रुकेंगे, जब फोटो खींचना चाहेंगे और फिर घर लौटकर इन तस्वीरों को देखकर ही वे यह जान सकेंगे कि वे क्या देखने गए थे।

अभी कुछ समय पहले तक इस देश में करने को बहुत काम पड़ा था। प्रारम्भ में सभी किस्मों और परिस्थितियों के लोगों को काम करना पड़ता था। धर्म-प्रचारक को पेड़ काटने और खेत जोतने पड़ते थे। अध्यापक, डाक्टर और मजिस्ट्रेट, सभी को अपनी सर्वसामान्य रक्षा के लिए बन्दूक कन्धे पर उठानी पड़ती थी। किसानों को अपने लिए औज़ार, घोड़े की ज़ीन और घरेलू सामान बनाना पड़ता था। वह लुहार, बढ़ई, टीन-डिब्बे वाला, शराब खींचने वाला और पशु

चिकित्सक, सब-कुछ स्वयं ही था और उसकी पत्नी भी कत्तक, बुनकर और डाक्टर सभी-कुछ थी।

भौतिकवाद

अमेरिका आने के लिए अपना सर्वस्व बाज़ी पर लगा देने वाले नर-नारी आम तौर पर गरीब थे। उन्होंने बहुत कड़ी मेहनत की और यहाँ अपना निज का कारोबार खड़ा करने या फार्म खरीदने के लिए नंगे-भूखे रह कर भी पैसा बचाया। जिस स्वतन्त्रता का मोह और आकर्षण उन्हें महासागर के पार यहाँ खींच कर लाया वह वोट देने की स्वतन्त्रता नहीं थी, बल्कि स्वयं अपनी सम्पत्ति का स्वामी बनने की स्वतन्त्रता थी। इसलिए यह स्वाभाविक था कि वे अपने निज के प्रयत्न से अर्जित ज़मीन और व्यवसाय को इतना महत्त्वपूर्ण और मूल्यवान् समझते।

समुद्र पार से नये आने वाले इन आप्रवासियों की अर्जन और अवाप्ति की इस स्वाभाविक आकांक्षा के बावजूद अमेरिका में धन के प्रति लोगों का रवैया बिल्कुल भिन्न है। जैसा कि जर्मन मनोविज्ञान-वेत्ता ह्यूगो मुन्स्टरबर्ग ने कहा है, "अमेरिकन जो सोना प्राप्त करता है, उसे वह अपनी योग्यता के प्रमाण के रूप में ही सम्मान और महत्त्व देता है.... इसलिए उसे भौतिकवादी कह कर निन्दित करना और उसकी आदर्शवादिता से इन्कार करना बुनियादी तौर पर गलत है...... अमेरिकन व्यापारी के लिए यह कहना कि वह धन के लिए काम करता है, सिर्फ उतना ही सही है जितना कि किसी चित्रकार की कला की प्रशंसा करते हुए यह कहना कि वह पैसे के लिए चित्र बनाता है।"*

धन की प्राप्ति इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि वह सफलता का सबसे स्पष्ट प्रमाण है, हालांकि समाज में प्रमुखता, सार्वजनिक लोगों का ध्यान आकृष्ट होना, अच्छा काम और प्रसिद्धि आदि अन्य प्रमाण भी

---

* अमेरिकन इन पर्सपेक्टिव, पृष्ठ १६८।

हैं। किन्तु प्राप्त धन को कायम रखना कतई महत्त्वपूर्ण नहीं है। वल्कि यदि व्यक्ति धन प्राप्त करके भी सिर्फ उसे बनाये रखने की खातिर, कंजूसी से रहे, अच्छा जीवन-यापन न करे, उदारता से दान न दे और परिवार के गरीब और जरूरतमन्द सदस्यों की सहायता न करे तो लोग उस धन को हिकारत की नज़र से देखेंगे।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बाहर से आने वालों को अमेरिका में जो भौतिकवादिता दिखाई देती है, वह धन-दौलत को जमा रखने और कृपण की भाँति उसके प्रति प्रेम की भौतिकवादिता नहीं है। वल्कि यह धन को कमाने और भोगने की भौतिकवादी वृत्ति है। इसके अलावा यह शायद सारे संसार में ही मध्यम वर्ग की अभिवृत्ति है, और क्योंकि अधिकतर अमेरिकन मध्यम वर्ग के हैं, इसीलिए यह उनकी विशेषता प्रतीत होती है।

अमेरिका को प्रकृति से कच्चे माल के असीम भंडार का वरदान मिला है। अपनी मन्दी के दिनों में उसने अनुभव से यह सीखा है कि यदि कोई देश, चाहे वह कितना ही समृद्ध हो, अपने साधनों और धन-दौलत को अपनी बहुसंख्या के लाभ के लिए इस्तेमाल नहीं करता तो वह गरीब हो जाएगा। इसीलिए अमेरिका अब इस गलती को दोहराना नहीं चाहता। वह जो कुछ पैदा करता है उसका एक बड़ा भाग, जिसमें कृषि उत्पादन और मशीनरी, दोनों शामिल हैं; इस आशा से समुद्र पार भेज दिया जाता है कि इससे संसार के अन्य भागों का जीवन-स्तर भी ऊँचा उठाया जा सकेगा।

इस सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उत्पादन का स्तर ऊँचा होने से भौतिक सुखों और आराम का स्तर भी ऊँचा होता है। यह भी सही है कि अमेरिकन लोग नई, चमकदार तड़क-भड़क वाली, आरामदेह और कम श्रमापेक्षी वस्तुओं को बहुत पसंद करते हैं। आज अमेरिकनों को डबल रोटी बेकरी से ही कटी-कटाई मिलती है ताकि घर की मालकिन को उसे काटने की तकलीफ न उठानी पड़े। पहले

जिस टोस्टर में डबल रोटी के टोस्ट सेंके जाते थे वह एक बार में टोस्ट का एक ही भाग सेक सकता था, इसलिए उसे पलटना पड़ता था : इसके बाद ऐसा टोस्टर बनाया गया जो एक साथ टोस्ट को दोनों ओर से सेंक देता था। और अब नया टोस्टर ऐसा है कि उसमें टोस्ट सिक कर स्वयं बाहर भी आ जाता है। इससे गृहिणी को उसे टोस्टर में से निकालने की भी जरूरत नहीं पड़ती। जल्दी ही ऐसा टोस्टर बन जाने की आशा है जो टोस्ट को सेक कर मक्खन लगा देगा और काटकर प्लेट में भी पहुँचा देगा। सम्भवतः ऐसा टोस्टर बन भी गया है।

प्रश्न यह है कि अमेरिकनों ने जब एक ऐसी दुनिया बना ली है जिसमें वे हाथ उठाने या पाँव हिलाने तक की तकलीफ उठाये बिना आराम से रह सकते हैं, तब वे अपने भीतर की रुद्ध भाप को बाहर निकालने के लिए तरीके क्यों खोजते हैं? अमेरिका के नगरों में खिलाड़ियों के खेलने के मैदानों, गोल्फ क्लबों, टेनिस कोर्टों, मनोरंजन की क्लबों, होटलों, चर्चों और सभा-सोसाइटियों की भरमार है जिनमें अमेरिकन लोग जाकर अपने तन और मन की सारी ताकत को उँड़ेल कर हल्के होते हैं। अमेरिकन लोग मेहनत और श्रम को बचाने वाली मशीनें और उपकरण बनाते हैं ताकि समय और शक्ति को बचाकर दूसरी जगह लगा सकें।

सेवा का आदर्श

भौतिकवाद और आराम शब्दों में स्वार्थ की बू आती है—ऐसा लगता है मानो मनुष्य दूसरे का आराम और सुख छीनकर अपने लिए सुख-सुविधाओं का अर्जन करता है। किन्तु जहाँ तक अमेरिकनों का सवाल है, उनकी और चाहे कितनी ही आलोचना की जाए, उनके घोर-से-घोर आलोचक भी उन्हें इतना श्रेय तो देते ही हैं कि वे उदार हैं और भौतिक सुख-सुविधाओं से वंचित लोगों की सहायता करते हैं। अमेरिकन लोग ईसाई धर्म के इस उपदेश को अक्सर याद करते हैं कि 'दूसरों से जैसा व्यवहार तुम अपने लिए चाहते हो, वैसा ही तुम भी

दूसरों के प्रति करो।" देश में या विदेश में कहीं भी विपत्ति आने पर अमेरिकन लोग पीड़ितों की सहायता के लिए स्वेच्छया उदारता से दान करते हैं। शुरू में अमेरिका में नई आबादियाँ बसने पर और बाद में नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश करने पर पारस्परिक सहायता की जैसी आवश्यकता थी, वैसी आज नहीं रही, तो भी उस सहायता की भावना आज भी विद्यमान है।

अमेरिकन पत्रिकाएँ माइक कात्सानेवस की-सी कहानियों से भरी रहती हैं। कात्सानेवस उन्नीस वर्ष की आयु में १६०६ में ग्रीस से अमेरिका आया था। वह प्रथम विश्वयुद्ध में लड़ा, उसके बाद उसने विवाह किया, किन्तु पत्नी और बच्चा, दोनों को खो बैठा। फिर अपनी माँ के बीमार हो जाने पर वह ग्रीस लौट गया और वहाँ उसने फिर विवाह किया जिससे उसके नौ सन्तानें हुईं। दूसरे विश्व-युद्ध ने उसे और उसके परिवार को गरीबी में ढकेल दिया। माइक ने नाज़ी पैराशूटी सैनिकों का मुकाबला किया और पकड़ा जाने पर तीन वर्ष तक नाज़ियों के बन्दी शिविर में सड़ता रहा। लड़ाई के बाद जब वह घर लौटा तो उसने अपने परिवार को जीवित नर-कंकालों के रूप में पाया।

अमेरिकन नागरिक होने के कारण परराष्ट्र विभाग द्वारा संयुक्त राज्य में लौटने के लिए दिये गये अवसर का उसने लाभ उठाया और तीन बड़े बच्चों को लेकर वापस अमेरिका आ गया। बाकी परिवार के जहाज भाड़े के लिए पैसा बचाना उसके लिए सम्भव नहीं था। माइक की आयु इस समय ६५ वर्ष थी। जब उसकी कहानी अखबारों में छपी तो उसे शेष परिवार को अमेरिका लाने के लिए भाड़े के रूप में २६०० डालर की राशि की आवश्यकता थी, उसका दान से तुरन्त प्रबन्ध हो गया। जिस नौसैनिक सप्लाई डिपो में माइक काम करता था उसके जन-कल्याण निदेशक ने सरकारी लाल-फीताशाही के बावजूद जल्दी ही एक ऐसा छोटा और सादा मकान तलाश कर दिया जिसे माइक खरीद सकता था। रंग-रोगन वालों ने मकान पर मुफ्त रंग-रोगन कर दिया,

फरनीचर की दुकानों ने फरनीचर दे दिया और ग्रीक चर्च की महिलाओं ने कपड़े और भांडे जुटा दिये। और माइक ने अपना परिवार बुलवा लिया। उसने कृतज्ञ होकर कहा, "यह सिर्फ अमेरिका में ही हो सकता है।"

सेवा का आदर्श अमेरिकन जीवन की अनेक शाखाओं में फला हुआ है। नगर और समाज की संस्थाओं से अब यह आशा अधिकाधिक की जाती है कि वे नागरिकों की आवश्यकताओं को अनुभव करेंगी और जीवन को अधिक स्वस्थ, सुखी और समृद्ध बनाएँगी। इसके अलावा व्यवसाय के रूप में भी जन-सेवा अब अधिकाधिक की जा रही है। सन १८७० में सेवाओं के उत्पादन में लगे अनुभवी श्रमिकों की संख्या कुल श्रमशक्ति का २५ प्रतिशत थी, किन्तु आज वह ५३ प्रतिशत है। आपको शिशु के कपड़े धुलवाने हों, मोटर की धुलाई-सफाई करानी हो या अपने कुत्ते के बाल कटाने हों, ये सभी सेवाएँ आपको मिल जाएँगी (मोटरों की धुलाई-सफाई तो आजकल अधिकतर मशीनों से होती है और दस-पन्द्रह मिनट में पूरी हो जाती है)। हर टेलीफोन की किताब के अन्त में पीले रंग के पन्नों में ऐसी सैकड़ों व्यावसायिक सेवाओं की सूची रहती है।

सुपर मार्केटों में अब यह व्यवस्था अधिकाधिक अपनायी जा रही है कि ग्राहकों से वस्तुओं की कीमत कुछ कम ली जाए और उसके बदले में पहले दुकानों के कर्मचारियों द्वारा किये जा रहे कुछ काम अब ग्राहक स्वयं-सेवा के रूप में स्वयं कर लें। दूसरी ओर छोटी दुकानें अपने ग्राहकों के लिए, खासकर उपनगरों या गांवों में दूर रहने वालों के लिए माल घर पर ही पहुँचाने की व्यवस्था कर रही है। परचून का सामान, सब्जी, केक, डबलरोटी, जमे हुए खाद्य पदार्थ और आइसक्रीम बेचने वाले विभिन्न रूप में दूर-दराज के गांवों में अपना माल पहुँचाने प्रतिदिन आते हैं। इसके अलावा ब्रुश, वैक्यूम क्लीनर, पत्रिकाएं और

मोटरकार आदि बेचने वाले, बीमा एजेंट और चिट्ठियाँ पहुँचाने वाले डाकिये भी देहातों में आते रहते हैं।

सेवा पर अमेरिका में जो बल दिया जाता है, वह हमारे राष्ट्रीय चरित्र में दो परस्पर-विरोधी ताकतों के समन्वय और सम्मिश्रण का प्रयत्न है—एक ताकत है व्यावसायिक सफलता के लिए कठोर परिश्रम की और दूसरी है पर-सेवा की धार्मिक भावना की। दूसरी ओर ये सेवाएँ प्राप्त करने के बाद ग्राहक भी इन सब को लाभ पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि जब वे उन्हें ये सब सेवाएँ प्रदान करने के लिए तकलीफ उठाते हैं तो उन्हें भी उनको सफल बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

आधुनिक माता अपने बच्चों को दूसरों की सेवा करने, दुर्बलों और स्त्रियों का खयाल रखने, इन्साफ और ईमानदारी का बर्त्ताव करने और इसी प्रकार के अन्य वांछनीय नैतिक आचरणों की शिक्षा देती है। मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि अमेरिका में स्त्रियाँ ही अपने बच्चों को पालती और शिक्षा देती हैं, इसलिए अमेरिकन लोग सद्व्यवहार को स्त्रैण आचरण समझते हैं। किन्तु यदि आप अमेरिकनों से बातचीत करें तो अधिकतर अमेरिकन यह स्वीकार करेंगे कि पिता ही अन्तिम निर्णायक और दंडदाता होने के कारण बच्चों के मन में नैतिक नियमों के प्रतिष्ठापक के रूप में रहता है और इसीलिए अच्छाई और सद्व्यवहार उन्हें पुरुषोचित गुण प्रतीत होते हैं।

समरूपवादियों का राष्ट्र ?

अधिकतर विदेशी प्रेक्षक यह स्वीकार करते हैं कि अमेरिकन जीवन में समरूप वादिता है। अमेरिकनों को इस नये देश में कुछ परम्पराएँ स्थापित करनी पड़ी हैं, उन्हें विविध संस्कृतियों के लाखों या करोड़ों लोगों को आत्मसात् करना पड़ा है, इसीलिए वे कुछ बुनियादी बातों के बारे में समरूपता चाहते हैं। फिर भी विदेशी आगन्तुकों को यहाँ जो समरूपता दिखाई देती है, वह केवल बाहरी है और वह भी जितनी दिखाई

देनी है, उतनी नहीं है। अमेरिका के व्यापारी इंग्लैण्ड के व्यापारियों की अपेक्षा अपनी वेश-भूषा में अधिक स्वतन्त्र हैं। स्त्रियों की पोशाकों में भी बहुत विविधता है। सुपरमार्केटों में आप उन्हें समूर-लगे कपड़ों से लेकर बरमूडा की पेंट तक, अनेक किस्म के कपड़ों में देख सकते हैं। सब शहर ऊपर से देखने में बहुत कुछ एक से लगते हैं, रात को सभी शहरों में निओन की रोशनियाँ जगमग करती हैं, किन्तु जब आप उन्हें अधिक नज़दीक से और अधिक अच्छी तरह जानेंगे तो उनमें बहुत विविधता पाएँगे। यद्यपि सिनेमा-घरों में आप सभी जगह एक-सी फिल्में देखेंगे, किन्तु अधिक गहराई से देखने पर आप हर शहर में अपने अलग शौकिया संगीतकार, कैमरा-क्लबें और चित्रकला की कक्षाएँ पाएँगे। सत्रह करोड़ आबादी के एक विशाल राष्ट्र में रुचियों और स्वभाव की भारी विविधता आपको मिलेगी।

यहाँ नये-नये धार्मिक सम्प्रदाय उभरते हैं, मानवीय सम्बन्धों और लोक-मनोविज्ञान के नये सिद्धान्त प्रस्थापित होते हैं और आहार विज्ञान के बारे में नई-नई मान्यताएँ कायम की जाती हैं और उन सभी को अनुयायी मिल जाते हैं। नई और असामान्य वस्तु का आकर्षण और उसे अपनाने की प्रवृत्ति अमेरिकनों में स्वभाव से विद्यमान है।

फिर भी संसार का कोई भी समाज तब तक फल-फूल और पनप नहीं सकता, जब तक कि उसे एकता के सूत्र में बांधने वाला एक मूल सिद्धान्त न हो, जब तक कोई ऐसी चीज़ न हो, जिसका परिपालन समाज के उद्देश्यों को पाने के लिए उसके सब सदस्य समान रूप से करना चाहते हों। डैविड रीज़मैन का पर निर्देशित व्यक्तित्व का सिद्धान्त हमें अमेरिका की रीति-नीति को समझने में सहायता देता है। रीज़मैन की धारणा है कि अमेरिका में, खासकर उसके शहरों में, अन्तःनिर्देशित व्यक्तित्व का स्थान अब पर-निर्देशित व्यक्तित्व लेता जा रहा है। जिस समय अमेरिका के लोग नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश कर उन्हें आबाद कर रहे थे और उसके बाद जब देश में औद्योगिक

विकास बड़े पैमाने पर हो रहा था, तब अमेरिकनों का व्यक्तित्व अन्तर्निर्देशित अर्थात् अपनी आन्तरिक प्रेरणा से निर्देशित था। लोगों को अपने अन्तस् से स्वतः ही नये-नये क्षेत्रों में आगे बढ़ने या उद्योगों का विकास करने की प्रेरणा और पथ-निर्देशन मिलता था। अन्तर्निर्देशित व्यक्तित्व अपनी शक्ति को उत्पादन बढ़ाने में लगाता था, परन्तु आज का पर-निर्देशित यानी बाहर से दूसरों द्वारा निर्देशित व्यक्तित्व अपनी सारी शक्ति को उपभोग में लगाता है। कारण, आज की हमारी बाहुल्य की अर्थ-व्यवस्था में मुख्य समस्या वस्तुओं को सुरक्षित रखने और बचाने की नहीं, उनको अधिक-से-अधिक उपभोग और खर्च करने की है ताकि अधिकाधिक खपत से हर आदमी को काम पर लगाए रखा जा सके और अर्थ-व्यवस्था की गाड़ी चलती रहे।

इस सबसे यह प्रतीत होता है कि पुराने जमाने का कठोर व्यक्तिवादिता का ढर्रा अब बदल गया है और बदल रहा है। अब हम उस व्यक्ति की प्रशंसा नहीं करते जो अपने प्रतिस्पर्धियों की लाशों पर पाँव रखकर ऊँची चोटी पर पहुँचता है। इसके विपरीत हम यह महसूस करते हैं कि अपने प्रतिस्पर्धियों के साथ जो व्यक्ति मिलकर चल सकता है, जो अपने कर्मचारियों और सहयोगियों के साथ सद्-व्यवहार करता है और जिसका चरित्र और स्वभाव हमारे प्रेम-पूर्ण, मित्रतायुक्त, आपसी निभाव करने वाले और सहकारी व्यक्तित्व के आदर्श से मेल खाता है, वही हमारे लिए अच्छा और वांछनीय है। बम फेंकने और बर्र के छत्ते छेड़ने में आनन्द लेने वाले टेडी रूज़वेल्ट की जगह अब हम सबके साथ मित्रता और समानता का व्यवहार करने वाले और हर वक्त दूसरे को वश में करने वाली मुस्कान से युक्त चेहरा लिए आइक (आइसनहॉवर) को अधिक पसन्द करते हैं। हम अनुभव करते हैं कि यदि कोई व्यक्ति कौशल से सब लोगों को साथ लेकर चल सकता है तो वह आइक ही है। और चूँकि कौशलपूर्ण

व्यवहार को हम इतना महत्त्व देते हैं, इसलिए ग्राहक को हमारा विश्वास प्राप्त है।

यद्यपि आज हमारी बाहुल्यमयी अर्थ-व्यवस्था ने, जिसमें प्रतिस्पर्द्धा का पहले जैसा स्थान नहीं रहा, अमेरिकनों की व्यक्तिवादिता की प्रवृत्ति को कमजोर कर दिया है तो भी समानता पर बल देने की हमारी परम्परागत प्रवृत्ति उससे मजबूत ही हुई है। अभी कुछ समय पूर्व तक नगर का धनी व्यक्ति या राष्ट्र की दृष्टि में सार्वजनिक नेता समझा जाने वाला व्यक्ति पोशाक, रंग-ढंग और बात-चीत में अपने आपको दूसरों से अलग और कुछ दूरी पर रखता था और स्वयं समाज भी उससे यही अपेक्षा रखता था, परन्तु आज चार्ल्स एवन्स ह्यूज जैसा व्यक्ति, जो अपने आपको सर्व सामान्य से दूर रखता था देखने को भी नहीं मिलेगा। आज ऊँच और नीच के मध्य पहरावे, रंग-ढंग और शिक्षा का कोई अन्तर नहीं रहा।

हर अमेरिकन आज यह चाहता है कि उसके बच्चे, उसका हज्जाम, उसका कर्मचारी, उसका सहयोगी या विमान में उसके साथ की सीट पर बैठा व्यक्ति उसे अच्छा आदमी समझे। उसके लिए इस बात का बहुत महत्त्व है कि लोग उसे एक अच्छे साथी के रूप में पसन्द करें और यही कारण है कि वह इतनी क्लबें और बिरादरियाँ बनाता है। वह चाहता है कि इन क्लबों और भ्रातृसंघों में वह ऐसे अच्छे और मन के अनुकूल लोगों से मिला रहे, जो सब साथी होने के कारण एक-दूसरे को चाहें और पसन्द करते हों।

आम तौर पर हर अमेरिकन काम की इज्जत करता है और अपने हाथ से काम करना पसन्द करता है, इसलिए वह अपने और अपनी पास-पड़ोसियों के बीच और अपने और अपने अधिकारी के बीच वर्ग-भेद नहीं समझता। विदेशी लोग अक्सर यह देखकर हैरान होते हैं कि अमेरिका में नौकर और मालिक एक-दूसरे को आत्मीयता के साथ नाम से, पहले नाम से पुकारते हैं। कुछ विदेशी इस आत्मीयता को

पसन्द नहीं करते। वे समझते हैं कि इस प्रकार की आत्मीयता सम्मान के अभाव की द्योतक है। लेकिन अमेरिकन लोग दूसरे से सम्मान पाना नहीं चाहते, वे चाहते हैं कि दूसरे उन्हें पसन्द करें। किसी को पसन्द करने का अर्थ यह है कि बीच में जाति या वर्ग की दीवार न रहे, इसी लिए ये दीवारें ढह जाती हैं।

सचलता

समानता का अर्थ यह नहीं है कि सब लोग समान स्तर पर एक-जैसे हों। मनुष्यों की योग्यताओं और क्षमताओं में परस्पर बहुत अन्तर होता है और श्रमिकों में भी विशिष्ट योग्यता के अनुसार अनेक वर्ग होते हैं, इसलिए यह समानता और समरूपता यदि वांछनीय हो तो भी वह सम्भव नहीं होगी। इसलिए आदर्श—और काफी हद तक यथार्थता भी—यह है कि सब लोगों को उन्नति का समान अवसर मिले जिससे वे चाहें तो निम्नतम दर्जे से प्रयत्न करते हुए उच्चतम पर पहुँच जाएँ, दिहाड़ी पर काम करने वाला मज़दूर कम्पनी का अध्यक्ष और आप्रवासी का नगण्य लड़का कालेज का प्रोफेसर बन सके। और ऐसी घटनाएँ कितनी ही घटी भी हैं। उनके उदाहरण खोजने के लिए होरेशियो एलगर के-से उपन्यासों और कहानियों को पढ़ने की जरूरत नहीं, वे सफल व्यक्तियों के जीवन-चरितों में ही मिल सकते हैं।

एक ज़माना था कि कोई भी व्यक्ति तब तक राष्ट्रपति बनने की आशा नहीं कर सकता था, जब तक वह यह साबित न कर सके कि वह किसी दीन-हीन लकड़ी की कुटिया में पैदा हुआ है। आइसन-होवर के एडलाई स्टीवन्सन को चुनाव में पराजित करने का एक कारण यह भी था कि उनका जन्म एक गरीब घर में हुआ था, जबकि स्टीवन्सन एक अमीर घराने में पैदा हुए थे। समाज-शास्त्रियों का कहना है कि मजदूर या क्लर्क से कम्पनी का अध्यक्ष बनने का रास्ता आज पहले की भाँति साफ और खुला नहीं है। लेकिन फिर भी वास्तविकता

यह है कि हार्लो कर्टिस, जो किसी जमाने में मुनीम था, आज जनरल मोटर्स का अध्यक्ष है, और डेविड सार्नोफ, जो किसी वक्त सन्देशवाहक चपरासी था, आज रेडियो कार्पोरेशन ऑफ अमेरिका का अध्यक्ष है। इसके अलावा आज एक मजदूर के लड़के के लिए कालेज में जाने की गुंजायश और अवसर पहले से अधिक हैं, इसलिए कालेज से निकल कर और ऊँची सीढ़ी पर चढ़ने का मौका भी उसके लिए पहले से ज्यादा है। साथ ही आज रहन-सहन का स्तर निरन्तर ऊँचा होता जा रहा है, जिससे उद्योगों के मालिक कर्मचारियों के बीच की आर्थिक खाई भी कम होती जा रही है। आज श्रमिक कर्मचारी को कार और टेलीविजन सेट उपलब्ध है और उसकी पत्नी को बिजली का रेफ्रिजरेटर, कपड़े धोने की मशीन और वैक्यूम-क्लीनर प्राप्त हैं। उसके बच्चों को स्कूल में, यहां तक कि कालेज में जाने का अवसर भी प्राप्त है। और यह सब तब है जबकि उसे सिर्फ हफ्ते में ३५ या ४० घंटे काम करने के सिवाय और कुछ नहीं करना पड़ता, तमाम चिन्ताएँ और परेशानियां मालिक और प्रबन्धक ही अपने सिर पर ढोये फिरते हैं। ऐसी दशा में इन चिन्ता भरे ऊँचे पदों का आकर्षण सिर्फ उन्हीं को रह जाता है, जो बहुत अधिक महत्त्वाकांक्षी हैं।

मार्क्स की सबसे बड़ी भूल यह थी कि उसने सामाजिक सचलता को दृष्टि में नहीं रखा। विदेशों से आने वाले लोग अक्सर यह देखकर आश्चर्य-चकित होते हैं कि यहां कोई भी राजनीतिक दल वर्ग-संघर्ष के आधार पर विकसित नहीं हुआ है। इसका कारण सीधा-सादा है: हमारे देश में उस अर्थ में वर्ग हैं ही नहीं जिस अर्थ में यूरोप में हैं, क्योंकि यहां हर पीढ़ी गतिशील है और समाज में ऊपर की दिशा में बढ़ रही है। अतः "शासक वर्ग" के विरुद्ध संघर्ष करने का अर्थ उस लक्ष्य को ही नष्ट कर देना है जिसकी ओर महत्त्वाकांक्षी श्रमिक और कर्मचारी बढ़ रहा है। आज श्रमिक को कम घंटे काम करके अधिक ऊंचा वेतन मिलता है और उसके लिए एक निश्चित वार्षिक वेतन

की गारंटी भी है, इसलिए बहुत-से स्वतन्त्र व्यवसायी और डाक्टर आदि स्वतन्त्र पेशे वाले लोग उनसे ईर्ष्या करते हैं। सामाजिक दर्जे की पुरानी धारणाएँ भी बदल रही हैं, क्योंकि आज नल जोड़ने वाला एक मजदूर छुट्टी लेकर साल में एक महीना आराम से फ्लोरिडा में जाकर बिता सकता है, जबकि एक स्वतन्त्र वकील के लिए यह इस डर से सम्भव नहीं है कि बाहर चले जाने पर कहीं उसके हाथ से कोई मुकदमा न निकल जाए।

उद्योगपति को विशुद्ध भौतिकवादी के रूप में देखना भी आज सम्भव नहीं रहा। कारण आज वह अपने धन को किसी सांस्कृतिक उद्देश्य के लिए उपयोग में लाने का अधिकाधिक इच्छुक रहता है। एलिस्टेयर कुक* ने शिकागो के एक मांस उद्योगपति का उल्लेख किया है जो एक बार एक संग्रहालय में गया और वहाँ चित्र-कला की सुन्दर कृतियों को देखकर उन पर इतना मुग्ध हुआ कि आज वह फ्रेंच आधुनिक चित्रकला का सर्वाधिक जानकार संग्रहकर्त्ता है। इसी तरह हंटिंगटन हार्टफ़ोर्ड ने अपनी दौलत को कलाओं की अभिवृद्धि के लिए अनेक तरह से खर्च किया है। उसने उत्कृष्ट सिनेमा फिल्मों का निर्माण किया है और ऐसा कला मन्दिर बनाया है, जहाँ सृजनात्मक प्रतिभा वाले कलाकार बिना किसी बाधा और व्याघात के कार्य कर सकते हैं। वह चित्र कला की उत्कृष्ट कृतियों का संग्राहक, न्यूयार्क आर्ट गैलरी का संस्थापक और हॉलीवुड में एक थियेटर का निर्माता भी है।

अमेरिकनों में भी अन्य सब देशों के लोगों की भाँति एक सौहार्दपूर्ण घर, प्रेम, तरलता और साथीपन की भूख है। किन्तु अवसर उन्हें अपने उपयुक्त घर और अपने लिये उपयुक्त प्रेम-पात्र की प्राप्ति बिल्कुल अचानक घूमते-घामते ही होती है। जिस लड़की (या लड़के) की उन्हें तलाश होती है, वह हठात् एक दिन विमान में यात्रा करते हुए, नाच

* वन मैन्स अमेरिका, पृष्ठ २४२।

घर में नाचते हुए या दफ्तर की किसी पार्टी में उन्हें मिल जाती है। अपने जीवन के लिए भावी मार्ग और कर्मक्षेत्र का चुनाव भी वे कालेज में विविध प्रकार के कामों पर परीक्षण करके करते हैं और उसके बाद अपने लिए सही नौकरी का चुनाव भी वे एक के बाद एक कई कम्पनियों में भटकने के बाद कर पाते हैं। उनकी उन्नति का द्वार एक ही कम्पनी में काम करते रहने से नहीं खुलता, बल्कि एक कम्पनी से दूसरी प्रतिस्पर्धी कम्पनी में जाने पर ही खुलता है। इस तरह समाज में स्थिरता की अपेक्षा सचलता का अधिक अच्छा पुरस्कार मिलता है।

इस प्रकार जब वे ऊँचे सोपान पर चढ़ते हैं तो अपना आवास भी एक मुहल्ले से दूसरे बढ़िया मुहल्ले में और छोटे घर से बड़े घर में ले जाते हैं। वे इस सचलता से घबराते नहीं; गतिशीलता से प्रेम करते हैं। नये-नये क्षेत्रों में अग्रसर होना उनके हाड़-मांस में बिंधा हुआ है और यद्यपि अपने पूर्वजों की तरह पश्चिम की ओर बढ़ना आज भौगोलिक दृष्टि से उनके लिए सम्भव नहीं है, किन्तु आत्मिक और सहजवृत्तिक दृष्टि से वह अग्रगति उनकी प्रकृति का अंग बन गई है। जैसा कि अमेरिकनों के बुनियादी मन्तव्यों में कहा गया है, वे यह विश्वास करते हैं कि सुख एक ऐसी वस्तु है, जिसके लिए प्रतीक्षा नहीं की जाती, उसे पीछा करके और प्रयत्न करके पाया जाता है। अमेरिकन लोग अन्वेषण और खोज के लिए, बल्कि उसके लिए आवश्यक अनिर्दिष्ट अविराम गति के लिए भी, आत्मार्पण कर देते हैं।

जहां सभी कुछ परिवर्तमान और अस्थिर होता है, वहां किसी-न किसी प्रकार के माप-दंड की आवश्यकता होती है। इसीलिए (और खासकर हमारी व्यावहारिक फलवादी मनोवृत्ति के कारण) हमने संख्यात्मक मानदंड अपना रखे हैं। स्कूलों में हम बच्चों को परीक्षा के अंकों से और रोजगार और कलाकृतियों को डालरों में मूल्यांकन से नापते हैं और सबसे बड़ी, सबसे ऊँची, सबसे गर्म, सबसे ठंडी और सबसे पहली

वस्तु को हम श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखते और पसन्द करते हैं।

अमेरिकन लोग परिवर्त्तन को पसन्द जरूर करते हैं, किन्तु उनकी यह पसन्द भी बिल्कुल निराली किस्म की है। वे यह नहीं चाहते कि परिस्थितियाँ उन्हें परिवर्त्तित करदें, बल्कि वे स्वयं परिस्थितियों को ही परिवर्त्तित कर देना चाहते हैं। जैसा कि क्लाइड-क्लकहोन ने कहा है, मनुष्य नाजुक संकट की घड़ी का मुकाबला करने के लिए या तो परिस्थितियों को बदल देते हैं, या अपने आप को। पूर्व के लोग आम तौर पर अपने आपको परिस्थितियों के अनुसार ढालना पसन्द करते हैं, किन्तु पश्चिम के लोग इसके विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालते हैं। अमेरिकनों को इस प्रकार के परिवर्त्तनों में विशेष आन्द आता है—वे टेढ़ी सड़क को सीधी करने के लिए पहाड़ को रास्ते से हटा देते हैं, रेगिस्तान को नखलिस्तान में बदलने के लिए नदियों का प्रवाह बदलते हैं, हाथ की मेहनत को स्वचल यन्त्रों की शक्ति में परिवर्त्तित करते हैं और फिर लोगों को अधिक अवकाश देने और स्वचल यन्त्रों के उपयोग से बेकार होने वाले लोगों को काम देने के लिए मनोरंजन को रचनात्मक उद्योग में परिणत करते हैं।

सीमा का प्रभाव

अमेरिकन संस्कृति में जो विशिष्टता विद्यमान है, उसका मूल कारण यूरोपीय संस्कृति के वैभव और उसके उत्पीड़न के बोझ को अपने कन्धों पर उठाकर यहाँ आने वाले लोगों पर पड़ा अमेरिकन भूमि और जल-वायु का प्रभाव है। ये लोग सामन्तवादी बन्धनों से, जो सत्रहवीं शताब्दी में भी जमीन की मिल्कियत से जुड़े हुए थे, मुक्त होकर अपनी निज की सम्पत्ति के रूप में जमीन पाने की आकाँक्षा से यहाँ आये थे। इस जमीन को आबाद करने में अनेक खतरे और संकट थे। उन्हें यह जमीन समझौते से या लड़ाई लड़कर इंडियनों से छीननी पड़ती थी; बीहड़ जंगलों में से, जहाँ पगडंडियाँ भी नहीं थीं, गुजर कर खेती के लायक जमीन तलाश करनी पड़ती थी; थोड़े-से मामूली औजारों से जंगल काट

कर घर बनाने और खेत जोतने का काम करना पड़ता था और कभी-कभी लड़ते हुए या भूख अथवा कठोर प्रतिकूल मौसम से उनकी जान भी चली जाती थी। इन खतरों और मुसीबतों ने इन आप्रवासी यूरोपियनों को जल्दी ही अमेरिकन बना दिया। इस संघर्ष ने ही वास्तव में अमेरिकन भावना और चरित्र का निर्माण किया।

नये-नये क्षेत्रों को आबाद करते हुए सीमा को निरन्तर पीछे धकेलते जाने का यह अनुभव इतना प्रबल और शिक्षादायी था कि उसने अमेरिकनों के कुछ नये चरित्र-लक्षणों को उभार दिया। दैनिक जीवन की कठोर परिस्थितियों ने उनके तौर-तरीकों को अपरिष्कृत और ग्राम्य बना दिया। अच्छी जमीन (और बाद में सोना) पाने की प्रतिस्पर्धा, स्वयं जीवित रहने के लिए दूसरों को मारने की आवश्यकता और कानून-व्यवस्था के अभाव ने लोगों को कठोर और कभी-कभी क्रूर एवं हिंस्र बना दिया। यह आदिम हिंसा-वृत्ति आज भी हमारे युवकों में गुंडागर्दी, जातीय उपद्रवों, राजनीतिक भ्रष्टाचार, यूनियनों के षड्यन्त्रों और राजनीतिक हिंसा आदि के रूप में विद्यमान है।

जीवन के कठोर होने पर भी, इस कठोरता और कष्टों ने लोगों को खूब धन-दौलत उपलब्ध कराई और कभी-कभी तो यह दौलत उन्हें बहुत कम परिश्रम से ही मिल गई। इसीलिए 'झटपट अमीर बन जाने' की विचारधारा को यहाँ प्रश्रय मिला। इस विचारधारा का सार यह था कि अगर आदमी थोड़ी-सी कठोर मेहनत करे और थोड़ा सा साथ किस्मत दे दे तो यहाँ मिट्टी भी सोना बन सकती है। व्यापारी मामूली-सी चीजें देकर बदले में इंडियनों से बेशकीमती समूर प्राप्त कर लेते थे। पृथ्वी के भीतर से सोना, चाँदी और तेल निकल आते थे, जो जितना [illegible] पर भी [illegible] सोने की खानों से भी अधिक मुनाफदार थे। इसके बाद में बड़े-बड़े [illegible] आये जिन्होंने रेल कम्पनियाँ खोलकर और उनकी सम्पत्ति और शेयरों में सट्टा करके बेशुमार पैसा बनाया। इसके बाद नम्बर आया स्टॉक बाजार के सट्टे-फाटके का, जिसने देश के हर

आदमी के जीवन को उस वक्त तक खूब प्रभावित किया जब तक कि १९२९ में उसका एकदम भट्टा ही नहीं बैठा गया।

किन्तु नये-नये सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रवेश ने अमेरिकनों में कुछ ठोस भावात्मक चरित्र-लक्षण भी पैदा किये। उसने उद्यम और सक्रियता को और हाथों के श्रम की प्रतिष्ठा को प्रोत्साहित किया। उसने स्वतन्त्र और आत्मनिर्भर किसान को एक राष्ट्रीय प्रतीक बनाया, जो आज भी हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित करता है। उसने अमेरिका के लोगों को अधिक सूझ-बूझ-वाला, जिज्ञासु और व्यावहारिक बनाया। उसने उन में किसी भी प्रकार के काम से न घबराने की वृत्ति पैदा की, जिससे वे अपने आपको छोटे और आसानी से सँभाले जा सकने वाले समुदायों में रखना अधिक पसन्द करने लगे। सीमावर्त्ती क्षेत्रों के जीवन का ही यह परिणाम है कि अमेरिकन लोग अपने आपको हर नई परिस्थिति के अनुकूल ढाल लेते हैं, अन्य देशों के लोगों की अपेक्षा उनमें वर्गभेद कम हैं और उस देश के प्रति वे आशावादिता से भरे हुए हैं, जिसने उनके प्रयत्नों को सार्थक और पुरस्कृत किया है।

ये सब प्रवृत्तियाँ और चरित्र उस ज़माने से बराबर चले आ रहे हैं और आज के अमेरिकनों में भी विद्यमान हैं। आज भौगोलिक दृष्टि से सीमा का अन्त हो गया है क्योंकि सारा महाद्वीप आबाद हो गया है, आज नये-नये भूखण्डों पर अधिकार कर उन्हें अपनी वासभूमि बनने का प्रश्न भी नहीं रहा; फिर भी नई-नई सीमाओं के अन्वेषण और उनमें प्रवेश की भावना आज भी मौजूद है। यों, सरकार के पास आज भी नये क्षेत्रों को आबाद करने के लिए बाँटने को काफ़ी वासभूमि पड़ी है और वह उसे चालीस हज़ार से पचास हज़ार एकड़ तक प्रति वर्ष बाँट भी रही है, फिर भी अधिक महत्त्व की बात यह है कि अमेरिकन लोगों की अपने निज के बारे में जो आशा है, उसमें अग्रणीपन की भावना का स्थान बहुत बड़ा है।

जिस राष्ट्र को अनगढ़ जंगलों को काटकर गढ़ा गया हो, और उस राष्ट्र के लोगों को इस निर्माण कार्य में निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना और कभी इस ओर कभी उस समूह और वर्ग में अपने आपको संगठित करना पड़ा हो, उसकी मित्रता-सम्बन्धी धारणा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इस तरह के सचल और नित्य परिवर्तमान समाज में मनुष्य को अपने साथियों को तुरन्त जांच और परख लेना पड़ता है और यह परख उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि की कसौटी पर नहीं, स्वयं व्यक्ति के कामों की कसौटी पर ही करनी पड़ती है। नये समाज और नये स्थान में आने वाले व्यक्ति को वहां निभाने के लिए मित्रों की जरूरत होती है और ये मित्र बनाने के लिए उसे स्वयं मैत्रीपूर्ण ढंग और व्यवहार अपनाना पड़ता है।

विदेशी लोग अक्सर अमेरिकनों की इस स्वतःस्फूर्त स्वभावगत मैत्री भावना को गलती से गम्भीरता का अभाव या हल्कापन समझ लेते हैं। लेकिन हम अमेरिकन लोग यह महसूस करते हैं कि सभी सम्बन्धों में प्रेम और मैत्री का कुछ पुट अवश्य होना चाहिए। हम अन्य देशों की भांति कुछ थोड़े से घनिष्ट मित्रों को शेष सारी दुनिया से बहुत अधिक अलग करके नहीं देखते। हम यह कोशिश करते हैं कि हमारे अधिक-से-अधिक मित्र हों, अधिक-से-अधिक लोगों को हम सड़क पर या गली में आत्मीयता से पुकार सकें, क्लबों और सभा-सोसाइटियों की बैठकों में, गिरजाघर में या सिनेमाघर में उनका आत्मीयता से अभिवादन कर सकें। तभी हम अपने आपको इर्द-गिर्द की परिस्थितियों में अधिक घुला मिला और सुरक्षित पाते हैं।

"यह मेरा मित्र है", इस वाक्य का प्रयोग अमेरिकन लोग दो या तीन अन्तरंग मित्रों के बारे में ही नहीं करते। इस वाक्य का प्रयोग वे पड़ोसियों, अपनी क्लबों और सभा-सोसाइटियों के सदस्यों, सहकर्मियों अपनी कार में पेट्रोल भरने वाले व्यक्ति, [illegible], अध्यापकों, अपने गिरजे के पादरी और अपने दुकानदार आदि, सभी के लिए प्रयोग करते

है। जहाँ अन्य संस्कृतियाँ मित्रता को मूल्यवान् समझकर कुछ थोड़े-से अन्तरंग आत्मीयों तक ही सीमित रखने का प्रयत्न करती हैं, वहाँ हम लोग उसे मूल्यवान समझकर अधिक-से-अधिक लोगों को उसमें साझेदार बनाना चाहते हैं। हमारी भौतिक अर्थ-व्यवस्था हमें सिखाती है कि जितना हम खर्च और उपभोग करेंगे, उतना ही हमें मिलेगा। उसी तरह हमारी मानसिक अर्थ-व्यवस्था भी हमें सिखाती है कि जितनी उदारता से हम मैत्री को बांटेंगे, उतना ही हमारा मैत्री का धन बढ़ेगा। अपनी आवश्यकता से अधिक कृषि उत्पादन करके और प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अनेक गलतियाँ कर के हमने यह सीख लिया है कि किसी भी वस्तु को कंजूस की तरह जमा करके रखने से इन्सान धनी नहीं बनता, बल्कि दरिद्र बनता है।

मित्र बनाने और नये-नये मित्र खोजने की प्रवृत्ति सिर्फ व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है वह एक अन्तर्महाद्वीपीय प्रवृत्ति बन गई है। अमेरिकनों की पड़ोसी देशों के साथ अच्छे पड़ोसीचारे की नीति, अल्पविकसित देशों की सहायता, भूखे देशों को फालतू अन्न का वितरण और विश्व पड़ोसी संघ (वर्ल्ड नेबर्स) जैसे गैर-सरकारी संगठनों की स्थापना केवल राजनीतिक औचित्य और आवश्यकता का ही परिणाम नहीं हैं। इनकी जड़ अमेरिकनों की दूसरों को प्यार करने और दूसरों से प्यार पाने की सहज प्रवृत्ति में है। अमेरिकन लोगों का यह दृढ़ विश्वास है कि यदि तुम दूसरों से प्रेम करोगे तो वे भी तुम्हें प्यार करेंगे और तब सब कुछ ठीक हो जाएगा (इस विश्वास के कारण ही रूजवेल्ट ने स्टालिन के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करके गलती कर डाली थी)। हम लोगों की यह धारणा यदि निरा भोलापन भी हो, तो भी वह अग्राह्य नहीं है। क्योंकि वह शक्ति से काम निकालने के बजाय प्रेम से समझा-बुझा कर काम निकालने के तरीके को अपनाती है और घूंसे का स्थान गलबहियों को देती है।

अमेरिकन विचारधारा

तब वे आदर्श और विश्वास कौन-से हैं जो अमेरिकन चरित्र को अभिरूपित करते हैं ?

जॉर्ज सैंटायना ने कहा है : "ये राष्ट्रीय विश्वास और नैतिकता विचार और कल्पना की दृष्टि से अस्पष्ट हैं, परन्तु भावना की दृष्टि से खूब मजबूत हैं। वे हैं कार्म की साधना का मन्त्र और प्रगति में आस्था।" *

क्लाइड क्लकहोन का कहना है कि अमेरिकन विचारधारा में ये बातें अन्तर्निहित हैं—वह तर्क-बुद्धि-युक्त बात में विश्वास करती है, नैतिकतावाद की दृष्टि से हर वस्तु को तर्क और बुद्धि की कसौटी पर परखना आवश्यक समझती है और यह मानकर चलती है कि तर्क-सगत व्यवहार का महत्व है, वह निरर्थक नहीं है, वह व्यक्ति और उसके अधिकारों में विश्वास रखती है और जन-साधारण की राजनीतिक बुद्धिमत्ता पर भरोसा करती है, वह परिवर्तन और प्रगति को बहुत कीमती समझती है; और सुख की प्राप्ति को एक कल्याणकारी लक्ष्य के रूप में साध्य मानती है।+

इसी तरह अमेरिकन लोग अपनी परम्पराओं में भी गहरी आस्था रखते हैं। स्वतन्त्रता की घोषणा और हमारा संविधान, दोनों में स्वशासन के मौलिक सिद्धान्तों का इतनी स्पष्टता और असंदिग्धता के साथ वर्णन किया गया है कि हम उन्हें अमेरिकन आविष्कार मानने लगते हैं, कम-से-कम यह तो मानते ही हैं कि ये सिद्धान्त और अधिकार हमारी विशेषता हैं। ये पवित्र अभिलेख स्वतन्त्रता की घोषणा और संविधान हमें ऐसे बुनियादी सिद्धान्त प्रदान करते हैं जिन्हें हम ईश्वर की देन समझते हैं और इसीलिए यह मानते हैं कि उन पर आपत्ति करना या उन्हें किसी तरह परिवर्तित करना सम्भव और उचित नहीं

* [illegible], पृष्ठ ११२ ।

+ [illegible]

है। इसलिए हमें अपने बुनियादी सिद्धान्तों के साथ छेड़छाड़ करने की जरूरत नहीं है; वे हमारे सार्वकालिक सिद्धान्त हैं।

विदेशी लोग यह समझते हैं कि हम अमेरिकनों में विचार-विमर्श की प्रवृत्ति नहीं है। इसका कारण कुछ हद तक यह है कि हम अपने लक्ष्यों को हमेशा के लिए निर्धारित मान लेते हैं और उन पर किसी प्रकार के विचार-विमर्श की जरूरत नहीं समझते। हम सिर्फ यह मानते हैं कि हमें इन लक्ष्यों को पाने के लिए कठोर श्रम करने की जरूरत है। अमेरिकन लोग सृजन और निर्माण में विश्वास रखते हैं और उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखते हैं, जैसे एक नये खेत को साफ कर जोतने-बोने योग्य बनाना, एक नई खान खोदना, एक नया नागरिक संगठन बनाना और एक नया व्यवसाय स्थापित करना। इसी का वे स्वप्न लेते हैं। परन्तु सब स्रष्टाओं की तरह वे आलोचना से घबराते हैं।

कुछ इस कारण से, और कुछ इसलिए कि वे स्वयं राष्ट्र के कामों में निष्क्रिय प्रेक्षक होने के बजाय सक्रिय भागीदार हैं, वे देश को बाहर की सभी आलोचनाओं से बचाना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, भले ही देश के भीतर वे स्वयं उसकी कितनी ही आलोचना करते हों। डि टोकविल संयुक्त राज्य का बहुत प्रशंसक था, फिर भी वह अमेरिकनों की इस देशभक्ति से चिढ़ता था। उसका कहना था कि अगर आप अमेरिकनों की प्रशंसा करना छोड़ दें तो वे स्वयं अपनी प्रशंसा करने लगेंगे। किन्तु उसका यह भी कहना है कि 'दूसरों को प्यार करने और दूसरों का प्यार पाने' की नीति 'दूसरों से घृणा करने और उनकी घृणा का पात्र बनने, की नीति से, जिसने मानवीय इतिहास में बहुत से उलट-फेर किये हैं, कहीं बेहतर है।

अमेरिकनों की इस विचारधारा में कुछ बातें उनके नये-नये क्षेत्रों में अग्रणी बनने के इतिहास की देन हैं, और कुछ बातें उन्हें अपने शुद्धाचारवादी पूर्वजों से विरासत में मिली हैं, जिनके विचारों को वे अपने साथ पश्चिम की ओर ले गये थे। विरासत में पाये इन विचारों में से

एक विचार यह था कि हर व्यक्ति भगवान् की सृष्टि है, जिसे उस ने अपनी सूरत के रूप में गढ़ा है, इसलिए उसका उचित सम्मान होना चाहिए। आपसी समझौते और जनता की सहमति से शासन चलाने का विचार उन्हें प्रारम्भिक तीर्थयात्रियों से और तर्क और विवेक को प्रामाणिक मानने का विचार सत्रहवीं शताब्दी के धार्मिक दार्शनिकों के जटिल तर्कों से विरासत में मिला। इसी तरह व्यक्तियों की अपेक्षा सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा और वफादारी रखना और धार्मिक विश्वास को ही मानवों पर शासन के लिए सबसे सुदृढ़ बुनियाद मानना भी शुद्धाचारवादियों की विचारधारा के केन्द्रबिन्दु है।

इस प्रकार अमेरिकनों ने एक ऐसे रंगमंच पर मानव की शाप-मुक्ति का नाटक खेला है जिसके तख्तों में कॅल्विनवादी नैतिक सिद्धान्तों की मेखें जड़ी हैं। अगर कभी उन्होंने इन नैतिक सिद्धान्तों के नियमों का उल्लंघन किया तो हमेशा यह आशा की कि उन्हें इसकी सजा मिलेगी और यदि उनका अपराध छिपा रह गया तो कभी-कभी उन्होंने उसके लिए स्वयं भी अपने को दंडित किया। मनुष्य की मांसल दैहिक वासनाओं को दबाये रखने के लिए उन्होंने अपने आपको कठोर श्रम में डुबाये रखा, और इस प्रकार काम का उनके लिए दोहरा महत्त्व हो गया। आज भी यह स्थिति है कि फ्रॉयड के सिद्धान्तों से दैहिक वासनाओं पर से कलुष और पाप का कलंक बहुत कुछ हट जाने के बावजूद, अमेरिकन लोग निरे ऐन्द्रियिक सुखों को कुछ सन्देह की दृष्टि से देखते हैं और कोई भी अमेरिकन तब तक सन्तुष्ट नहीं होता जब तक वह अपने हिस्से का काम और श्रम न कर ले।

काम को इस प्रकार धर्म का एक अंग समझने की प्रवृत्ति का जितना अच्छा उदाहरण कर्नल अब्राहम डैवनपोर्ट की कहानी में मिलता है, उतना और किसी में नहीं मिलता। सन् १७८० में एक समय ऐसा था, जब लोगों में यह विश्वास फैल गया था कि सृष्टि के अन्त का दिन निकट है, क्योंकि ईश्वर के दरबार में मनुष्य के भले-बुरे कामों का

फैसला होगा। उन्हीं दिनों एक दिन शाम का झुटपुटा होने पर डैवन-पोर्ट ने कनैक्टिकट की प्रतिनिधि सभा में खड़े होकर कहा कि सभा का अधिवेशन स्थगित नही किया जाना चाहिए।

उसने कहा, "आखिरी ईश्वरीय फैसले का दिन या तो नजदीक आ रहा है और या नहीं आ रहा। अगर वह नहीं आ रहा है तो अधिवेशन को स्थगित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। और अगर आ रहा है तो मैं यही चाहूँगा कि भगवान् आखिरी दिन मुझे अपना कर्त्तव्य पालन करता हुआ देखे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि अधिवेशन को जारी रखने के लिए मोमवत्तियाँ जला दी जाएँ।"

हास्य और व्यंग्य-विनोद

हास्य-विनोद की भावना अक्सर संस्कृति को सबसे अधिक प्रकट करने वाला पहलू हाती है। इसमें सन्देह नहीं कि हास-परिहास को इस सभ्यता में जितना ऊँचा स्थान दिया गया है, उतना और किसी सभ्यता में नहीं दिया गया। विल रोजर्स को अमेरिका के सम्बन्ध में खूब चुभने वाले व्यंग्य करने के कारण ही राष्ट्रीय वीर के रूप में सम्मानित किया जाता है—उसमें अमेरिकनों को उनकी आँखों में उंगली डालकर यह दिखाने की प्रतिभा है कि उनमें कौन-सी बातें हास्यास्पद हैं। मार्क ट्वेन की भी, जो कई तरह से हमारे देश का सबसे अधिक प्रतिनिधि लेखक माना जाता है, प्रशंसा इसीलिए उतनी नहीं की जाती कि वह अमेरिकन जीवन का कुशल चितेरा है, जितनी इसलिए की जाती है कि उसका हास्य और व्यंग्य बड़ा चुटीला है। हमारे दृष्टिकोण में जो आशावादिता है उसी का यह परिणाम है कि हम सुखान्त और हास्यमय रचना को दुःखान्त और विषादपूर्ण रचना से ज्यादा पसन्द करते हैं और यही कारण है कि हमारे टेलीविजन पर हास्य अभिनेताओं को सबसे अधिक स्थान और सबसे अधिक वेतन मिलता है।

हास्य मानसिक तनाव को कम करने की औषध है। वह द्रुत गति से चलने वाले हमारे औद्योगिक जीवन की, जिसमें मशीनों की

घरघराहट, यातायात के परिवहनों की तरह-तरह की आवाजें और मिजाज में गर्मी और तनाव है, भागदौड़ और गर्जन को कुछ प्रतिसन्तुलित करता है। हास्य और व्यंग्य-विनोद साहित्य में और रंगमंच पर जीवन की इन्हीं चीजों को ऐसे ढंग से प्रदर्शित करते हैं कि हम उन पर हँसते हैं और हँसकर अपने भीतर के धुएँ को बाहर निकाल देते हैं।

हास-परिहास और विनोद किसी भी वस्तु को इस तरह रूपान्तरित करने में नहीं हिचकता। जो वस्तु हास्य के इस व्यंग्यात्मक स्पर्श से ऊपर समझी जाती है उस पर हास्य का और भी अधिक प्रबल आघात और प्रभाव होता है। इसीलिए पादरियों के बारे में मजाकिया चुटकुले बहुत आमफहम हो गये हैं। एक चुटकुले में एक पादरी एक व्यक्ति से कहता है कि "कल मैं हजामत करते समय आज के उपदेश के बारे में सोचता-सोचता इतना मग्न और विभोर हो गया कि अपनी ठोड़ी ही काट बैठा।" इस पर वह व्यक्ति उसे जवाब देता है कि "यदि आप अपनी दाढ़ी के बारे में सोचते-सोचते अपने उपदेश को बीच में ही काट देते तब अधिक अच्छा होता।"

अमेरिकन हास्य सन्तान-प्रजनन और परिवार के महत्त्व, स्त्रियों और बच्चों का ऊँचा दर्जा, जीवन की चपल गति और तनाव—इन सब की पुष्टि करता है और इस सबसे बढ़कर वह स्वयं जीवन को हास-परिहास के रूप में देखने, उसे धन-दौलत से भी अधिक महत्त्व देने और एक अभिलषित और प्रशंसित गुण की भाँति समादृत करने की भावना पैदा करता है। पादरी अपने उपदेशों में और डाक्टर मरीज के इलाज में, वकील अपने तर्कों में और अध्यापक अपने अध्यापन में इसका उपयोग करता है। किसी आदमी की बुराई और आलोचना करते हुए हम उसकी सबसे अधिक निन्दा यही कहकर कर सकते हैं कि उस में हँसी-मजाक का माद्दा बिल्कुल नहीं है, क्योंकि हास्य अमेरिकन जीवन-पद्धति का एक अविच्छिन्न अंग है।

हास्य समानता पैदा करने में सहायता देता है और समानता में हमारा गहरा विश्वास है। हास्य अक्सर स्वतन्त्रता का प्रतीक समझा जाता है, क्योंकि वह व्यक्ति को अपने नेताओं के बारे में खुलकर कहने और उन्हें उनकी असलियत दिखाने में सहायता देता है। जो लोग अपने आप को बहुत बड़ा समझते हैं, उनकी वह फूँक निकाल देता है। हास्य हमें अपने आप को भी अधिक स्पष्ट रूप में देखने का अवसर देता है, और जब हम अपने आपको सही रोशनी में देखते हैं तो अपनी कमजोरियों पर विजय पा सकते हैं। और अमेरिका जैसे देश में, जहाँ हमेशा नये-नये सम्पर्क और सम्बन्ध बनते रहते हैं, हास्य-विनोद त्वरित भावनात्मक एकता पैदा करता है। यह हास्य-जन्य भावनात्मक एकता क्षेत्रीय या अप्रत्यक्ष एकता नहीं होती, बल्कि ऐसी व्यापक एकता होती है कि हम उससे सभी जगह अपनापन अनुभव करने लगते हैं। हास्य आत्म-विश्वास का व्याकरण, आशावादिता का गद्य-गीत और भ्रातृत्व का संगीत है।

अमेरिकन की पहचान

हेनरी जेम्स ने श्रीमती ट्रिस्टरैम के मुँह से एक अमेरिकन को लक्ष्य करके कहलाया है, "मैं आपको अच्छी तरह समझ नहीं सकती, यह जान नहीं सकती कि आप बहुत सीधे-सादे हैं या बहुत गहरे।" यह प्रश्न और दुविधा यूरोपियनों के सामने अक्सर रही है। आम तौर पर वे यह समझते हैं कि अमेरिकन लोग बिल्कुल बचकाने हैं। किन्तु सत्य यह है कि विभिन्न समाजों के बारे में यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि अमुक समाज परिपक्व है और अमुक नहीं। कारण, हर आदमी का अपना-अपना अलग तर्क होता है।

तब ऐसी कौन-सी चीज है, जिससे अमेरिकन को कहीं भी आसानी से पहचाना जा सकता है। अमेरिकन पर्यटकों का एक वर्ग ऐसा है जो बाहर जाकर खूब शोर-गुल करता है, बड़ी-बड़ी बातें बघारता है, खूब आलोचनाएँ करता है और पैसा लुटाता है। परन्तु हमारा ख्याल है कि

अमेरिकनों को दूसरों से अलग करने वाली पहचान यह नहीं है। तब इस वर्ग के पर्यटकों के इस आचरण के बारे में सिर्फ यही सफ़ाई दी जा सकती है कि अपने देश में उन्हें जिन सामाजिक बन्धनों में रहना पड़ता है, उनमें वे ऐसा आचरण कभी न करते, परन्तु देश से बाहर इन बन्धनों से मुक्त होने पर वे इस आजादी का अधिक-से-अधिक उपभोग करना और लाभ उठाना चाहते हैं।

अमेरिकनों को देखकर मन पर जो छाप पड़ती है, उसका कारण उनके कपड़े और पोशाक नहीं हैं, बल्कि उनका रवैया और दृष्टिकोण है। उनका रवैया तीन चीज़ों का मिश्रण है—वर्ग-चेतना का अभाव, कुछ आत्मसन्तोषपूर्ण आशावादिता और हर बात में जिज्ञासा और प्रश्न पूछने की वृत्ति। यह मिश्रण यूरोप के लोगों को बुद्धूपन प्रतीत होता है। इसके अलावा अमेरिकन तथ्यों और आँकड़ों के शौकीन होते है, उनमें एक सजगता होती है, किन्तु वह बौद्धिक सजगता की अपेक्षा शारीरिक और चाक्षुप सजगता अधिक है। और सबसे बढ़कर उनमें सबके साथ मित्रता कर लेने की अभिवृत्ति होती है। (यहाँ हमें थोड़ी देर के लिए अमेरिकनों की च्यूइंग गम चूसते रहने, अन्धा-धुन्ध सिगरेट पीने और हर चीज़ की कान्सास सिटी या केओकुक के साथ तुलना करने की आदतों को भुला देना चाहिए)। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि अमेरिकनों का चरित्र अत्यधिक प्रतिस्पर्धा की परिस्थितियों और उन्नति के लिए असाधारण अवसरों के प्रति मानव अनुक्रिया की उपज है।

लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि अमेरिकनों का कोई एक ऐसा विशिष्ट चरित्र लक्षण नहीं है जिसे देख कर किसी के बारे में यह कहा जा सके कि अमुक व्यक्ति ठेठ अमेरिकन है, किन्तु अगर समस्त अमेरिकनों में पाये जाने वाले लक्षणों को जोड़ लिया जाए और उसे १३ करोड़ से भाग दिया जाए, तब जो कुछ भागफल आएगा वह कुछ हद तक वही होगा जिसे इस अध्याय में चित्रित और प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

सामुदायिक जीवन

पिछले अध्याय में हमने अमेरिकनों के चरित्र और पारिवारिक जीवन का जो वर्णन किया है, उसके आधार पर अमेरिकन लोग अपने लिए किस ढंग के सामुदायिक जीवन का निर्माण करते हैं ? यह जानने के लिए सबसे पहले किसी छोटे से स्थान पर दृष्टिपात करना आसान होगा। अधिकतर अमेरिकन लोग छोटे-छोटे कस्बों में रहते हैं। जन-गणना विभाग ने उन सब स्थानों को शहरों में गिना है जहाँ २,५०० से अधिक लोग रहते हैं। लेकिन २,५०० आबादी के कस्बे आम तौर पर शहर के बजाय गाँव अधिक होते हैं। बल्कि पच्चीस हजार, और शायद पचास हजार, की आबादी तक के कस्बों में भी लोग गाँवों की तरह यह अनुभव करते हैं कि उनका दायरा बहुत छोटा है और वे उसे खूब अच्छी तरह जानते हैं। हमारे २७ प्रतिशत देशवासी देहातों (यानी एक हजार या इससे कम आबादी के समुदायों) में रहते हैं, २२ प्रतिशत लोग कस्बों और २५ हजार तक की आबादी के छोटे नगरों में और शेष ४१ प्रतिशत अधिक बड़े नगरों में रहते हैं। अधिकतर अमेरिकन लोग अब भी प्रकृत्या छोटे कस्बों या प्रान्तीय नगरों में रहने के आदी है और जब बड़े बहु-जातीय नगरों में रहने की मजबूरी आ पड़ती है तब भी उनका झुकाव छोटे कस्बों में रहने की ओर ही होता है। युद्ध के बाद से बड़े नगरों में रहने वाले लोग भी अधिकाधिक संख्या में दूर तक फैले उपनगरों में जाने लगे हैं। अमेरिकन लोग अपना कारबार और नागरिक प्रशासन स्वयं चलाने के शौकीन हैं, इसलिए वे बड़े नगरों को पसन्द नहीं करते, क्योंकि उनमें स्वशासन चलाना कठिन होता

है। यही कारण है कि वे बड़े नगर को किसी-न-किसी उपाय से छोटी इकाइयों में विभक्त करने का प्रयत्न करते हैं।

कस्बे में घुसते ही आपको सबसे पहिले क्लब मिलती है, इसलिए किसी जगह पहुंच कर यदि रॉटरी क्लब, किवानीज क्लब या लॉयन्स क्लब का बोर्ड मिले तो आप समझ सकते हैं कि आप कस्बे में प्रवेश कर रहे हैं। इन क्लबों का उद्देश्य समाज की उपयोगी सेवा करना बताया जाता है—जैसे पार्क या अन्य आवश्यक मनोरंजन स्थल बनाना, बाल अपराधियों की समस्या को हल करना, बालचरों की सहायता करना, मुफ्त नेत्र-चिकित्सा की व्यवस्था करना और हाई स्कूल के बैंड के लिए वर्दी खरीदना।

धीरे-धीरे अमेरिका का चेहरा पुनर्यौवन की दीप्ति से चमकता जा रहा है। नये-नये आधुनिक ढंग के कारखाने खड़े हो रहे हैं जिनमें निरी खिड़कियां ही खिड़कियां हैं और वे भी स्टेनलेस स्टील की, और जगह-जगह नये भव्य किन्तु सादे मकान भी बनते जा रहे हैं। कुछ स्थानों पर यह परिवर्तन अविश्वसनीय तेजी से हो रहा है, फिर भी अभी तक पुराने मकानों और भवनों की संख्या ही अधिक है। यहां आपको कुछ गन्दी बस्तियां भी मिल जायेंगी जिनमें टूटे-फूटे खस्ता मकानों में जिनका रंग-रोगन भी उखड़ गया है, गरीब लोग रहते हैं। आम तौर पर मुख्य सड़कें सर्वोत्तम रिहायशी इलाकों के पास से गुजरती हैं। इन इलाकों में छायादार पेड़ होते हैं, हरे-भरे घास के मैदान होते हैं और इनकी [illegible] दीवारों के पीछे छिपी नहीं रहती, बल्कि चौड़ी [illegible] खिड़कियों में झलकती है। इससे आपको चार दीवारों के भीतर [illegible] छिपाना अमेरिकन प्रकृति के विपरीत है। सिर्फ धनी लोग ही [illegible] विशाल [illegible] में रहते हैं और उनकी संख्या भी [illegible] नहीं है।

हर कस्बा स्वभावतः व्यापार-वाणिज्य का केन्द्र होता है और [illegible] इस बात को छिपाने का प्रयत्न नहीं करती.

इन सड़कों पर बनी दुकानों के सामने व्यापार-वाणिज्य की घोषणा करने वाले नामपट लगे रहते हैं और रात को वे लाल, हरी और नीली रोशनियों से जगमगाते हैं। कुछ भवन-खण्डों में वे सेवाएँ और संस्थाएँ केन्द्रित रहती हैं जिन पर कस्बा निर्भर रहता है और जो कस्बे पर निर्भर रहती हैं। ये सेवाएँ और संस्थाएँ हैं बैंक, डाकखाना, टेलीफोन एक्सचेंज, इलैक्ट्रिक कम्पनी, फायर स्टेशन, पुलिस थाना, कचहरी, टाउन हाल, रेलवे स्टेशन, बस का अड्डा, सिनेमा घर और खुदरा बिक्री की दुकानें। इन दुकानों में मुख्यतः कपड़े, खाद्यपदार्थ, बर्तन भांडे और मशीनरी आदि बिकती हैं, परन्तु बिजली आदि के सामान की दुकानें और लांडरियाँ भी होती हैं। इसके अलावा दवा की दुकानें भी रहती हैं, और ये दवा की दुकानें अमेरिका की एक खास चीज हैं, जिनमें सब तरह की आइसक्रीम-जलपान का सामान, मिठाइयां, शृङ्गार सामग्री, किताबें, पत्रिकाएँ, घरेलू उपकरण, सिगरेट, सिगार और खिलौने, यानी दुनिया भर की चीजें मिलती हैं और मजा यह कि इनमें दवाएँ भी मिल जाती हैं।

दुकानों के ऊपर दूसरी ऐसी सेवाएँ होती हैं जिन पर नागरिक लोग निर्भर करते हैं—जैसे डाक्टर, वकील, फोटोग्राफर, दन्दानसाज, नाई, हज्जाम, आर्किटैक्ट और बीमा तथा जमीन जायदाद के एजेंट।

मुख्य सड़क के पास और कभी-कभी उसी पर, गिरजाघर, सार्वजनिक पुस्तकालय और वाई० एम० सी० ए० भवन होते हैं जो इस बात के प्रतीक हैं कि कस्बे के जीवन में धर्म और सबको शिक्षा का समान अवसर और मनोरंजन प्रदान करने वाले साधन कितना महत्त्वपूर्ण भाग अदा करते हैं।

इस सबके बीच में—ऊपर की मंजिलों के कमरों में और व्यापार वाणिज्य के ज्वार से घिरे पुराने भवनों में—क्लबें और वासे होते हैं। इन वासों के नाम पशु-पक्षियों के नाम पर ऐल्क्स, ईगल्स, मूज या आऊल्स आदि होते हैं। ऐसा लगता है कि अमेरिकनों ने इनके नाम

रखने के लिए आदिम मानव की तरह पशु-पक्षियों के संकेतों को जितना अपनाया है, उतना संसार के किसी अन्य देश के लोगों ने नहीं अपनाया। एक ऐसे समाज में, जो अत्यधिक टुकड़ों में बंटा हुआ और सचल है, ये क्लबें और वासे एक छोटे और खूब गुंथे हुए समाज की भावना को सुरक्षित रखने में सहायता देते हैं। यद्यपि इन क्लबों और वासों का प्रयोजन भ्रातृत्व को बढ़ाना है और उनमें बीमार और अपंग लोग भी अपने रहने की व्यवस्था करके तीमारदारी की सुविधा हासिल कर लेते हैं, तो भी दूसरे लोग भी जो घर से दूर, किन्तु आराम से रहना चाहते हैं, इन वासों में खूब आनन्द से टिक सकते हैं। यहां मनुष्य को एक ऐसा दुर्ग मिल जाता है जिसमें स्त्रियों का प्रवेश या दखल नहीं होता फिर भी अनादिकाल से स्त्रियां पुरुष की जो सेवा करती आई हैं, उससे यहां वह महरूम नहीं रहता। इन क्लबों और वासों से मैत्री की भावना को भी बढ़ावा मिलता है जिसके फलस्वरूप कभी-कभी लोगों में व्यापारिक या राजनीतिक समझौते भी हो जाते हैं।

सामूहिक जीवन में व्यक्ति का स्थान

छोटे कस्बे या छोटे नगर का निवासी सैकड़ों तरह से अपने समुदाय के साथ जुड़ा रहता है। उदाहरण के लिए दस हजार आबादी के न्यू इंग्लैंड के एक कस्बे में रहने वाले एक विवाहित युगल जॉन और मेरी को लीजिए। जॉन बिजली के सामान के एक कारखाने में डिवीजनल सुपरवाइजर है। वह और उसकी पत्नी एक ब्रिज क्लब के सदस्य हैं। उनकी यह ब्रिज क्लब कस्बे की क्लब में जमती है, इसलिए वे उसके भी सदस्य हैं। इन क्लबों का सम्बन्ध सामान्यतः अच्छी स्थिति के लोगों के कामों और रुचियों से रहता है। फिर जॉन और मेरी गिरजाघर के सदस्य हैं और साथ ही उनकी युवक युगल क्लब की बैठकों में भी हिस्सा लेते हैं।

जॉन का साझेदार रोटरी क्लब का सदस्य है, किन्तु वह स्वयं लायन्स क्लब का सदस्य है। महिला क्लबों में भी इसी तरह की अन-

व्यवस्था बनी हुई है, हालाँकि अलग-अलग कस्बों में यह व्यवस्था अलग-अलग किस्म की होती है। जॉन स्कूल बोर्ड का भी सदस्य है, इसलिए वह लॉयन्स क्लब का सदस्य होना अधिक उपयोगी समझता है, क्योंकि वहाँ वह स्कूल के सुपरिण्टेण्डेण्ट से बात चीत कर सकता है। वहाँ वह यह जान सकता है कि दूसरे लोग स्कूल के बारे में क्या सोच रहे हैं और बोर्ड की कुछ समस्याओं के बारे में उनमें दिलचस्पी भी पैदा कर सकता है।

इसके अलावा वह इन गति विधियों या संगठनों में भी भाग ले सकता है : उसके कालेज के पुराने छात्रों का संगठन, उसके कालेज का भ्रातृसंघ; हाई स्कूल के पुराने छात्रों का संघ; संध्या का समय मनोरंजन में बिताने के लिए किसी नृत्य दल की सदस्यता; रॉड एण्ड गन क्लब; गिरजाघर की संगीत मंडली; कारखाना प्रबन्धकों की राष्ट्रीय एसोसिएशन और रिपब्लिकन पार्टी।

मेरी का जीवन उससे कम नहीं, बल्कि कुछ अधिक ही व्यस्त रहता है। अमेरिका की बहुसंख्यक गृहिणियों की भाँति वह अपने घर का सारा कामकाज करती है, यहाँ तक कि कपड़े भी स्वयं धोती है (जिसके लिए उसके पास बिजली की मशीनें हैं)। वह अपने दिन भर के काम की योजना उसी तरह बनाती है, जैसे सेनापति आक्रमण की योजना बनाता है और उसके बाद उसमें खाना बनाने, सफ़ाई करने, कपड़े सीने, बागवानी करने और साथ ही अपने अन्य कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए समय निर्धारित करती है।

उसकी मेज़ पर किसी-न-किसी कोश-संग्रह के लिए प्रचार-सामग्री भी रहती है, क्योंकि उसका सम्बन्ध ऐसे अनेक आन्दोलनों से रहता है। कल्पना कीजिए कि इस समय वह एक बड़े कोश—सामुदायिक कोश—के लिए धन-संग्रह कर रही है। इस कोश के लिए प्रतिवर्ष एक बार अपील की जाती है और उसके वाई० एम० सी० ए० (कस्बा बड़ा हो तो वाई० डब्ल्यू० सी० ए० भी), बालचर और गर्ल-गाइड, मानसिक

स्वास्थ्य केन्द्र, परिवार सेवा केन्द्र, अस्पताल, पराश्रित बाल केन्द्र और इसी तरह के एक दर्जन और संगठनों को सहायता मिलती है, जो कस्बे के सामुदायिक जीवन के लिए आवश्यक है। साल में ऐसे ही और भी मौके आते है, जब वह रैडक्रास, अपंग बाल केन्द्र, अन्ध विद्यालय, हार्ट फंड या पैसा कोश आदि विभिन्न सेवा संगठनों और कार्यों के लिए पड़ोसियों से दान संग्रह के लिए जाती है। इनमें से अनेक संगठन ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध कस्बे के सामुदायिक कोश से नहीं रहता, और जिनका संचालन जिले के प्रधान कार्यालय से होता है। इसके अलावा बीच-बीच में कुछ खास कार्यों, जैसे स्कूल के जलपान-गृह का सुधार, आदि के लिए भी धन-संग्रह की विशेष अपीलें की जाती हैं। यह कहा जा सकता है कि यह जिम्मेदारी स्कूल के बोर्ड की है, बल्कि स्वयं मेरी भी अपने पति से यह बात कह सकती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि स्कूल के बोर्ड का बजट इतना छोटा होता है कि उसमें से ऐसे कामों के लिए गुंजायश नहीं रहती। इसलिए स्त्रियों को ही उसके लिए स्कूल के मेले में खाद्य-पदार्थों की बिक्री करके, नीलामियों से अथवा ब्रिज पार्टियों या नृत्य कार्यक्रमों से धन-संग्रह करना पड़ता है। कस्बे के लोग हर वक्त किसी-न-किसी तरह के धन-संग्रह में लगे रहते है।

सरकार ही इन सेवाओं की देख-भाल क्यों नहीं करती और वही इनका खर्च चलाने के लिए टैक्स लगाकर धन की व्यवस्था क्यों नहीं करती? इसका उत्तर यह है कि अमेरिकन हमेशा ही सब काम सरकार पर छोड़ कर उसे सर्व-शक्तिमान बनाने के विचार के विरोधी रहे हैं, वे कामकाज को यथासम्भव अपने ही हाथ में रखने के पक्षपाती हैं। यदि इन सेवाओं के संचालन को सरकार अपने हाथ में ले ले तो उनका खर्च आज की अपेक्षा कहीं अधिक होगा और जनता उसे सहन न कर सकेगी। कुछ छोटे कस्बों में तो आग बुझाने का काम भी स्वयं-सेवक करते हैं। जैसे ही आग की सूचना देने वाला भोंपू बजता है वे अपना-अपना काम छोड़ कर आग बुझाने के लिए [illegible]

में दौड़ते हैं। अमेरिकन लोग सरकारी दवाखानों से दवा लेने के बजाय स्वैच्छिक स्वास्थ्य बीमा योजनाओं में शामिल होना पसन्द करते हैं और आज ११ करोड़ व्यक्ति इन योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं।

अपने नियमित कामों के अलावा मेरी को हर समय किसी-न-किसी तरह के संग्रह के लिए विशेष योगदान भी करते रहना पड़ता है। कभी किसी विशेष प्रयोजन के लिए आयोजित 'फेट' के लिए केक देना, कभी गिरजाघर द्वारा विदेशों के गरीबों के लिए किये जा रहे पुराने कपड़ों और हाई स्कूल के पुस्तकालय के लिए पुस्तकें देनी पड़ती हैं। इसी तरह कभी पास के कस्बे में मैच के लिए लड़कों को अपनी गाड़ी में मुफ्त पहुँचाना, किसी सामाजिक प्रयोजन के लिए आयोजित नीलामी के पोस्टर बनाना और उन्हें दुकानों में प्रदर्शन के लिए रखना और महिलाओं को अपने बच्चों को शरीर-परीक्षा या चिकित्सा के लिए अपने बच्चे चिकित्सालय में भेजने के लिए फोन करना—ये सब काम भी उसे बीच-बीच में करते रहने पड़ते हैं।

इस प्रकार के एक मध्यवर्गीय जोड़े के नागरिक कार्यों की पूरी तस्वीर पेश करना आसान नहीं है। वह असंख्य तरीकों से समाज के साथ बँधा होता है और यह मान कर चलता है कि उसे इस बंधन को निभाना ही है। यह सही है कि ये सामाजिक कार्य उनका बहुत-सा समय खा जाते हैं और इस प्रकार उनके आराम और अवकाश के समय को उतना ही कम कर देते हैं, परन्तु साथ ही वे उनकी आत्म-गौरव की भावना को भी उसकी संकरी सीमा से बाहर निकाल कर परितृप्ति प्रदान करते हैं और पति-पत्नी अपने आपको समाज का अंग बनाकर यह अनुभव करते हैं कि उनका व्यक्तित्व अधिक बड़ा और व्यापक है। जो व्यक्ति इस प्रकार के सामुदायिक कार्यों में भाग लेकर समाज के साथ अपने आपको जोड़ लेता है, उसमें पृथक्ता और एकाकीपन की भावना नहीं रहती। वह अनुभव करता है कि वह सारे समाज के साथ गुँथा हुआ है और उसके साथ अनेक रूपों में उसके

सम्बन्ध है। रॉटरी क्लब का नारा है, "सेवा पहले और आत्महित पीछे।" ईसाई धर्म की शिक्षा है कि "अपने पड़ोसी से प्यार करो।" यह एक सीधी-सादी विचार-धारा है जिसे जॉन और उसकी पत्नी नगर के सामुदायिक जीवन में प्रतिदिन अपने अनुभव से हृदयंगम करते हैं।

पारस्परिक स्वैच्छिक सेवा एक ऐसा साधन है जिससे सक्रिय नागरिक समाज में अपनी स्थिति को अनुभव करता है, सफलता और उपलब्धि की अपनी आवश्यकता को पूरा करता है और सुरक्षा और पारस्परिक आदर की भावना अपने भीतर पैदा करता है। ऐसे लोगों में पार्थक्य, एकाकीपन और असुरक्षा की वह भावना नहीं होती जिसे अक्सर समाज-विज्ञान-वेत्ता हमारी सभ्यता का एक चिह्न बताते हैं।

इस स्वैच्छिक सेवा की प्रणाली में एक गम्भीर खामी यह है कि काफी बड़ी संख्या में लोग इस प्रणाली के अन्तर्गत आने से रह जाते हैं, विशेषकर अल्प-आय वर्ग के लोग। ये लोग इन सेवाओं से लाभ तो उठाते हैं, किन्तु प्रायः उनमें सहायता और योगदान नहीं करते। इसका कारण कुछ तो यह है कि उनके पास इसके लिए पर्याप्त अवकाश नहीं होता और कुछ यह कि स्वयं समाज का काम करने वाले लोग सहायता और योगदान लेने के लिए उनके पास जाते ही नहीं, वे सिर्फ उन्हीं के पास जाते हैं जिन्हें वे जानते हैं या जिन पर विश्वास करते हैं। अल्प-आय वर्ग के लोगों में न तो धन-संग्रह करने या बोर्डों की बैठकों में भाग लेने के लिए उत्साह होता है और न उन्हें समाज-सेवा के लिए पर्याप्त ज्ञान और आत्म-विश्वास ही होता है। इस समस्या का एकमात्र हल यह है कि शिक्षा का स्तर इतना ऊँचा उठाया जाए कि इस विषय का ज्ञान दूसरों से कम न रहे।

स्वैच्छिक संस्थाएँ

[illegible] समुदाय को भली-भाँति समझने के लिए यह आवश्यक है कि पहले इसकी [illegible] संस्थाओं का इसी तरह अध्ययन किया जाए और इसके बाद इसके स्वैच्छिक संगठनों का।

स्वैच्छिक संगठन उन लोगों के लिए सर्वथा उपयुक्त साधन हैं, जो स्वतन्त्र नागरिक और स्वतन्त्र व्यक्ति रहते हुए भी समाज के साथ बँधे रहना और उस पर प्रभाव डालना चाहते हैं। जैसा कि जैक बार्जन ने कहा है, यह नैतिक फिलासफी का क्रियात्मक रूप है। "हम ईश्वर को अपने ऊपर बोझ और दोष नहीं लेने देते, उसे हम स्वयं अपने ऊपर ले लेते हैं।"*

ये स्वैच्छिक संगठन विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक या जातीय पृष्ठभूमि के लोगों के लिए परस्पर मिलने और एक-दूसरे को समझने के साधन हैं। क्लबों, गिरजाघरों और आन्दोलन के लिए आयोजित प्रीति-भोजों में एक-साथ बैठकर खाना, बाजारों और नीलामियों में सामाजिक उद्देश्यों के लिए धन और सेवाओं का आदान-प्रदान करना लोगों को एक-दूसरे के नजदीक लाता है और इससे लोकतन्त्र के उद्देश्य की सिद्धि होती है। सार्वजनिक सेवा में धन और समय देने से व्यक्ति का अपना दर्जा ऊँचा होता है। इस सेवा में भाग लेने वाले अनुभव करते हैं कि वे अपने इर्द-गिर्द की परिस्थितियों के दास होने के बजाय स्वयं उनका अपने मन के अनुकूल निर्माण करते हैं (यह सही है कि व्यक्ति को स्वैच्छिक समाज-सेवा में प्रेरित करने वाली शक्तियाँ भी उसके इर्द-गिर्द की परिस्थितियों में ही होती हैं)। इस प्रकार वे यह आत्मविश्वास अनुभव करने लगते हैं कि वे जो कुछ हैं और जैसी परिस्थिति में हैं उसका चुनाव उन्होंने स्वयं किया है। यह विश्वास अमेरिकनों को बहुत सन्तोष प्रदान करता है, क्योंकि वे विचार-विमर्श के बजाय कर्म को और कल्पनाओं के बजाय उनके परिणामों को अधिक महत्त्व देते हैं।

स्वेच्छया समाज-सेवा के लिए संगठन बनाने की यह आदत, जो सारे समाज में व्याप्त है, राष्ट्र की तानाशाही के विरुद्ध रक्षक ढाल है। इससे समाज किसी भी वर्ग या समुदाय के अत्याचारों से अपनी

*गाड्स कंट्री एण्ड माइन, पृष्ठ १५।

रक्षा कर सकता है। व्यक्ति अपने आप में नितान्त शक्तिहीन है किन्तु एक संगठन का सदस्य बनकर वह शक्तिशाली हो जाता है। ये संगठन संख्या की दृष्टि से इतने अधिक हैं और उद्देश्यों के लिहाज से इतने विविधतापूर्ण है कि ये एक-दूसरे को नियन्त्रित और सन्तुलित करते रहते हैं। यदि कू क्लक्स क्लैन जैसा एक हास्यास्पद और खतरनाक संगठन है तो उसके मुकाबले में रचनात्मक काम करने वाले सौ या हजार संगठन भी हैं।

कुछ संगठन काम के आधार पर बने हैं, जैसे मजदूर यूनियनें और कुछ पेशे के आधार पर, जैसे मेडिकल सोसाइटियां और किसान संघ। इसी तरह रोग-निवारण या शिक्षा-सुधार के लिए बने समाज-सेवी अथवा समाज-सुधारक संगठन, धार्मिक समुदाय और अपने या अपने पूर्वजों के पुराने देशों के साथ सम्बन्धों के आधार पर निर्मित विभिन्न राष्ट्रीय समाज भी यहां विद्यमान हैं। और भी नाना प्रकार के संगठन यहां हैं, जिनमें से डॉटर्स ऑफ दी अमेरिकन रेवोल्यूशन, पुराने कालिज छात्रों के संघ, या भूतपूर्व सैनिक संघ आदि कुछ संगठन ऐसे हैं, जो एक जैसे अनुभव वाले लोगों ने स्थापित किये हैं। पुराने आदिवासियों द्वारा अपनाए गए पशु-पक्षियों या वनस्पतियों के प्रतीकों के नामों पर स्थापित [illegible] या [illegible] आदि प्रतीकात्मक समूह, अथवा मनोरंजन या राजनीति के आधार पर बने संगठन या महिला मंडल भी अमेरिका में बड़ी संख्या में हैं।

[illegible] लीग और [illegible] से लेकर सोसाइटी फॉर [illegible] लिटिल तक अनेक प्रकार के अर्द्धो-[illegible] हैं, जिनका सम्बन्ध हर तरह के हितों, मनोरंजनों, [illegible] शौक या विचार-सुधार-आदि से है। एक अमेरिकन [illegible] पता चला कि [illegible] ४१ प्रतिशत [illegible] की सदस्य है। इनमें सर्वोच्च [illegible] प्रतिशत और सब से निचले वर्ग के ८८

प्रतिशत व्यक्ति विभिन्न संगठनों के सदस्य थे। जैसा कि हमने अभी देखा है, एक व्यक्ति अनेक प्रकार के काम कर सकता है। इस तरह सभी सक्रिय व्यक्तियों के विभिन्न कामों के मिश्रण से समाज-संगठन का एक अत्यधिक जटिल जाल फैल जाता है।

उपयोगी सामाजिक संगठनों के निर्माण का वक्त आने पर स्त्रियाँ वास्तव में ही पुरुषों से आगे होती हैं, क्योंकि कस्बे या नगर के सामुदायिक कोश अथवा सामाजिक सेवाओं में काम करने के साथ-साथ उनका अपना भी एक पूरा का पूरा संगठन होता है। पुरुष मतदाताओं का कहीं कोई संगठन नहीं है, किन्तु स्त्री मतदाताओं के संगठन मौजूद हैं और वे स्थानीय स्तर पर ही नहीं, राष्ट्रीय स्तर पर भी चुनावों के मौके पर महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को उठाते और स्त्री मतदाताओं में उनके बारे में तथ्यों का प्रचार करते हैं। महिला क्लबों के महासंघ (जनरल फेडरेशन ऑफ विमेन्स क्लब्स) ने निःशुल्क पुस्तकालयों और बाल-न्यायालयों की स्थापना, महत्त्वपूर्ण साधन-स्रोतों की रक्षा, प्रौढ़-शिक्षा और इसी प्रकार के अन्य जन-कल्याण एवं सुधार के कामों में महत्त्वपूर्ण योग दिया है (देश भर में ऐसी १५,००० क्लबें, हैं जिनकी सदस्य संख्या १,१०,००,००० है)। इसके अलावा कृषि विभाग की सहायता से गाँवों में कुछ संगठन ऐसे भी हैं जो लोगों को घरों में जाकर खान-पान, मकानों को साफ-सुथरा रखने और घरेलू कामों के तरीके सिखाने या कृषि अथवा अन्य विषयों की नई जानकारियाँ देने के लिए क्रियात्मक प्रदर्शन कर के दिखाते हैं। एक फ्रेंच युवती को एक गाँव में इस प्रदर्शनकारी दल के साथ ग्रामीण महिलाओं को शारीरिक पोषण, विदेशी मामलों और राष्ट्रीय नीति आदि पर बहस करते देखकर बहुत आश्चर्य हुआ।

स्वैच्छिक सेवा का आरम्भ

इस समूची स्वैच्छिक और स्वयंसेवी गतिविधि को अमेरिका में स्पष्ट देखा जा सकता है और यहाँ के समाज के लिए वह महत्त्वपूर्ण भी बहुत। परन्तु यह प्रवृत्ति आई कहाँ से ?

जब १६०७ में उन स्त्री-पुरुषों ने, जिन्हें हम 'तीर्थ-यात्रियों' के नाम से जानते हैं, इंग्लैंड से हॉलैंड के लिए प्रस्थान किया था, तभी उन्होंने अपने आपको एक समझौते में बांध लिया था और उसका नाम रखा था "भगवान् के साथ करार।" उनका विश्वास था कि सच्चा ईसाई सम्प्रदाय वह है जिसमें समान विचार के लोग एक स्वैच्छिक संगठन में आबद्ध हों। और यह उस जमाने की बात है, जब अंग्रेजों से उसी धर्म को अपनाने के लिए कहा जाता था जिसका पालन उनका राजा करता था और उन्हें यह धमकी दी जाती थी कि यदि वे नियमपूर्वक उस धर्म के गिरजाघरों में प्रार्थना के लिए नहीं जाएंगे तो उन्हें दण्ड दिया जाएगा।

जब ये लोग फिर हॉलैण्ड से अमेरिका के लिए चले और न्यू इंगलैंड के तट के निकट पहुंचे तो उन्होंने यह अनुभव किया कि अब उनके ऊपर न कोई सरकार है और न कोई अधिकारी। उन्होंने फिर आत्म-शासन के लिए स्वैच्छिक संघ-निर्माण का ही तरीका अपनाया। अटलांटिक महासागर के पार अमेरिका में लाने वाले जहाज 'मेफ्लावर' पर ही उन्होंने आपस में एक समझौता कर लिया और यह स्वीकार किया कि वे लोग अपने लिए जो भी कानून-कायदे बनाएंगे, उनका सब लोग निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। उन्होंने अपने लिए एक गवर्नर चुना और बाद में जैसी-जैसी आवश्यकता हुई, वैसे-वैसे अन्य अधिकारियों का भी चुनाव किया। जिस राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा और वफ़ादारी थी, उनसे तीन हज़ार मील दूर रहकर भी उन्होंने [illegible] सफलता के साथ अपना शासन [illegible] उनकी [illegible] नहीं थी, क्योंकि उन्होंने [illegible] अधिकार नहीं मिला हुआ था, तो भी उन्होंने अपनी व्यवस्था [illegible]।

इस प्रकार [illegible] प्रारम्भिक दिनों से ही [illegible] रहे हैं। [illegible] पर [illegible] थी। [illegible] कि [illegible]

लोगों की जरूरतें बढ़ती जाएं, वसे-वैसे उनकी पूर्ति के लिए नए संगठन भी बनते जाएं। सबसे पहले गिरजाघर बने, क्योंकि अक्सर अमेरिका में आने वाले या अमेरिका के ही एक स्थान से जाकर दूसरे स्थान में बसने वाले लोग धर्म के आधार पर संगठित दलों के रूप में थे, जैसे टामस हुकर का प्रसिद्ध दल, जो मैसाचुसेट्स से कनैक्टिकट में जा बसा था।

प्रोटेस्टैंट लोगों का कहना था कि उनका स्थानीय शासन उनके अपने हाथ में रहना चाहिए। दूसरे, सीमावर्त्ती गैर-आबाद इलाकों का खतरे से भरा जीवन भी उन्हें अपने अस्तित्व की रक्षा और समृद्धि के लिए परस्पर संगठन में आबद्ध होने के लिए मजबूर करता था। इसलिए स्वभावतः उनमें परस्पर मिलकर स्वेच्छा से समाज-सेवा के लिए संगठन बनाने की प्रवृत्ति उभरी जिसका आज तक अमेरिका के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अमेरिका में स्वैच्छिक संगठन बनाने की इस प्रवृत्ति के कारण ही लोग नगर या कस्बे की विशालता को पसन्द नहीं करते और आसानी से एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर चले जाते हैं और तुरन्त ही वहाँ नये सम्पर्क और सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं।

न्यू इंग्लैंड में या न्यू इंग्लैंड के ढंग पर निर्मित कोई भी छोटा कस्बा आज भी बाकायदा एक प्रशासनिक संगठन नहीं है, बल्कि एक स्वैच्छिक संगठन है। उसमें कोई राजनीति नहीं है, जिसका लाभ उठाने के लिए पारस्परिक प्रतिस्पर्धा हो। लोग बारी-बारी से वहाँ पद पर नियुक्त होते हैं और हालाँकि वे अधिकतर बिना किसी वेतन के ही कस्बे का काम-काज चलाते हैं, फिर भी उन्हें धन्यवाद के बजाय आलोचना का ही पात्र बनना पड़ता है। चाहे वे व्यापारी हों या किसान, राजनीति में वे नौसिखिये होते हैं और कर्त्तव्य की भावना से या अपना स्तर ऊँचा उठाने के लिए ही नागरिक प्रशासन का पद ग्रहण करते हैं।

इस प्रकार शासन का काम स्थानीय स्तर से प्रारम्भ हुआ। यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय तथ्य है जिसे भुलाया नहीं जाना चाहिए

क्योंकि वह अमेरिकनों के व्यवहार की अनेक पहेलियों और गुत्थियों को सुलझाता है।

अमेरिकन इतिहास के हर संकट में स्वैच्छिक संगठन बनाने की प्रवृत्ति ही निर्णायक सिद्ध हुई। जब १७६५ में ब्रिटेन ने स्टाम्प ऐक्ट लागू करने का प्रयत्न किया तो सभी कालोनियों में उसका विरोध करने के लिए संगठन बन गये। ये संगठन अपने आपको सन्स ऑफ लिबर्टी (स्वतन्त्रता के पुत्र) कहते थे। उन्होंने ब्रिटिश पार्लमेंट में प्रतिनिधित्व दिये बिना कालोनियों से टैक्स वसूल करने का तीव्र विरोध किया। उन्होंने प्रमुख अधिकारियों के पुतले जलाये, स्थान-स्थान पर स्वतन्त्रता-स्तम्भ बनाए और स्वतन्त्रता के नाम पर वृक्ष अर्पित किये, स्टाम्पों की होली जलाई और स्टाम्प विभाग के अधिकारियों को दफ्तरों में पद ग्रहण करने से रोका। विभिन्न कालोनियों में इन आन्दोलनकर्त्ताओं को एक सूत्र में बांधने और संगठित करने के लिए पत्र-व्यवहार समितियां बनाई गई। इन समितियों ने इस आन्दोलन में जो अनुभव प्राप्त किया, वह क्रान्ति के समय सब कालोनियों को एक सूत्र में बांधने के लिए बहुत काम आया। जोन ऐडम्स ने इन समितियों के बारे में कहा था कि "ये समितियां ही सारी क्रान्ति को अपने भीतर समेटे हुए थी। दस वर्ष तक इन स्वतन्त्रता के पुत्रों ने स्वतन्त्रता के पक्ष में जनमत बनाने के लिए सतत परिश्रम किया। ये लोग स्वतन्त्रता के पक्ष में जो बातें कहते थे, वही बाद में स्वतन्त्रता की घोषणा में लिपिबद्ध की गई। इन स्वतन्त्रता के पुत्रों ने स्वतन्त्रता के आन्दोलन को वह भावनात्मक

करने की पक्षपाती सोसाइटियाँ यह चाहती थीं कि इसके लिए कुछ ठोस काम किया जाए। इसके लिए अण्डर ग्राँउड रेल रोड नामक संगठन का निर्माण हुआ। यह अमेरिका के सबसे अधिक रोमाँटिक और असाधारण संगठनों में से एक था। उसने बहुत जबर्दस्त काम किया। उसने गृह-युद्ध प्रारम्भ होने से काफी पहले ही गुप्त और गैर-कानूनी तरीकों से हजारों गुलामों को उनके मालिकों के पास से भागने और स्वतन्त्र होने में सहायता दी।

स्त्रियों ने कानूनी हक और मताधिकार पाने के लिए अपनी लम्बी लड़ाई भी इसी साधन से लड़ी। मद्यपान के विरुद्ध लड़ी गई लड़ाई में भी स्वैच्छिक संगठन महत्त्वपूर्ण साधन थे। प्रौढ़-शिक्षा का अद्‌भुत कार्य-क्रम भी, जो लाइसियम आन्दोलन के नाम से अमेरिका में चलाया गया, इन स्वैच्छिक स्वयंसेवी संगठनों के बल पर ही चला। इस आन्दोलन ने अमेरिका की समूची सार्वजनिक शिक्षा-प्रणाली को बदल डाला। इसी साधन से श्रमिक आन्दोलन और राष्ट्र की समृद्धि में न्यायपूर्ण समुचित हिस्से की माँग का किसानों का आन्दोलन भी चलाया गया।

इन सब परीक्षाओं और कसौटियों में, जो राजनीति और सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में आजमायी गई, स्वैच्छिक संगठन का साधन सफल रहा और अधिकाधिक मजबूत होता गया। हर नये क्षेत्र में इसके उपयोग और विस्तार ने उसे अमेरिका की जटिल औद्योगिक सभ्यता में अपनाने के योग्य बनाया।

इस स्वैच्छिक संगठन-निर्माण का आधार नैतिक और धार्मिक था, यह बात उसकी प्रगति में बहुत महत्त्वपूर्ण रही। जब स्त्रियों ने समानाधिकार पाने, शराब के खत्म करने या अच्छे घर और बगीचे बनाने के लिए आन्दोलन किये तो वे यह भली-भाँति अनुभव करती थीं कि उनके इन आन्दोलनों में आधारभूत प्रयोजन नैतिक है। किसान और मजदूर भी यह अनुभव करते थे कि उन्हें राष्ट्र की दौलत में अधिक हिस्सा पाने का नैतिक अधिकार है।

अमेरिकन लोग नैतिकता के स्वीकृत सिद्धान्तों और ईसाई धर्म को एक ही मानते थे, इसलिए उनकी दृष्टि में शासन और सरकार भी ईसाई धर्म के ही उपोत्पादन थे। स्वतन्त्रता की घोषणा में कहा गया था कि सभी मानवों को उनके स्रष्टा ने कुछ ऐसे अधिकारों से युक्त पैदा किया है, जिनका अपहरण नहीं किया जा सकता। अमेरिकन लोग ईश्वर को अपने अधिकारों का मूलोद्गम मानते थे, इसलिए इन अधिकारों की रक्षा को अपना राजनीतिक, और साथ ही धार्मिक, कर्त्तव्य मानना उनके लिए स्वभाविक ही था। इसके अलावा अमेरिकन अपने छोटे-से इतिहास में भी यह देख चुके थे कि धार्मिक और राजनीतिक स्वतन्त्रताएँ एक-दूसरी के साथ मिली हुई हैं। इन दोनों प्रकार की स्वतन्त्रताओं की अविच्छिन्नता के कारण ही उन्हें अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता और इच्छानुसार पूजा के अधिकार को पाने के लिए अलग बस्तियाँ बसानी पड़ी थीं और इस अधिकार के आधार पर ही उन्होंने उनमें स्वशासन कायम किया था।

उनके लिए पूजा की स्वतन्त्रता का अर्थ था शासन की स्वतन्त्रता और शासन की स्वतन्त्रता का अर्थ था पूजा की स्वतन्त्रता। जो व्यक्ति अपने सामाजिक कर्तव्यों का पालन नहीं करता था उसे अपने नैतिक कर्तव्यों से च्युत समझा जाता था। इसके विपरीत जो व्यक्ति अपने सामाजिक कर्तव्यों का पालन करता था वह आदर का पात्र समझा जाता था। व्यापार और समाज के काम-काज में भाग लेना ही व्यक्ति के नैतिक गुणों की कसौटी [illegible]।

चलता है—किन्तु हम यह भी चाहते हैं कि वे चर्च और राज्य के मामलों को एक-दूसरे से अलग-अलग रखें। इसी कारण हममें विभागीकरण की, यानी हर काम या आवश्यकता के लिए पृथक्-पृथक् संगठन बनाने की आदत पड़ी है। जब भी हमारे सामने कोई नई समस्या पैदा होती है, (चाहे वह शिशु पक्षाघात की हो, या प्राकृतिक सम्पदाओं के अपव्यय की, या समाज में अच्छे संगीत के प्रचार की) हम उसके हल के लिए एक नया संगठन बनाते हैं। हम में से हर आदमी का व्यक्तित्व मिश्रित है; एक ओर हम किसी संगठन के सदस्य हैं, तो दूसरी ओर किसी समिति या कोश से भी हमारा सम्बन्ध है। इस प्रकार इस अत्यन्त जटिल और पेचीदा संसार में हम अनेक छोटे-बड़े संगठनों के सदस्य बनकर और उस सदस्यता के द्वारा रू-ब-रू एक-दूसरे के सम्पर्क में आ कर एक समाज की भावना और अनुभूति को बनाये रखते हैं।

धर्म

संसार में और कहीं भी धर्म इतना उर्वर और स्वतःस्फूर्त नहीं पाया गया और न ही किसी अन्य आधुनिक राज्य में उसने इतना सक्रिय भाग अदा किया है, जितना अमेरिका में। यहाँ २५० से अधिक धर्म और मतमतान्तर हैं। इनमें से कुछ के अनुयायी लाखों में हैं और कुछ के मुट्ठीभर। युनिटेरियन आदि कुछ धार्मिक सम्प्रदाय बुद्धिवादी हैं और बाकी महज शोर-गुल मचा कर और शारीरिक कसरत कर के ही अपने धार्मिक विश्वास का प्रमाण देते हैं।

सभी धार्मिक विश्वासों के चर्चों की सदस्य संख्या दस करोड़ के लगभग है। हमारे समूचे इतिहास में कुल आबादी की तुलना में चर्च के सदस्यों का अनुपात हमेशा बढ़ता रहा है और अभी हाल के वर्षों में यह अनुपात पहले की अपेक्षा भी अधिक तेजी से बढ़ा है। सन् १९५० और १९५४ के बीच चर्च की प्रार्थनाओं में भाग लेने वालों की संख्या में ९० लाख की वृद्धि हुई है। मजदूरों की अपेक्षा दफ्तरों में काम करने

वाले बाबू और कालेजों में न जाने वालों की अपेक्षा कालेजों में जाने वाले गिरजाघरों में अधिक नियमित रूप से जाते हैं।

कुछ उग्रतम धार्मिक विश्वास, जैसे मॉर्मन (चर्च ऑफ जीसस क्राइस्ट लैटर डे सेंट्स) और क्रिश्चियन साइंटिस्ट, विशुद्ध अमेरिका की उपज हैं। कुछ अन्य धर्म, जैसे बैप्टिस्ट और कांग्रिगेशनलिस्ट अमेरिका की उपज न होने पर भी वहां एक विशेष ढंग से विकसित हुए हैं। रोमन कैथलिक, लूथरन, एपिस्कोपेलियन और यहूदी धर्म यूरोप से ही बने-बनाये रूप में अमेरिका में आये हैं, किन्तु उनके शास्त्रों की व्याख्याओं के अनुसार उनमें प्रचलित स्वैच्छिक संगठनों के अनुकूल परिवर्तन होता रहा है।

धार्मिक विश्वासों और आचरणों की विविधता से सामाजिक जीवन में विविधता और वैचित्र्य आता है और साथ ही इससे धार्मिक सहिष्णुता की भावना भी पैदा होती है। यह एक विचित्र बात है कि जहां धर्मों में इतनी विविधता होती है, वहां धार्मिक विश्वासों के तर्क और कर्मकांडों का महत्त्व अधिक नहीं रहता। यही कारण है कि हर धर्म की खास-खास बातों को लेकर तरह-तरह के मजाक और चुटकुले बने हुए हैं (जैसे बैप्टिस्टों के सिर तक पानी में गोता लगाने, कैथलिकों में मछली-भक्षण वाले शुक्रवार और यहूदियों के खतने को लेकर अनेक मजाक प्रचलित हैं)। इन धार्मिक मजाकों का नतीजा यह है कि धार्मिक मतभेद विनोद में कुछ हद तक अपना महत्त्व खो देते हैं। अगर कभी मतभेद और तनाव पैदा होते भी हैं तो वे धार्मिक विश्वासों की भिन्नता के

वे उनसे अलग हो गये। बहुत-से लोग बड़े शहरों में रहते हैं, इसलिए उनके अपने अलग छोटे समाज नहीं बन पाते, और इसका परिणाम यह होता है कि उनके सम्बन्धों में वैयक्तिकता नहीं हो पाती। कुछ व्यक्ति चर्चों की शिक्षाओं और कर्मकांडों के विरोधी हैं और उनकी बहुत सी बातों को पाखण्ड समझते हैं। कुछ का यह विश्वास है कि धर्म का विज्ञान के साथ किसी भी तरह तालमेल नहीं हो सकता। कुछ यह कहते हैं कि जब मुक्ति के इतने अधिक मार्ग हैं तो यह चुनाव कैसे किया जा सकता है कि अमुक मार्ग ही सही है। कुछ लोग व्यक्तिवादिता को इतनी दूर तक खींच ले जाते हैं कि वे किसी भी धर्म या किसी भी संगठन में शामिल नहीं होते—उनका यह विचार अमेरिकन लोकतन्त्र की अत्यन्त दुःखद और गलत व्याख्या है। अधिकतर लोग इस मामले में बिल्कुल उदासीन और तटस्थ हैं। उनका न धर्म से विरोध है और न धर्म के प्रति आस्था; वे उससे सिर्फ इसलिए अलग रहते हैं कि झंझट में पड़ना उनके बस का नहीं है।

हमने इस बात को बहुत अधिक महत्त्व दिया है कि धर्म हमारी राष्ट्रीय एकता में दखल न दे। इसीलिए हमने धर्मों की विविधता के विभेदक और विभाजक परिणामों पर बल न देकर धर्म की ऐक्य-स्थापक प्रकृति पर ही बल दिया है। सब मनुष्य भाई-भाई हैं और ईश्वर सब का पिता है, यह विश्वास धर्मों में समान रूप से विद्यमान है। हम धर्म का वह उदार व्यापक रूप पसन्द करते हैं जो सबको स्वीकार हो, हमें धार्मिक तर्कों के वे विविध और परस्पर-विरोधी रूप पसन्द नहीं हैं, जो अन्त में हमें छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट देंगे। अपने इतिहास के परिणामस्वरूप हमारी यह स्वाभाविक प्रवृत्ति हो गई है। पहले हमारे देश में तेरह कालोनियाँ थीं, जो सब अलग-अलग थीं और बाद में उन के एक हो जाने के उपरान्त भी हमारे यहां गृह-युद्ध छिड़ गया, जिससे देश के दो हिस्सों में बँटने की आशंका पैदा हो गई। यही कारण है

कि अब आपसी झगड़ों और विवादों की उपेक्षा कर मतैक्य स्थापित करने की प्रवृत्ति हममें पैदा हो गई है।

इसका परिणाम यह है कि अन्य देशों से आने वाले लोग यह अनुभव करते हैं कि शायद हमारे पास अपने निज के कोई पृथक् विचार नहीं हैं और न हममें चिन्तन की बौद्धिक क्षमता है। परन्तु वास्तविकता यह है कि हमारे इस निरन्तर प्रयत्न ने कि सभी विचारों, सभी धर्मों और सभी संस्कृतियों को अपने यहाँ स्थान दिया जाए, हमें बहुत अधिक सहिष्णु बना दिया है। अब हम छोटे-छोटे झगड़ों और विवादों को बर्दाश्त नहीं कर पाते और अधिक व्यापक सौहार्द और सौमनस्य के लिए उत्सुक रहते हैं। हमारे लिए आख़िर कौन-सी चीज़ अधिक महत्त्वपूर्ण है? क्या यह मान्यता कि प्रार्थना करते समय शराब ख़ून बन गई या यह कि एक भगवान् की सब सन्तानें भाई-भाई हैं? दर-असल चर्च जब ह्रास की ओर जाता है तो उसकी प्रार्थनाओं और सभाओं में शामिल होना भी धार्मिकता का एक प्रदर्शन और आडम्बर मात्र रह जाता है—लोग तब सच्ची धार्मिक प्रेरणा पाने के बजाय सामाजिक दबावों के कारण समाज में लाभ प्राप्त करने के लिए ही चर्च मे जाते हैं।

अमेरिकन लोग अन्य सब चीज़ों की भाँति धर्म को भी उसके परिणामों से नापते हैं। यदि धर्म इन्सानों को अधिक अच्छे इन्सान बनाता है, यदि धर्म की प्रेरणा से वे अच्छे कर्म, अच्छे विचार और सदाचरण में प्रवृत्त होते हैं, तो वह समर्थनीय धर्म होता है। धर्म को भी कुछ करके दिखाना है। यह ज़रूरी है कि उससे समाज में नैतिकता, शान्ति और व्यवस्था कायम हो और वैयक्तिक दृष्टि से भी लोग जीवन में अधिक सफल हों। और वह अपने इस लक्ष्य को पूरा करता भी है।

सर्वेक्षणों से मालूम हुआ है कि जो विवाहित दम्पति गिरजाघर में नियमित रूप से जाते हैं, उनका दाम्पत्य-जीवन अधिक सुखी और सफल होने की आशा रहती है। जो लोग किसी धर्म से सम्बन्ध नहीं

रखते, उनमें धार्मिक प्रकृति के लोगों की अपेक्षा गृहस्थ-जीवन की असफलता और तलाक की घटनाएँ तीन गुनी अधिक होती हैं।

सामाजिक सुधार की प्रेरणा भी चर्चों से ही प्राप्त होती है। नई आवाद वस्तियों में सामाजिक सर्वेक्षण और समाज-सेवा को पेशा बनाने की प्रवृत्ति मुख्यतः धार्मिक प्रेरणा का ही परिणाम थी, हालाँकि उसके मूल में कुछ अन्य कारण भी थे। यह सम्भव है कि ऊपर-ऊपर से सरसरी तौर पर देखने वाले व्यक्ति को किसी बड़े स्वास्थ्य केन्द्र में, जैसा कि ईस्ट हार्लेम (न्यूयार्क) में है, कोई धार्मिक तत्त्व या पृष्ठभूमि नज़र न आये, परन्तु यह केन्द्र एक लाख से अधिक व्यक्तियों को शिक्षा, रोग-निदान, रोग-निवारण, स्वास्थ्य की देखभाल आदि की सुविधाएँ प्रदान करता है और तेईस विभिन्न संगठनों की प्रवृत्तियों का समन्वय करता है। रोग और ताप को दूर करना और लोगों को स्वस्थ और समाज के योग्य बनाना अपने आप में नैतिक दृष्टि से एक मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण कार्य है। संयुक्त राज्य में, जहाँ धर्म भी फल और परिणामों की कसौटी पर कसा जाता है, सच्चा धर्म वह नहीं होगा, जिसमें दार्शनिक तर्क बहुत ऊँचे और सबल हैं, बल्कि सच्चा धर्म वह होगा जो लोगों में नैतिकता और सदाचरण पैदा करता है।

कर्म का सिद्धान्त यह मानता है कि मनुष्य स्वयं प्रयत्न करके अपनी परिस्थितियों और भाग्य को सुधार सकता है और ऐसा करना नैतिकता के विरुद्ध नहीं है। इस प्रकार धर्म अपने प्रभाव से अमेरिकन आशावादिता और पूर्णतावाद को दृढ़तर बनाता है। यद्यपि कैल्विनवादी दृष्टिकोण में एक प्रकार की निराशावादिता है और राइनहोल्ड नीबूर जैसे धर्मशास्त्रकारों ने मानवीय परिस्थितियों को पापपूर्ण और दुःखमय बताने का प्रयत्न किया है, तो भी चर्चों ने हमेशा यह स्वीकार किया है कि मनुष्य में पूर्णत्व प्राप्त करने की क्षमता है और इसीलिए उन्होंने सामाजिक और वैयक्तिक जनकल्याण के कार्यक्रमों पर बल दिया है।

क्या संयुक्त राज्यमें वर्ग-भेद है ?

हर समाजशास्त्री इस प्रश्न का अपने-अपने ढंग से उत्तर देता है। मार्गरेट मीड का कहना है कि अमेरिकन प्रणाली का वर्णन बिना वर्गों के भी किया जा सकता है, क्योंकि यहाँ वास्तव में वर्ग-प्रणाली नहीं है। लॉयड वार्नर और पॉल लुंट ने यांकी नगर का विस्तृत वर्णन करते हुए उसमें ऊँच-नीच के क्रम से छः वर्ग बताये हैं। इसी प्रकार परिवार, गुट, संघ, आर्थिक स्थिति, स्कूल, चर्च और राजनीतिक दलीय निष्ठा, इन सात भेदों की दृष्टि से उन्होंने अमेरिका में व्यक्ति की ८९ स्थितियों का वर्णन किया है। किन्तु ऊपर जिन छः वर्गों का उल्लेख किया गया है, वे अपने साथ के वर्ग से ऐसे मिले और गुँथे हुए हैं कि उनके बीच में कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती और एक वर्ग का व्यक्ति कभी ऊपर के वर्ग में और कभी नीचे के वर्ग में चला जाता है। इसलिए यह कहना अधिक बेहतर होगा कि अमेरिकन समाज एक तरह की सर्पिल सीढ़ी है जिसमें बहुत-से सोपान हैं और इन सोपानों पर हर वक्त स्त्री-पुरुष ऊपर-नीचे आ-जा रहे हैं और एक-दूसरे में घुल-मिल रहे हैं।

अमेरिका के अधिकतर नागरिक और सक्रिय सामाजिक नेता उच्च-मध्य वर्ग में आते हैं। यही वर्ग अमेरिकन समाज का असली मध्यवर्ती मेरुदण्ड है। इस वर्ग से ऊपर कुछ धनी लोग हैं, जिन्होंने विरासत में या स्वयं परिश्रम से उपार्जन कर धन प्राप्त किया है। ये लोग अच्छे कार्यों के लिए अपना धन या अपना नाम देते हैं, किन्तु समाज में अधिक मिलते-जुलते नहीं हैं। उच्च-मध्य वर्ग से नीचे के समाज में अनेक वर्ग आते हैं। सबसे नीचे का वर्ग वह है जिसके सदस्य समाज के जीवन में कोई हिस्सा नहीं लेते, अक्सर बेरोजगार और कानून की पकड़ में रहते हैं, गन्दे मकानों में अपने दिन काटते हैं, अनपढ़ और अशिक्षित हैं और जिनका पारिवारिक जीवन बहुत अस्थिर रहता है। ये सब असंगतताएं और असमर्थताएँ अन्य वर्गों के प्रति उन में चिढ़ का भाव

पैदा करती हैं और इनसे उत्पन्न भेद-भाव उसे अन्य वर्गों से और भी दूर और पृथक् करता है। जो वर्ग समाज के इस क्रम में ऊँचा है, वह नीचे के वर्ग के लोगों को अपने भीतर नहीं आने देता। यहाँ तक कि गिरजाघर और स्कूल में भी समानता नाममात्र की है। गरीब और निम्न वर्गों के बच्चों को स्कूल में जल्दी ही यह मालूम हो जाता है कि उनके परिवार नीचे समझे जाते हैं, इसलिए वे स्वयं भी नीचे हैं। इस स्थिति के प्रति उनके मन में बहुत तीखी और कड़वी प्रतिक्रिया होती है और वह उनमें अपराधी वृत्ति पैदा कर देती है।

किसी भी सामाजिक प्रणाली के बारे में एक विशिष्ट तथ्य यह है कि उसके लिए सब व्यक्तियों की समानता भी जरूरी है और हर व्यक्ति का अलग-अलग दर्जा होना भी आवश्यक है, लेकिन आवश्यक होने पर भी ये दोनों चीजें प्रकृत्या परस्पर-विरोधी हैं। हमारे आदर्श उन सब साधनों में अन्तर्निहित हैं जो समाज में समानता लाते हैं। किन्तु इसके बावजूद यदि समाज में व्यक्तियों के ऊँचे दर्जे न हों तो लोगों को प्रयत्न और उन्नति करने की प्रेरणा कभी मिले ही नहीं। अमेरिका का भविष्य का स्वप्न समानता और ऊँचे-नीचे दर्जे के आदर्शों में समन्वय स्थापित करता है। इस समन्वय से ही उसने हमें लिंकन जैसा व्यक्ति दिया, जिसका जन्म बहुत साधारण घर में हुआ, किन्तु जो अपने परिश्रम से राष्ट्र के उच्चतम पद पर पहुँच गया।

यद्यपि विवाह लोग अपनी समान स्थिति के लोगों में करते हैं, परन्तु कुछ लोग अपने वर्ग से बाहर भी शादी करते हैं जिससे समाज के विभिन्न वर्गों में सचलता बनी रहती है। एक सर्वेक्षण में यह पाया गया कि जितने लोगों से पूछताछ की गई, उनमें से आधे छोटे व्यवसायी थे, जिन्होंने उच्च-आय वर्गों में शादियां की थीं, किन्तु चालीस प्रतिशत व्यक्ति ऐसे भी पाये गये, जिन्होंने वेतन-भोगी लोगों की लड़कियों से विवाह किये थे। नवयुवक आम तौर पर समाज में बहुत उठते-बैठते और

मिलते-जुलते हैं, इसलिए जो युवक-युवतियाँ एक-दूसरे के प्रणय में बंध कर विवाह का वचन दे देते हैं, उनके परिवार सहज में यह अनुमान नहीं लगा सकते कि उनके दामाद या पुत्र-वधू के परिवार सामाजिक स्थिति की दृष्टि से किस दर्जे में आते हैं।

इसके अलावा कुछ अन्य बातें भी हैं जो इस वर्ग-भेद को मिटाने या कम करने में सहायता देती हैं।

हो सकता है कि एक व्यक्ति व्यवसाय या धन्धे की दृष्टि से निचले दर्जे में आता हो, किन्तु उसकी यह कमी नगर या समाज के मामलों में उसके महत्त्वपूर्ण भाग लेने के कारण पूरी हो सकती है।

नगरों के बड़े होने और लोगों के निरन्तर सचल रहने से यह ठीक-ठीक हिसाब लगाना असम्भव है कि किसी व्यक्ति का दर्जा क्या है।

बेसबाल के खिलाड़ियों, श्रमिक नेताओं, पुरस्कार के लिए प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों और जनता का मनोरंजन करने वाले गायकों, वादकों एवं नर्तकों को बड़े-बड़े वेतन देना यह स्पष्ट कर देता है कि समाज सिर्फ उन्हीं लोगों को पुरस्कृत नहीं करता जो ऊँचे घरानों में पैदा हुए हैं या उच्च शिक्षा-प्राप्त हैं।

पहरावा, तौर-तरीके, बोलचाल का ढंग और मनोरंजन सारे देश में और सब वर्गों में एक जैसे होते जा रहे हैं।

सार्वजनिक शिक्षा, मनोरंजन की सुविधाएँ, मतदान, सैनिक सेवा, जूरी का कर्तव्य, सार्वजनिक पदों के लिए चुनाव, पुलिस का संरक्षण और कानून, इन सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में सब लोगों को समान अधिकार प्राप्त हैं।

इन सब कारणों से संयुक्त राज्य में वैसा वर्ग-भेद प्रायः नहीं है जैसा कि मार्क्स समझता था। यहाँ श्रमिकों को प्रबन्धकों और उच्च अधिकारियों के प्रति रोष और विरोध प्रकट करने का अधिकार है। यदि उनके लिए और आगे उन्नति के द्वार खुले न हों तो वे

निराशा की भावना अनुभव कर विरोध प्रकट कर सकते हैं। गरीबी, बेरोजगारी, अप्रिय काम या अस्थिर पारिवारिक जीवन भी हमारी सामाजिक तस्वीर में मौजूद हैं और लोगों को प्राप्त अवसरों और विशेषाधिकारों में भी काफी अन्तर हैं। परन्तु इस सब के बावजूद यहाँ बिल्कुल स्पष्ट और कट्टर वर्गभेद नहीं है।

किन्तु एक बात में अमेरिकन समाज बहुत असफल रहा है और वह यह है कि नीग्रो लोगों को वह समान अवसर नहीं दे सका है। जिस समय ये नीग्रो लोग अपने ही सजातीयों द्वारा अफ्रीका में गुलामों के रूप में बेचे गये थे, उस समय से लेकर अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में उनके साथ स्वतन्त्र होने पर भी भेदभाव किये जाने और उन्हें दूसरे दर्जे की नागरिकता दिये जाने तक का सारा इतिहास दुनिया को ज्ञात है। किन्तु इस बात की ओर लोगों का उतना ध्यान नहीं गया जितना जाना चाहिए, कि हाल के कुछ वर्षों में इस दिशा में भी सुधार हुआ है।

उदाहरण के लिए नीग्रो लोगों में निरक्षरता बहुत कम हो गई है। सन् १८६० में जहाँ ६७ प्रतिशत नीग्रो निरक्षर थे, वहाँ १९५२ में दस प्रतिशत से भी कम निरक्षर रह गये।

संयुक्त राज्य में १,२८,००० नीग्रो कालेजों में पढ़ते हैं। यह संख्या जर्मनी के कालेजों में पढ़ने वाले जर्मनों की कुल संख्या से भी अधिक है।

संयुक्त राज्य में नीग्रो लोगों के पास उससे अधिक कारें हैं, जितनी कि २१ करोड़ ६० लाख आबादी के सारे रूस में हैं या अफ्रीका में रहने वाली कुल १९ करोड़ ३० लाख नीग्रो आबादी के पास हैं।

सेना में गोरे और नीग्रो अमेरिकनों मे कोई भेदभाव नहीं किया जाता।

सन् १९४० के बाद नीग्रो लोगों के वेतन ४०० प्रतिशत बढ़े हैं जबकि गोरों के वेतन कुल २५० प्रतिशत ही बढ़ पाये हैं।

सन् १९२० के बाद कालेजों में पढ़ने वाले नीग्रो लोगों की संख्या २५ गुनी हो गई है। सन् १९०० के बाद गोरे छात्रों की संख्या में हुई वृद्धि की अपेक्षा नीग्रो छात्रों की संख्या में हुई वृद्धि छः गुनी रही है।

उच्चतम न्यायालय ने आदेश दिया है कि सार्वजनिक स्कूलों में नीग्रो लोगों की भर्ती में भेदभाव बिल्कुल खत्म कर दिया जाय और सार्वजनिक वाहनों में उनके लिए अलग सीटों की व्यवस्था भी समाप्त कर दी जाए।

लगभग दो लाख नीग्रो लोगों के पास औसतन ७८ एकड़ के अपने निज के फार्म हैं।

सन् १९०० में केवल १ प्रतिशत नीग्रो उद्योगों में काम करते थे, परन्तु आज उनकी संख्या ३० प्रतिशत से भी अधिक (१५ लाख) है। देश की श्रमिक यूनियनों की कुल सदस्य संख्या १ करोड़ ६० लाख है जिसमें से १२,५०,००० नीग्रो हैं।

इस समय ९३ सरकारी कमीशन और ३४५ अर्ध-सरकारी संस्थाएं जातीय सम्बन्धों को सुधारने में लगी हुई हैं।

दक्षिणी राज्यों में अनेक नीग्रो गोरे मतदाताओं के मतों से नगर परिषदों में चुने गये हैं। नीग्रो लोग राज्यों के विधान-मंडल और कांग्रेस, दोनों के सदस्य हैं। नीग्रो नेता राल्फ बंच संयुक्त राष्ट्र संघ में अवर सचिव के पद पर हैं। बड़ी-बड़ी दुकानें, टेलीफोन विभाग, संघीय सरकार और अन्य अनेक संस्थाएं और संगठन बिना किसी भेदभाव के नीग्रो लोगों को भी अपने यहां काम पर रखते हैं। मैरियन एंडरसन और लुई आर्मस्ट्रांग जैसे नीग्रो कलाकार और सार्वजनिक मनोरंजनकर्त्ता राष्ट्र के जीवन को समृद्ध बना रहे हैं और सारे संसार में विख्यात हैं। नीग्रो मतदाताओं की उपेक्षा करके आज कोई भी राजनीतिक दल सत्तारूढ़ नहीं रह सकता।

आत्मीयजनों के प्रति पक्षपात और बेगानों के साथ भेदभाव का रोग सारे संसार में विद्यमान है और इस आदिम युग से चला आ रहा

है, जब लोग यह समझते थे कि बाहर से आने वाले लोग अपने साथ रोग और बुराइयाँ लेकर आते हैं और सारे समाज को खराब कर सकते हैं। इसलिए नाना देशों, नाना जातियों और नाना संस्कृतियों से अमेरिका में आये तमाम लोगों को एक बन्धन में बाँधना एक बहुत बड़ी सफलता है। किन्तु दुर्भाग्य से कुछ लोगों में सफलता, सम्मान और मैत्री अर्जित करने में कामयाब न होने के कारण एक तरह की विद्वेष और घुटन की भावना पैदा हो जाती है और उस दबी हुई भावना का गुबार वे अपने से भिन्न लोगों पर निकालने लगते हैं।

संसार में सर्वत्र पायी जाने वाली यह मनोवैज्ञानिक विकृति अमेरिका में नीग्रो लोगों को गोरों का शिकार बनाती है। किन्तु अभी कुछ समय से नीग्रो लोग कारखानों की यन्त्र-जन्य सम्पदा और प्राकृतिक लोक-तन्त्री समानता से लाभान्वित होने लगे हैं। दोनों विश्व युद्धों के दिनों में, और उनके मध्यवर्त्ती काल में भी, बड़े पैमाने पर नीग्रो लोगों के उत्तर की ओर जाने से ही यह बात सम्भव हो सकी है (१९१० और १९४५ के बीच तीस लाख नीग्रो दक्षिण से उत्तर में गए हैं)। दक्षिण में यद्यपि औद्योगिक विकास बहुत देरी से प्रारम्भ हुआ है, परन्तु अब उसकी रफ़्तार में जो तेजी आई है, वह भी अन्ततः इस भेदभाव को मिटाकर समानता लाने में सहायक होगी।

आज भी दक्षिणी राज्यों में अनेक नीग्रो गोरों से आगे हैं। जातीय सम्बन्धों में एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व आज नीग्रो लोगों के एक उच्च-मध्य वर्ग का उदय है। यह वर्ग सम्पन्न भी है और उच्च-शिक्षित भी। इस वर्ग की उपस्थिति ही पुराने अशिक्षित, कुण्ठित और महत्त्वाकांक्षाहीन नीग्रो वर्ग को धीरे-धीरे खत्म कर देगी। और यह नया नीग्रो उच्च-मध्यवर्ग नीग्रो लोगों के समानाधिकार के संघर्ष में बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व भी प्रदान कर सकेगा।

अच्छा सामुदायिक जीवन

नागरिक समाज में कानून और सरकार का क्या स्थान है, इसका विस्तृत विवरण करने की गुंजायश यहाँ नहीं है। इस बारे में हम काफी

संकेत दे चुके हैं कि अधिकतर नागरिक स्वशासन स्वैच्छिक होता है, यानी लोग बहुत कम वेतन लेकर या बिलकुल वेतन लिये बिना नागरिक शासन चलाते हैं। ये लोग पेशेवर प्रशासक नहीं होते। नागरिक स्वशासन सम्बन्धी निर्णयों का उत्तरदायित्व किसी एक व्यक्ति को देने के बजाय अक्सर कुछ लोगों के एक बोर्ड को दिया जाता है और न्यू इंग्लैंड में तो निर्णय सारे कस्बे की जनता के मतों से ही किया जाता है। प्रयत्न यह किया जाता है कि किसी व्यक्ति को भी इस ढंग से अधिकार न सौंपा जाए कि वह बहुत शक्तिशाली हो जाए। साथ ही किसी भी पद के काम को इतना बड़ा नहीं होने दिया जाता कि उसे आदमी अपने खाली समय में न संभाल सके। आम तौर पर २५ हजार तक की आबादी का मेयर अंशकालिक अधिकारी होता है। यदि किसी को उससे काम के घंटों में मिलना हो तो उसे दवाओं की दुकान में या बीमा कम्पनी के दफ्तर में जाना होगा, जहाँ मेयर काम करता है।

संयुक्त राज्य में स्थानीय स्वशासन की १,१७,००० इकाइयाँ हैं। इनमें से आधी से अधिक इकाइयाँ शैक्षणिक जिलों के रूप में हैं। इतनी बड़ी संख्या से यह जाहिर है कि अमेरिकन लोग स्थानीय स्वशासन को कितना महत्त्व देते हैं।

पांच हजार से कम आबादी के अनेक कस्बों में स्थानीय पुलिस नहीं है; उन्हें, इसकी जरूरत ही नहीं है। अपराधों को रोकने या अपराधियों को दण्डित करने की समस्या पैदा ही तब होती है जब कस्बा बड़ा हो जाता है। छोटे कस्बों में हर आदमी एक-दूसरे को जानता है, इसलिए वहाँ सामाजिक नियन्त्रण स्वयं बना रहता है। बड़े नगरों में यह बात नहीं होती। एकाकीपन एवं समाज में अच्छी स्थिति और मान्यता के अभाव ही अक्सर अपराध की भावना पैदा करते हैं। गन्दे और गरीबी से भरे घर, अज्ञानी और अशिक्षित माता-पिता, गन्दगी और बीमारी युवकों में अपराधी वृत्ति का कारण होते हैं। इसलिए गन्दी बस्तियों का उन्मूलन और रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाना इस समस्या के

सर्वोत्तम हल समझे जाते हैं। दूसरा हल है ऐसे सामाजिक संगठनों का निर्माण जो परिवारों को अच्छी सलाह दे सकें और इस तरह की समस्या को खतरे की सीमा तक पहुँचने से पहले ही पकड़कर नियन्त्रित कर सकें। एक तीसरा उपाय भी है और वह यह है कि कुछ स्वयंसेवक दल तैयार किये जाएँ जो मैत्रीपूर्ण तरीकों से दलित और शोषित वर्ग के लोगों को समझा-बुझाकर सही रास्ते पर ला सकें।

आदमी का अपना गृह-नगर (होम-टाउन) अमेरिकन जीवन का एक विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतीक है। आम तौर पर आदमी जहाँ रहता और काम करता है, वह उसका गृह-नगर नहीं होता, गृह-नगर वह होता है जहाँ का कोई आदमी असली निवासी होता है। इसका कारण यह है कि सामान्यतः अमेरिका में लोग जिस नगर के निवासी होते हैं, वहाँ से कहीं बाहर बड़े नगर में जाकर काम करते हैं। गृह-नगर केवल आदमी के रहने का ही स्थान नहीं होता, वह व्यक्ति का परिवार होता है, उसके नेता उसके पिता की तरह होते हैं, उसके निवासी विभिन्न सभा-सोसाइटियों और स्वैच्छिक संगठनों के द्वारा उसके साथ भ्रातृत्व के बन्धन में बंधे होते हैं और वह नगर ही उनका पोषण और रक्षा करने के कारण उनके लिए मातृ-स्थानीय होता है। वह उन में एक "समुदाय और समाज की भावना" और एक स्थानीय गर्व पैदा करता है।

समाज, समुदाय या नगर कोई अमूर्त्त वस्तु नहीं है, वह एक सजीव वस्तु है। वह वैयक्तिक और सामाजिक आवश्यकताओं में समन्वय स्थापित करता है और व्यक्ति के व्यक्तित्व का उन समूहों में, जहाँ वह उठता-बैठता, मिलता-जुलता या काम करता है, विस्तार कर उसे ऊँचा और बड़ा बनाता है। नृतत्त्व-विशारद राल्फ लिंटन का कहना है: "अधिकतर लोगों को ऐसी सामाजिक इकाई में जीवन सन्तोषजनक लगता है, जो न इतनी छोटी हो कि उसके पारस्परिक व्यक्तिगत सम्बन्धों में विविधता

न आ सके और न इतनी बड़ी हो कि उसके अधिकतर सदस्यों के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क और परिचय सम्भव न हो।"*

यही बात अधिकतर अमेरिकनों के बारे में है, जो अपने परिवार, चर्च, नगर, सहपाठियों, पड़ोसियों, हम-पेशा लोगों, सहकर्मियों, सामाजिक क्लब, राज्य, क्षेत्र और राष्ट्र के साथ अनेक तरह से भावनात्मक सम्बन्धों और कर्त्तव्य के बन्धनों में बंधे रहते हैं।

उनकी यह धारणा है कि एक लोकतन्त्री समाज में सही अर्थों में सौहार्द एकता से नहीं, बल्कि विविधता से, पारस्परिक संगठनों की बहुलता से, और देश को अनेक स्वशासित इकाइयों में बांटकर उन्हें सत्ता देने से, स्थापित हो सकता है। इस प्रकार की प्रणाली और व्यवस्था का तरह-तरह के तनावों, खिंचावों, मतभेदों और संघर्षों से भरी रहना स्वाभाविक है। किन्तु ऐसा लोकतन्त्री समाज गतिशील होता है। निरन्तर गति के कारण वह शक्तिशाली होता है, सब तरह के दबावों और विचारों के प्रति संवेदनशील, और परिवर्तन की आवश्यकता के प्रति सजग रहता है। वह आत्म-नियमन और आत्म-नियन्त्रण करता है और जब किसी संगठन को भविष्य के लिए अनावश्यक समझता है, तो उसे खत्म भी कर देता है।

यह सामाजिक व्यवस्था सरकार की प्रतीक्षा नहीं करती, बल्कि अपने ही भीतर से शक्ति पैदा करती है। अगर यह दिखाई दिया कि किसी अमेरिकन नगर में गन्दी बस्तियां उठ खड़ी हुई हैं और सामाजिक जीवन को खतरा पहुंचा रही हैं तो तुरन्त ही उनके उन्मूलन या सुधार के लिए "हमारे पड़ोस को सुधारने के लिए अमेरिकन समिति" नाम का एक संगठन स्थापित हो गया। नगर बाल अपराध की समस्या विकराल रूप धारण करती दिखाई दी तो नगर ने उसके समाधान के लिए अपने सब धार्मिक, सामाजिक, मनोरंजन सम्बन्धी और शैक्षणिक

* [illegible]

साधनों को एकत्र किया, अपने विविध संगठनों के प्रतिनिधियों को बुलाया और एक कार्यक्रम तैयार कर डाला।

समाज और समुदाय की भावना, एक मानवीय समूह के सम्बद्ध होने की अनुभूति अमेरिकन व्यक्तित्व में बहुत गहरी बैठी हुई है और उसकी जड़ अमेरिका के इतिहास और मनोवृत्ति में निहित है। संयुक्त राज्य को तब तक पूरी तरह नहीं समझा जा सकता, जब तक उसके स्थानीय समाज—नगर या ग्राम के समाज—की जटिल रचना को भली-भाँति न समझ लिया जाए।

शिक्षा

अमेरिकन जीवन में अन्य बहुत-सी अभिवृत्तियों और संस्थाओं की भाँति शिक्षा संस्थाओं का जन्म भी धर्म से हुआ है। यद्यपि गवर्नर बर्कले सत्रहवीं शताब्दी में यह गर्व कर सकता था कि उसके राज्य वर्जीनिया में कोई सार्वजनिक स्कूल नहीं है, इसलिए यहाँ के युवकों का मन खतरनाक शिक्षा से भ्रष्ट होने की कोई आशंका नहीं है, तथापि न्यू इंग्लैंड ने १६४७ में ही स्कूलों में पढ़ना बच्चों के लिए अनिवार्य कर दिया था जिसका उद्देश्य पुराने दिमागी शैतान के कुचक्रों को रोकना और गिरजाघरों के लिए विद्वान पादरी तैयार करना था। जब समूचे न्यू इंग्लैंड में और उससे परे के पश्चिमी क्षेत्र में नई बस्तियाँ बसाने के लिए अनुदान के रूप में जमीनें दी गई तब उनका कुछ भाग स्कूलों का खर्च निकालने के लिए अलग कर लिया गया। शुरू-शुरू में स्कूल बहुत साधारण किस्म के थे, उनमें सिर्फ भाषा और गणित की बुनियादी बातें ही सिखाई जाती थी और वे साल में कुछ ही महीने खुले रहते थे। किन्तु उन्होंने इस सिद्धान्त की स्थापना अवश्य की कि हर व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। इन स्कूलों ने ही विश्व को सार्वभौम सार्वजनिक शिक्षा का सिद्धान्त देकर नेतृत्व प्रदान किया। (सार्वजनिक पुस्तकालयों और स्त्रियों के लिए उच्च शिक्षा का भी संयुक्त राज्य में ही सबसे पहले आरम्भ हुआ)।

सुसंस्कृत यूरोप में संस्कृति और विद्या से वंचित रहने के कारण इन दोनों की भूख ही बहुत-से लोगों को अमेरिका में खींच लायी थी। संस्कृति और विद्या की इस दरिद्रता ने अमेरिकन समाज पर, खासकर उसकी शिक्षा-प्रणाली पर भारी बोझ डाला। इसीलिए अमेरिका में

अभिजात वर्ग की संस्कृति से बिल्कुल भिन्न लोक-संस्कृति के कुछ नये लक्षण पैदा हुए, जिन्हें आज के अभिजातवर्गीय यूरोपीय लोग नापसन्द करते हैं।

संयुक्त राज्य में शिक्षा एक निश्चित प्रणाली के रूप में नहीं है और न संघीय सरकार का उस पर कोई नियन्त्रण है। यद्यपि यह हमारे लोकतन्त्र का सबसे शक्तिशाली साधन है, फिर भी इसमें न कोई नियन्त्रण करने वाली उच्च सत्ता है, न मार्ग-दर्शन के लिए शिक्षा-शास्त्रियों की कोई परिषद्; न कोई सार्वदेशीय पाठ्यक्रम है, न अध्यापकों को प्रशिक्षण के प्रमाण-पत्र देने की कोई विधि; न ग्रेजुएटों के लिए शिक्षा का कोई सामान्य स्तर निर्धारित है और न ही कोई निश्चित पाठ्य-पुस्तकें। अमेरिका में शिक्षा के क्षेत्र में विविधता को बहुत मूल्य-वान समझा जाता है। हर स्थानीय स्कूल, हर छोटे से छोटे कालेज और हर बड़े विश्वविद्यालय को अपने लक्ष्य स्वयं निर्धारित करने का अधिकार है।

अमेरिकन प्रणाली का केन्द्र-विन्दु इसका यह विश्वास है कि शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी साधन है। आज अमेरिका में शिक्षा तीन वर्ष की आयु में या इससे भी पहले प्रारम्भ हो जाती है और प्रौढ़-शिक्षा के रूप में जीवन के अन्त तक चलती है। जो लोग अपने जीवन के अन्तिम दशकों में होते हैं उनके लिए शिक्षा के और भी नये-नये कार्यक्रम बनाये जाते हैं।

स्कूल और घर

शिक्षा का आज सबसे स्वस्थ और अच्छा लक्षण यह है कि लोग स्कूलों में अधिकाधिक दिलचस्पी लेने लगे हैं। यह दिलचस्पी अक्सर स्कूलों की शिक्षा-प्रणाली की उग्र आलोचना का रूप धारण कर लेती है और उससे जबर्दस्त विवाद उठ खड़े होते हैं। एक पक्ष का कहना है कि स्कूलों में हमारे बच्चों को यह शिक्षा दी जानी चाहिए कि लोकतन्त्र में इन्सान को कैसे रहना चाहिए। दूसरा पक्ष इसे बेहूदगी बताता है।

उसका मत है कि बच्चों को सिर्फ बुनियादी चीजों की शिक्षा दी जानी चाहिए—यानी पढ़ना और सोचना। बस इतना ही काफी है।

माता-पिता सोचते हैं कि स्कूलों की शिक्षा में जरूर कोई खराबी है और अध्यापक भी समाज के असन्तोष को जानकर बेचैन हैं। इसलिए अमेरिका में निरन्तर परीक्षण चलते रहते हैं—कुछ मूर्खतापूर्ण और कुछ समझदारी के—और इन परीक्षणों से हम अपनी शिक्षा-प्रणाली का निर्माण और पुनर्निर्माण करते रहते हैं। परन्तु यह प्रणाली हमारे गतिशील समाज की आवश्यकताओं को अविकल रूप में पूरा नहीं कर पाती।

शिक्षा के बारे में कुछ परस्पर-विरोधी विचार और दृष्टिकोण विशुद्ध रूप से टैक्नीकल हैं—मसलन यह कि बच्चों को पढ़ना सिखाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है। विचारों और दृष्टिकोणों का दूसरा संघर्ष बुनियादी सांस्कृतिक संघर्षों के कारण होता है, क्योंकि व्यवसायी वर्ग, श्रमिक संस्थाएँ, चर्च, स्त्रियों की क्लबें, भूतपूर्व सैनिकों के संगठन और नागरिक अधिकारों के लिए लड़ने वाली संस्थाएँ अपने-अपने विचारों को, जो अक्सर एक-दूसरे से मेल नहीं खाते, स्कूलों के पाठ्य-क्रमों पर थोपने का प्रयत्न करती हैं। लोकतन्त्री और बहुत्ववादी प्रणाली में इस तरह की खींच-तान अनिवार्य है। शिक्षा को एक ऐसा साधन माना जाता है, जो अनपढ़ अबोध बच्चों के मन को इस ढंग से गढ़ता है कि वे समाज में अपना उचित कर्त्तव्य निभा सकें। इसलिए हर वर्ग स्कूल को अपने विचार के अनुसार परिवर्तित करने और मोड़ देने का प्रयत्न करता है। अभी हाल में ही एक दिन न्यूयार्क स्टॉक

अनुभव पाने के लिए थोड़े-थोड़े पैसे डालकर आर० सी० ए० के एक शेयर का आर्डर दिया था।

शिक्षक लोग स्वभावतः स्कूल पर चारों ओर से प्रभाव डालने वाली सामाजिक ताकतों की अपेक्षा अधिक उदार होते हैं, इसलिए स्कूल और शेष समाज के बीच खिचाव रहना अनिवार्य है। शिक्षा शास्त्री और शिक्षक लोग अपने कर्त्तव्य को बहुत गम्भीर भाव से ग्रहण करते हैं, वे अपने सामने क्षितिज को निरन्तर विस्तृत होता देखते हैं और बच्चों को एक ऐसे युग के लिए तैयार करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, जिसमें मनुष्य की ज़िम्मेदारियाँ भी बढ़ रही हैं और उसका अवकाश का खाली समय भी पहले से बढ़ रहा है, इसलिए स्वभावतः यथास्थिति कायम रखने के पक्षपाती अभिभावकों के साथ उनका संघर्ष और टक्कर अनिवार्य है।

उन्हें दो बातों में समन्वय करके चलना पड़ता है। वे जानते हैं कि एक ओर अमेरिकन लोगों का शिक्षा की शक्ति में गहरा विश्वास है और दूसरी ओर वे बौद्धिक जीवन का, यानी बेतरतीब लम्बे बाल बढ़ाए और हर समय अन्यमनस्क रहने वाले प्रोफेसर का मज़ाक भी उड़ाते हैं। यह आदर और उपहास दोनों साथ-साथ कैसे चल सकते हैं? शिक्षा के प्रति आदर की भावना हमारी शुद्धाचारवादी और आप्रवासकालीन परम्पराओं का परिणाम है और उपहास की भावना पश्चिम की ओर बढ़ने और नये-नये क्षेत्रों को आबाद करने के प्रारम्भिक ज़माने की स्वावलम्बन और केवल व्यवहार्य और क्रियात्मक वस्तु को ही मूल्यवान् समझने की प्रवृत्ति का अवशेप है।

अमेरिकन लोग किसी भी वर्ग की श्रेष्ठता की भावना का सहन नहीं करते और जहाँ किसी वर्ग में ऐसे चिह्न नज़र आये, कि वे उसका वरोध करने लगते हैं। जो लोग विद्वान का उसकी विद्वत्ता के कारण आदर करते हैं वे इस बात से डरते भी हैं कि कहीं वह उच्चशिक्षित लोगों का एक अलग और दूसरों से ऊँचा वर्ग न बना दे, या उच्चशिक्षा

श्रौर विद्वत्ता कहीं अल्पशिक्षित वर्ग द्वारा कठिनाई से अर्जित अधिकारों श्रौर सामाजिक स्थिति को खतरे में न डाल दे या उसके नये-नये श्रौर बारीकियों से भरे पेचीदा विचारों श्रौर कल्पनाश्रों के कारण टैक्सों में वृद्धि अथवा किसी अन्य रूप में नई मुसीबत न खड़ी हो जाए। माता-पिता अध्यापक-अध्यापिका के प्रभाव को इसलिए नापसन्द करते हैं कि जब वे घर में बच्चों पर अनुशासन कायम करने का या उनके तौर-तरीकों अथवा व्याकरण को सुधारने का प्रयत्न करते हैं तो बच्चे अध्यापक-अध्यापिका का हवाला देकर उसका विरोध करते हैं। माँ जब बच्चे को पहले-पहल शिक्षा के लिए अध्यापक या अध्यापिका को सौंपती है, तो एक श्रोर वह सन्तोष श्रौर चैन की सांस लेती है श्रौर दूसरी श्रोर उसके मन में यह भय भी रहता है कि बच्चा अध्यापक-अध्यापिका को उसकी अपेक्षा अधिक शिक्षित श्रौर समझदार पाएगा। अक्सर होता यही है कि बच्चे को घर में जो कुछ नहीं मिलता, उसे वह अध्यापक से मिल जाता है श्रौर इस प्रकार माँ के इस भय की पुष्टि हो जाती है। इससे भी बुरी बात यह है कि लड़का स्कूल के दिनों में नहीं, तो कम-से-कम कालेज के दिनों में अवश्य ही गिरजाघर में जाना छोड़ देता है, सिगरेट श्रौर शराब पीने लगता है श्रौर बहुत-बहुत देर तक घर से बाहर रहने लगता है—श्रौर वयस्कता के इन सब लक्षणों के लिए दोषी अध्यापक को ठहराया जाता है।

माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल में इसलिए भेजते हैं कि उन्हें उस भविष्य के लायक बनाया जा सके जिसकी श्रोर अमेरिकन जीवन सदा अभिमुख रहा है। इसलिए स्कूली शिक्षा से बच्चे में परिवर्तन होना आवश्यक है। इस तरह स्कूल दो पीढ़ियों को विभाजित करने वाली शक्ति का प्रतीक है। यह शक्ति वास्तव में उन्नति श्रौर सफलता के सिद्धान्तों से, जो हमारी संस्कृति से सम्बद्ध हैं, पैदा होती है। स्कूल [illegible] में सिखाया [illegible] जाता है उससे कहीं अधिक आशा उससे की जाती है श्रौर वह [illegible], [illegible] श्रौर सफाई एवं शिष्टाचार के

तरीकों का ज्ञान तथा नर्सरी ट्रेनिंग आदि काम, जो साधारणत; परिवार को स्वयं करने चाहिएँ, स्कूल को सौंपे जाते हैं, तो माता-पिता इस बात के लिए अपने आपको अपराधी अनुभव करते हैं कि उन्होंने अपने ये काम और अधिकार सिर्फ त्यागे ही नहीं, बल्कि उन्हें त्याग कर वेफिक्री और चैन भी महसूस किया। इसलिए अपने इस अपराध का सारा गुबार वे अध्यापक पर निकालते हैं और उसी को हर बात के लिए दोषी ठहराते हैं।

समाज में अध्यापक-अध्यापिका का जो स्थान है, उसे भी वे सन्देह की दृष्टि से देखने लगते हैं। अध्यापिका स्वयं माता-पिता की अपेक्षा कहीं अधिक नियंत्रित और नियमित जीवन व्यतीत करती है, फिर भी उसे समाज में इसके अनुरूप ऊँचा दर्जा नहीं मिलता। उससे यह आशा की जाती है कि वह स्कूल में सब बच्चों के साथ समान व्यवहार करेगी, फिर भी उच्च वर्ग के लोग चाहते हैं कि उनके बच्चों के साथ विशेष पक्षपात का व्यवहार किया जाए (और उसमें वे अक्सर सफल भी हो जाते हैं), जिसका परिणाम यह होता है कि निम्न वर्ग के लोगों के बच्चे अपने आपको अवांच्छनीय और उपेक्षित समझने लगते हैं। किन्तु अध्यापकों की सफाई में यह कहा जा सकता है कि उनमें से बहुतों ने इस भेदभाव को रोकने के लिए विशेष रूप से कोशिश की है और जिन लोगों को उन्होंने आशा और प्रेरणा प्रदान की है वे उन्हें जीवन भर याद रखते हैं।

स्कूल में सभी तरह की स्थितियों के और दोनों लिंगों के बच्चों का एक साथ पढ़ना समाज में लोकतन्त्र लाने वाली सबसे बड़ी ताकत है। बच्चे स्कूलों में एक-दूसरे के सम्पर्क के अभ्यस्त हो जाते हैं और कभी-कभी एक-दूसरे की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का ख्याल किये बिना परस्पर मैत्री स्थापित कर एक-दूसरे के साथ निभाव करने की आदत डाल लेते हैं, जो बड़े होने पर उनके प्रौढ़ जीवन की बुनियाद बन जाती है। खेल और अध्ययन समानता स्थापित करने के सबसे बड़े साधन हैं। स्कूल

प्रतिभाशाली और बलिष्ठ लड़कों को अपने से ऊँचे वर्ग के लड़कों से भी आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है। खासकर खेलों के क्षेत्र में आप्रवासियों के बच्चे सामाजिक सीढ़ी पर अधिक तेजी से चढ़ सके हैं।

लोकतन्त्र और शिक्षा

जिस दिन बच्चा पहले-पहल एक नन्हें शिशु के रूप में अपनी नीली जीन या ताजे इस्त्री किये हुए कपड़े पहनकर नर्सरी स्कूल में प्रवेश करता है, उस दिन से उस समय तक, जबकि १८ वर्ष बाद वह सभामंच पर खड़ा होकर सैकड़ों व्यक्तियों के मध्य अपना कालेज का डिप्लोमा प्राप्त करता है, स्कूल ही उसके जीवन का सबसे बड़ा सत्य होता है और महत्व की दृष्टि से परिवार के बाद उसी का सबसे प्रमुख स्थान होता है। अपने अध्यापकों का व्यक्तित्व उसके मन पर इतना गहरा अंकित हो जाता है कि वर्षों बाद भी उसे उनके चहरे, तौर-तरीके उनकी दयालुता और अधीरता की याद ज्यों की त्यों रहती है।

जाए और इस प्रकार स्त्री के रूप में अपने यौवन और प्रजनन सम्बन्धी कर्त्तव्य और दायित्व पूरे करने के अवसर से वंचित हो जाए।

आज अधिकाधिक स्कूल बच्चों को सामूहिक रूप में काम करना और खिलाना सिखा रहे हैं। काम; अध्ययन और खेल में प्रतिस्पर्धा का तत्त्व अब पहले से कम किया जा रहा है। पहले बच्चे मनोरंजन के लिए मिल कर खेलते थे, अब वे मिलकर रचनात्मक काम करते हैं। बच्चों से मिलकर किसी एक विषय पर काम करने को कहा जाता है। उदाहरण के लिए यदि उनसे अफ्रीका के बारे में काम करने को कहा जाए तो वे मिलकर उसके चित्र संग्रह करेंगे, नक्शे बनाएंगे, उसके बारे में कहानियां सुनाएंगे और उसके विषय में खेल खेलेंगे। अध्यापक अब छड़ी से उन पर शासन नहीं करता। वह उन्हें हाँकने के बजाय रास्ता दिखाता है। यही शिक्षा का असली अर्थ है। अध्यापक या अध्यापिका बच्चों का पथ-प्रदर्शन करते हैं, और बच्चे उनसे मिलकर अध्ययन की योजना बनाते हैं, उस पर उनसे बहस करते हैं और इस सम्बन्ध में सामूहिक निश्चय करते हैं कि क्या पढ़ा जाए और कैसे पढ़ा जाए।

जैसा कि हर आदमी आज जानता है, प्रगतिशील विकासोन्मुख शिक्षा की दार्शनिक विचारधारा जॉन ड्यूई (१८५९-१९५२) ने दी थी, जिनका जन्म वरमौंट में हुआ था। वे ग्रामों के सहकारितापूर्ण सामूहिक जीवन से और काम को हाथ से स्वयं करके सीखने की पद्धति से खूब परिचित थे। इस पद्धति को उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी आजमाया और उसके जो परिणाम हुए उनसे संसार चकित हो गया। ड्यूई की मान्यता यह थी कि स्कूल जीवन की तैयारी ही नहीं है, वह जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अविच्छिन्न अंग है। स्कूल एक तरह से समाज का ही एक लघु रूप है। बच्चों को उसमें अपना पाठ सुनाने के बजाय कुछ काम करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उन्हें अध्ययन की प्रक्रिया में स्वयं सक्रिय भाग लेना चाहिए। उससे वे अनुभव के द्वारा जीवन की शिक्षा ले सकेंगे, स्वयं काम करके कुछ सीख सकेंगे।

स्कूल अब केवल कक्षा भवन तक ही सीमित नहीं रहा है। छात्रों को फायर स्टेशन या डाकखाने का काम-काज का तरीका दिखाना, प्राकृतिक स्थानों का भ्रमण कराना और जिस संसार में वे रहते हैं, उसका अनुभव कराने के लिए उन्हें यात्राओं पर ले जाना आज शिक्षा का ही एक भाग बन गया है। सबसे बड़ी बात यह है कि शिक्षक के लिए शिक्षा का केन्द्र बच्चा होता है न कि अध्ययन का विषय। उसकी आवश्यकताएं पूरी करना और उसे लोकतन्त्र में अपना कर्त्तव्य पालन करने के योग्य बनाना ही स्कूल का मुख्य काम है। स्कूल का काम उसे कुछ घंटे प्रतिदिन पढ़ना-लिखना या गणित सिखाना ही नहीं है।

इसमें सन्देह नहीं कि कुछ शिक्षकों ने, जिनका स्तर और समझ-बूझ जॉन ड्यूई के बराबर नहीं थे, पाठ्यक्रम के बजाय बच्चे के विकास पर अधिक बल देने की इस प्रवृत्ति को कुछ विकृत कर दिया और प्रगतिशील और विकासोन्मुख शिक्षा के नाम पर कुछ बेहूदा काम किये। किन्तु यदि ड्यूई के सिद्धान्तों से इन बेहूदगियों को अलग कर दिया जाए तो ड्यूई अमरीकन स्कूल में सतत प्रगतिशील लोकतन्त्र को साकार करने की दिशा में एक बड़ी मुक्तिदाता शक्ति रहा है।

यह तथ्य अब सिद्ध हो गया है कि यदि बालकों और युवकों के साथ सही अर्थों में लोकतन्त्री ढंग का सम्बन्ध न रखा जाए तो उनमें अपराध, गैरजिम्मेदारी, घमण्ड, चोरी और अनैतिक प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्तियां पैदा हो जाती हैं। इसलिए यदि स्कूल में लोकतन्त्रीकरण के विरुद्ध प्रबल शक्तिशाली तत्त्व न हों, तो सामान्यतः लोकतन्त्रीकरण का परिणाम सफल सामुदायिक और सामाजिक जीवन का विकास ही होना चाहिए।

ड्यूई ने जिन महत्त्वपूर्ण बातों पर बल दिया था, उनमें से एक यह भी कि शिक्षा समस्याएं सुलझाने की एक प्रक्रिया है। जैसा कि उनके लिए शिक्षा, विचार और चिन्तन तत्त्वतः एक समस्या का मुका-बला करना और उसे हल करना है। इसलिए उनका कहना था कि

बच्चों को उन समस्याओं के हल के लिए, जो उनके लिए, कुछ अर्थ रखती हैं, प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि बच्चे यह प्रश्न उठाएँ कि उनके नगर को पानी कैसे मुहैया किया जाता है तो प्रगतिशील अध्यापक कुछ शब्दों में उसका उत्तर देने के बजाय सारी कक्षा से पूछेगा कि क्या वे जलोपलब्धि के बारे में एक अध्ययन परियोजना पसन्द करेंगे ? यदि वे इसके लिए राज़ी हो जाएँ तो बाकायदा एक परियोजना तैयार कर उसके अन्तर्गत उन्हें शहर के जलोपलब्धि संयन्त्र और जलाशय की यात्रा कराई जाएगी, उन्हें नमी और जल-वाष्पों के संघनन के परीक्षण कराए जाएँगे, मौसम और वर्षा की प्रक्रिया समझाई जाएगी, पानी के उपयोग और संग्रह का हिसाब-किताब समझाया जाएगा, वर्षा, नदी और झील विषयक कविताएँ पढ़ाई जाएँगी और विश्व की प्रमुख नदी-प्रणालियों का ज्ञान कराया जाएगा। इसके लिए दृश्य साधनों—मूवी फिल्म, चित्रमय पुस्तकें, स्लाइड और नक्शे आदि—का भी यथोचित उपयोग किया जाएगा।

इस तरह बच्चा समस्याओं के समाधान का तरीका सीखेगा। वह यह जानेगा कि कैसे समुचित प्रश्न पूछे जाने चाहिएँ और कैसे स्वयं उनका उत्तर खोजना चाहिए। पुरानी पद्धति में यह माना जाता था कि अध्यापक द्वारा पूछे जाने वाले हर प्रश्न का एक सही उत्तर है। किन्तु नई पद्धति यह मानकर चलती है कि कुछ प्रश्न ऐसे भी हो सकते हैं जिनका एक नपा-तुला सही उत्तर न हो, और जिनके उत्तर को खोजने के लिए हमें स्वयं समस्याओं के बीच रहना और ज्वार पर विजय पाने की सब आशाओं का त्यागकर लहरों और उनके उफान के साथ संघर्ष करना पड़े। हमारे युग के लिए यह निःसन्देह एक अच्छी और उपयोगी शिक्षा-प्रणाली है।

सार्वजनिक स्कूल निम्न बातों का भी प्रयत्न करता है :

बच्चे को मनोरंजन और सृजनात्मक प्रवृत्तियों में दिलचस्पी लेने के लिए प्रोत्साहन देना।

उसे अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार प्रगति करने देना।

बच्चे के स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना, उसकी सब आवश्यकताओं और कमजोरियों की ओर माता-पिता का ध्यान खींचना और यदि माता-पिता में बच्चे की उन आवश्यकताओं को पूरा करने की सामर्थ्य न हो तो उसके लिए बाहर से सहायता प्राप्त करना।

खेल-कूद और व्यायाम से और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की उचित शिक्षा देकर बच्चे के शरीर का विकास करना।

बच्चे में अपने इर्द-गिर्द की भौतिक और सामाजिक परिस्थितियों के ज्ञान को विकसित करना।

उसे लोकतन्त्र का, खासकर अमेरिकन लोकतन्त्र का, ज्ञान देना और उसके लिए उत्साह पैदा करना।

उसमें ऐसी सामाजिक चेतना पैदा करना, जो वयस्क होने के बाद भी उसमें रहे और जिससे वह समाज के कामों में निःस्वार्थ और ठोस रुचि ले और उसकी सेवा के लिए स्वेच्छया कार्य करे।

उद्योग और कृषि के लिए आवश्यक तकनीकी दक्षता प्रदान करना।

हर छात्र और उसकी आवश्यकताओं पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना।

स्कूल को नगर के समाज का एक अविच्छिन्न अंग और सामाजिक जीवन का केन्द्र-बिन्दु बनाना।

माता-पिता को आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों को समझने में सहायता देना।

इनके अलावा स्कूल का काम बच्चे को पढ़ना-लिखना, गणित, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, कला और भाषा आदि की शिक्षा देना तो है ही। ऐसी दशा में यदि स्कूल अपने उद्देश्यों को पूरा करने में पिछड़ जाए तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी।

स्कूल का संचालक कौन ?

संसार का कोई भी अन्य समाज शिक्षा के लिए अमेरिका के बराबर धन और शक्ति व्यय नहीं करता। यहाँ की आबादी का एक-चौथाई भाग शिक्षा की प्रक्रिया में सीधा लगा हुआ है। अमेरिका में १,६५,००० से ज्यादा स्कूल हैं जिनमें ३,७०,००,००० से अधिक छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं। शिक्षकों की संख्या दस लाख से अधिक है और स्कूलों पर कुल वार्षिक खर्च नौ अरब डालर से भी ज्यादा होता है। स्कूलों में छात्रों की संख्या बढ़ने का कारण सिर्फ यही नहीं है कि यहाँ की आबादी बढ़ रही है, बल्कि इसका कारण यह भी है कि अब अधिकाधिक छात्र हाई-स्कूलों, कालेजों और ग्रेजुएट स्कूलों में जाने लगे हैं। संयुक्त राज्य में आज १४ और १७ वर्ष के बीच की आयु के ७५ प्रतिशत से अधिक लड़के-लड़कियां हाई स्कूलों में हैं। इतनी बड़ी संख्या न किसी अन्य देश में कहीं है और न स्वयं संयुक्त राज्य में ही इससे पहले कभी रही है। हाई स्कूल पास करने वाले छात्र-छात्राओं में से ४० प्रतिशत कालेजों में उच्च-शिक्षा के लिए भरती होते हैं। शिक्षा आम तौर पर १६ वर्ष की आयु तक अनिवार्य और निःशुल्क है।

प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के १२ प्रतिशत के लगभग छात्र प्राइवेट स्कूलों में जाते हैं जिनमें से बहुत से चर्चों द्वारा संचालित हैं। फिर भी अमेरिका में हाई स्कूल तक की शिक्षा की व्यवस्था प्रधानतः और बहुत बड़े पैमाने पर सार्वजनिक (सरकारी) है। इस शिक्षा का नियन्त्रण और प्रबन्ध कैसे किया जाता है ?

यह नियन्त्रण और प्रबन्ध संघीय सरकार नहीं करती। इस विशाल कार्य का समन्वय करने के लिए कोई राष्ट्रीय शिक्षा मंत्रालय नहीं है। संयुक्त राज्य का शिक्षा विभाग स्वास्थ्य, शिक्षा और जनकल्याण विभाग का एक अंग मात्र है। वह राज्यों को शिक्षा के लिए संघीय अनुदान देता है और शिक्षा सम्बन्धी अनुसन्धान कार्यक्रमों का संचालन करता

है। सार्वजनिक शिक्षा पर व्यय की जाने वाली धन राशि का चार प्रतिशत से भी कम अंश संघीय सरकार देती है।

संयुक्त राज्य में शिक्षा की एक प्रणाली नहीं है, बल्कि पचास विभिन्न प्रणालियाँ हैं (और यदि कोलम्बिया के जिले को भी शामिल कर लिया जाए तो ५१ प्रणालियाँ हैं), क्योंकि संविधान ने शिक्षा राज्यों के, "या जनता के" हाथों में सौंप दी है। बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि संयुक्त राज्य में ६०,००० शिक्षा-प्रणालियाँ हैं, क्योंकि यहां ६०,००० शिक्षा-जिले हैं। कारण यह है कि यद्यपि राज्य सरकारें शिक्षा पर विभिन्न मात्राओं में नियन्त्रण रखती हैं, परन्तु अधिकतर सत्ता और अधिकार वे माता-पिता पर, (और अन्य स्थानीय मत-दाताओं पर) छोड़ देती हैं, जो स्कूलों के प्रबन्धक मंडलों का चुनाव करते हैं। वे स्कूलों के संचालन के लिए कर भी लगाते हैं। वे अभिभावक-अध्यापक संघ चलाते हैं जो घर और स्कूल के बीच संघर्ष और मतभेदों को दूर करते हैं और स्कूलों के लिए अतिरिक्त धन-संग्रह करते हैं। सब मिलाकर औसतन ६० प्रतिशत धन स्थानीय करों से प्राप्त होता है और शेष ४० प्रतिशत राज्य सरकारों से मिलता है, जो आय-कर, मद्य-कर, पेट्रोल-कर आदि के जरिये धन-संग्रह करती हैं।

यह चालीस प्रतिशत योगदान राज्य के शिक्षा विभाग के हाथ में लगाम थमा देता है और उस लगाम से वे स्थानीय बोर्डों का नियन्त्रण करते हैं। फिर भी अधिकतर राज्यों की शिक्षा व्यवस्था अत्यधिक विकेन्द्रित है और उसमें हर कस्बे या नगर को स्वयं अपनी आवश्यकताओं का निर्धारण करने का उत्तरदायित्व दे दिया जाता है। स्थानीय स्कूल बोर्डों के सदस्य स्थानीय जनता के प्रतिनिधि होते हैं। देहाती स्कूलों के बोर्डों में स्वभावतः किसान और शहरी स्कूलों के बोर्डों में व्यापारी या पेशेवर लोग चुने जाते हैं। और अभी हाल में कुछ समय से शहरी स्कूल बोर्डों में श्रमिकों के प्रतिनिधि भी चुने जाने लगे हैं। स्त्रियाँ भी अक्सर इन बोर्डों में चुनी जाती हैं। बोर्डों के सदस्य स्थानीय जनता के

विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसीलिए वे स्कूलों में सुधार करने के लिए नया टैक्स लगाने में या स्कूल बनाने के लिए बॉंड जारी करने में हिचकिचाएँगे। किन्तु उन्हें स्थानीय जनता के हितों का भी ध्यान रखना है, इसलिए वे स्वेच्छया लोगों के पास जा-जाकर स्कूल की नई इमारत बनाने या अध्यापकों के वेतन बढ़ाने के लिए धन-संग्रह की अपील करते हैं।

राज्य का शिक्षा कमिश्नर बोर्ड को किसी काम के लिए आदेश देने के बजाय उसे सलाह-मशविरा देने या समझाने-बुझाने का तरीका अपनाता है। किन्तु दैनन्दिन कामों में और अध्यापकों के प्रशिक्षण और पथ-प्रदर्शन आदि के विशिष्ट कार्यों में आम तौर पर बोर्ड राज्य के किसी अधीक्षक की देखरेख में काम करने के लिए खुशी से तैयार हो जाता है।

यह कहा जा सकता है कि स्थानीय बोर्ड को इतने अधिक अधिकार दे देने से शिक्षा को पूर्णतः आधुनिक और नवीनतम स्तर पर नहीं लाया जा सकता। किन्तु स्थानीय स्कूल की प्रणाली उस जमाने से चली आ रही है, जबकि हमारा देश एक राष्ट्र के रूप में नहीं था, बल्कि राज्य भी नहीं थे। यही नहीं, अमेरिकन लोग भी अपने बच्चों के लिए शिक्षा-प्रणाली निर्धारित करने का अधिकार स्थानीय समाज के हाथ में ही रखने के लक्ष्य के समर्थक हैं। आखिर शिक्षा की कौन-सी प्रणाली अच्छी है?—क्या वह, जो उस अध्यापक-कालेज में विकसित की गई है जिस में शिक्षा कमिश्नर ने अध्ययन किया था, या वह, जिसे स्थानीय समाज अपनी और अपने बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयुक्त समझता है?

आजकल माता-पिताओं को उन समितियों में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है जो पाठ्यक्रमों और पाठ्य-पुस्तकों पर एवं स्कूलों की अन्य समस्याओं पर विचार करती हैं और उनसे अन्तिम निर्णयों में सहायता देने के लिए कहा जाता है। हर स्थानीय समाज का इन

समस्याओं के बारे में अपना अलग-अलग उत्तर होगा। स्कार्सडेल (न्यूयार्क) में, जहां अधिकतर लड़के स्कूल की पढ़ाई खत्म कर कालेजों में जाते हैं, स्कूलों का कार्यक्रम और पढ़ाई ऐसी होनी चाहिए कि छात्र कालेज के लिए तैयार हो सकें। देहाती इलाकों में जहां अधिकतर लड़कों को स्कूल की पढ़ाई खत्म कर कृषि में लगना होता है, यह आवश्यक होगा कि उन्हें वैज्ञानिक कृषि की मोटी-मोटी बातें सिखाई जाएं और साथ ही जिस दुनिया में वे रहते हैं, उसका ज्ञान कराया जाए। इसी तरह लड़कियों को शरीर-पोषण, शिशु-परिचर्या और घरेलू कामों की शिक्षा देना जरूरी है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण

अमेरिकन लोग अक्सर व्यावहारिक होते हैं, इसलिए वे व्यावसायिक प्रशिक्षण पर हमेशा बल देते रहे हैं। पहले जहां हाई स्कूल केवल छात्रों को कालेज के लिए तैयार करते थे, वहां अब वे लकड़ी और धातु का काम, स्टेनोग्राफी और मुनीमी, पत्रकारिता और गृह-अर्थशास्त्र एवं कृषि के पाठ्यक्रम भी चलाते हैं। संघीय सरकार भी हाई स्कूलों के जरिये १४ वर्ष से अधिक आयु के युवकों और युवतियों को, जो किसी खास धंधे में लगे हैं या लगना चाहते हैं, व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के कार्यक्रम चलाती है।

भी काम प्रारम्भ किये। अन्त में उसने अपनी निज की जमीन खरीदी और अपने पिता के साथ साझा कर लिया।

इस प्रकार व्यावसायिक कृषि की शिक्षा पाने वाले छात्रों का 'फ्यूचर फार्मर्स ऑफ़ अमेरिका' के नाम से एक राष्ट्रीय संगठन बनाया गया है जिसमें वे मितव्ययिता और सार्वजनिक सेवा की आदतें भी सीखते हैं। ये आदतें उन्हें देहाती समाज के नेतृत्व के योग्य बनाती हैं।

व्यावसायिक प्रशिक्षण छात्रों की बीच में ही शिक्षा को छोड़ कर अलग हो जाने की समस्या का आंशिक समाधान है। यद्यपि संयुक्त राज्य में हाई स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति सबसे अधिक है, तो भी उनके एक चौथाई छात्र उपस्थिति के नियमों में शिथिलता और घटिया मनोवृत्ति के कारण स्कूलों से अनुपस्थित रहते हैं। बहुत-से छात्र पढ़ाई से ऊब जाते हैं और उनके मन में यह प्रलोभन रहता है कि यदि वे कोई नौकरी करने लग जाएं तो उन्हें हर सप्ताह वेतन का चैक मिलेगा और वे आजादी से जीवन बिता सकेंगे, नये कपड़े खरीद सकेंगे और अपनी कार रख सकेंगे। इसलिए वे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं।

सफलता के मार्गों को खुला रखने के लिए अनेक उपाय किये जा रहे हैं। इसके लिए अनेक पथ-प्रदर्शन कार्यक्रम चलाये जाते हैं जो कम हैसियत वाले, किन्तु प्रतिभाशाली बच्चों को स्कूल में पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रोत्साहन देते हैं। इसके अलावा कर्मचारियों को सेवा में रहते हुए प्रशिक्षण प्राप्त करने की सुविधाएं भी प्रदान की जाती हैं ताकि वे अपनी योग्यता बढ़ा सकें। जिस कम्पनी में इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था रहती है, उसके कर्मचारी को यह भरोसा रहता है कि आर्थिक प्रणाली उसकी आकांक्षाओं की प्राप्ति के अनुकूल है।

उच्च-शिक्षा

यद्यपि सार्वजनिक स्कूल बहुत हद तक अपना नियन्त्रण और संचालन स्वयं करते हैं, तो भी वे राज्यों के शिक्षा विभागों, अध्यापन-कालेजों और स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक होने वाले विविध

शिक्षा सम्मेलनों के जरिये एक बंधी हुई सुव्यवस्थित प्रणाली का अंग बन जाते है। किन्तु उच्च-शिक्षा के क्षेत्र में हर बड़ा विश्वविद्यालय और हर देहाती कालेज अपने लिए पाठ्यक्रम और सिद्धान्त स्वयं निर्धारित करता है और उनका संचालन भी स्वयं करता है। इन विश्वविद्यालयों और कालेजों में अच्छे-अच्छे छात्रों के लिए प्रतिस्पर्धा चलती है, इसलिए वे समय-समय पर अपने कार्यक्रम बदलते रहते हैं, शिक्षा का कोई नया सिद्धान्त निकालते है, या कोई नई अतिरिक्त सेवा प्रारम्भ करते है या कोई नई विशिष्टता अपनाते है जो उन्हे उनके प्रतिस्पर्धियों में विशिष्ट स्थान दिला सके। एक कालेज यह मानता है कि ज्ञान-प्राप्ति का सबसे अच्छा मार्ग एक निश्चित प्राचीन साहित्य का अध्ययन है। दूसरा यह समझता है कि पढ़ाई के बीच-बीच मे कुछ समय के लिए छात्रो को कहीं रोजगार भी दिया जाना चाहिए। कुछ संस्थाएं ऐसी है जो अपनी प्रसिद्धि के लिए यह दावा करती है कि उनकी फुटबाल की टीमें बहुत अच्छी है।

विद्यालयों के पाठ्यक्रमों से बेहतर हैं। संयुक्य राज्य एक विशाल देश है, अनेक राज्यों और प्रदेशों में बँटा हुआ है और विविधता में विश्वास रखता है, इसलिए उसमें विद्या के अनेक बड़े केन्द्र हैं। ऐसा भी होता है कि शहर से बहुत दूर किसी देहाती कालेज में शिक्षा अधिक अच्छी हो। हाल के सर्वेक्षणों से मालूम हुआ है कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण देने वाली पचास चोटी की संस्थाओं में से ३९ छोटे कालेज हैं। सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ है कि देश के उच्चपदस्थ व्यक्तियों में से ८८ प्रतिशत कालेजों के ग्रेजुएट हैं और उनमें से भी ७१ प्रतिशत छोटे कालेजों में पढ़े हैं।

अनेक सुधारवादी स्कूल, प्राइवेट संस्थाओं द्वारा चलाए जाते हैं। उदाहरण के लिए जॉन हॉपकिन्स स्कूल, जिसने ग्रेजुएट के स्तर तक अध्ययन की यूरोप की प्रणाली को सबसे पहले अमेरिका में लागू किया, या स्वार्थमोर स्कूल, जिसने इंग्लैंड की ऑनर्स की प्रणाली को कुछ परिवर्तित रूप में प्रारम्भ किया, या ऐण्टियोक स्कूल, जिसमें छात्रों को पढ़ाने के साथ उनसे काम भी कराया जाता है और उसका पारिश्रमिक उन्हें दिया जाता है। इसी तरह बेनिंगटन और सारा लॉरेन्स स्कूल भी जहाँ कालेज स्तर तक जॉन ड्यूई की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा को अमल में लाया गया, प्राइवेट हैं।

दो-तिहाई के लगभग शिक्षा-संस्थाएँ प्राइवेट हैं, जो दान या ट्रस्टों के धन से चलती हैं। बाकी संस्थाएँ राज्य सरकारों या नागरिक प्रशासनों द्वारा चलाई जाती हैं। इनके लिए धन अधिकतर कर लगाकर संग्रह किया जाता है, इसलिये ये संस्थाएँ अपने कम फीस के आकर्षण से अधिक बच्चों को आकृष्ट करती हैं, जबकि प्राइवेट स्कूलों की फीसें खर्च में वृद्धि के कारण निरन्तर बढ़ रही हैं। साइराक्यूज या कॉर्नेल जैसी कुछ संस्थाएँ अंशतः राजकीय और अंशत; प्राइवेट हैं। यद्यपि कुछ संस्थाएं कुछ खास विषय ही पढ़ाती हैं, किन्तु अधिकतर संस्थाओं में सभी विषयों की शिक्षा दी जाती है। अमेरिकी विश्वविद्यालयों को दर्शन, चिकित्सा के शास्त्र और प्राचीन साहित्य की शिक्षा

के साथ-साथ पशु-चिकित्सा और नर्स-प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम भी अपने यहाँ रखने में कोई अजीब बात नहीं लगती। अमेरिकन शिक्षा संस्थाएँ सभी पेशों और व्यवसायों की शिक्षा को एक ही जैसा सर्व-सामान्य परिवेश प्रदान करती हैं, ताकि समाज में उन्नति करने के लिए एक सर्व-सामान्य सामाजिक सोपान बन जाए, जिस पर चढ़ने का सभी अमेरिकनों को समान अधिकार है।

किसी भी अन्य देश या समाज की तरह अमेरिका में भी कालेजों और विश्वविद्यालयों पर आम तौर पर सबसे प्रमुख सामाजिक आर्थिक वर्ग का नियन्त्रण रहता है। दान पर निर्भर रहने वाले प्राइवेट कालेज अपने प्रबन्धक मंडलों में ऐसे लोगों को लेते हैं, जिनके जरिये उन्हें अधिक दान मिलता रह सके। राजकीय संस्थाओं पर राजनीतिक दृष्टि से शक्तिशाली वर्ग नियंत्रण स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं। किन्तु प्राइवेट और सरकारी दोनों ही संस्थाएँ अपने भूतपूर्व छात्रों की सहायता और समर्थन पर निर्भर करती हैं, जो फुटबाल के खेल या अन्य प्रतियोगिताओं के भावनात्मक बन्धन से इन संस्थाओं से बांधे रहते हैं।

अमेरिकन कालेजों की शिक्षा-प्रणाली और पाठ्यक्रम में मुख्य-मुख्य बातें ये होती हैं: उनमें व्याख्यानों के बजाय व्यक्तिगत शिक्षा और सामूहिक विचार-विनिमय पर बल दिया जाता है; छात्रों को अर्थ-व्यवस्था, शासन, और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् के बारे में काफी जानकारी दी जाती है ताकि वे इस पेचीदा और जटिल संसार में अपना प्रौढ़-जीवन अच्छे ढंग से व्यतीत कर सकें; कलाओं पर और सन्तुलित जीवन में उनके समुचित स्थान पर अधिकाधिक ध्यान दिया जाता है; और लड़कों को रोजगार के लिए तैयार किया जाता है और लड़कियों को रोजगार के साथ-साथ मातृत्व और सन्तान-पालन के कर्त्तव्यों के लिए भी तैयार किया जाता है।

इसी विविधतापूर्ण शिक्षा-प्रणाली को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए किसी [illegible] प्रतिभाशाली व्यक्ति ने छात्रों को अंक देने की

प्रणाली निकाली है। प्रति सप्ताह कक्षा में एक घंटे की पढ़ाई का एक अंक छात्र को सत्र के अन्त में दिया जाता है। तीन घंटे की पढ़ाई वाले पाँच पाठ्यक्रमों के प्रति-सत्र १५ अंक होते हैं। इस प्रकार ग्रेजुएट बनने के लिए १२० अंक होते हैं। कितनी सरल है यह प्रणाली! गणित के इस हिसाब से यह मान लिया जाता है कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय में समाज-शास्त्र का पाठ्यक्रम पोडंक में ऊन-संग्रह के पाठ्यक्रम के बराबर है और छात्र इच्छानुसार इस पाठ्यक्रम से उस पाठ्यक्रम में आ-जा सकते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि विभिन्न पाठ्यक्रमों में इस समानता पर कोई भी कभी विश्वास नहीं करता, लेकिन इससे तालीमी अंक-प्रणाली अवश्य बहुत आसान हो गई है और बहुत-से छात्रों के लिए एक पाठ्यक्रम से दूसरे पाठ्यक्रम में या एक संस्था से दूसरी संस्था में जाना और अपनी लाज बचाना बहुत आसान हो गया है। यदि कोई दूसरी संस्था इस अंक-प्रणाली के बजाय छात्रों के मूल्यांकन के लिए दूसरी पद्धति अपनाए और किसी अन्य संस्था से आने वाले छात्रों को अपने स्टैंडर्ड के अनुसार नाप कर उनके पूर्व-अर्जित अंकों में कमी कर दे अथवा अत्युत्तम छात्र को 'ए', उत्तम को 'बी', सामान्य को 'सी', पुनः परीक्षा योग्य छात्र को 'डी', और असफल छात्र को 'ई', या 'एफ' वर्ग में रखने की प्रणाली अपनाए तो भी छात्रों के लिए संस्था बदलना कठिन नहीं है। यदि कोई छात्र बार-बार 'डी' या 'ई' या 'एफ' वर्ग में आए तो उसे छुट्टी के दिनों में ग्रीष्मकालीन विद्यालय में पढ़ने की भी अनुमति दे दी जाती है, ताकि वह अपनी कमी पूरी कर सके। ऐसे छात्रों के लिए ही नहीं, बल्कि एक ही वर्ष में दो कक्षाएं पास करने के या कालेज की शिक्षा को चार वर्ष के बजाय तीन वर्ष में पूरा करने के इच्छुक छात्रों के लाभ के लिए भी अनेक विश्वविद्यालयों में इस प्रकार के ग्रीष्मकालीन स्कूल चलते हैं।

छात्र को शिक्षा देने और मार्ग-प्रदर्शन करने के लिए अध्यापक तो होते ही हैं, साथ ही बहुत-से ऐसे विशेषज्ञ भी होते हैं, जो उसके हित और कल्याण का ध्यान रखते हैं। अमेरिका में एक मामूली कालेज छात्र पर जितना ध्यान दिया जाता है, उतना मध्ययुग में किसी राजकुमार पर भी नहीं दिया जाता था। सबसे पहले कालेज का डीन होता है जो एक तरह से सारी संस्था का पिता होता है और उसे उसकी सख्ती और नर्मी के लिए आदर्श बनाया जाता है। जब लड़के शहर के लोगों के साथ कोई शरारत या शैतानी करते हैं तो डीन लड़कों को कड़ी सजा देता है (छोटे शहरों में कालेज छात्रों और शहरी लोगों में कुछ न कुछ झगड़ा होता ही रहता है)। लेकिन इस सजा से अपराधी छात्रों को खूब डराकर भी वह दंड को अन्त में बहुत कठोर प्रतीत नहीं होने देता, बल्कि कभी-कभी उन्हें कड़ी चेतावनी देते हुए भी विनोद से यह कह कर उसकी कठोरता को कम कर देता है कि वह स्वयं भी किसी समय कालेज का शैतान लड़का था, और उस जमाने से वह स्वयं बदल कर काफी गम्भीर हो गया है, किन्तु शहर के लोग अब भी नहीं बदले और बड़े होने पर छात्र जीवन की इन शरारतों को याद कर छात्रों को खूब हँसी आती है। चेतावनी के साथ इस हल्के विनोद का असर यह होता है कि छात्र अपने डीन को प्यार करते हैं और उन्हें यह पता नहीं चलता कि जिस आदर्श पिता को वे खोजते रहे हैं उसे शरारत करके ही उन्होंने पाया है और अपना पौरुष अर्जित और सिद्ध करने के लिए उन्हें उसी के विरुद्ध विद्रोह करना पड़ता है।

उद्योगों में जैसे एक प्रबन्ध-क्रान्ति आई है और प्रबन्धकों के एक नये वर्ग ने उन पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया है, उसी तरह विश्वविद्यालयों में भी एक प्रबन्धकीय क्रान्ति आई है। उद्योगों में उत्पादक और उपभोक्ता के बीच में और विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर और छात्र के बीच में विशेषज्ञों का एक बड़ा वर्ग आ गया है जो छात्र की मुक्ति के लिए आवश्यक समझी जाने वाली सेवाएं प्रदान करता है। ये सेवाएं

शायद आवश्यक है भी, किन्तु इन सेवाओं ने उनके कार्य को एक विशिष्ट कार्य में परिणत कर दिया है, जबकि पहले यह कार्य कहीं अधिक सरल और सीधा-सादा था, भले ही वह उतना कौशलपूर्ण नहीं था।

अमेरिकन जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों और विभागों की भांति शिक्षा के मामले में भी एक बड़ी कठिनाई है और वह यह है कि कालजों ने बहुत अधिक कार्य करने का प्रयत्न किया है। कालेज के आदर्श बहुत अच्छे हैं, परन्तु उन्हें जिस मानवीय मिट्टी को लेकर गढ़ना पड़ता है वह असानी से काबू में नहीं आती और सरलता से गढ़ी नहीं जा सकती। दसियों वर्षों तक शिक्षा-शास्त्री इस पुराने आदर्श को दोहराते रहे हैं कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रह सकता है', और इसके आधार पर ही वे छात्रों के लिए खेल-कूद के कार्यक्रमों का औचित्य सिद्ध करते रहे हैं। किन्तु आज स्वस्थ और सबल शरीर के लिए खेल-कूद के अलावा और भी बहुत-सी चीजों की आवश्यकता है, जैसे एक अच्छा और मंहगा अस्पताल, जिसमें सुयोग्य डाक्टर और नर्सें हों और दुर्बल छात्रों के लिए एक आवास-गृह, जिसमें बचपन में उत्पन्न रोगों के लिए उनकी चिकित्सा और परिचर्या की जा सके। अब मन और शरीर को स्त्री और पुरुष या रात और दिन की भाँति एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। इसीलिए एक मानसिक चिकित्सा विशेषज्ञ की भी आवश्यकता होती है। कुछ सामाजिक गति विधियों और समारोहों की भी आवश्यकता होती है। कालेजों में लड़के और लड़कियों की सहशिक्षा के कारण यह स्वाभाविक है कि उनमें कुछ यौन सम्बन्ध हों लेकिन यह आशा की जाती है कि उनसे उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए। इस लिए इन सम्बन्धों में संभावित विस्फोटक परिस्थितियों को रोकने की भी कुछ व्यवस्था करनी पड़ती है। इस मामले में परीक्षण और अनुभव से सीखने का सिद्धान्त खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

यह धारणा आम तौर पर लोगों में हमेशा रही है कि हर आदमी हर चीज सीख सकता है और यदि हर चीज में सन्तुलन रखा जाए, चाहे वह भोजन, काम और खेल हो; व्यक्ति और समाज हो; गांव और शहर हो; यौन सम्बन्ध और धर्म हो; तीव्र गति और आराम हो; गम्भीरता और हास्य-विनोद हो और चाहे मन और शरीर हो; तो मनुष्य सुख और सफलता प्राप्त कर सकता है। इसलिए कालेज के जीवन में अनेक चीजों का मिश्रण और सन्तुलन करने का प्रयत्न किया जाता है—जिसमें कुछ पढ़ाई होती है, कुछ खेल-कूद, कुछ सपारिश्रमिक काम, कुछ प्रोफेसरों के साथ मिलना-जुलना, कुछ भिन्न लिंग के छात्र-छात्राओं का परस्पर मिलना, कुछ अपने ही समान लिंग के सहपाठियों के साथ उठना-बैठना और कुछ अपना पौरुष सिद्ध करने के लिए लड़कों का शरारतें करना। इसके अलावा "छात्रीय गति विधियाँ" तो काफी मात्रा में उसमें होती ही हैं। छात्रीय गति विधियों में समाचार-पत्र (दैनिक या साप्ताहिक) का सम्पादन, स्कूल की वार्षिक या अन्य पत्रिकाएं निकालना, वाद-विवाद, दर्जन भर खेलों के लिए बाहर जाना, टीमें बनाना और उनका प्रबन्ध करना, कक्षा अधिकारियों के रूप में काम करना, नाच या अन्य सामाजिक समारोहों की योजना बनाना, नाटकों में अभिनय करना या नेपथ्य में कार्य करना, क्लबों में गाना, बैंड या वाद्य-वृन्द में बाजा बजाना, साहित्यिक, वैज्ञानिक या शौकिया क्लबों में हिस्सा लेना, फ्रेंच या जर्मन या स्पेनिश क्लबों आदि में शामिल होना, किसी भ्रातृसंघ में सम्मिलित होना और फिर एक अफसर के रूप में काम करना या छात्रावास को ठीक ढंग से चलाना आदि काम शामिल हैं।

ये सब विविध प्रकार की गति विधियाँ और उनमें प्रदर्शित उत्साह देखकर हमारे देश में बाहर से आने वाले चकित रह जाते हैं। किन्तु जब हम कालेज से बाहर के जीवन के साथ उसका तालमेल बैठाते हैं तो उसका औचित्य स्पष्ट हो जाता है। जो छात्र अपने साथी

से यह कहता है कि तुम अपने भ्रातृसंघ से छात्र शासन परिषद् के अध्यक्ष पद के लिये हमारे उम्मीदवार ल्यू वेकर को वोट दिलाओ और उसके बदले में हम तुम्हारे आदमी को फुटबाल टीम के मैनेजर पद के लिये वोट देंगे, वह एक तरह से व्यापारिक और राजनीतिक जीवन में ले-दे कर सबक सीखता है।

सम्भवतः सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण शिक्षा लोगों के साथ व्यवहार की शिक्षा है, जो बहुत जरूरी समझी जाती है और जिसका फल भी बहुत अच्छा होता है। कालेज का छात्र यह सीखता है कि व्यवसाय के साथ-साथ मन को हल्का रखने का समन्वय करना एक बड़ी कला है —वह अपने साथियों के साथ बैठकर आराम से खाता-पीता है, उनके साथ छात्रावास के बिछौनों पर लेट कर गप-शप करता है, उनके साथ खेलता है और इस प्रकार उनकी शक्ति और कमजोरी का अन्दाज लगाता है और जब वास्तव में वह कोई लड़ाई जीत लेता है तब भी यह दिखाता है कि मानो उसने हार मान ली है। यह मनस्विता या इसी तरह की अन्य चीजें अगर तालीमी दृष्टि से कला नहीं भी हैं, तो भी समाज ही कला के रूप में उन्हें मूल्यवान समझता है और कालेज का छात्र ये कलाएँ भी सीखता है। यदि विदेशी लोगों को ऐसा लगे कि अमेरिकन छात्र बौद्धिक ज्ञान की दृष्टि से पीछे हैं तो यह आश्चर्य की बात नहीं है। वास्तव में वे विद्वत्ता हासिल करने के लिए कालेज में नहीं आते, बल्कि समन्वय और सन्तुलन का जादूई मन्त्र सीखने के लिए आते हैं जो उन्हें भावी जीवन के योग्य बनाता है।

स्त्रियाँ और अध्ययन

स्त्रियाँ कालेज के जीवन का एक निश्चित और अविच्छिन्न अंग हैं। पूर्व को छोड़कर बाकी सभी जगह कालेजों में सहशिक्षा है। लड़के-लड़कियाँ एक ही कक्षा में बैठते हैं, एक ही मेज पर खाना खाते हैं, एक ही पुस्तकें पढ़ते हैं, एक ही जैसे मनोरंजन के साधनों में आनन्दोच्छ्वास पाते हैं, हरी घास पर लेटकर 'लाइफ' पत्रिका पर बहस करते हैं और

एक-दूसरे से एकान्त में मिलते हैं। कालेज का एक महत्त्वपूर्ण काम यह है कि वह लड़के-लड़कियों को परस्पर मिलाता है जिससे वे भावी जीवन के लिए अपने संगियों का चुनाव कर सकें और वह लड़कियों को अपने समान आयु की लड़कियों के और लड़कों को अपने समवयस्क लड़कों के सम्पर्क में भी लाता है जिससे वे एक-दूसरे के साथ बातचीत और विचार-विनिमय करके अपने मन के मुताबिक लड़के या लड़की के बारे में धारणा बना सकते हैं। एक ऐसे समाज में जो यह तो चाहता है कि लोग अपनी जात-बिरादरी से बाहर विवाह करें, किन्तु इसमें उन्हें सहायता कोई नहीं देता, यह काम और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

आज इसीलिए युवक-युवतियों के कालेज में छात्र के रूप में रहते हुए ही विवाहित हो जाने की बहुत घटनाएँ घटती रहती हैं। मन को विचलित करने वाले तनावों-खिचावों से मुक्त रहकर वे वह जीवनयापन कर सकते हैं जिसके लिए वे जीव-विज्ञान की दृष्टि से तैयार हो चुके हैं। युद्ध के परिणामस्वरूप हमारे शिक्षा-क्षेत्र में एक परिवर्तन आया था और वह यह कि पहले जिस आयु में छात्र कालेज में भरती होते थे, उनसे चार या पांच वर्ष अधिक की आयु में वे भरती होने लगे। यह प्रवृत्ति अब भी बहुत हद तक चली आ रही है। इसी का परिणाम है कि आज हमारे कालेजों मे १६ प्रतिशत छात्र विवाहित होते हैं। किन्तु कुछ कालेज और कुछ अभिभावक इस विचार को अब भी बहुत नापसन्द करते हैं।

जहां तक लड़कियों का सम्बन्ध है, उन्हें अपने लिए उपयुक्त विषय का चुनाव स्वयं सोचकर और अनेक दृष्टियों से करना पड़ता है। बहुत सी लड़कियां कालेज की शिक्षा समाप्त कर विवाह करने के बाद कुछ काम कर लेती हैं और इस प्रकार अपने पति की डाक्टरी या वकालत की पढ़ाई का खर्च उठाकर उसे शिक्षा पूरी करने में सहायता देती हैं। जब उनका पति कमाने लगता है तो वे नौकरी छोड़ कर शेष जीवन पत्नी और माता का कर्त्तव्य निभाने या समाज-सेवा करने में व्यतीत करती

हैं। इस प्रकार उन्हें अपने पति की आर्थिक सहायता करने और अपने स्त्रीत्व के कर्त्तव्य पूरे करने के लिए दो प्रकार की शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। वे किसी पेशे या व्यवसाय की जो शिक्षा लेती हैं वही उनका दहेज और बीमापालिसी होती है। कारण, अच्छी शिक्षित होने पर उन्हें पति अच्छा मिलता है और यदि दुर्भाग्य से वे पति न पा सकें या अच्छा पति न तलाश कर सकें तो इस शिक्षा के बल पर वे अभावग्रस्त और पराश्रित होने से बच जाती हैं क्योंकि उन्हें कोई अच्छा रोजगार मिल जाता है।

इसलिए जब लड़की यह निश्चित कर लेती है कि उसे भावी जीवन में कौन-सी नौकरी या व्यवसाय अपनाना है तो वह उसके अनुसार ही विषय का अध्ययन करती है। प्रायः स्त्रियाँ अध्यापिका बनने की ट्रेनिंग लेती हैं, क्योंकि सार्वजनिक स्कूलों में अध्यापकों की अपेक्षा अध्यापिकाओं की संख्या तिगुनी रहती हैं। किन्तु वे और कोई व्यवसाय या दिशा भी चुन सकती हैं, क्योंकि स्त्रियों के लिए कोई भी मार्ग और दिशा बन्द नहीं है, हालाँकि उनके लिए उसमें उन्नति के शिखर पर पहुँचना बहुत कठिन होता है और उन्हें वेतन भी पुरुषों के बराबर नहीं मिलता। किन्तु लड़की को माता बनना होता है, इसलिए वह बाल मनोविज्ञान और बाल-शिक्षण का पाठ्यक्रम अधिक लेती है और पारिवारिक अर्थशास्त्र का भी अध्ययन करती है (हालाँकि कुछ अधिक बौद्धिक कालेज इसे अपने पाठ्य विषयों में सम्मिलित नहीं करते)। वह कालेज की राजनीति में भी लड़कों की भाँति ही सक्रिय भाग लेती है, क्योंकि उसे भी भविष्य में मित्र बनाने और चुनावों को प्रभावित करने की आवश्यकता पड़ सकती है।

विश्वविद्यालय का अध्ययन

अंडरग्रेजुएट कालेज से विश्वविद्यालय के किसी ग्रेजुएट स्कूल में जाना हाई स्कूल से कालेज में जाने की भाँति एका-एक होने वाला एक बड़ा परिवर्त्तन है। देश के २,७८,००० ग्रेजुएट छात्र अपने आपको

कानून, डाक्टरी, फिलासफी या प्रशासन के अत्यधिक प्रतिस्पर्धापूर्ण ज्ञान-क्षेत्र के लिए गम्भीरतापूर्वक तैयार कर रहे हैं। उन्हें ग्रेजुएट स्कूल में भरती के लिए प्रतियोगिता करनी पड़ी है और वे जानते हैं कि यदि उन्होंने परिश्रम नहीं किया तो वे असफल हो जाएंगे।

ग्रेजुएट स्कूल में पहुँच जाने के बाद अब उनके पास विश्वविद्यालय छात्र संघ की राजनीति, शौकिया कलाओं, खेल-कूद या रात्रिकालीन वाद-विवाद आदि के लिए समय नहीं रहता। एक वर्ष पूर्व उन्होंने इन चीजों को जितनी उत्सुकता और आग्रह से अपनाया था, उतनी ही तत्परता से वे अब उनका परित्याग कर देते हैं। ग्रेजुएट छात्र छात्रावास में कई साथियों वाले बड़े कमरे में रहने के बजाय अपने अकेले के लिए एक कमरा चाहता है। जब उसे किसी सेमिनार या कक्षा के व्याख्यान में नहीं जाना पड़ता, तब वह अपना अधिकतर समय पुस्तकालय या प्रयोगशाला में व्यतीत करता हैं या अपने ही कमरे में काफी रात गये तक कीमती पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन करता है। बीच-बीच में वह सिनेमा या संगीत के लिए, अथवा टेनिस के खेल के लिए या किसी मित्र लडकी से मिलने के लिए भी समय निकालता रहता है। लेकिन उसका मुख्य काम अध्ययन होता है।

विदेशों से आने वाले लोग यह देखकर हैरान होते हैं कि ग्रेजुएट स्कूलों के प्रोफेसर छात्रों से बहुत अधिक पढ़ाई कराते हैं, उन्हे स्कूलों में बहुत अधिक उपस्थिति के लिए मजबूर करते हैं, उनकी बहुत अधिक परीक्षाएं और टेस्ट लेते है और उनसे बहुत लम्बे और भारी भरकम निबन्ध लिखाते है। वे यह देखकर भी चकित होते हैं कि इन ग्रेजुएट स्कूलों के सेमिनारों का स्तर बहुत ऊँचा है।

इतने मनोयोगपूर्ण अध्ययन के बाद एक वर्ष में या कभी-कभी दो वर्षों में छात्र को मास्टर की डिग्री मिलती है। पीएच० डी० की डिग्री पाने के लिए कम-से-कम तीन वर्ष चाहिएं और बहुत से छात्र तो इस डिग्री के लिए आवश्यक निबन्ध तैयार करने में कई साल लगा देते हैं।

मेडिकल छात्रों को कई साल तक कक्षा भवनों में लैक्चर सुनने और प्रयोगशालाओं में क्रियात्मक प्रयोग करने के बाद फिर कई वर्ष तक इंटर्नशिप या रेजिडेंट चिकित्सक के रूप में काम करना पड़ता है।

यह जानना बहुत दिलचस्प होगा कि अमेरिकन शिक्षा-प्रणाली इस ढंग से क्यों आयोजित की गई है कि उसमें छात्र को हाई स्कूल से एकदम कालेज के और कालेज से ग्रेजुएट स्कूल के ऊँचे स्तर पर जाना पड़ता है। ऐसा लगता है, मानो हर स्तर पर हमारी शिक्षा-प्रणाली यह अनुभव करती है कि उसने छात्र को एक ही दिशा में बहुत लम्बे अर्से तक और बहुत अधिक घिसा है, इसलिए उसकी क्षतिपूर्ति के लिए वह उसे एकदम भिन्न दिशा में उछाल कर आगे ले जाती है। पहली मंजिल में वह छात्र को एकदम सामाजिक स्वतंत्रता दे देती है, यहाँ तक कि परिवार के नियन्त्रण से भी मुक्त कर देती है और दूसरी मंजिल में उसे एकाएक बौद्धिक स्वतन्त्रता ही प्रदान नहीं करती, बल्कि उसके सामने डूबने या तैरने की अथवा जीवित रहने या मर जाने की चुनौती भी फेंक देती है यानी उसे डार्विन से एकदम स्पेन्सर बना देती है।

ग्रेजुएट स्कूल में भी कुछ कमियां हैं। उसमें एक निश्चित क्षेत्र में समय से पूर्व या अत्यधिक विशेषीकरण कराने का प्रयत्न किया जाता है, मशीनी ढंग का अनुसन्धान कराया जाता है और बुद्धि और कल्पना से रहित निबन्ध तैयार कराये जाते हैं जिनमें अन्तर्दृष्टि कम और मशीन की भाँति मोटी-मोटी पुस्तकों से उद्धरण अधिक रहते हैं। छात्र को यदि भविष्य में प्रोफेसर बनना हो तो उसके लिए पीएच० डी० की डिग्री प्राप्त करना अत्यावश्यक है, तथापि पीएच० डी० की पढ़ाई का अध्यापन कला से कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि वह छात्र को अध्ययन के व्यवसाय से हटा कर अनुसन्धान की ओर अधिक आकृष्ट करती है। इसलिए यदि पीएच० डी० करने के बाद अमेरिका में अध्यापक तैयार होते हैं तो उस का कारण पीएच० डी० की पढ़ाई की विशेषता नहीं है।

लोक-शिक्षा

राष्ट्रपति के कमीशन ने यह मत प्रकट किया है कि विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में इससे भी बड़ी भूमिका अदा करें—यानी वे ऐसे साधन का काम करें जिससे देश की सारी जनता ही अपनी क्षमता के अनुसार शिक्षित की जा सके।

अमेरिका के बड़े विश्वविद्यालयों ने इस लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाना प्रारम्भ कर भी दिया है। वे टेलीविजन पर डाक से, या राज्य के विभिन्न भागों में विस्तार कक्षाएं चला कर और अध्ययन-मंचों, वाद-विवादों और अध्ययन, मंडलों को प्रोत्साहन देकर शिक्षा का अधिकाधिक विस्तार कर रहे हैं। करीब आठ लाख प्रौढ़ों को विश्वविद्यालय प्रांगण से दूर रहते हुए ही शिक्षा दी जाती है और यदि टेलीविजन और डाक से शिक्षा पाने वाले भी शामिल कर लिये जाएं तो यह शिक्षा पाने वालों की संख्या तीन करोड़ तक पहुंच जाएगी।

इस बीच प्रौढ़-शिक्षा का आन्दोलन भी सारे देश में वटवृक्ष की तरह फैल गया है। सन् १८२६ से ही, जबकि जोसिया होलब्रुक ने मैसाचुसेट्स में लाइसियम आन्दोलन प्रारम्भ किया था, शिक्षा को जीवन भर चलती रहने वाली एक सतत प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। सन् १८७४ में शोतोका आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और १९०४ में इस आन्दोलन की ओर से लोक-शिक्षण के लिए घुमक्कड़ कम्पनियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का सिलसिला शुरु किया गया। ये घुमक्कड़ कम्पनियां इस नगर से उस नगर में जातीं और रातों-रात किसी खाली स्थान पर एक बड़ा शामियाना तान देतीं और सप्ताह भर व्याख्यानों, संगीत कक्षाओं और यात्रा के ज्ञानवर्धक रोचक किस्सों से वहां के लोगों का मनोरंजन करतीं और उन्हें शिक्षा भी देतीं।

आज सार्वजनिक स्कूलों में रात्रिकालीन कक्षाएं लगा कर आम लोगों को प्रौढ़-शिक्षा दी जाती है। इन सान्ध्य या रात्रिकालीन कक्षाओं

में तीस लाख से अधिक प्रौढ़ शिक्षा पाते हैं। इनमें गिटार वादन से लेकर गणित तक और धातु की नक्काशी के काम से स्पेनिश भाषा तक सभी चीजों की शिक्षा दी जाती है।

वाई० एम० सी० ए० और वाई० डब्ल्यू०सी०ए०, यूनियनें, कृषक दल, अथवा व्याख्यान, कथाएं या अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के वाद-विवादों का आयोजन करने वाले संगठन—अर्थात् नाना प्रकार की संस्थाएं ये विशेष अध्ययन-अध्यापन कार्यक्रम चलाती हैं। कृषि विभाग की विस्तार सेवा के जरिये करीब ७० लाख ग्रामीण कृषि सम्बन्धी मुद्रित साहित्य प्राप्त करते हैं, क्रियात्मक प्रदर्शनों का लाभ उठाते हैं, सभाओं में भाग लेते हैं या फोर-एच क्लबों (जहाँ हाथ, हृदय, घर और स्वास्थ्य के विकास का प्रशिक्षण मिलता है) शामिल होते हैं। इससे ग्रामीण लड़के-लड़कियों को मनोरंजन के साथ-साथ कृषि और पशुपालन अथवा अच्छे ग्रामीण जीवन की शिक्षा मिलती है। देहातों में चलते-फिरते पुस्तकालय भी जाते हैं जिनसे ग्रामीणों तक आधुनिक और प्राचीन दोनों प्रकार के साहित्य की पुस्तकें पहुंचती हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालय अपने आप में एक शिक्षा संस्था है (अमेरिका में सात हजार सार्वजनिक पुस्तकालय हैं)। इसमें लोगों को सिर्फ घर ले जाकर पढ़ने के लिए पुस्तकें ही नहीं मिलतीं, बल्कि पाठक को अपने मन के अनुकूल पुस्तक या वांछित विषय की पाठ्य-सामग्री खोजने के लिए सलाह-मशविरा भी दिया जाता है। ये पुस्तकालय विभिन्न किताबों पर व्याख्यान कराते हैं, बच्चों को कहानियाँ सुनाने के लिए चौपालें लगाते हैं, वाद-विवाद कराते हैं, ग्रामोफोन के रिकार्डों, सिनेमा फिल्मों, प्रदर्शनियों और क्लबों आदि के द्वारा मनोरंजन और शिक्षा प्रदान करते हैं। इनमें अन्धों के लिए ब्रेल लिपि की पुस्तकें भी होती हैं। इनके सभा भवनों का उपयोग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए किया जाता है और इनमें स्थानीय इतिहास, स्थानीय व्यक्तियों की वंशावलि और

ललित कला आदि विशेष रुचि की चीजों का विशिष्ट संग्रह भी रहता है।

अमेरिका में जब यूरोप से आप्रवासियों के आगमन की विशाल लहर प्रारम्भ हुई तभी से प्रौढ़-शिक्षा आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण अंग अमेरिकीकरण कार्यक्रम रहा है। इसका उद्देश्य नये आप्रवासियों को अमेरिकन संस्कृति का ज्ञान प्रदान कर उन्हें अमेरिकन नागरिक बनने के लिए तैयार करना रहा है। ये लोग सार्वजनिक स्कूलों की सान्ध्य कक्षाओं में जाते हैं और वहाँ अंग्रेजी भाषा, अमेरिकन इतिहास भूगोल और प्रशासन की शिक्षा ग्रहण करते हैं। यद्यपि ये कक्षाएं स्वैच्छिक हैं, तो भी इनमें बहुत-से लोगों को स्कूली शिक्षा का पहली बार आस्वादन मिला है। इससे उन्होंने यह भी अनुभव किया है कि लोकतन्त्र का अर्थ सबके लिए ज्ञान और शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

संयुक्त राज्य शिक्षा के लोकतन्त्रीकरण में असफल दो बातों में रहा है। पहली यह कि हर राज्य में शिक्षा की व्यवस्था और सुविधाएं समान नहीं हैं; कुछ में स्कूल अधिक अच्छे हैं और कुछ में कम। दूसरी यह कि दक्षिण में नीग्रो लोगों को शिक्षा की पूर्ण सुविधा नहीं रही है। सन् १९५४ और १९५५ के उच्चतम न्यायालय के निर्णयों से पूर्व दक्षिणी राज्यों में नीग्रो और गोरे लोगों के लिए स्कूल अलग-अलग थे। आज यद्यपि इन निर्णयों के कारण यह पृथकता कानून के विरुद्ध घोषित कर दी गई है तो भी इस पृथकता के पूर्ण उन्मूलन और निवारण के लिए अभी बहुत अधिक परिश्रम करना होगा।

शिक्षा और स्वतन्त्र विश्व

हाल की एक सर्वाधिक उत्साहवर्धक घटना है द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों की संख्या में भारी वृद्धि। आज ३५ हजार विदेशी छात्र और १५ हजार विशेषज्ञ संयुक्त राज्य में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और करीब दस हजार अमेरिकन छात्र अन्य देशों में पढ़ रहे

हैं । फुलब्राइट अधिनियम, स्मिथ-मुण्ट अधिनियम, शिक्षा आदान-प्रदान अधिनियम और इसी तरह के अन्य अनेक कार्यक्रमों के फलस्वरूप अमेरिकन सरकार अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा का एक विशाल कार्यक्रम चला रही है । विश्व के इतिहास में इससे पहले इतना बड़ा कोई कार्यक्रम कभी नहीं चलाया गया । इन्स्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल एजूकेशन नामक एक गैर-सरकारी स्वैच्छिक संस्था अमेरिकन और विदेशी छात्रों को अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा की योजनाओं में सहायता देती है। कालेज या विश्वविद्यालय अवसर छात्रवृतियां दे देते हैं जिससे पढ़ाई का खर्च निकल आता है ।

कालेजों और विश्वविद्यालयों के छात्र और प्रोफेसर ही नहीं बल्कि हाई स्कूलों के लड़के, श्रमिक संगठनों, उद्योगों और कृषि-क्षेत्र के प्रतिनिधि और टैकनिकल विशेषज्ञ भी संस्कृतियों के इस आदान-प्रदान में हिस्सा लेते हैं । संघीय शिक्षा विभाग अध्यापकों, नेताओं और विशेषज्ञों के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करता है जिससे करीब आठ हजार व्यक्ति लाभान्वित होते हैं । अन्य देशों के साथ अध्यापकों के आदान-प्रदान के कार्यक्रम में प्रतिवर्ष तीन हजार के लगभग अध्यापकों का विनिमय होता है । शिक्षा विभाग अध्यापकों और छात्रों के आदान-प्रदान में सहायता देने के लिए उनकी योग्यता के मूल्यांकन आदि की सेवा भी प्रदान करता है । वह विदेशों की शिक्षा सम्बन्धी प्रवृत्तियों और रुझानों के बारे में महत्त्वपूर्ण सूचनाएं भी देता है ।

जहां कहीं किसी कालेज या विश्वविद्यालय में विदेशी छात्र होते हैं, वहां उनके इर्द-गिर्द और आस-पास रहने वाले नागरिक उनकी उपस्थिति का लाभ उठा कर उनके देशों के बारे में अधिक जानकारी पाने का प्रयत्न करते हैं। इससे देश के अनेक नगरों का, जो बहुत दूर अन्दरूनी भागों में स्थित हैं, अन्य राष्ट्रों के साथ अप्रत्यक्ष सम्पर्क हो गया है । इस तरह इन कालेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रों को विदेश में एक दूसरा आत्मीयतापूर्ण घर मिल गया है ।

विदेशी छात्रों के लिए विशेष ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किये जाते हैं ताकि उन्हें अपनी अंग्रेजी भाषा को अमेरिका में उपयोग के लायक परिष्कृत करने में सहायता मिले, अमेरिकन जीवन की झांकी मिले और वे अमेरिकन छात्रों के साथ विचारों का आदान-प्रदान कर सकें और अपने इर्द-गिर्द के नागरिक जीवन में भाग ले सकें।

आन्तरिक मामलों की भांति अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी संयुक्त राज्य शिक्षा पर बहुत भरोसा करता है। वह मनुष्य की भले-बुरे को जानने और उनके अनुसार आचरण करने की आकांक्षा को बहुत महत्त्व देता है। वह ज्ञान की शक्ति को बहुत मूल्यवान समझता है, जिससे वह समस्याओं को जान और हल कर सकता है और उन बाधाओं पर विजय पा सकता है, जो उसे एक अच्छा और सुखी नागरिक बनने से रोके हुए हैं। अमेरिकन स्कूल प्रणाली में निरन्तर प्रयोग चलते रहते हैं और साथ ही उन पर बाहर के नियन्त्रण के बजाय नगर का अपना ही नियन्त्रण होता है, इसलिए अमेरिका स्वभावतः यह मानता है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी हम बिना नियन्त्रण के सहयोग कर सकते हैं और अनेकता से एकता पैदा कर सकते हैं। किन्तु अनेकता और एकता दोनों को एक साथ रखने के लिए विचारों का निरन्तर आदान-प्रदान अत्यावश्यक है। यह आदान-प्रदान शिक्षा के क्षेत्र में नये अन्तर्राष्ट्रीयवाद से संभव है।

संयुक्त राज्य आज एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण के मध्य में है, भले ही बाहर से देखने पर इसके विपरीत बात प्रतीत होती हो। यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण युग होता है। लेकिन अमेरिका के इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण की यह विशेषता है कि इसमें अतीत की भांति संस्कृति केवल उच्च सम्भ्रान्त वर्गों तक ही सीमित नहीं है। आज संस्कृति सभी को समान रूप से प्रदान की जा रही है।

अमेरिकन लोग "बौद्धिक" (इंटलेक्चुअल) शब्द से हमेशा भड़कते रहे हैं। इस शब्द को मार्क्स ने समाज को वर्ग-संघर्ष की रणस्थली के

रूप में प्रस्तुत करने की अपनी विकृत और अधूरी विचारधारा में प्रयोग किया था। इस शब्द से यह भी प्रतीत होता है कि एक वर्ग अन्य वर्गों से श्रेष्ठ है। अमेरिकन लोग इस मान्यता को स्वीकार नहीं कर सकते। इसके बावजूद आज नये विचार और नई कल्पनाएँ देने वाले आदमी का पहले से बहुत अधिक सम्मान है। प्रशासन में भी नये-नये विचार और नई कल्पनाएँ देने वाले मनीषी लोग, अर्थशास्त्री, साँख्यिकी वेत्ता और समाजशास्त्री बाकायदा एक राजनीति-विज्ञान का निर्माण कर रहे हैं। इन लोगों की वजह से अब पहले की भांति सिर्फ अटकल से ही काम नहीं होता, बल्कि योजनाबद्ध रीति से काम होता है। इसके परिणामों से प्रभावित होकर अब अमेरिकन लोग, जिनमें बहुसंख्या मध्यवर्ग की है, अच्छे जीवन के लिए ज्ञान और वैज्ञानिक पद्धति का एक आवश्यक तत्व के रूप में सम्मान करने लगे हैं। ज्ञान ही शक्ति है, और आज, जबकि वह एक ऐसी शक्ति के उच्च-स्तर पर पहुँच गया है जो सारी मानव-जाति का विनाश कर सकती है, उसे और भी बढ़ाकर मानव समाज की रक्षक शक्ति में परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

अमेरिकन लोग संसार को जिस व्यापक और विशाल दृष्टि से देखते रहे हैं, उसमें क्षितिज का अन्त कहीं नहीं है। इस अन्तहीन संसार की ओर अब विज्ञान और टैक्नोलॉजी ने द्वार खोल दिया है। आज अमेरिकन इस बात से कुछ चकित और रोमांचित हैं कि अपरिसीम संसार में प्रवेश का स्वप्न उनकी अपनी पीढ़ी में ही पूरा होने जा रहा है, इसलिए वे इस द्वार की चौखट तक फूंक-फूंक कर कदम रखते हुए बढ़ रहे हैं। इसके लिए पथ-प्रदर्शन पाने को वे शिक्षक, वैज्ञानिक और कलाकार का सहारा ले रहे हैं। स्कूलों में छात्रों की बाढ़ चली आ रही है और भय है कि कहीं यह बाढ़ उनकी बुनियाद को न हिला दे। किन्तु इस प्रक्रिया में सारा समाज ही शिक्षा के एक ऐसे अनुभव में से गुजरेगा जहाँ से वापस लौटने की राह नहीं है।

राजनीति

अमेरिका की राजनीति और राजनीतिक दल विचारधाराओं पर नहीं, बल्कि हितों पर आधारित हैं। यहाँ के मुख्य राजनीतिक दलों को उदार या अनुदार कहना भ्रामक है। वे उदार भी हैं और अनुदार भी और साथ ही न उदार है और न अनुदार। राजनीति शास्त्र की प्रचलित परिभाषा के अनुसार वे दल नहीं हैं, बल्कि वे विभिन्न हितों का सम्मिश्रण और गठबन्धन हैं जो निरन्तर टूटते और फिर बनते रहते है। यह सोचना गलत है कि "उद्योग" और "श्रम" एक-दूसरे के विरुद्ध हैं, क्योंकि उद्योग संचालक और श्रमिक वर्ग, दोनों ही अनेक समूहों और वर्गों के सम्मिश्रण हैं। इसीलिए कभी-कभी किसी बड़े उद्योग का छोटे उद्योग के साथ संघर्ष हो जाता है। किसी उद्योग के लिए कम तटकर लाभकारी होता है और किसी के लिए अधिक तटकर। उद्योग और श्रमिक दोनों ही इस बात पर एकमत हैं कि रोजगार और उत्पादन का स्तर ऊँचा रहे, किन्तु श्रमिक कानूनों के बारे में दोनों में मतैक्य नहीं है।

इसका परिणाम यह है कि उद्योगपतियों और श्रमिकों को मिलाकर उद्योगों का जो संगठन बनता है, वह बहुत पेचीदा है और तरह-तरह के संघर्षों से भरा हुआ है। संघर्षों का निरन्तर जारी रहना हमें बहुत कठोर और उद्दण्ड बना देता है—हम शक्ति और गति का प्रदर्शन करने और दूसरे पक्ष को ठगने में कुशल हो जाते हैं, हममें दूसरे पक्ष के साथ झुककर समझौता करने, काम में विलम्ब करने, हल्ला-गुल्ला मचाने की योग्यता आ जाती है और जब हमारी बेहूदा मांगों में जरा भी कमी कर दी जाती है तो हम यह दिखावा करते हैं कि हमने बहुत बड़ी

कुर्बानी की है, हालांकि इस कटौती के बावजूद हम घाटे में नहीं होते। जैसा कि सेम्युअल ल्युवेल ने कहा है, लोकतन्त्र की शक्ति इस बात में निहित है कि हम संघर्ष करके परस्पर एकता के सूत्र में बंधते हैं। अनुभव यह बताता है कि अमेरिकन प्रणाली से अधिकाधिक लोगों के लाभों में अधिकाधिक वृद्धि हो रही है।

राजनीतिक नेता का काम यह है कि वह इन सब परस्पर-विरोधी दावों को जांचे और परखे और सब हितों को मिलाकर एक ऐसा सम्मिश्रण और गठबन्धन तैयार करे जिसमें किसी को किसी दूसरे के सम्मुख अनुचित बलिदान न करना पड़े और सभी सन्तुष्ट रहें। विदेशी लोग यह महसूस करते हैं कि हमारी राजनीति में आदर्शवाद या विचारधारा का अभाव है। इसका कारण यह है कि वे राजनीति में निश्चित विचारधाराओं को अपनाने के अभ्यस्त हैं—वे यह मानते हैं कि राजनीति की समस्याएँ कुछ पूर्व-निर्धारित और पूर्व-स्वीकृत सिद्धान्तों और मान्यताओं के आधार पर ही हल की जा सकती हैं। इसके विपरीत अमेरिकनों का यह विश्वास है कि हर समस्या अपने आप में अलग है और उसे पृथक् रूप में हल किया जा सकता है। वे यह मानते हैं कि हर समस्या के भीतर ही उसके हल का बीज निहित है और यदि उसे कौशल और सावधानी से हल करने का प्रयत्न किया जाए तो उसके परिणाम सन्तोषजनक हो सकते हैं।

अमेरिका की राजनीतिक प्रणाली में ऊपर से अवश्य विचारधारा का अभाव नजर आता है, किन्तु उसकी पृष्ठ भूमि में कुछ बुनियादी सिद्धान्त हैं जिन्हें हर व्यक्ति मानकर चलता है। ये सिद्धान्त हैं :

१. संयुक्त राज्य में जनता के लिए जनता द्वारा जनता का शासन है। शासन को अपने अधिकार और सत्ता की प्राप्ति जनता से होती है और यह सत्ता अन्ततः जनता के हाथ में ही रहती है, जिससे वह समय-समय पर चुनावों के द्वारा उसे विभिन्न नेताओं के हाथों में

सौंपती रहती है और उनके कानूनों और नियमों को अपने संशोधन के अधिकार से संशोधित भी करती रहती है।

२. यह सत्ता और अधिकार किसी पुरानी अपरिवर्तनीय परम्परा या प्रथा का परिणाम नहीं है, वह मानवीय तर्कबुद्धि पर आधृत है, जो किसी खास विचारधारा या वाद के साथ बंधने के बजाय नई परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को बदलती रहती है। अमेरिकन लोग यह शिकायत करते हैं कि हमारे यहां "समाजवाद चुपके-चुपके घुसा चला आ रहा है", किन्तु वास्तविकता यह है कि वे हर समस्या को अलग-अलग ढंग से निबटाते हैं, किसी समस्या के बारे में वे 'समाजवादी' दृष्टिकोण अपनाते हैं, किसी के बारे में 'पूंजीवादी', किसी के बारे में 'सहकारितावादी, और किसी के बारे में 'तानाशाही'।

३. सार्वजनिक मामलों में सब से अधिक विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक जनता का नैतिक विवेक है। यद्यपि यह मान्यता आदर्शवादी विचारधारा की मान्यता है; किन्तु हाल में किये गये जनमत-संग्रहों ने अक्सर यह सिद्ध किया है कि जनता कांग्रेस में अपने प्रतिनिधियों से भी काफी आगे रहती है।

४. शासन एक आवश्यक और अनिवार्य बुराई है। वह हमेशा अपने अधिकार को फैलाने का प्रयत्न करता रहता है और यह जरूरी होता है कि उसका निरन्तर मुकाबला किया जाता रहे और उसे अनियन्त्रित न होने दिया जाए। हम जितना अधिक काम अपने स्वैच्छिक प्रयत्न से या स्थानीय स्तर पर करेंगे सरकार उतनी ही कम शक्तिशाली और खतरनाक होगी। टॉम पेन का यह कहना सही था कि समाज इन्सानों की अच्छाइयों से पैदा होता है और सरकार उनकी बुराइयों से। इसलिए जिस वस्तु के राजनीति के भंवर में पड़ जाने की आशंका है, उसे समाज के ही हाथों में बनाये रखने के लिए यह जरूरी है कि उसे स्वैच्छिक और स्थानीय आधार पर सम्पन्न किया जाए।

५. परम्पराओं का पालन हमें बहुत सन्तोष और आनन्द प्रदान करता है, किन्तु हम विद्रोह करके हमेशा नई परम्पराओं को जन्म देते रहते हैं। सरकार की प्रायः हरेक प्रवृत्ति, जिसे अब हम अपरिहार्य समझते हैं, किसी न किसी समय बहुत उग्र समझी जाती थी। बाल श्रम निवारक कानून, क्रमिक आयकर, कम्पनी-गुट विरोधी कानून और बेरोजगारी बीमा आदि इसके उदाहरण हैं। राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट स्ट्रीटकार (ट्राम-बस आदि) चालक के लिए प्रतिदिन अधिक-से-अधिक बारह घंटे के काम का कानून बनाने के प्रस्ताव को भी उग्र समाजवादी प्रस्ताव समझते थे। किसी विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा या वाद के साथ बंधे न होने के कारण हम ऐसे हर कार्य-क्रम को अपना लेते हैं जो हमें अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल प्रतीत होता है फिर चाहे वह उद्योग, श्रमिक, कृषि-आय, काम के घंटे और मजदूरी, मुद्रा-स्फीति या अन्तर्राष्ट्रीय गठबन्धन आदि किसी भी वस्तु के नियमन के लिए हो।

६. स्वतन्त्रता की घोषणा में सभी नागरिकों को जन्म से बराबर माना गया है और हमारे संविधान में भी इस समानता को मान्यता दी गई है, इसलिए अमेरिकनों को कभी भी वर्ग-संघर्ष नहीं करना पड़ा। उनकी दार्शनिक विचारधारा में वर्गभेद जैसी किसी चीज़ का अस्तित्व नहीं है। यदि वे किसी वर्ग को कुछ विशेष अधिकारों का उपभोग करते देखते हैं तो उसे वे अपने लिए खतरा नहीं समझते, बल्कि चुनौती मानते हैं। किसी धनी को विशाल ऐश्वर्यपूर्ण महल में रहते देखते हैं तो वे सोचते हैं कि उसे ध्वस्त क्यों किया जाये, हो सकता है कि किसी दिन वे स्वयं उस पर दखल कर सकें। इसलिए अमेरिकन सुधार आन्दोलन में शक्तिशालियों को विशेष अधिकारों और लाभों से वंचित करने के बजाय वे विशेष अधिकार और लाभ सभी लोगों को दिलाने का प्रयत्न किया जाता है। हमने सामाजिक क्रान्ति के बजाय सामा-जिक उत्थान और अभ्युदय को अपनाया है और यह हमारे लिए कुछ

तो हमारी विशाल मानवीय और प्राकृतिक साधन-सम्पदा के कारण सम्भव हुआ है और कुछ इस कारण कि हमारी मनोवृत्ति सौभाग्य से उसके अनुकूल है। हममें स्वैच्छिक संगठन बनाने की प्रवृत्ति है और इतनी ऊर्जा और शक्ति है कि उसके बल पर हम वर्त्तमान को छार-क्षार करके उसके अवशेषों पर नव-निर्माण करने के बजाय, वर्त्तमान को कायम रखते हुए उसके शिखर पर सामाजिक उन्नति की नई मंजिल खड़ी करते हैं।

इसलिए विग्रहों और तनाव-खिचाव के बावजूद मैत्री की एक भावना हमारे राजनीतिक जीवन के मूल में रहती है। राज्य का गवर्नर हमारे कस्बे में आकर जब भाषण देता है और कहता है कि "हम आपके और मेरे जैसे साधारण लोगों के लिए सुख-सुविधा की व्यवस्था करना चाहते हैं", तब उसका अभिप्राय सचमुच वही होता है। और ऐसा हो भी क्यों न, जबकि यह गवर्नर किसी अन्य देश मे उत्पन्न होकर आप्रवासी के रूप में यहाँ आया और अपने अध्यवसाय से आर्थिक सोपान की ऊँची सीढ़ी पर और उसके बाद राजनीति की सीढ़ी पर चढ़ सका ?

हमारे संघर्षों और मतभेदों में भी परस्पर-विरोधी पक्षों मे कुछ बातों पर मतैक्य है। दोनों ही पक्ष यह स्वीकार करते है कि हम समान हैं, सवाल सिर्फ यह रह जाता है कि यह समानता कितनी है ? यह बात हम पर पूर्णतः स्पष्ट हो गई है कि मार्क्स जिस वर्ग-संघर्ष की बात करता है, वह निरा मानसिक विभ्रम है। हमारी समझ मे ही यह बात नही आती कि कोई भी विवेकशील व्यक्ति वर्ग-संघर्ष की मिथ्या कल्पना को ही समाज-व्यवस्था का सच्चा विवरण कैसे मान लेता है। यह समझना भी हमारे लिए उतना ही कठिन है कि दूसरे लोग हमारी प्रणाली को, जिसमें सब व्यक्तियों को समान माना जाता है और निरन्तर संघर्ष और अध्यवसाय करके विद्यमान असमानता को दूर

करने का प्रयत्न किया जाता है, क्यों स्वीकार नहीं करते, जबकि यह प्रणाली बिल्कुल सही और तर्कयुक्त प्रतीत होती है।

७. अधिकार और सत्ता खतरनाक चीज है इसलिए वह स्थानीय शासन, जिला प्रशासन, राज्य, संघीय सरकार, स्वैच्छिक संगठन और राजनीतिक दल आदि अनेक भागों में बांट दी जाती है। जहाँ सम्भव और व्यवहार्य होता है, यह प्रयत्न किया जाता है कि अधिकारी व्यक्ति स्वेच्छया काम करने वाला हो और उसे उसके लिए कोई वेतन न दिया जाए। सरकारी प्रशासन के भीतर भी सत्ता और अधिक विभाजित कर दी जाती है और उसे नियन्त्रित और सन्तुलित रखा जाता है।

शासन के सम्बन्ध में लिंकन के ये शब्द सम्भवतः अमेरिकन जनता के रुख को सबसे अच्छे ढंग से अभिव्यक्त करते हैं: "शासन का युक्तियुक्त उद्देश्य किसी स्थान की जनता के लिए वह कार्य करना है, जिसे करना वह जरूरी तो समझती है, किन्तु अपनी पृथक् या वैयक्तिक क्षमता से कर नहीं सकती अथवा अच्छी तरह नहीं कर सकती।"

राजनीतिक दल

संविधान में राजनीतिक दलों की कोई व्यवस्था नहीं है, इसलिए उन्हें राज्यों द्वारा बनाये गये कानूनों को दृष्टि में रख कर अपने लिए स्वयं नियम बनाने पड़ते हैं (संघीय कानूनों का भी, जो राष्ट्रीय चुनावों के विनियमन के लिए बनाये गये हैं, राजनीतिक दलों पर असर पड़ता है, हालांकि उतना नहीं)। किन्तु दलीय प्रणाली बहुत शिथिल बन्धन में बंधी होती है। उदाहरण के लिए दलों के सदस्यों को लीजिए यद्यपि। सत्तर प्रतिशत मतदाता दलों के सदस्यों के रूप में दर्ज होते हैं, परन्तु इनमें से अधिकतर सदस्य प्रारम्भिक चुनावों या असली आम चुनावों में मतदान करने के सिवाय दल के किसी भी काम में कोई हिस्सा नहीं लेते या अधिक-से-अधिक स्थानीय पदों के उम्मीदवारों के चुनाव की बैठक में या राष्ट्रपति पद के चुनाव-आन्दोलन के समय राजनीतिक सभाओं और प्रदर्शनों में शक्ल दिखा जाते हैं।

सरकारी तन्त्र की भांति राजनीतिक दलों का संगठन भी ऊपर से नीचे की ओर होने के बजाय नीचे से ऊपर की ओर होता है। दल की हर स्थानीय इकाई स्वयं अपना संगठन करती है, और वही यह निश्चय करती है कि उसकी समिति की सदस्य संख्या कितनी हो। वह स्थानीय पदों के लिए अपने उम्मीदवारों का चयन स्वयं करती है और उन्हें चुनाव में सफल बनाने का प्रयत्न भी खुद ही करती है।

हर स्तर पर दल ऊपर से किसी भी तरह के आदेश या निर्देश पाये बिना अपना काम और प्रबन्ध स्वयं चलाता है। हर राज्य की दलीय शाखा अपने राज्य के गवर्नर पद के लिए स्वयं उम्मीदवार छाँटती और कांग्रेस के लिए या अन्य पदों के लिए भी अपने उम्मीदवारों का चयन खुद ही करती है। उसके नियम भी अपने लिए स्वयं बनाये हुए होते हैं। राजनीतिक दल की राष्ट्रीय समिति को राज्यों की दलीय शाखाओं पर अनुशासन करने का कोई अधिकार नहीं होता। राष्ट्रपति को भी यह अधिकार नहीं होता कि वह कांग्रेस (संसद्) में अपने मन के अनुकूल उम्मीदवार चुनवा सके। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने १९३८ से दल के शुद्धीकरण का जो प्रयत्न किया था, वह इसीलिए असफल हो गया था। राष्ट्रपति की नीतियों से मतभेद और विरोध रखने वाले व्यक्ति भी, स्वयं राष्ट्रपति के दल से चुनाव में खड़े हो सकते हैं और जीत भी सकते हैं।

अमेरिका में कोई व्यक्ति दल से निकाला नहीं जाता। अमेरिकन राजनीतिक दलों की विशेषता यह है कि किसी भी व्यक्ति को दल से निकाला न जाए और सब के साथ निभाव किया जाए। हर राजनीतिक दल विभिन्न और परस्पर-विरोधी हितों का मिश्रण और गठबन्धन होता है। ये हित चुनाव जीतने के लिए आपस में मिल जाते हैं और इन चुनाव प्रतिस्पर्धा का सबसे बड़ा पुरस्कार राष्ट्रपति पद होता है। हर बड़ा राजनीतिक दल हर तरह के मतदाताओं में से कुछ को अवश्य अपनी तरफ आकृष्ट करता है—चाहे वह श्रमिक हो या किसान,

कैथलिक हो या प्रोटेस्टैंट, नीग्रो हो या किसी अन्य अल्पसंख्यक जाति का सदस्य, उत्तर का हो या दक्षिण का, मध्यपश्चिम का हो या सुदूर पश्चिम का, व्यापारी हो या किसी खास पेशे का, धनी हो या गरीब, उदार हो या अनुदार, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी हो या राष्ट्रीयतावादी।

हर दल यह वचन देता है कि वह देश को युद्ध से बचाए रखेगा, परन्तु लड़ाई जीतने के लिए तैयारी करता रहेगा, मतदाताओं को अधिकाधिक लाभ पहुँचाएगा, कर घटाएगा, अर्थ-व्यवस्था को ऊँचा उठाए रखेगा, किन्तु मुद्रास्फीति और मंहगाई नहीं बढ़ने देगा, खाद्य-पदार्थ के मूल्यों को काबू में रखते हुए भी कृपकों की आमदनी कम नहीं होने देगा, कम्युनिज्म और आन्तरिक षड्यन्त्रों को रोकेगा, किन्तु नागरिक अधिकार और आजादी पर हाथ नहीं डालेगा और दूसरे दल से हर काम अधिक अच्छा करेगा।

किसी भी दल के बारे में यह कहना, कि वह श्रमिकों के हितों का समर्थक है, गलत होगा, हालाँकि अल्प आय वाले मतदाता डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर अधिक झुकते हैं। किन्तु यह भी देखा गया है कि जब श्रमिक संगठन अपने सदस्यों से किसी एक पार्टी का समर्थन करने के लिए कहते हैं, तब परिणाम इससे भिन्न स्थिति को सूचित करते हैं, क्योंकि श्रमिकों में अपने संगठनों के आदेश के बावजूद, सामूहिक रूप से मत देने की प्रवृत्ति अन्य आर्थिक वर्गों से अधिक नहीं होती। इसलिए श्रमिकों ने यह महसूस कर लिया है कि अधिक अच्छी नीति यही है कि दोनों ही दलों को उनके मत जीतने के लिए हाथ-पाँव मारने दिया जाए।

मतदाता आम तौर पर यह अनुभव करते हैं कि डेमोक्रेटिक पार्टी अधिक सरकारी नियन्त्रण और खर्च के पक्ष में है, जबकि रिपब्लिकन पार्टी कम नियन्त्रण और अधिक मितव्ययिता की समर्थक है। लेकिन हाल के बजटों ने यह सिद्ध कर दिया है कि दोनों दलों में किया जाने वाला यह भेद भी सही नहीं है। लेकिन इस धारणा का परिणाम यह

होता है कि जब मन्दी का भय होता है तो मतदाता डेमोक्रेटिक पार्टी के अधिक पक्ष में हो जाते हैं और अच्छा जमाना रिपब्लिकन पार्टी के लिए अधिक अनुकूल रहता है। यह बात हर तरह के मतदाता के बारे में सही है, चाहे वह श्रमिक हो या व्यवसायी, किसान हो या किसी पेशे में काम करता हो। रिपब्लिकन लोग आम तौर पर दौलत के उत्पादन पर बल देते हैं, जबकि डेमोक्रेट उसके वितरण पर। फिर भी दोनों दलों को राष्ट्रीय चुनाव जीतने के लिए मध्यवर्ग और अल्प आय वर्ग दोनों की बहुसंख्या के मत पाने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दोनों दलों में सिद्धान्त का भेद नहीं है, भेद बारीकियों का है। दोनों दलों में उदार वर्ग का आज प्राधान्य है, इसलिए दोनों ही 'नई नीति' (न्यू डील) के ढंग के कानूनों के समर्थक हैं।

अमेरिकन राजनीतिक दलों की स्थिरता का कारण यह है कि वहाँ राजनीतिक आदर्शवाद या विचारधारा जैसी कोई स्थायी चीज नहीं है। और इसी कारण से दक्षिण के अनुदार लोग और उत्तर के उदार लोग, दोनों एक ही डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य रहते हैं और फिर भी कांग्रेस में कुछ मामलों पर मत देते समय दक्षिण के अनुदार लोग अपनी पार्टी के उत्तरी उदारपंथियों के बजाय रिपब्लिकन पार्टी के अनुदार लोगों के साथ मिल जाते हैं। इसके अलावा अमेरिकन पद्धति यह है कि अपनी विभिन्नताओं में भी ऐक्य और समन्वय स्थापित किया जाए। आदर्शवादी विचारधाराएं मध्ययुग के किलों या आधुनिक युग की मैजिनो लाइन की भांति हैं। इनके द्वारा रणस्थल में अच्छे ठिकानों को जीतने और उन पर जमे रहने की कोशिश की जाती है। लेकिन इसके विपरीत अमेरिकन दलीय प्रणाली में नचलता है, वह हमेशा बदलती रहती है और अपने इर्द-गिर्द के समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप अपने में परिवर्तन करती रहती है। वह एक आदर्श संसार के सम्बन्ध में किसी दार्शनिक का स्वप्न नहीं है, बल्कि जनता की आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करने वाला एक दर्पण है।

अमेरिकन राजनीति में उग्र वामपक्ष या दक्षिण पक्ष क्यों नहीं हैं ? इसका सीधा-सादा उत्तर यह है कि यहाँ मतदाता भी उग्र वामपक्षी या उग्र दक्षिण पक्षी विचारों के नहीं हैं और यदि हैं भी तो उन की संख्या नगण्य है । दूसरी बात यह है कि सामाजिक क्षेत्र में अमेरिका ने वर्ग-भेद को खत्म या उपेक्षित करने का प्रयत्न किया है और तीसरी यह कि यहाँ की अर्थ-व्यवस्था अपने लाभ अधिकाधिक लोगों में बाँटने और फैलाने का प्रयत्न करती है ।

राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का चयन

राष्ट्रपति पद के लिए दलीय उम्मीदवारों का चयन करने के लिए जो राष्ट्रीय महासम्मेलन आयोजित किये जाते हैं, पहले वे रहस्य के आवरण में छिपे रहते थे और आम जनता से दूर होते थे, परन्तु आज टेलीविजन के द्वारा उनका सम्बन्ध हर घर से हो गया है । इसका असर जनता और महासम्मेलन, दोनों पर पड़ता है । जब राजनीति लोगों के घरों की बैठकों में घुस जाती है और जब हर मतदाता प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उम्मीदवार के चयन में भाग लेता है तब राजनीतिक दृष्टि से क्या उचित और आवश्यक है, इस पर जनता की पसन्द या नापसन्द का असर पड़ना स्वाभाविक है । यदि जनता को राजनीतिक प्रक्रिया का अच्छा ज्ञान हो तो मतदान भी वह अधिक उद्बुद्ध होकर करेगी ।

जिस सर्कस को हम महासम्मेलन कहते हैं वह एक अजीब चीज है । उसमें आधुनिक मशीनरी और आदिमयुगीन सामरिक नृत्य का, आमोद-प्रमोदमय मैत्री और कटु विवादों का, भारी भरकम लैक्चरबाजी और कूटनीतिक चालों का और ऊबा देने वाली नीरसता और भारी उत्तेजना का सम्मिश्रण होता है । क्या महासम्मेलन में होने वाले इस शोर-गुल और हलचल का वास्तव में कुछ औचित्य है ?

पिछले रिपब्लिकन महासम्मेलन में १३२३ प्रतिनिधियों ने और डेमोक्रेटिक महासम्मेलन में २७४४ प्रतिनिधियों ने (इनमें से हरेक का

वोट आधा था) भाग लिया था। इसके अलावा इन सम्मेलनों में वैकल्पिक प्रतिनिधि भी काफी बड़ी संख्या में होते हैं। ये लोग एक-दूसरे से अपरिचित होते हैं और यह अनुभव करते हैं कि उन्हें परस्पर परिचित होना है। इसलिए परिचय-प्राप्ति की खातिर वे अजीब-अजीब बातें करते हैं और परस्पर अपरिचित बच्चों की तरह एक-दूसरे के सामने खूब दिखावा करते और दूसरों का ध्यान आकृष्ट करते हैं। वे बेढंगे हैट पहनते हैं और बड़े-बड़े बिल्ले लगाते हैं; अजीब-अजीब बाजों से तरह-तरह की आवाजें निकालते हैं; बड़े-बड़े प्रदर्शन-पट उठाकर चलते हैं जिन पर उनके उम्मीदवारों के चित्र लगे होते हैं। वे जुलूस निकालते और नारे लगाते हैं ताकि अपने जैसे अन्य अपरिचित प्रतिनिधियों में से कुछ का ध्यान आकृष्ट कर सकें और उनसे एकता स्थापित कर सकें। इस एकता के अभाव और उसकी आवश्यकता के कारण ही ये लोग दूसरों की भावनाओं को उभाड़ने की चेष्टा करते हैं ताकि उन्हें अपनी ओर खींच सकें।

यह उपाय काम कर जाता है और उससे एक ऐसे उम्मीदवार के पक्ष में जिससे दल को एकता में बांधने और चुनाव जीतने की आशा की जाती है, जनता का समर्थन पाने के लिए एक अच्छा नाटक हो जाता है। गुप्त राजनीतिक सौदेबाजी के बावजूद, यह महासम्मेलन जनता की इच्छा को व्यर्थ नहीं कर सकता। उसे ऐसा ही उम्मीदवार छांटना पड़ता है जिसे जनता पसन्द करती है अन्यथा उसके हार जाने का भय रहता है। आम तौर पर यह उम्मीदवार किसी ऐसे राज्य का होता है जिसकी आबादी काफी बड़ी हो क्योंकि इससे अपने प्रतिद्वन्द्वी से आगे रहने में उसे मदद मिलती है। प्रायः राष्ट्रपति पद के लिए ऐसे उम्मीदवार का चयन किया जाता है, जो किसी राज्य का गवर्नर रह चुका हो, क्योंकि वह गवर्नर के रूप में उन समस्याओं का कुछ हद तक सामना करने का अनुभव पा चुका होता है, जो राष्ट्रपति के रूप में उसे सुलझानी होती हैं। अब तक राष्ट्रपति

पद के चुनाव में जितने भी उम्मीदवार सफल हुए हैं, वे सभी उत्तरी यूरोपीय मूल के प्रोटेस्टेंट पुरुष ही रहे हैं। लेकिन अब पूर्वी और दक्षिणी यूरोपीय मूल के कैथलिक धर्मावलम्वी पुरुष भी गवर्नर पदों पर पहुंचने लगे हैं और यह सम्भव है कि इन पदों से वे अन्ततः ह्वाइट हाउस में भी प्रवेश कर सकें।

अमेरिका में राष्ट्रपति पद पाना ही सबसे बड़ा पुरस्कार है, इस लिए महासम्मेलन की सारी शान, भव्यता और व्याख्यानवाजी का उद्देश्य राष्ट्रपति पद के लिए दल के उम्मीदवार का चयन करना होता है। उसके साथी उप-राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का चयन सम्मेलन के अन्त में किया जाता है, जबकि सब लोग थक चुके होते हैं और घर लौटने की तैयारी करने लगते हैं। इसलिए उसका चयन जल्दबाजी में किया जाता है, लेकिन उसमें भी यह ध्यान रखा जाता है कि दल की एकता को आँच न आए। यदि राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार उदार हो तो उप-राष्ट्रपति पद के लिए अनुदार अथवा अनुदारपंथियों द्वारा समर्थित उम्मीदवार छाँटा जा सकता है। यह इसलिए किया जाता है कि दल के दोनों वर्ग सन्तुष्ट रहें और जिस वर्ग का उम्मीदवार उप-राष्ट्रपति पद के लिए छाँटा जाता है उसे यह भी भरोसा रहता है कि यदि राष्ट्रपति की अचानक मृत्यु हो जाए तो उसका उम्मीदवार शेष अवधि तक राष्ट्रपति पद का वहन करने का अवसर पा जाएगा।

महासम्मेलन चुनाव प्रचार के लिए घोषणापत्र भी स्वीकार करता है। यह घोषणा-पत्र सम्मेलन की प्रस्ताव समिति तैयार करती है। इस घोषणा-पत्र पर भी दल के विभिन्न वर्गों में अच्छी टक्कर होती है और परिणाम यह होता कि यह घोषणापत्र सबको सन्तुष्ट करने की दृष्टि से बिल्कुल निर्दोष बनाया जाता है।

आज के जमाने में राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो अच्छा परखा हुआ राजनीतिज्ञ हो, राजनीतिक मामलों का कुशल खिलाड़ी हो और अपने दल को एकता के बन्धन में बाँधने में

निपुण हो। वह आत्म-विश्वासी भी हो और नम्र भी, मधुर स्वभाव का हो और शानदार व्यक्तित्व वाला भी, गम्भीर हो और नीतिकुशल भी। लेकिन सुविज्ञ होने पर भी वह बहुत बुद्धिजीवी नहीं होना चाहिए, सहानुभूतिपूर्ण होने पर भी बहुत नर्म नहीं होना चाहिए। उसमें संसार के उच्चतम पद के लिए गर्व नहीं होना चाहिए और देश के सामान्य नागरिकों के बीच रहते हुए उसे हीनता भी अनुभव नहीं करनी चाहिए।

आन्दोलन और चुनाव

राष्ट्रपति पद का चुनाव ही एकमात्र ऐसा राजनीतिक चयन है जिसमें सभी अमेरिकन हिस्सा लेते हैं। यह चुनाव राष्ट्रीय प्रश्नों को सामने लाता है और एक नया गठबन्धन तैयार करता है, एक नया सर्व-सामान्य जनमत बनाता है जिससे निरन्तर संघर्ष और उसके बाद आपसी निभाव से अगले चार वर्ष तक देश को एकता में बाँधे रखा जा सके। अमेरिका की चुनाव प्रणाली में यह व्यवस्था है कि जो उम्मीदवार किसी राज्य के अधिक लोक-मत (पॉपुलर वोट) जीत लेता है उसी को उस राज्य के सब निर्वाचक मत (इलेक्टोरल वोट) मिल जाते हैं। इसका परिणाम यह है कि बड़े राज्य ही इस चुनाव दंगल का मुख्य अखाड़ा होते हैं। इसलिए हर उम्मीदवार को कम-से-कम बड़े शहरों में अवश्य ही मतदाताओं से अपील करनी पड़ती है ताकि वह ५३१ निर्वाचक मतों में से बहुसंख्यक मत प्राप्त कर सके। (सीनेट और प्रतिनिधि सभा के हर सदस्य पर एक निर्वाचक मत होता है। इसी से न्यूयार्क के निर्वाचक मत ४५ हैं और नेवाड़ जैसे छोटे राज्य के कुल तीन)।

राष्ट्रपति पद के चुनाव में एक से अधिक उम्मीदवार हो सकते हैं, इसलिए राजनीतिक दलों को सभी स्तरों पर चुनाव अभियान में सक्रिय रहना पड़ता है और स्वयं उम्मीदवारों को भी देश का दौरा कर वोट के लिए अपील करनी पड़ती है। ये उम्मीदवार घर-घर जाकर वोट माँगते हैं, नन्हें बच्चों को गोद में उठाकर चूमते और आत्मीयता दिखाते

हैं, स्कूलों के दीक्षान्त समारोहों, क्लबों, सभाओं और रैलियों में भाषण देते हैं।

लोग उस उम्मीदवार को देखना और उससे मिलना चाहते हैं जिसे वोट देने की उनसे आशा की जाती है। अगर वे मतदान के बारे में अभी तक अनिश्चय की स्थिति में होते हैं तो जो उम्मीदवार उनके पास पहुँच कर उनसे हाथ मिलाता है, उसी को वे वोट दे डालते हैं। लोग आपस में जो बातें करते हैं, उसका भी गहरा असर पड़ता है। किन्तु इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण चीज़ है मतदाता की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि।

उत्तरी राज्यों में पुराने यूरोपीय मूल के प्रोटेस्टैंट लोग अधिकतर रिपब्लिकन उम्मीदवार के पक्ष में और कैथलिक एवं हाल के आप्रवासी या उनकी सन्तानें डेमोक्रेटिक उम्मीदवार के पक्ष में मत देते हैं (दक्षिणी राज्यों में स्थिति इससे उल्टी ही है)। नीग्रो मतदाता परम्परा से रिपब्लिकन रहे हैं, किन्तु रूज़वेल्ट प्रोग्राम के फलस्वरूप वे डेमोक्रेटिक पार्टी के समर्थक हो गये थे। बाद में आइज़नहोवर प्रशासन में नागरिक अधिकार पाने के कारण कुछ हद तक वे फिर रिपब्लिकन समर्थक हो गये हैं। आज दोनों बड़ी पार्टियाँ लगभग बराबरी की स्थिति में हैं और स्वतन्त्र या ढुलमुल मतदाताओं की संख्या भी बहुत बड़ी है, इसलिए नीग्रो लोगों के वोट चुनाव में काफी निर्णायक सिद्ध हो सकते हैं।

आप्रवासियों की सन्तानें जैसे-जैसे सामाजिक सीढ़ी पर ऊपर चढ़ती हैं, वैसे-वैसे वे गन्दी बस्तियों को छोड़कर साफ-सुथरे उपनगरों में रहने लगती हैं, व्यापार या विशिष्ट पेशों में जाने लगती हैं और अल्प आय वर्ग से मध्य वर्ग में आ जाती हैं। ये लोक मार्क्स के इस सिद्धान्त को झुठला देते हैं, कि पूँजीवादी समाज में गरीब और भी गरीब हो जाएगा। वे अच्छे घरों में रहने लगते हैं, अधिक आय का उपभोग करते हैं, और अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दिला सकते हैं। पूर्वी नगरों की राजनीति पर वे अधिकाधिक हावी होने लगे हैं और बाद

में राज्य की राजनीति में भी हिस्सा ले रहे हैं। रूजवेल्ट के शासन में वे महत्त्वपूर्ण संघीय पदों पर भी पहुँचने लग गये थे।

दक्षिणी राज्य परम्परा से डेमोक्रेटिक पार्टी के समर्थक रहे हैं, परन्तु अब वहाँ रिपब्लिकन पार्टी के समर्थक भी बढ़ रहे हैं और यह सम्भव है कि कुछ समय बाद राजनीतिक दृष्टि से दक्षिणी राज्यों की स्थिति भी वही हो जाए, जो बाकी सारे देश की है। पश्चिम और उत्तर के कृषकों के वोट परम्परा से रिपब्लिकन पार्टी की ओर रहे हैं, परन्तु नई नीति (न्यू डील) के जमाने में वे डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर झुक गये थे। अब ये वोट दोनों में बँट गये हैं और बहुत कुछ अनिश्चित स्थिति में है, हालांकि वे दोनों पार्टियों में सन्तुलन स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं।

मजदूरों को डेमोक्रेटिक पार्टी के शासन में बहुत लाभ पहुँचा है, इसलिए वे उसके प्रति कृतज्ञ हैं, किन्तु इन लाभों से आज उनकी स्थिति इतनी अच्छी हो गई है कि वे भी मध्य वर्ग के लोगों की भांति मध्य-मार्ग अपनाने लगे है। बहुत से श्रमिक अपने नेताओं के निर्देशों की अवहेलना करके भी रिपब्लिकन पार्टी के पक्ष में मत देते हैं। उनकी समृद्धि ने राजनीतिक दृष्टि से उन्हें जागरूक बना दिया है और बहुत-से श्रमिकों को यह डर भी अब लगने लगा है कि कहीं उनकी यूनियनें राजनीति में बहुत शक्तिशाली न हो जाएं।

इस बात के प्रमाण हर जगह मौजूद हैं कि वेतन और मजदूरी में वृद्धि से श्रमिकों और उनके मालिकों के बीच का अन्तर कम होता जा रहा है। आज अधिकाधिक संख्या में लोग समृद्ध होकर मध्य वर्ग में शामिल हो रहे हैं। आधुनिक राजमार्गों की भांति आज सारा मार्ग ही उनके मध्यमार्ग के समान अच्छा और सुन्दर हो गया है। अब इन सामाजिक मार्ग में गन्दे नाले प्रायः कहीं नहीं रहे, आवश्यकता सिर्फ इस बात की रह गई है कि किनारे की नर्म मिट्टी से जरा बच कर चला जाए।

अब मतदाता अपने मत के बारे में निर्णय कैसे करता है ?

कुछ हद तक वह परम्परा के अनुसार निर्णय करता है, उसका पिता जिस पक्ष में वोट देता रहा है, उसे वह ध्यान में रखता है। वह जिस सामाजिक या जातीय वर्ग का सदस्य होता है, वह भी उसके निर्णय पर प्रभाव डालता है। उसके मित्रों और पड़ोसियों की बातें और चर्चाएं और कभी-कभी स्वयं उम्मीदवारों के कथन और काम भी उसे निर्णय में सहायता देते हैं। वह अपनी आमदनी को देखता है और यह विचार करता है कि उम्मीदवार की नीतियों से उसकी आय बढ़ेगी या घटेगी। जहाँ वह रहता है, वह जगह गन्दी बस्ती है या साफ उपनगर, गांव है या शहर, यह बात भी उसके निश्चय को प्रभावित करती है। वह यह देखता है कि उसके मन में नेता की जो कल्पना है, उम्मीदवार उससे मेल खाता है या नहीं—वह उच्च वर्गों के विशेषाधिकारी और भेद-भाव का विरोधी है या यथास्थिति कायम रखने का समर्थक, आदर्श पिता की भाँति वत्सल हैं या मालिक और अफसर की तरह रोब गालिब करने वाला। मतदाता के मन में उम्मीदवार के किसी कार्यक्रम जैसे वन-सम्पदा की रक्षा, नागरिक अधिकार और कम्युनिज्म का विरोध आदि, के प्रति उत्साह या विरोध का भाव हो तो वह भी उसके निर्णय पर असर डालता है। यदि वह बड़े व्यापारियों का, बड़े श्रमिक संगठनों का और ऊंचे टैक्सों का विरोधी है या सरकारी कुप्रशासन और कौशलहीनता के प्रति अपना विरोध प्रकट करना चाहता है तो उसी को दृष्टि में रखकर उम्मीदवार का चुनाव करता है।

और शायद अन्त में सब उम्मीदवारों को टेलीविजन के पर्दे पर देखने और अखबारों में उनके भाषणों को पढ़ने के बाद थक कर वह अनिश्चय की दशा में सोचता हुआ मतदान केन्द्र में घुसता है और हमेशा की भाँति डेमोक्रेटिक या रिपब्लिकन पार्टी में से किसी एक को वोट देकर यह सोचता हुआ बाहर निकलता है कि उसने वोट ठीक ही दिया है।

दोनों राजनीतिक दल हमारे इतिहास, हमारे जातीय मूल, धार्मिक विश्वासों, काम-धन्धे और हमारी भौगोलिक स्थिति की उपज हैं और उन गम्भीर मूल्यों के, जो हमारे विश्वासों में बद्धमूल हो गये हैं, झंडा-बरदार हैं। हर चार वर्ष बाद होने वाली इस प्रतिस्पर्धा और संघर्ष का सबसे बड़ा मूल्य शायद यह है कि इससे हमें याद आ जाता है कि हमारे बीच में चाहे कितने भी वर्गीय, जातीय या व्यावसायिक भेद हों, बुनियादी बातों पर हम में पूर्ण मतैक्य है। इस संघर्ष की विशालता हमें यह भान कराती है कि हम तर्क करने और दूसरों के साथ मतभेद रखने में स्वतंत्र हैं। संघर्ष की व्यापकता हमें यह स्मरण कराती है कि हम महान् हैं और हममें भाँति-भाँति के लोग हैं। इस संघर्ष में जो गर्मी और तेजी रहती है, वह यह सिद्ध करती है कि हम में संघर्ष करने की शक्ति और प्रतिकूल आदर्शों और विचारों को चुनौती देने और पराजित करने की क्षमता है। हर पार्टी दूसरी के विरुद्ध इस तरह संघर्ष करती है, मानो वह उसकी शत्रु हो और उससे अमेरिकन गणराज्य की बुनियाद को ही खतरा हो। इस प्रकार यह संघर्ष हमें यह भरोसा दिला जाता है कि यदि कभी आवश्यकता पड़ी तो हम अपनी जीवन-पद्धति को दी जाने वाली चुनौती का खुलकर मुकाबला कर सकेंगे।

किन्तु जब आन्दोलन खत्म हो जाता है और इतने मत गिन लिये जाते हैं कि विजेता का पता लग सके, तब पराजित उम्मीदवार राष्ट्र के सम्मुख घोषणा करता है कि वह विजयी उम्मीदवार को पूरी तरह सहायता और साथ देगा। अब वह उसके लिए आक्रमणकारी शत्रु नहीं रहता, बल्कि उसी तरह एकाएक अमेरिकन विश्वासों और मान्यताओं का रक्षक बन जाता है, जैसे मध्ययुग की कहानियों का दैत्य सुन्दरी राजकुमारी (बहुमत) के चुम्बन से एक कमनीय राजकुमार बन गया था।

एडलाई स्टीवन्सन ने सन् १९५६ में कहा था, "हमें विभाजित करने वाले तत्वों की अपेक्षा हमें मिलाने और संयुक्त करने वाले तत्त्व

अधिक गहरे हैं। आज हम रिपब्लिकन या डेमोक्रेट नहीं हैं, बल्कि अमेरिकन हैं।" इस प्रकार संघर्ष खत्म हो जाने के बाद हम सब एक हो जाते हैं, अपने घावों की चिकित्सा करते हैं, युद्ध के ध्वंसावशेषों को हटाते हैं और फिर से काम में जुट जाते हैं।

राज्य और संविधान

संघीय सरकार की स्थापना से पूर्व अमेरिका में चौदह राज्य थे (संघ के प्रारम्भिक तेरह सदस्य राज्य और वरमौंट)। वरमौंट, टेक्सास और कैलिफोर्निया संघ के सदस्य बनने से पूर्व स्वतन्त्र गणराज्य थे। प्रारम्भ के तेरह राज्यों का इतिहास संविधान बनने से १८० वर्ष पहले प्रारम्भ होता है। इन १८० वर्षों में प्रान्तीय विधान सभाओं के द्वारा वे अपना शासन चलाते रहे थे। कभी-कभी उनका ब्रिटिश राजकुल द्वारा नियुक्त गवर्नर से जबरदस्त संघर्ष होता और कभी-कभी ब्रिटेन उनके मामलों में कोई हस्तक्षेप न करता।

इस युग में उन्होंने शासन की कला को खूब अच्छी तरह सीख लिया था जिसका प्रमाण जैफर्सन, पैट्रिक हेनरी, जॉन ऐडम्स और मैडिसन जैसे कुशल प्रशासक हैं।

इन राज्यों ने ही संघीय सरकार का निर्माण किया। वह इन्हीं की कृति थी। जिस तरह माता-पिता अपने बढ़ते हुए बच्चे को, जो यह नहीं जानता कि उसे अपनी शक्ति का उपयोग कैसे करना चाहिए, प्रहार करते हुए देखकर घबरा उठते हैं, उसी तरह ये राज्य भी अपने हाथों से गढ़ी इस संघीय सरकार को कुछ भय और कुछ रोष की दृष्टि से देखते थे। बच्चा जब देह के आकार और बल में अपने माता-पिता से भी बढ़ जाता है; तब ऐसा लगता है, मानो वह उनका सम्मान नहीं करता। वह उन पर उपहारों की वर्षा कर देता है किन्तु चाहता यह है कि वे करें वही जो वह कहता है।

बाद में कुछ तो शक्तिशाली संघीय सरकार ने और कुछ बड़े नगरों ने राज्य का महत्व छीन लिया। इससे राज्य पहले जैसे महत्त्वपूर्ण नहीं

रह गये। फिर भी संविधान में विदित ऐसे अधिकारों से, जो संघीय सरकार को दिये गये हैं, भिन्न सभी अधिकार अभी तक राज्यों के हाथ में ही हैं। राज्य ही अपने नागरिकों को मत देने का अधिकार प्रदान करता है, राष्ट्र (संघीय सरकार) नहीं। राज्यों के संविधान में विहित शासन अधिकारों का मूल उद्‌गम भी स्वयं राज्य ही है, राष्ट्र नहीं।

नागरिक से जो वफादारियाँ अनुभव करने की आशा की जाती है, उनमें से एक वफादारी राज्य के प्रति भी है। यह वफादारी की भावना और भी अधिक सबल हो सकती है, क्योंकि व्यक्ति जिस राज्य में पैदा होता है, जहाँ से उसकी पारिवारिक परम्पराएँ बनती हैं, या जिसे वह अपने राज्य के रूप में अपना लेता है और अन्य राज्यों से ज्यादा पसन्द करता है या जिसके मामलों में दिलचस्पी लेता है, उसके प्रति उसका लगाव होना स्वाभाविक है।

अनेक राज्यों में परस्पर-विरोधी परिस्थितियाँ पायी जाती हैं। उदाहरण के लिए, न्यूयार्क राज्य में न्यूयार्क नगर और शेष देहाती भाग एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। इसी तरह वाशिंगटन और ओरेगन राज्यों को भी पहाड़ों ने बीचों-बीच से बाँट दिया है, जिससे उनका पश्चिमी भाग उद्योग-सम्पन्न और पूर्वी भाग कृषि-प्रधान रह गया है। फिर भी हर राज्य के सभी भाग आपस में एक बुनियादी भावात्मक सहमति से बंधे हुए हैं, जो तमाम जातीय, भौगोलिक और व्यावसायिक भेदों के बावजूद एकता कायम रखती है।

राज्यों के विधानमण्डलों की बैठकें हर दो वर्ष बाद कुछ महीनों के लिए होती हैं, इसलिए स्वभावतः उनके सदस्य ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अपनी आजीविका दूसरे कामों से चलाते हैं और विधानमण्डल के सदस्य के रूप में उन्हें सिर्फ इतना ही पैसा दिया जाता है कि उनका खर्च निकल सके। इस प्रणाली से भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है, क्योंकि विधानमण्डल का कोई भी सदस्य विधानमण्डल में कोई ऐसा विधेयक पेश कर सकता है, जो किसी उद्योग के लिए हानिकर सिद्ध

हो और फिर उस उद्योग से मोटी रिश्वत लेकर उसे वापस ले सकता है। लेकिन राज्यों की खबरों के काफी विस्तृत प्रकाशन से और आन्तरिक आय निर्देशक को आय का पूरा विवरण देने की कानूनी अनिवार्यता से भ्रष्टाचार की ये घटनाएँ नहीं होतीं, कम-से-कम खुल्लमखुल्ला तौर पर तो नहीं होतीं।

राज्य सरकारें और भी कई महत्त्वपूर्ण कार्य करती हैं। वे स्कूलों के लिए स्टैंडर्ड निर्धारित करती हैं, सड़कें बनाती हैं, अदालतों, जेलों, अपराधी-सुधार गृहों, अन्धों की संस्थाओं, पागलखानों और विकलांग लोगों के पालन-गृहों का संचालन करती हैं, बेरोज़गारों और बूढ़ों को आर्थिक सहायता देती हैं, रोज़गार के दफ्तर चलाती हैं, पुलिस और मार्ग-रक्षक दलों की व्यवस्था करती हैं, पार्कों, विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों की स्थापना और देखभाल करती हैं, राज्य में पर्यटकों और नये उद्योगों को आकृष्ट करती हैं, मूल्यों पर नियन्त्रण रखती हैं, बिजली वितरण आदि सेवाएँ चलाती हैं और इसी तरह के अन्य अनेक काम करती हैं। न्यूयार्क जैसे बड़े राज्य का बजट तो कई स्वतन्त्र राष्ट्रों के बजट से भी बड़ा होता है और उसकी सरकार विदेशी मामलों को छोड़ कर जनता की सेवा के शेष काम इन राष्ट्रों से भी कहीं बड़े पैमाने पर करती है।

संविधान ने संघीय सरकार और राज्यों के बीच संघर्ष की सम्भावना को दूर करने के लिए कुछ अधिकार संघीय सरकार के लिए निर्दिष्ट कर दिए थे और यह व्यवस्था कर दी थी कि शेष सब अधिकार राज्यों के या जनता के हाथों में रहेंगे। इस फार्मूले को कोई भी बदलना नहीं चाहता। कारण यह कि यद्यपि संविधान में जो कुछ कहा गया है, वह बिल्कुल साफ है, तथापि उसकी व्याख्याएँ लचकीली की जा सकती हैं। संविधान के निर्माताओं को इस बात की कोई कल्पना नहीं थी कि संघीय सरकार को क्या-क्या काम करने पड़ सकते हैं, फिर

भी आज रेलों के नियमन से लेकर देश व्यापी पेन्शन योजना तक प्रायः सभी काम उसके व्यापक छत्र के नीचे आ गये हैं।

अमेरिकन लोगों का विश्वास है कि संविधान के निर्माताओं ने भविष्य की सभी सम्भावनाओं के लिए संविधान में व्यवस्था कर दी थी और यदि उसकी व्याख्या कुछ लचकीलेपन से की जाए तो उसमें संशोधन किए बिना या कभी-कभार मामूली-से संशोधन से ही हमारी सब आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं। इस संविधान को रद्द कर नया संविधान बनाने की बात निरा पागलपन या कुफ्र समझी जाएगी। हम यह मानते हैं कि हमारा संविधान राजनीतिक विचक्षणता की दृष्टि से पूर्णतः निर्दोष है और उसमें कोई परिवर्तन या परिवर्द्धन नहीं हो सकता।

अपने संविधान का हम इतना आदर क्यों करते है ?

इसका उत्तर यह है कि हमारा संविधान बिल्कुल स्पष्ट और निश्चित है जिसे कोई भी पढ़ सकता है। वह लचकीला है और हर तरह की नई परिस्थितियों में उसे बैठाया जा सकता है। वह निर्विघ्न और अबाध रूप में चल सकता है, जैसा कि पिछले १७० वर्षों के अनुभव ने सिद्ध किया है। उसमें अनेकता में एकता स्थापित करने की जादुई शक्ति है। विशेषाधिकारों के लिए लड़ने वाला टोरी इस संविधान की दुहाई देता है और तोड़-फोड़ के अभियोग में मुकद्दमा चलाये जाने पर कम्युनिस्ट भी इसी का आश्रय लेता है। छात्र उसे अपनी स्वतन्त्रता का मूल स्रोत समझता है और आप्रवासी उसे अपने लिए एक ऐसा अधिकार-पत्र मानता है, जो अन्ततः उसे नागरिकता के सब अधिकार प्रदान करायेगा। विवाद-तनाव और उथल-पुथल से भरी दुनिया में हम उसके ऊपर पांव टिकाकर दृढ़ता से अविचल खड़े रह सके है। उसने हमें वे अपरिहार्य अधिकार प्रदान किए है जिन्हें राज्य छीन नहीं सकता और जिन्हें अन्य अनेक आधुनिक राज्य—कम्युनिस्ट और फासिस्ट अपनी प्रजा से छीनते रहे है। हमारे संविधान में यह गारण्टी की गई

है कि जब तक वह कायम है तब तक ये अधिकार अपरिहार्य और अनिवार्य बने रहेंगे। उसमें ऐसे नियन्त्रणों की व्यवस्था कर दी गई है कि शासन के तीनों विभागों में परस्पर संतुलन बना रहता है और स्वतन्त्रता और कानून-व्यवस्था के बीच समन्वय की समस्या, जो अन्य अनेक देशों में हमेशा उठती आई है, यहाँ पैदा ही नहीं होती और होती है तो उसका तुरन्त उचित समाधान हो जाता है। इसी तरह न्यायिक निर्णयों पर पुनर्विचार का अधिकार भी संविधान में लिपिबद्ध कर दिया गया है और उसमें यह विधान कर दिया गया है कि पुनर्विचार के समय न्यायाधीश कानून के बजाय संविधान के आधार पर अपना निर्णय देंगे।

एक राजनीतिक साधन के रूप में संविधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें संघीय सरकार को समस्त नागरिकों पर अधिकार प्रदान किया गया है। यह अधिकार राज्यों के अधिकार के समानान्तर किन्तु उससे सर्वथा स्वतन्त्र है। इसके अलावा उसने उच्चतम न्यायालय के रूप में एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना की है जिससे सभी प्रकार के मतभेदों को निबटाया और सुलझाया जा सकता है।

न्यायालय और नागरिक अधिकार

अमेरिकन प्रणाली की एक विशेषता यह भी है कि उसने राज्यीय न्यायालयों से बिल्कुल स्वतन्त्र रूप में संघीय न्यायालयों की स्थापना की है, जो संघीय कानून और संविधान के प्रश्नों से उत्पन्न मामलों को सुनते हैं। हर व्यक्ति इन दोनों प्रकार के न्यायालयों के अधीन रहता है और उनका यथोचित आश्रय ले सकता है।

संघीय न्याय-व्यवस्था में एक उच्चतम न्यायालय, दस अपीलीय सर्किट न्यायालय और लगभग सौ जिला अदालतें हैं। संघीय उच्चतम न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश और आठ सहकारी न्यायाधीश होते हैं और वह वाशिंगटन में अवस्थित रहता है। यदि दो राज्यों में कोई मतभेद या विवाद उठ खड़ा हो या एक राज्य का कोई नागरिक किसी अन्य राज्य के नागरिक के विरुद्ध मुकद्दमा चलाना चाहता हो तो मामला

संघीय न्यायालयों में ले जाया जा सकता है। संघीय न्यायालय संघीय कानूनों की व्याख्या करने और उन्हें लागू करने के महत्त्वपूर्ण साधन हैं और वे यह निर्णय भी देते हैं कि शासन के विधायक पक्ष या कार्यपालक पक्ष ने किसी मामले में संविधान में निहित अपनी मर्यादाओं का उल्लंघन तो नहीं किया।

उच्चतम न्यायालय का सबसे महत्त्वपूर्ण काम शायद संविधान की ऐसी लचकीली व्याख्या करना है जिससे वह बदलते हुए जमाने की बदलती परिस्थितियों के साथ चल सके। इससे हम अपने इस पवित्र अभिलेख का सम्मान करते रह सकते है, जिसकी बदौलत हमारी सरकारें असाधारण रूप से स्थिर रहती हैं और साथ ही जो अपने मूल से विच्छिन्न हुए बिना हर नई परिस्थिति की जरूरत को पूरा करता है। मौजूदा शताब्दी में उच्चतम न्यायालय ने जो निर्णय दिए हैं उनका रुझान सरकार की अधिकाधिक व्यापक सामाजिक जिम्मेदारियों और मानव-अधिकारों के पक्ष में रहा है।

इसका सबसे अच्छा प्रमाण हाल के वे निर्णय हैं जिनमें स्कूलों और सार्वजनिक वाहनों में नीग्रो और गोरे लोगों के बीच भेद-भाव को खत्म करने का आदेश दिया गया है।

उच्चतम न्यायालय ने १९५४ में अपने एक फैसले में कहा था, "सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति को 'अलग किन्तु बराबर' मानने का सिद्धान्त नहीं चल सकता। अलग-अलग शिक्षा की व्यवस्था का अर्थ ही है असमानता।" यद्यपि कुछ स्कूलों में एकीकरण के प्रश्न को लेकर संघर्ष हुए हैं और उनका बहुत अधिक प्रचार हुआ है, तो भी सैकड़ों स्कूल ऐसे है, जिन्होंने बिना किसी अप्रिय घटना या संघर्ष के इस रंगभेद को खत्म कर एकीकरण कर दिया। कुछ राज्यों द्वारा एकीकरण से बचने के लिए कानूनी चालें चली जाने के बावजूद प्रवृत्ति एकीकरण की तरफ ही है।

पिछले दो वर्षों के सम्बन्ध में किए गये हाल के एक सर्वेक्षण से मालूम हुआ है कि जीवन के सभी क्षेत्रों में एक हज़ार से अधिक मामलों में जाति-भेद की बाधाओं को हटाया गया है। जिस दक्षिणवासी ने यह अध्ययन किया था, उसने कहा है, "अब दक्षिण को पूर्णतः जाति-भेद का सुदृढ़ और ठोस गढ़ नहीं कहा जा सकता······अध्ययन से यह आम धारणा निर्मूल सिद्ध हुई है कि जातीय एकीकरण सफल नहीं हो सकता।"

जाति-भेद की समाप्ति और एकीकरण के उदाहरण आवास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, गैर-सरकारी उद्योग, सार्वजनिक परिवहन और स्कूल, कालेज एवं होटल आदि सभी क्षेत्रों में मिलते हैं। देश के १६४ कालेजों और विश्वविद्यालयों ने नीग्रो लोगों के लिए अपने द्वार खोले हैं और बहुत-से नीग्रो उच्च सरकारी पदों पर चुने या नियुक्त किए गये हैं।

जिमक्रो गाड़ियाँ (रेलों में नीग्रो लोगों के लिए पृथक् डिब्बे), जो बीसवीं शताब्दी में ही प्रारम्भ हुई थीं, उससे पहले नहीं, जैसा कि बहुत से लोग समझते हैं, अब धीरे-धीरे खत्म हो रही है। दक्षिण के उदारमना लोग अब यह अनुभव करने लगे हैं कि कोई भी समाज अपने एक अंश को अलग नहीं रख सकता और यदि वह रखेगा तो उससे सारे समाज का ही नुक्सान होगा।

अकेले लुइसियाना राज्य में ही नीग्रो मतदाताओं की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। जहाँ सन् १९४८ में लुइसियाना में नीग्रो मतदाता १६७२ थे, वहाँ १९५२ में उनकी संख्या १,०८,७२४ हो गई। अन्य राज्यों में भी इसी तरह नीग्रो मतदाताओं की संख्या बढ़ी है।

इस दिशा में सबसे अधिक आश्चर्यजनक और उत्साहवर्द्धक बात यह है कि फ्लोरिडा राज्य के कू क्लक्स क्लैन नामक नीग्रो-विरोधी संगठन ने भी यह घोषणा कर दी है कि नीग्रो लोगों को उसकी सदस्यता का अधिकार है।

आज आखिर वह वक्त आ गया है जबकि गरीबी, अज्ञान, रोग और उन्नति के अवसर के अभाव के दुश्चक्र पर प्रहार किया जा रहा है। इस दुश्चक्र ने ही नीग्रो लोगों को कुचला और अवनति के गर्त में धकेला हुआ था। बहुत से गोरे लोग अपने आपको जान-बूझकर इस भ्रम में रखे हुए थे कि नीग्रो लोगों की अवनति का कारण काली जाति में पैदा होने से उनके रक्त में ही कमजोरी होना है। वे यह नहीं मानते थे कि इसका कारण उन्हें अवसर न मिलना और अत्यन्त हीन और अभाव की परिस्थितियों में उनका रहना है। इन परिस्थितियों के कारण वे बीमारी और अपराध-वृत्ति के शिकार हो जाते हैं। बहुत-से गरीब गोरे अपनी गरीबी की जिम्मेदारी किसी दूसरे पर डालने के लिए नीग्रो लोगों को बलि का बकरा बनाते थे और उन्हें गरीब देखकर अपनी गरीबी पर सन्तोष कर लेते थे। अनेक राजनीतिज्ञ भी उनके वोट पाने के लिए इन गोरों की इस भावना का लाभ उठाने की चेष्टा करते थे। ऐसी घटनाएं भी बहुत घटती रही हैं कि पुलिस और अदालतें नीग्रो लोगों को डरातीं और व्यापारी उनसे अनुचित फायदा उठाते। समाचार-पत्र भी उनके दैन्य और अभावग्रस्त परिस्थितियों पर कोई रोशनी नहीं डालते थे।

फिर भी समाचार-पत्रों ने सार्वजनिक रूप से और गैर-कानूनी तौर पर लोगों को अपराधी ठहराकर, और पीट-पीटकर या कुचल कर मार डालने की बर्बरता का बहुत जोरों से विरोध किया है। यह क्रूर प्रथा उस जमाने की कठोर परिस्थितियों मे शुरू हुई थी, जब अमेरिकन लोग कष्टों और मुसीबतों को झेलते हुए नए-नए क्षेत्रों को आबाद करने में लगे हुए थे। इस प्रथा का शिकार नीग्रो लोगों को ही नहीं, गोरों को भी होना पड़ता था। यह प्रथा सन् १९५१ से प्रायः खत्म हो गई है, किन्तु अन्य रूपों में लोगों को डराने, धमकाने और नृशंस यातनाएँ देने की प्रथा अब भी कायम है।

नागरिक अधिकारों और आजादी के मामले का एक पहलू और भी है, जिसका आरम्भ साम्राज्यवादी और तानाशाही कम्युनिज्म के खतरे के कारण हुआ। यह पहलू है तथाकथित वफादारी कार्यक्रम। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अमेरिका में कम्युनिज्म के षड्यन्त्रों के खतरे को रोकने के उद्देश्य से तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों के नियन्त्रण के लिए एक बोर्ड बनाया गया जिसे बहुत व्यापक अधिकार दिये गये। यह बोर्ड अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर चाहे जिस सरकारी कर्मचारी को रोजगार से वंचित कर सकता था और किसी दूसरी जगह रोजगार पाने के उसके अवसर भी नष्ट कर सकता था। इस कानून का एक खतरा यह भी था कि लोग स्वैच्छिक संगठनों में शामिल होने से कतराते थे, क्योंकि उन्हें डर रहता था कि बाद में कम्युनिस्ट कहकर उस संगठन की वफादारी पर सन्देह न किया जाने लगे और उसकी जाँच न की जाए। इस प्रणाली को पाँच साल तक अमल में लाने का परिणाम यह हुआ है कि तोड़-फोड़ और साजिश करने वाले संगठनों के विरुद्ध चालीस हजार पृष्ठों से अधिक की गवाहियाँ और प्रमाण संग्रह हो गये हैं, किन्तु अन्तिम कार्रवाई कोई नहीं की गई। यदि हमारे देश की सुरक्षा पर सचमुच कोई खतरा है तो यह प्रणाली पूरी कोशिश करके भी उसका पता लगाने में असफल रही है।

"कम्युनिस्टों के आन्तरिक षड्यन्त्र का खतरा और भय अब टल गया है, क्योंकि अधिकतर नागरिक अब यह बात भली-भाँति जान गये हैं कि हमारा देश खूब संगठित है, खतरनाक कम्युनिस्टों की संख्या हमारे यहाँ बहुत कम है और सजग रहते हुए भी हमें अपने नागरिक अधिकारों की पूर्णतः रक्षा करनी चाहिए, तभी हम संसार में अपनी शक्ति और नैतिक नेतृत्व बनाये रख सकते हैं और अन्य देशों में तानाशाही शासनों के विरुद्ध संघर्ष कर सकते हैं। इन अधिकारों की रक्षा के लिए फिर अमेरिकन लोग स्वैच्छिक संगठनों का निर्माण करते हैं। नागरिक आजादी और अधिकारों की रक्षा के लिए बने संगठनों में सबसे अधिक

प्रसिद्ध सिविल लिबर्टीज यूनियन है। ये संगठन उन लोगों के विरुद्ध संघर्ष करते हैं जो अपने साथ मतभेद रखने वालों को वाणी और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता से वंचित करते हैं, अल्पसंख्यकों को रोजगार या मताधिकार देने से इन्कार करते हैं, या श्रमिकों का संगठन का अधिकार छीनते हैं। कानूनी सहायता समितियां सारे देश में फैली हैं और जो लोग कानूनी परामर्श पाने के लिए पैसा नहीं खर्च कर सकते, उन्हें मुफ्त सलाह देती हैं। इसका परिणाम यह है कि आज कोई भी व्यक्ति कानूनी सलाह न मिलने के कारण मुकदमा नहीं हारता।

अमेरिकन लोकतन्त्र

तब संयुक्त राज्य में लोकतन्त्री प्रशासन की विशेषताएं और लक्षण क्या हैं?

सबसे पहली विशेषता यह कि उसमें नागरिकों को अपना स्थानीय प्रशासन स्वयं चलाने का अधिकार दिया जाता है। जहां तक जनता को अपना शासन अपने ही हाथ में रखने का अवसर देने का सम्बन्ध है, यह बहुत अच्छी बात है, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय संकट के समय वह एक खतरा भी बन सकती है, क्योंकि यह आशंका रहती है कि कहीं स्थानीय मामले अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर हावी न हो जाएं।

दूसरी विशेषता यह कि इसमें स्वैच्छिक संगठनों को बहुत महत्त्व दिया जाता है और वे प्रशासनिक प्रक्रिया में प्रेरक और पथ-प्रदर्शक का काम करते हैं। ये संगठन कानूनों और कानून-निर्माताओं पर प्रभाव डालते हैं, सरकारी विभागों के साथ मिलकर काम करते हैं और ऐसे अनेक काम करते हैं जो दूसरे देशों में सामान्यतः सरकारें करती हैं। एक ऐसे युग में, जहां राजनीतिक निश्चय औसत आदमी की क्षमता से बाहर होते हैं और जहां अनेक निश्चयों का दायित्व राजनीतिक क्षेत्र से हटाकर प्रशासन को सौंप दिया गया है, ये स्वैच्छिक संगठन एक सन्तुलन का काम करते हैं। वे न नौकरशाही को हावी होने

देते हैं और न सरकार को अपनी विशालता और पेचीदा जटिल जाल के कारण जनता से दूर हटने देते हैं।

तीसरी विशेषता यह कि समाचार-पत्र, प्रमुख व्यक्ति, आम जनता, कांग्रेस (संसद्) के सदस्य, स्वैच्छिक संगठन और अन्य देशों से आने वाले व्यक्ति भी सरकार की और उसके कार्यों की निरन्तर कटु आलोचना करते रहते हैं।

संयुक्त राज्य संसार का पहला राष्ट्र था जिसमें समस्त वयस्कों को (केवल पुरुषों को और इनमें भी गुलाम शामिल नहीं) मताधिकार दिया गया। संयुक्त राज्य ही समाचार-पत्रों को स्वतन्त्रता देने, चर्च को राज्य से अलग करने, क्रूर दंड को खत्म करने, मुफ्त सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था करने, जेलों में सुधार करने और मुफ्त पुस्तकालय सेवा प्रारम्भ करने में अग्रणी था।

चौथी विशेषता यह कि संयुक्त राज्य का शासन किसी विशिष्ट अधिकार प्राप्त वर्ग के लिए नहीं, बल्कि प्रधानतः आम जनता के लिए है। जैसा कि डि टोकविल ने कहा है, इससे अमेरिका में जिस समाज का निर्माण हुआ है, वह शायद बहुत ऊंची किस्म का न हो, परन्तु अधिक न्याययुक्त अवश्य है।

पाँचवीं बात यह कि संयुक्त राज्य का शासन जनता की आकाँक्षाओं को पूर्ण करने की अपनी क्षमता पर आधारित है। यद्यपि उसकी प्रक्रिया कभी-कभी कुछ धीमी रहती है क्योंकि जनता की आकाँक्षा अनेक पृथक् और परस्पर, विरोधी आकाँक्षाओं का मिश्रण होती है तो भी अन्ततः वह अपना उद्देश्य पूरा कर लेती हैं। अमेरिकन लोग एक साथ बहुत बड़ी-बड़ी योजनाएं नहीं बनाते, क्योंकि वे उन्हें सन्देह की दृष्टि से देखते हैं और यह मानते हैं कि उनमें कठोर नियन्त्रण और ताना-शाही की प्रवृत्ति रहती है। इसलिए वे अपना विकास धीरे-धीरे आवश्यकता के अनुसार उपयोगिता को दृष्टि में रखकर योजनाएं बनाते हुए करते हैं।

और छठी बात यह कि अमेरिका का शासन व्यवसाय और वाणिज्य पर आधारित है। आम तौर पर यह बात इस ढंग से कही जाती है, मानो संयुक्त राज्य की यह कोई विशिष्ट बुराई हो। किन्तु वास्तविकता यह है कि यहां हर बड़ा नागरिक एक ठोस आर्थिक आधार पर आत्म-निर्माण करके खड़ा है। और (लूट के सिवाय) आत्म-निर्माण का और उपाय भी क्या हो सकता है? तानाशाही प्रणालियां किसी-न-किसी किस्म की लूट पर आधारित है। वे गुलामों से बेगार कराती हैं, विजित देशों से पूरे के पूरे कारखाने उखाड़ कर ले जाती हैं और जिस वर्ग को बलि का बकरा बनाना चाहती है, उसकी सारी सम्पत्ति छीन लेती है। लोकतन्त्री प्रणाली में सम्पत्ति को एक रक्षणीय अधिकार माना जाता है। इस प्रणाली में ऊंची आमदनियों और मुनाफों पर भारी टैक्स अवश्य लगाए जाते है, परन्तु पूंजीगत मूल आधार को नष्ट नहीं किया जाता जिस पर इन मुनाफों का भवन खड़ा होता है। कारण, लोकतन्त्री प्रणाली धन-दौलत को बुरी चीज नहीं समझती, बल्कि वह उसे ऐसी शक्ति का स्रोत समझती है, जिससे अन्य सभी लाभ प्राप्त किये जा सकते है। एक समृद्ध और उत्पादक देश ही अपने नागरिकों को वे सब लाभ प्रदान कर सकता है, जो लोकतन्त्री प्रणाली मे अनिवार्य समझे जाते है।

इस तरह संयुक्त राज्य मे अर्थ-व्यवस्था और राजनीति एक-दूसरे मे गुंथे-हुए है। हर बड़ा आर्थिक वर्ग सरकार द्वारा नियन्त्रण या भारी टैक्स लागू किये जाने पर खूब शोर-गुल मचाता है, किन्तु साथ ही वह हर वक्त सरकार से सेवाओं और संरक्षण की मांग करता रहता है।

तब प्रश्न यह उठता है कि संयुक्त राज्य की यह अर्थ-व्यवस्था चलती किस ढंग से है?

प्राचुर्यमय जीवन

आज हम क्रान्ति के युग में रह रहे हैं। इस युग पर व्यापक दृष्टिपात किया जाए तो हम देखेंगे कि आज हम उत्पादक और उपभोग के एक नये दौर में प्रविष्ट हुए हैं और आर्थिक लोकतन्त्र के सिद्धान्त आज उसी तरह गहरे और बद्धमूल हो गए हैं, जैसे कि हमारी पहली क्रान्ति से राजनीतिक लोकतन्त्र सुरक्षित हो गया था (हालांकि वह पूर्णतः स्थापित नहीं हो सका था)।

संयुक्त राज्य की आबादी संसार की आबादी का कुल ७ प्रतिशत है, फिर भी वह संसार की कुल सेवाओं और सामग्री का ४० प्रतिशत उत्पादन करता है। यदि उसके राष्ट्रीय उत्पादन को आबादी से विभक्त किया जाए तो प्रति व्यक्ति उत्पादन यूरोप के अनेक अत्यधिक उत्पादक राष्ट्रों से दुगुना होगा और इंडोनेशिया से तो वह दस गुना बैठता है। सन् १८६० की अपेक्षा १६४० में संयुक्त राज्य का वास्तविक कुल राष्ट्रीय उत्पादन पाँच गुना था और वृद्धि की यह गति अब भी जारी है जिससे देश में सेवाओं और वस्तुओं की उपलब्धि और उनको खरीदने की शक्ति दोनों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। पिछले अस्सी वर्षों से उत्पादन प्रति श्रम इकाई पर दो प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ रहा है।

सन् १८२० और १६३० के बीच देश में शक्ति (बिजली) की प्रति व्यक्ति उपलब्धि चालीस गुनी बढ़ गई। सन् १६१० में देश की कुल श्रम-शक्ति में मजदूरों की संख्या २१ प्रतिशत थी, किन्तु १६४० में उनकी संख्या ११ प्रतिशत ही रह गई। इसका अर्थ यह है कि आज

कम-से-कम मानवीय श्रम को खर्च करके अधिक-से-अधिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जा रहा है।

युद्ध के बाद भी देश के निर्माण उद्योगों की क्षमता दुगुनी हो गई है। इन उद्योगों में २३३ अरब डालर की पूंजी लगी हुई है। इस्पात और बिजली के उत्पादक जनता की निरन्तर बढ़ रही आवश्यकताएं पूरी करने के लिए अपना उत्पादन बराबर बढ़ा रहे हैं। कृषि में भी उत्पादकता में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। सन् १८२० में देश के ७२ प्रतिशत लोग खेती में लगे हुए थे और तब कहीं वे देश का पेट भर सकते थे। किन्तु १९५० में कुल ११ प्रतिशत व्यक्ति ही खेती में रह गये, जो अपना और शेष सारे देशवासियों का पेट बखूबी भर सकते थे।

उद्योगविद्या (टैकनोलॉजी) में हुई क्रान्ति ने भूमि, श्रम और पूंजी की उत्पादकता बढ़ा कर और सन्तति-निरोध के सरल और प्रमाण-कारी उपाय निकाल कर माल्थस की निराशापूर्ण भविष्यवाणियों को गलत सिद्ध कर दिया है। इतिहास में आज पहला मौका है, जबकि भुखमरी और बीमारी पर विजय पाने के उपाय मानव की पकड़ में आ गये हैं।

किसी भी देश की अर्थ-व्यवस्था तीन चीजों पर निर्भर है – प्राकृतिक साधन, श्रम और पूंजी। आम तौर पर यह माना जाता है कि संयुक्त राज्य की समृद्धि का कारण उसके प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता है। किन्तु वास्तविकता यह है कि आबादी की दृष्टि से यदि तुलना की जाए तो सोवियत संघ के प्राकृतिक साधन हम से कम नहीं हैं और पश्चिमी यूरोपीय देशों और उनके उपनिवेशों के संयुक्त साधनों के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। इसके अलावा आज हमारे प्राकृतिक साधन १९३० के दशक की अपेक्षा अधिक नहीं हैं, फिर भी आज हम अत्यन्त समृद्ध हैं जबकि १९३० के दशक में हम अल्पोत्पादन और मन्दकाल, प्रमाद एवं दैन्य के शिकार थे।

इसलिए आज हमारा जो ऊँचा स्तर है उसका कारण सिर्फ हमारे पास प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता ही नहीं है। न्यू इंग्लैंड प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से हमारे देश का सबसे दरिद्र प्रदेश था, फिर भी उन्नीसवीं शताब्दी में उद्योगों का विकास करके वह राष्ट्र का सबसे समृद्ध भाग हो गया, जबकि प्राकृतिक साधनों से भरपूर होने पर भी दक्षिणी प्रदेश सिर्फ गुलाम मजदूरों से कच्चे माल का उत्पादन कराता रहा और गरीब बना रहा। स्पेनिश लोगों का एक तरह से सारे पश्चिमी गोलार्द्ध में बोलबाला था फिर भी वे एक जीवन्त और उत्पादक अर्थ-व्यवस्था का निर्माण नहीं कर सके। संयुक्त राज्य को गति और शक्ति प्रदान करने में प्राकृतिक साधनों के समान ही उसके मानवीय उद्यम और साहसी वृत्ति ने भी योग दिया। अमेरिकन लोगों ने टैकोनाइट जैसे घटिया किस्म के खनिज के उपयोग से भी धातु का सफलतापूर्वक उत्पादन किया, जो यह सिद्ध करता है कि मानवीय बुद्धि और उद्यम से सभी कुछ किया जा सकता है।

यद्यपि अन्य देशों से आप्रवासियों के आगमन से अमेरिका को जन-शक्ति उपलब्ध होती रही, किन्तु तो भी यहाँ अपेक्षाकृत उसकी कमी ही रही। यही बात पूंजी के बारे में थी। पूंजी भी बाहर से आयात करनी पड़ती थी। मज़दूरों की उपलब्धि कम और मजदूरी की दर ऊंची होने के कारण उद्योगों में अधिक पूंजी लगा कर यान्त्रिकीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी। उद्योगों में जो मुनाफा होता, उसे यान्त्रिकीकरण को बढ़ाने के लिए फिर वापस उद्योगों में ही लगा दिया जाता और अधिकाधिक कार्यक्षम और कम श्रम से अधिक उत्पादन करने वाली मशीनरी का आविष्कार किया जाने लगा। अब हम अपनी पूंजी में जितनी वृद्धि करते हैं, उतनी ही हमारी मानव श्रम की बचत हो जाती है।

हमारी अर्थ-व्यवस्था की विशिष्टता है वृद्धि—कुल उत्पादन में वृद्धि उत्पादित वस्तुओं की संख्या और विविधता में वृद्धि, उत्पादन की

विधियों और प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि और साथ ही उत्पादन करने वालों की क्रय शक्ति में भी वृद्धि।

प्राचुर्यपूर्ण अर्थ-व्यवस्था

संयुक्त राज्य ने भी यूरोप की भांति उन्नति की दिशा में धीरे-धीरे कदम बढ़ाए, किन्तु वह शेष संसार से बहुत जल्दी आगे बढ़ गया। इस का एक कारण यह था कि उनकी राजनीति ही अभाव और अल्पता को बनाये रखने के बजाय प्रचुर उत्पादन की ओर अभिमुख थी। उसके नागरिकों ने परिश्रम से, बल्कि कभी-कभी बहुत क्रूरता से देश की प्राकृतिक साधन-सम्पदा का दोहन किया। यह दोहन उन्होंने किसी एक विशिष्ट वर्ग के लिए नहीं, बल्कि सारी जनता के उपयोग के लिए किया (हालांकि उस समय उद्योगपतियों का वर्ग अन्य लोगों से अधिक अच्छी स्थिति में था और देश में असमानता भी काफी विद्यमान थी)।

संयुक्त राज्य की उत्पादन वृद्धि और भी अनेक महत्त्वपूर्ण बातों पर आश्रित थी। यद्यपि उत्पादन का काम हजारों पृथक् औद्योगिक संस्थानों के हाथों में छोड़ दिया गया था, और वे बाजार में मांग की स्थिति को देखकर उत्पादन करते थे, तो भी सरकार की यह जिम्मेदारी थी कि वह इन उद्योगों पर नजर रखे और जब जैसी आवश्यकता हो, उन पर लगाम कसे या ढीली छोड़े। यद्यपि सरकार को टैक्स लगाने का अधिकार था, तो भी उसे लोगों को उनकी निजी सम्पत्ति से वंचित करने का हक नहीं था। व्यक्तियों और कम्पनियों को वस्तुओं और सेवाओं के लिए ठेके और करार करने की पूरी छूट थी। यह भी माना जाता था कि अर्थ-व्यवस्था के मुख्य तत्त्वों (श्रमिक, कृषक और कम्पनियां) में सन्तुलन रखा जाना चाहिए, ताकि अर्थ-व्यवस्था स्वस्थ बनी रहे।

सब से अधिक महत्त्वपूर्ण बात सम्भवतः यह थी कि अमेरिकन लोग हमेशा ही दौलत को एक गतिशील वस्तु समझते रहे हैं। उनकी यह मान्यता रही है कि दौलत को उत्पादन में लगा कर और अधिक दौलत पैदा करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए, उसे छिपाकर और जोड़कर

नहीं रखना चाहिए । अनुभव ने उन्हें सिखा दिया है कि पूंजीपति और श्रमिक आपस में लड़ने के बजाय यदि मिलकर सहयोग से काम करें तो अपनी परिस्थितियों से ज्यादा लाभ उठा सकते हैं। हमने जब जैसी आवश्यकता हुई अर्थ-व्यवस्था को ठीक रखने के लिए कानून बनाये। एकाधिकार को निरुत्साहित करने के लिए शरमन कानून पास किया, मूल्यों में भयंकर गिरावट को रोकने के लिए कमाडिटी क्रेडिट कार्पोरेशन कानून बनाया, श्रमिकों को संगठित होने के लिए प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से वैगनर कानून बनाया और श्रमिकों की ताकत पर अंकुश लगाने के लिए टैफ्ट-हार्टले कानून भी पास किया। हमने टेनेसी घाटी परियोजना का सरकारी प्रशासन के अन्तर्गत निर्माण किया और डाकखानों के संचालन का काम भी सरकार को ही सौंपा, किन्तु दूसरी ओर लाखों एकड़ जमीन प्राइवेट उद्योगों को रेलों का जाल बिछाने के लिए दे डाली। एकाधिकार के विरोधी होने के कारण हमने टेलीफोन और टेलीग्राफ सेवाओं का विकास प्राइवेट कम्पनियों के हाथों में सौंप दिया, किन्तु साथ ही सार्वजनिक हित को दृष्टि में रखकर उनके नियमन का उत्तरदायित्व सरकार को दे दिया। इसी तरह रेल कम्पनियों और हवाई यातायात कम्पनियों का नियमन भी सरकार के हाथों में दे दिया गया।

आज अमेरिकन अर्थ-व्यवस्था को ऐडम स्मिथ और रिकार्डो के जमाने की पुराने ढर्रे की अर्थ-व्यवस्था बताना एक फैशन हो गया है। परन्तु फ्रेडरिक लुई ऐलन का कहना है कि हमारी अर्थ-व्यवस्था अब समाजवाद से भी बढ़कर एक ऐसी प्रणाली में परिणत हो गई है जिसमें सरकारी नियन्त्रण और निजी व्यक्तिगत उद्यम, दोनों का समन्वय है। यह समन्वय इन दोनों की पृथक्-पृथक् लाभकारिता से कहीं ज्यादा लाभकारी है। हमने पूंजी का सामाजिकीकरण करने के बजाय मजदूरियां और वेतन बढ़ाकर और ऊँची आमदनियों पर भारी टैक्स लगा कर वितरण का सामाजिकीकरण किया है। हमारा समाजवाद यह

नहीं कहता कि सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी को मारकर खा जाओ, वह कहता है कि मुर्गी को और भी अधिक अंडे देने के लिए पुष्ट और प्रेरित करो।

अमेरिका की व्यापार-व्यवसाय की प्रणाली ने व्यापार का एक नया सिद्धान्त निकाला है और वह है प्रतिस्पर्धात्मक सहयोग का। एक ही क्षेत्र के उत्पादक और निर्माता परस्पर मिलकर मूल्यवान विचारों, व्यापारिक रहस्यों और आविष्कारों का आदान-प्रदान करते हैं। इसके बाद वे ग्राहकों को खींचने के लिए परस्पर प्रतिस्पर्धा करते हैं। किन्तु इस प्रणाली ने अनेक छोटे और स्वतन्त्र उत्पादकों को उत्पादन-क्षेत्र से बाहर निकाल दिया है।

हम यह मानकर चलते हैं कि अर्थ-व्यवस्था को अच्छी तरह सफलता से चलाने के लिए कुछ चीजें अनिवार्य हैं। उदाहरण के लिए नागरिकों का कानून-पालक होना और सरकार का कानूनों का परिपालन करना अत्यावश्यक है, क्योंकि इनके बिना यह आशंका रहती है कि कहीं लोग व्यापार-व्यवसाय में किये गये करारों से मुकर न जाएं; मुद्रा और बैंकिंग की सुदृढ़ प्रणाली भी आवश्यक है ताकि धन को हस्तान्तरित करने या उधार आदि लेने में कठिनाई न हो; श्रमिकों में अनुशासन और नियम-पालन की प्रवृत्ति का होना भी अत्यावश्यक है। ये सब वस्तुएं हमें उपलब्ध हैं, किन्तु संसार के अन्य भागों में भी इनकी उपलब्धि हो ही, यह आवश्यक नहीं है।

एली व्हिटने ने जिस समय ऐसी मशीन का पहले पहल आविष्कार किया था, जिसके पुर्जे और हिस्से बदले जा सकते थे, उसी समय से बड़े पैमाने पर सामूहिक उत्पादन के लाभ लोगों को ज्ञात हो गये थे; किन्तु बड़े पैमाने पर सामूहिक उत्पादन की प्रणाली को सर्वप्रथम क्रियान्वित करने का श्रेय हेनरी फोर्ड को है। उसने इस प्रणाली को एक पूर्ण आर्थिक चक्र के रूप में विकसित किया। बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन करने से उनकी लागत कम पड़ती है और लागत कम होने से

उनकी बिक्री खूब होती है; बिक्री अधिक होने से मुनाफा बढ़ता और मजदूरों की मजदूरी में वृद्धि होती है और इस वृद्धि से उनकी क्रय-शक्ति बढ़ने पर उनकी बिक्री में फिर वृद्धि होती है—इस प्रकार आर्थिक प्राचुर्य का चक्र चलता जाता है।

लेकिन इस प्रणाली का एक अनिवार्य परिणाम था विशाल कम्पनियों का निर्माण। इससे मूल्यों की प्रतिस्पर्धा के बजाय वस्तु की किस्म की प्रतिस्पर्धा होती। फोर्ड, शैवरोलेट और प्लाइमाउथ मोटरों की कीमतों में बहुत मामूली अन्तर है। ग्राहक इनमें से किसी एक का चुनाव करते हुए सिर्फ उनकी यान्त्रिक विशेषताओं को या अपनी पत्नी को रंग और ऊपरी सजावट की पसन्द को ध्यान में रखता है। विशाल उद्योगों में आपस में खूब प्रतिद्वन्द्विता चलती है। ऐल्युमीनियम उद्योग स्टेनलैस स्टील के उद्योग से प्रतिस्पर्धा करता है; जनरल मोटर्स कम्पनी धमकी देती है कि यदि स्टेनलैस स्टील की कीमतों को बढ़ने से रोका नहीं गया तो वह स्वयं स्टील का उत्पादन प्रारम्भ कर देगी; और बड़े शृंखला भंडार यह धमकी देते है कि यदि डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थों का मूल्य स्थिर नहीं रखा गया तो वे स्वयं उनका उत्पादन करने लगेंगे।

प्रश्न यह है कि क्या इस प्रतिस्पर्धा का अन्त एकाधिकार के रूप में होगा ?

इतिहास इसका उत्तर देता है—नहीं। एकाधिकार की कल्पना और विचार ही संयुक्त राज्य के लोगों को नैतिक दृष्टि से अप्रिय लगता है। यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन और स्टैंडर्ड ऑयल कम्पनी की ओर से एकाधिकार का जो खतरा किसी समय पैदा हुआ था, वह बहुत पहले ही खत्म हो चुका है। यही नहीं, आज बड़ी कम्पनियां खुद ही एकाधिकार को पसन्द नहीं करेंगी, चाहे उन्हें हम स्वयं इसका अवसर प्रदान करें। कारण, प्रतिस्पर्धा ही उनका सबसे प्रेरक प्रलोभन और प्रोत्साहन है। वही उन्हें आगे बढ़ाती रहती हैं। यदि एकाधिकार

स्थापित हो जाए तो स्वभावतः उस पर सरकार का नियन्त्रण हो जायेगा और अमेरिकन लोग जानते हैं कि अर्थ-व्यवस्था पर सरकार के कठोर नियन्त्रण और निर्देशन से यह कहीं अच्छा है कि अर्थ-व्यवस्था में ६८ हजार ऐसे केन्द्र हों, जो अपने उद्यम, साहस और स्वतन्त्र सूझ-बूझ से आपसी प्रतिस्पर्धा के द्वारा उसे सप्राण बनाएँ।

यद्यपि मुख्य उद्योगों—मोटर, तेल और इस्पात—पर चार से आठ तक बड़ी कम्पनियों का प्रभुत्व है, तथापि इन उद्योगों में छोटी फर्मों के भी पनपने की काफी गुंजायश है। इस्पात उद्योग में, उदाहरण के लिए चार बड़ी कम्पनियाँ हैं, किन्तु उनके हाथ में दो-तिहाई व्यापार है, शेष एक-तिहाई व्यापार के लिए ८० छोटी फर्मों में प्रतिस्पर्धा चलती है। इसी तरह तेल उद्योग में पाँच बड़ी फर्में हैं जिनके हाथ में इस उद्योग का ६० प्रतिशत व्यापार है। शेष ४० प्रतिशत व्यापार अन्य ५०० छोटी कम्पनियों के हाथ में है।

इस तरह जैसा कि जॉन कैनेथ गालब्रेथ ने कहा है, बड़ी दैत्याकार कम्पनियों को बाजार को हड़पने से रोकने के लिए हर व्यवसाय में कुछ न कुछ प्रतिसन्तुलनकारी ताकतें भी मौजूद हैं। उत्पादकों के मूल्यों को बढ़ने से रोकने के लिए प्रतिसन्तुलनकारी शक्ति के रूप में बड़े शृंखला भंडार हैं। इसी प्रकार बड़ी कम्पनियों की शक्ति को प्रतिसन्तुलित करने के लिए बड़ी श्रमिक यूनियनें भी मौजूद हैं जो अपनी शक्ति के बल पर उनसे टक्कर लेकर सौदेबाजी कर सकती हैं। ये यूनियनें न होतीं तो इन कम्पनियों की शक्ति के कारण श्रमिकों को मालिकों की दया पर निर्भर रहना पड़ता।

यद्यपि बहुत से आलोचक बड़ी कम्पनियों की परवाह नहीं करते, तो भी इसमें सन्देह नहीं कि ये कम्पनियां अमेरिकन जीवन में महत्त्वपूर्ण बुनियादी संस्थाएँ हैं। इन कम्पनियों ने अच्छी किस्म की वस्तुएँ कम मूल्य पर और विशाल मात्रा में जनता को मुहैया करने में अपनी श्रेष्ठता असन्दिग्ध रूप से साबित कर दी है। उनके पास वस्तुओं की

किस्म सुधारने और उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए अनुसन्धान के सर्वोत्तम साधन हैं। कर्मचारियों को लाभ पहुँचाने और उनके साथ सम्बन्धों को सुधारने की दिशा में भी छोटी कम्पनियों की अपेक्षा बड़ी कम्पनियाँ ही अग्रणी रहती हैं।

हमारी समाज-व्यवस्था की भाँति हमारी अर्थ-व्यवस्था की भी कोई सीधी-सादी व्याख्या नहीं की जा सकती क्योंकि उसमें बहुत विविधता है, तरह-तरह के परीक्षण किये जाते हैं और व्यावहारिकता और उपयोगिता को दृष्टि में रखा जाता है। यद्यपि हम सभी उच्च स्वर से निजी व्यापार-व्यवसाय का समर्थन करते हैं, किन्तु हम में से हर कोई किसी-न-किसी तरह का नियन्त्रण चाहता है। कोई उधार और ऋण की व्यवस्था पर, कोई एकाधिकार पर, कोई उद्योगव्यापी यूनियनों पर और कोई कृषि-जिन्सों के मूल्यों पर नियन्त्रण की माँग करता है। परस्पर-विरोध और संघर्ष की इन सब स्थितियों में सरकार को मध्यस्थता करनी पड़ती है और कभी किसी बात के पक्ष में और कभी विपक्ष में रुख अपनाना पड़ता है। उद्देश्य यह रहता है कि देश की अर्थ-व्यवस्था किसी-न-किसी रूप में सबके अनुकूल रहे, एक शक्ति दूसरी को प्रतिसन्तुलित करती रहे और सभी अधिकतम उत्पादन के लक्ष्य को पाने के लिए प्रयत्न करें ताकि उपभोग के लिए ज्यादा से ज्यादा सेवाएँ और वस्तुएँ उपलब्ध हो सकें।

उत्पादकता

संयुक्त राज्य को एक बहुत बड़ा लाभ यह है कि उसका आन्तरिक बाजार बहुत बड़ा और उन्मुक्त है। विदेशी आयात पर तटकर लगाये जाने से उसे बाहरी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण प्राप्त है और साथ ही अन्य देशों से माल लाने में भाड़ा इतना लग जाता है कि विदेशी सामग्री देशी उत्पादन का मुकाबला आसानी से नहीं कर सकती। देश के भीतर एक राज्य से दूसरे राज्य में माल ले जाने पर कोई सीमा कर नहीं देना पड़ता और, दूसरे, सारे देश में परिवहन के मार्गों और साधनों का जाल बिछा

होने से परिवहन भी बहुत आसान है। इससे अमेरिकन निर्माता देश के आन्तरिक बाजार के लिए बड़ी मात्रा में सामान तैयार कर सकते हैं और कार्यकुशलता की दृष्टि से हर काम में विशिष्टता प्राप्त कर कीमतें इतने नीचे स्तर पर ला सकते हैं कि आम जनता बिना किसी कठिनाई के उपभोग्य वस्तुएँ खरीद सके।

यद्यपि अमेरिकनों ने हमेशा यह घोषणा की है कि वे स्वतन्त्र व्यवसाय के पक्षपाती हैं, किन्तु उनकी यह घोषणा तथ्य के बजाय भावना पर अधिक आधारित होती है। यही कारण है कि वे व्यापार पर ऐसे नियन्त्रण की भी माँग करते रहे हैं जिससे कि समाज के विभिन्न अंगों की माँगों को सन्तुलित किया जा सके। देश के उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए तटकर, श्रमिकों को संरक्षण प्रदान करने के लिए सामाजिक बीमा और न्यूनतम वेतन के कानून, किसानों को राहत देने के लिए अनुपूर्त्तियाँ, उपभोक्ताओं की रक्षा के लिए खाद्य-पदार्थों और दवाओं में मिलावट को रोकने के कानून, मंहगाई और मुद्रास्फीति को रोकने के लिए ऋण-नियन्त्रण, सारे देश को संरक्षण और लाभ प्रदान करने वाले संघीय कार्यक्रमों के लिए धन जुटाने को क्रमिक आयकर, श्रमिक यूनियनों के सदस्यों एवं नेताओं को संरक्षण देने के लिए सामूहिक सौदेबाजी, सार्वजनिक उपयोग की सेवाओं और रेलभाड़ों का नियमन, हवाई लहरों और हवाई कम्पनियों पर नियन्त्रण, निवेशकों को संरक्षण देने के लिए शेयर-बाजार का नियमन—ये कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें जनमत ने या तो स्वयं माँगा है या जिन पर अनुमति दी है, ताकि सरकार उद्योगों और बाजार का नियमन कर सके। इन नियन्त्रणों और प्रतिबन्धों ने अनेक तरह से देश की अर्थ-व्यवस्था को मजबूत किया है। तब भी यह प्रश्न अभी तक बना हुआ है कि अमेरिकन प्रणाली में उत्पादकता इतनी कैसे बढ़ी है।

जैसा कि टॉनी और अन्य अनेक विद्वानों ने कहा है, प्रोटेस्टैंट आचार शास्त्र ने लोगों को कठोर परिश्रम करने के लिए प्रेरित किया और

यह उपदेश दिया कि उत्पादकता बढ़ाना एक ईश्वरीय वरदान है। डि टोकविल का कहना है कि अमेरिका में सबके लिए परिस्थितियों की समानता और वर्गभेद के अभाव का यह परिणाम था कि लोग खूब उत्साह से व्यापार और उद्योग में जुट गये। ग्रेटब्रिटेन से स्वतन्त्र होने पर अमेरिका के निर्माताओं और उत्पादकों को और भी अधिक प्रोत्साहन मिला। पश्चिम की ओर नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश के लिए विशाल पैमाने पर प्रसार और आबादी में भारी वृद्धि ने वस्तुओं की मांग को खूब बढ़ाया और उसने उत्पादन को प्रोत्साहन दिया।

कार्यकुशलता और उत्पादकता में वृद्धि का आन्दोलन एक लहर की तरह देश भर में फैला गया। विशेषज्ञ लोग झुण्ड के झुण्ड कारखानों में घूम कर काम देखते, घड़ियाँ हाथ में लेकर श्रमिकों और मशीनों का समय नापते, श्रमिकों की जगहें तब्दील करते, एक स्थान से दूसरे स्थान पर सामान पहुंचाने के लिए कन्वेयर बैल्टें लगवाते और हर श्रमिक के काम को कम कराते। ये विशेषज्ञ उत्पादकता और कार्यकुशलता बढ़ाने और मानवीय श्रम को कम करने की झोंक में इतना आगे बढ़ गये कि अब वहाँ से उल्टी दिशा की ओर गति प्रारम्भ हो गई है। अब श्रमिक को उत्पादन में अधिक-से-अधिक हिस्सा लेने का मौका दिया जा रहा है, ताकि वह यह अनुभव कर सके कि उसने भी कुछ किया है। किन्तु इन विशेषज्ञों ने यह अवश्य सिद्ध कर दिया कि काम के समय, काम के प्रवाह और काम के तरीके की अच्छी व्यवस्था न होने के कारण बहुत सा प्रयत्न और उद्योग व्यर्थ नष्ट हो रहा था।

उत्पादनों के आकार और शक्ल के निश्चित प्रतिमान निर्धारित कर दिये गये, जिससे अरबों डालर की बचत हो गई। पहले जहाँ अस्पतालों के लिए चालीस से अधिक तरह के पलंग बनते थे, वहाँ अब प्रतिमान निर्धारित कर दिये जाने से सिर्फ एक या दो ही तरह के बनने लगे। मोटर-निर्माताओं ने भी कुछ निश्चित बुनियादी टाइपों, फ्रेमों और इंजनों का निर्माण करना सीख लिया ताकि सब कारखानों में मामूली-

से ऊपरी परिवर्त्तनों से ही मोटरों के निर्माण में इनका उपयोग किया जा सके।

लागत का हिसाब लगाना, सांख्यिकी अनुसन्धान, विभिन्न कामों का विश्लेषण, वैज्ञानिक गवेषणा, व्यापारिक भविष्यवाणी, कारखानों में प्रयुक्त वस्तुओं का नियन्त्रण, गोदामों की उचित व्यवस्था, और उत्पादनों का द्रुत परिवहन—इन सब कामों के लिए विशेषज्ञ रखे जाने लगे और उनसे उत्पादन में कौशल लाने में बहुत मदद मिली।

अमेरिकन निर्माताओं ने यह भी सीखा कि मजदूरी में वृद्धि करके भी कैसे उत्पादन की लागत घटाई जा सकती है। यह निश्चित रूप से उनकी कार्यकुशलता का एक चिह्न था। कार्यकुशलता की एक पहचान और भी है और वह यह कि सोवियत रूस में जहाँ चार कारखाना मजदूरों पर एक दफ्तरी क्लर्क की आवश्यकता पड़ती है वहाँ अमेरिका में सात मजदूरों पर एक दफ्तरी बाबू होता है।

पुरानी प्रणाली में श्रमिक को अपनी कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए अधिक तेजी से काम करने के लिए प्रेरित किया जाता था, किन्तु नई प्रणाली में उसे अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक सुखी और सन्तुष्ट अनुभव कराया जाता है। मजदूरों के मनोरंजन के लिए कारखानों में संगीत का प्रबन्ध किया गया है। इसके लिए एक विशिष्ट सेवा प्रारम्भ की गई जो काम के समय, स्थान और श्रमिकों के मानसिक रुझान के अनुसार उचित संगीत का चुनाव करती थी। परिणाम यह हुआ कि श्रमिकों के मन पर तनाव कम हो गया और उन्हें अपना काम पहले की भांति नीरस नहीं लगता था। इससे सामान और मशीनों में टूट-फूट और दुर्घटनाओं में कमी हो गई। मालिकों को भी अपने आय-व्यय और सम्पत्ति के लेखे में यह फर्क स्पष्ट नजर आने लगा। अकेला एक संगीत कार्यक्रम ही इतने विशाल पैमाने पर आयोजित किया गया कि उसके श्रोताओं की संख्या पांच करोड़ थी।

इस बीच औद्योगिक अनुसन्धान, जिस पर प्रतिवर्ष २·६ अरब डालर खर्च होते हैं, उत्पादन के नये-नये आश्चर्यजनक तरीकों को जन्म दे रहा है। जनरल मोटर्स के कारखाने में स्वचालित यन्त्रों से उत्पादन की एक लम्बी शृंखला है जो हर घंटे में मोटरों के दो हजार पिस्टन तैयार करती है। काँच का सामान बनाने वाली एक कम्पनी के काँच को फुलाने वाले चौदह यन्त्र इतने विशाल और दैत्याकार हैं कि उनसे बिजली के बल्बों और रेडियों बल्बों की देश की कुल आवश्यकता का ९० प्रतिशत भाग पूरा हो जाता है। हालाँकि इनमें से हरेक मशीन के लिए केवल एक आपरेटर की आवश्यकता होती है, फिर भी इस कम्पनी ने चालीस वर्ष पूर्व की अपेक्षा आज डेढ़ गुने कर्मचारी काम पर रखे हुए हैं।

वैज्ञानिक गवेषणा के फलस्वरूप आज सैकड़ों तरह के ऐसे कृत्रिम कपड़ों, धुलाई के मसालों और मशीनों का निर्माण होने लगा है, जो खेतों और जंगलों में पैदा होने वाली प्राकृतिक वस्तुओं की जगह काम में लाये जा सकते हैं। इससे प्राकृतिक साधनों पर मानव की निर्भरता में एक बड़ी क्रान्ति आ गई है। आज रासायनिक पदार्थ तैयार करने वाले ऐसे विशाल संयन्त्र बन गये हैं कि उनसे रासायनिक उर्वरक, नकली रबड़, छापाखाने की स्याही और प्लास्टिक उद्योग के लिए कच्चे माल की एक लम्बी धारा निरन्तर ऐसे बहती हुई गिरती है, मानो पुराने जमाने के किसी काल्पनिक वैज्ञानिक उपन्यास का स्वप्न साकार हो रहा हो। प्लास्टिक ने तो न जाने कितनी किस्म के नये उद्योग खड़े कर दिये हैं।

यद्यपि रसायनशास्त्रियों और भौतिक विज्ञानवेत्ताओं ने पहले ही बहुत-से आश्चर्यों की सृष्टि कर दी है, तो भी ऐसा लगता है कि रसायनशास्त्री और भौतिक-विज्ञानवेत्ता जीवविज्ञान-वेत्ताओं के साथ मिल कर शायद और भी नई-नई किस्मों की वस्तुओं और उद्योगों को जन्म दे सकेंगे जिससे प्रकाश, वायु और जल से कृत्रिम रूप से उसी तरह के

खाद्य-पदार्थ भी कारखानों में बनने लगेंगे, जैसे स्वयं प्रकृति इन तत्त्वों से बनाती है।

नये-नये आविष्कारों से दफ्तरों के कामों में भी क्रान्ति हो रही है। एक सार्वजनिक सेवा कम्पनी ने, जो २० लाख ग्राहकों की सेवा करती है, अपने यहाँ इलैक्ट्रानिक गणना यन्त्र लगा रखे हैं। इन यन्त्रों से २७० व्यक्ति दो दिन में उतना काम कर लेते हैं, जितना पहले ५०० क्लर्क एक सप्ताह में करते थे। एक मशीन ऐसी भी है जिसमें पंच किये हुए कार्ड डालने से उन पर अंकित प्रायः हर प्रकार के प्रश्नों और शिकायतों के उत्तर मिल जाते हैं।

कारखानों में आज जो मशीनें इस्तेमाल की जाती हैं, वे कच्चे माल को स्वयं अन्दर ले जाती हैं, तैयार माल जब पेचीदा यन्त्रों से निकल कर बाहर आता है तो उसकी गलतियों पर नजर रखती हैं, कोई गलती हो तो उसे सुधार देती हैं, खुद रुक जाती हैं और चल पड़ती हैं, तैयार माल की जाँच करती हैं, खराब माल को अलग कर देती हैं, उत्पादित वस्तुओं की गिनती कर देती हैं और उनके इलैक्ट्रानिक "मस्तिष्क" में जो बातें भरी जाती हैं, उन्हें अंकित कर याद रखती हैं।

स्वचालित यन्त्रों के उपयोग से उत्पादन की विधियों ने अनेक उद्योगों में आमूलचूल परिवर्त्तन कर दिया है, फिर भी स्वचालित यन्त्रों के उपयोग का युग अभी प्रारम्भ ही हुआ है। इन स्वचल यन्त्रों के प्रयोग के कारण बिजली की लागत आज भी उतनी ही है, जितनी कि १९३९ में थी, हालांकि वैसे सब मिलकर जीवन-व्यय ९३ प्रतिशत बढ़ गया है।

कुछ लोग स्वचालित यन्त्रों के इस आविष्कार को खतरनाक समझते हैं क्योंकि इससे डिक्टेट और टाइप करने वाली मशीनें स्टेनोग्राफरों को, हिसाब-किताब की मशीनें गणकों और वही-खाता रखने वालों को और कांच को फुलाने और लोहे की आलमारियाँ बनाने वाली मशीनें यह काम करने वाले कारीगरों को बेकार कर रही है। दूसरी ओर ऐसे

लोग भी है जो इंजीनीयरों और टैकनीशियनों की माँग कर रहे हैं ताकि वे ऐसी मशीनों का आविष्कार कर सकें जो कमर-तोड़ मेहनत-मजदूरी का और तरह-तरह की बीमारियां पैदा करने वाले धन्धों का अन्त कर सकें, मजदूरों के काम के घंटे घटा सकें और उन्हें अधिक अवकाश देकर उनके सांस्कृतिक स्तर को ऊँचा उठा सकें।

कम्पनियां

इस जीवन्त अर्थ-व्यवस्था का उत्तरदायी केन्द्र कम्पनी है। कम्पनी (कार्पोरेशन) शब्द आज भी लोगों को, यहाँ तक कि अमेरिकनों को भी एक अशुभ का द्योतक लगता है, क्योंकि इससे हमें उन दिनों की याद आ जाती है जब अनियन्त्रित और लोभी कम्पनियाँ एकाधिकार स्थापित कर अर्थ-व्यवस्था को अपनी मुट्ठी में कर लेती थीं, विशाल सम्पत्ति बटोर कर लोगों को गरीब बना देती थीं, वित्तीय मामलों में धोखाधड़ी के सौदे करती थीं और राजनीतिक भ्रष्टाचार को प्रश्रय देती थीं।

पर आज जमाना कितना बदल गया है! आज कम्पनियाँ अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए कितनी व्यग्र और बेचैन रहती हैं, जनसम्पर्क अधिकारी नियुक्त कर जनता के सामने अपना अच्छा चित्र उपस्थित करती हैं, जो लोग उसके कारखाने देखना चाहते हैं उनका स्वागत करती हैं, शेयर होल्डर या स्कूलों के बच्चे, सबके प्रश्नों का भद्रता और सौजन्य से उत्तर देती हैं और अपने आदमियों को नागरिक गतिविधियों में उपयोगी ढंग से हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहन देती हैं।

अधिकतर कर्म-नियोजक, जिनमें कम्पनियाँ भी शामिल हैं, अभी तक अपेक्षाकृत छोटे हैं। कुल कर्म-नियोजकों में से ९० प्रतिशत ऐसे हैं जिनके यहाँ ३१ से कम कर्मचारी काम करते हैं। किन्तु सर्वोच्च वर्ग के पांच प्रतिशत कर्म-नियोजक ऐसे हैं जो देश के कुल कर्मचारियों में से ७० प्रतिशत को काम पर लगाए हुए हैं। इस समय २० लाख व्यक्ति व्यक्तिगत रूप में या साझेदारी में व्यापार-व्यवसाय में लगे हुए हैं किन्तु कम्पनियों की संख्या केवल पाँच लाख के लगभग है। लेकिन

इन कम्पनियों में से दो सौ के लगभग ऐसी हैं जिनके हाथ में करीब आधा व्यवसाय है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये कम्पनियाँ एक-दूसरी के साथ विलय करके या डायरेक्टरों और शेयरों का गठजोड़ करके अधिकाधिक विराट् आकर धारण करती जा रही हैं।

ये संगठन स्कूल और चर्च की भांति सामाजिक संगठन हैं। स्कूलों और गिरजाघरों की भांति लोगों के रहन-सहन और रवैये पर इनका भी गहरा असर पड़ता है। वास्तव में स्कूलों में जो शिक्षा दी जाती है और गिरजाघरों में जो उपदेश दिये जाते हैं उन्हें भी ये संस्थाएं बहुत कुछ प्रभावित करती हैं क्योंकि व्यापार-जगत् का, खासकर बड़ी कम्पनियों का, मानसिक रुझान ही सारे समाज का रुझान बना हुआ है।

इन विशाल दैत्याकार कम्पनियों का मालिक कौन है, उन पर नियन्त्रण किसका है और उनसे लाभ कौन उठाता है?

अधिकतर मामलों में कम्पनियों का स्वामित्व बहुत व्यापक होता है। अक्सर ऐसा होता है कि किसी कम्पनी में कर्मचारियों की जितनी संख्या होती है, उससे ज्यादा संख्या उसके शेयर-होल्डरों की होती है। ड्यूपांट कम्पनी के शेयर होल्डरों की संख्या १,६६,००० है, जबकि उसके कर्मचारी कुल ८९,००० हैं। जनरल मोटर्स के शेयर होल्डर ६,५६,००० और कर्मचारी ५,१४,००० हैं (विदेशों में भी इसके ८८,००० कर्मचारी हैं)। जनरल इलैक्ट्रिक के शेयर होल्डरों की संख्या २,९६,००० और कर्मचारियों की २,१०,००० है। अस्सी से नब्बे लाख तक अमेरिकन विभिन्न कम्पनियों के शेयर होल्डर हैं और इनमें से अधिकतर आज भी 'पूंजीपति' नहीं पुराने जमाने की भांति साधारण लोग ही हैं।

इस तरह एक बड़ी कम्पनी के मालिक आज देश भर में फैले होते हैं और कम्पनी पर उनका कोई प्रभावकारी नियन्त्रण नहीं होता। नियन्त्रण उच्च प्रबन्धकों और डायरेक्टर मंडल के हाथ में रहता है। फिर भी शेयर होल्डर कम्पनियों की वार्षिक बैठकों में शोर मचा सकते हैं और

मचाते भी हैं, इसलिए कम्पनियों के उच्च अधिकारी शेयर होल्डर के हितों के प्रति सजग रहते हैं। आर्थिक लोकतन्त्र के निरन्तर प्रसार के इस युग में मैनेजर यह जानते हैं कि उन्हें समाज-व्यवस्था के प्रति भी उत्तरदायी रुख अपनाना पड़ेगा, अन्यथा सरकार उन पर शिकंजा कसेगी। इसलिए उन्हें पांच प्रकार का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना पड़ता है। उन्हें शेयर होल्डरों को उचित डिविडेंड और मजदूरों को उचित वेतन देना पड़ता है ताकि उन्हें उत्पादन बढ़ाने को प्रोत्साहन मिले। जनता उनसे यह आशा करती है कि उसे कम-से-कम कीमत पर बेहतर किस्म का सामान मिलेगा और सरकार भी उनके मुनाफों में से जनकल्याण के कामों के लिए उचित हिस्सा चाहती है। उनका पाँचवां उत्तरदायित्व है पुरानी मशीनों को बदलने या कारखाने का विस्तार करने के लिए मुनाफे में से हिस्सा निकालना। यह पाँचवाँ हिस्सा पहले चारों दावेदारों को लाभ पहुँचाता है क्योंकि इससे कारखाने की उत्पादन-क्षमता बढ़ती है।

बड़ी फर्में अनचाहे और बिना कोई प्रयत्न किये ही आर्थिक संगठन की भाँति राजनीतिक और सामाजिक संगठन भी बन गई हैं। बड़ी कम्पनियाँ सरकार की तरह ही अधिकाधिक सोचने और काम करने लगी हैं। अपने आकार-प्रकार, पेचीदगी, समन्वय की समस्याओं और समाज पर अपने निर्णयों के प्रभाव की दृष्टि से कम्पनियाँ एक तरह की छोटी सरकार बन गई हैं, लेकिन बहुत छोटी भी नहीं।

बड़ापन किसी को अच्छा लगता है और किसी को उससे भय होता है। डेविड लिलियन्थाल ने, जो देश के एक प्रतिष्ठित नेता थे, यह मत प्रकट किया है कि बड़ी निजी कम्पनियों को बुरा समझना भूल है। उनका कहना है कि कम्पनियों का बड़ा होना अनिवार्य है, क्योंकि उससे उत्पादकता बढ़ती है, उपभोक्ता को कम मूल्य पर अच्छी और तरह-तरह की वस्तुएं मिलती हैं और ये दैत्याकार कम्पनियाँ आपसी प्रति-स्पर्धा और बड़ी श्रमिक यूनियनों और सरकार द्वारा लगाम खींची जाती रहने से काबू में भी रहती हैं। सी० राइट मिल्स ने इसके विपरीत यह

आशंका प्रकट की है कि कम्पनियाँ समाज पर हावी होती जा रही हैं और शोषण के द्वारा नहीं, बल्कि विज्ञापन आदि के द्वारा हमारे मन पर प्रभाव डाल कर और जो कुछ उनके पास है उसे खरीदने के लिए उकसा कर अपनी इच्छा को हम पर लाद रही हैं। किन्तु उन्होंने यह विचार व्यक्त करते हुए इस तथ्य को भुला दिया है कि कम्पनियों के इस प्रभाव को निरस्त करने के लिए यूनियन, चर्च और इसी तरह के अन्य संगठनों के रूप में कुछ प्रतिसन्तुलनकारी ताकतें भी मौजूद हैं।

निराशावादी लोग आज की बड़ी कम्पनियों की तुलना उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी वर्षों की उन कम्पनियों से तो करते नहीं, जो नितान्त उत्तरदायित्व-हीनता से लूटमार करती थीं, वे सिर्फ़ यही रट लगाए जाते हैं कि बड़ी कम्पनियाँ छोटी कम्पनियों और व्यवसायियों को खाती जा रही हैं या अपनी विशाल आर्थिक शक्ति के बल पर उन्हें नुक्सान पहुंचा रही हैं।

वास्तविकता यह है कि आज भी लाखों छोटे व्यवसायों के लिए अमेरिकन अर्थ-व्यवस्था में काफी स्थान है। छोटे या मध्यम दर्जे के कस्बे के जीवन में अब भी विभिन्न पेशों के लोगों, दुकानदारों, सेवाएँ उपलब्ध करने वाले व्यापारियों, छोटे पैमाने के कारखानेदारों आदि का बहुत बड़ा स्थान है। ये लोग और इनकी पत्नियाँ व्यापार-व्यवसाय के साथ-साथ ऐसे स्वैच्छिक संगठनों की प्रवृत्तियों में हिस्सा लेते रहते हैं, जो नगर के स्वास्थ्य और जन-कल्याण के लिए आवश्यक हैं। इन छोटे नगरों में नेतृत्व इन छोटे व्यपारियों और व्यवसायियों के हाथ में ही रहता है, कारण बड़ी फर्मों की जो शाखाएँ इन नगरों में होती भी है, उनके मैनेजर स्थायी नहीं होते, बल्कि बदलते रहते हैं। यह ठीक है कि इन छोटे व्यापारियों और व्यवसायियों पर बड़ी फर्मों के लोगों की प्रतिष्ठा और उनके जीवन-यापन और उपभोग के तरीकों का असर पड़ता है, परन्तु ये बड़ी फर्मों के अधिकारी भी स्थानीय समाज में अपना स्थान

बनाने के लिए स्थानीय भद्र वर्ग पर निर्भर करते हैं। इस तरह ये दोनों शक्तियाँ एक-दूसरे पर प्रभाव डालती रहती हैं।

ड्यूपौंट कम्पनी के क्रॉफोर्ड ग्रीनवाल्ट का कहना है कि "कोई भी व्यवसाय तब तक पनप नहीं सकता, जब तक कि वह जनता के हितों को सभी ओर से पूरा न कर सके। जैसे-जैसे एक व्यवसाय बड़ा होता जाएगा और उसमें नीति-निर्धारण का काम अधिकाधिक लोगों को सौंपा जाने लगेगा वैसे-वैसे वह व्यवसाय उस स्थान या काल के जनहित को अधिकाधिक व्यापक रूप में प्रतिबिम्बित करने लगेगा।"

यद्यपि क्रॉफोर्ड ग्रीनवाल्ट की फर्म के बहुत बड़ी होने के कारण रासायनिक उद्योग पर हावी होने से, उसके विरुद्ध अनेक बार कम्पनी गुट विरोधी कानून के अन्तर्गत कार्रवाई की जाती रही है, तो भी सचाई यह है कि इस फर्म ने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को व्यापार में लाने की बहुत कोशिश की है। यही नहीं, उसने यहाँ तक किया है कि अपने प्रतिद्वन्द्वियों को व्यापार में लाने के लिए उन्हें कारखाने खड़े कर के दिये और टैक्नीकल सहायता भी दी। यह कदम एकाधिकार की ओर नहीं, बल्कि एकाधिकार से विपरीत दिशा में है।

हाल में ही बड़ी कम्पनियों में एक प्रवृत्ति और भी नजर आई है और वह है नये-नये उद्योग प्रारम्भ कर विविध प्रकार की वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन करना अथवा छोटी कम्पनियों को अपने भीतर विलीन कर लेना। उदाहरण के लिए जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी बिजली के सभी प्रकार के सामान का निर्माण तो करती ही थी, अब वह जेट इंजिन और एयर कण्डीशनिंग (वातानुकूलन) उपकरण भी बनाने लगी है और अणु शक्ति के क्षेत्र में भी प्रविष्ट हो गई है। आज कम्पनियाँ एक साथ थोड़े समय के लिए बहुत बड़ा मुनाफा कमाने के बजाय दीर्घकाल तक थोड़ा-थोड़ा मुनाफा कमाते रहना पसन्द करती हैं ताकि व्यवसाय में वे जम जाएँ और अपना सुरक्षित स्थान बना लें।

इसलिए आज वे चार प्रतिशत से भी कम मुनाफा कमाने की आशा करती हैं।

संघीय सरकार द्वारा मुनाफे पर भारी कर लगा दिये जाने के कारण अनेक बड़ी कम्पनियाँ यह पसन्द करती हैं कि मुनाफा दिखाकर सरकार को टैक्स भरने के बजाय जन-सेवा के कामों के लिए स्वैच्छिक संगठनों को दान दे दें। बड़े उद्योग विश्वविद्यालयों और कालेजों को भी उदारता से दान देने लगे हैं, क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि व्यापार व्यवसाय और उद्योग क्षेत्र के नेता भविष्य में उच्च शिक्षा की इन संस्थाओं से ही मिलेंगे।

बड़ी कम्पनियों के इन कार्यों के पीछे एक ओर स्वार्थ की भावना विद्यमान है, और दूसरी ओर यह चिन्ता भी निहित है कि आम जनता उनके बारे में अच्छी धारणा बनाये। इसलिए जनता के मन पर वे यह छाप डालना चाहती हैं कि वे बड़ी सेवाभावी, परोपकारी और जन-हितकारी संस्थाएँ हैं और साथ ही जनता को उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ मुहैया कर और मजदूरों को मजदूरी देकर राष्ट्र की समृद्धि में योग देती हैं।

पुराने जमाने की और आज की कम्पनियों में जो भारी अन्तर है उसकी सबसे अच्छी मिसाल शायद हेनरी फोर्ड और उनका पोता हेनरी द्वितीय हैं। हेनरी फोर्ड अपने विशाल उद्योग को अपने परिवार में ही सीमित रखते थे। वे अपने कर्मचारियों के लिए वेतन-मान निर्धारित करते थे, किन्तु लोगों को बार-बार नौकरी से बर्खास्त कर उनकी तरक्कियाँ रोक कर या पदावनति कर उन्हें वेतन-मान की उच्चतम सीमा पर नहीं पहुँचने देते थे। वे हर समय अपने साथ अंगरक्षक रखते थे और अपने कर्मचारियों में साजिश के बीज बोकर या उनमें पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष और प्रतिस्पर्धा पैदा कर अपने व्यवसाय की रक्षा करते थे। लेकिन हेनरी फोर्ड के अपने श्रमिकों के साथ जितने खराब सम्बन्ध थे, हेनरी द्वितीय के सम्बन्ध उतने ही मधुर और शान्ति पूर्ण हैं। उन्होंने व्यापार के साथ-साथ जन-

सेवा का भी कार्य किया और संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपने देश का प्रतिनिधित्व किया। उनके दादा फोर्ड प्रतिष्ठान के लिए जो धन छोड़ गये थे, उससे उन्होंने सामाजिक अनुसन्धान के व्यापक कार्यक्रमों को प्रोत्साहन दिया।

किन्तु हेनरी फोर्ड द्वितीय एक अपवाद मात्र हैं, क्योंकि उनका जन्म ऐश्वर्य और वैभव के बीच में हुआ था। औद्योगिक जगत् के नौ हजार विशिष्ट व्यक्तियों और नेताओं के जीवन का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि एक नौजवान के लिए, जिसके पास अपनी योग्ता के सिवाय कोई पूँजी नहीं है, उच्चतम पद पर पहुँचने के अवसर अपने दादा की अपेक्षा कहीं अधिक हैं। और यदि वह बड़ी कम्पनी में हो तो ये अवसर और भी अधिक रहते हैं। पिछले पचास वर्षों में कम्पनियों के प्रवन्ध विभागों में श्रमिकों के लड़कों का अनुपात दुगुना हो गया है। किन्तु व्यापार-व्यवसाय में सफलता पाने और उच्च पद पर पहुँचने के लिए आज मालिक की लड़की से शादी करने की अपेक्षा भी अधिक अच्छा और सुनिश्चित मार्ग कालेज की ऊँची डिग्री लेना है।

कोई भी व्यक्ति व्यापार-व्यवसाय में क्यों और कैसे सफल होता है ? पहली बात यह है कि व्यापार-व्यवसाय में आ जाने पर वह यह अनुभव करता है कि वह भावनात्मक दृष्टि से स्वतन्त्र है। माता-पिता पर उसकी निर्भरता समाप्त हो जाती है। वह असफलता से डरता है और इसीलिए उससे बचने का प्रयत्न करता है। वह अपने उच्च अधिकारियों की भावनाओं और इच्छाओं को ध्यान में रखता है। वह अपने में ही सीमित और सिमटा नहीं रहता दूसरों के साथ काम करके आनन्द अनुभव करता है। वह जानता है कि दूसरों को खुश रखते हुए उनसे काम कराने का क्या तरीका है। वह कम्पनी के लिए और उसके उत्पादनों और नीतियों के लिए अपनी सृजनात्मक योग्यता का योगदान करता है। वह बुद्धिजीवी की अपेक्षा प्रतिभाशाली अधिक है।

मार्क्स ने पूंजीवाद के बारे में जितनी भी अशुभ भविष्यवाणियाँ

की थीं, वे सभी गलत सिद्ध हुई हैं। कर्मचारियों और श्रमिकों का जीवन-स्तर ऊंचा हुआ है, उनके काम के घंटे कम हुए हैं, और राष्ट्र की आय का वितरण अधिक समान और न्यायोचित हुआ है। मार्क्स की आशा और भविष्यवाणी के विपरीत औपनिवेशिक साम्राज्य विघटित हो रहे हैं या स्वेच्छा से छोड़े जा रहे हैं और कृषकों का शोषण होने के बजाय राज्य उन्हें सहायता दे रहा है।

काम के घंटों में कमी करने से जो क्षति होती है उसकी पूर्ति मशीनों की उत्पादकता में वृद्धि से हो जाती है। इसके अलावा काम के घंटे कम होने से श्रमिकों को थकान कम होती है और वे अधिक काम कर सकते हैं और उसमें गलती भी कम होती है।

एक ओर जहाँ काम के घंटे कम हो रहे हैं, वहाँ मजदूरी और वेतनों में वृद्धि हो रही है। संयुक्त राज्य में पूरे समय काम करने वाले पुरुषों की औसत वार्षिक आमदनी ४,२०० डालर और स्त्रियों की २,७०० डालर है। ये संख्याएं कम आश्चर्यजनक नहीं हैं। राष्ट्रीय आय का जो भाग कर्मचारियों को मिलता है, उसमें भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। प्रति मानव घंटा उत्पादन में २ प्रतिशत वृद्धि हो रही है और उतनी ही वृद्धि प्रति व्यक्ति क्रय-शक्ति में भी हो रही है। इस क्रय-शक्ति का लाभ भी अब पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक क्षेत्र को मिल रहा है।

श्रमिकों को अपने उत्पादन का न्यायपूर्ण हिस्सा प्राप्त करने के लिए समझौते की बातचीत करने में सहायता देने के उद्देश्य से सरकार ने अनेक कानून बनाये हैं। इन कानूनों से यूनियनें श्रमिकों की ओर से सामूहिक सौदेबाजी कर सकती हैं, स्त्रियों और बच्चों की अनुचित श्रम और शोषण से रक्षा की जा सकती है, काम के घंटे नियत किये जा सकते हैं, न्यूनतम वेतन निर्धारित किया जा सकता है, अवकाश-प्राप्त श्रमिकों और उनके आश्रितों को पेन्शन देने की व्यवस्था की जा सकती है, बेरोजगारों को सहायता दी जा सकती है, श्रमिकों को व्यावसायिक व शिल्पिक प्रशिक्षण दिया जा सकता है, कारखानों में मजदूरों की सुरक्षा

का प्रबन्ध किया जा सकता है और काम करते हुए घायल होने या शारीरिक क्षति होने पर मजदूर को मुनाफा दिलाया जा सकता है।

इनमें से अनेक लाभों और श्रमिकों के हित-संवर्धन का श्रेय विश्व के सबसे बड़े ट्रेड यूनियन आन्दोलन को है। संयुक्त राज्य के १ करोड़ ८० लाख नर-नारी, यानी कृषि-भिन्न श्रमिकों का एक-तिहाई भाग, यूनियनों के सदस्य हैं। किसी जमाने में मालिकों और श्रमिकों के बीच जमकर संघर्ष होता था, पर आज उनमें बराबरी के स्तर पर बातचीत होती है और यदि दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़े रहते हैं तो भी उनमें सौहार्द बना रहता है। स्थानीय आधार होने पर भी ये वार्ताएं प्रायः समूचे उद्योग के लिए होती हैं।

सन् १९५५ में अमेरिकन मजदूर संघ (अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर) और औद्योगिक संगठन कांग्रेस (कांग्रेस ऑफ इंडस्ट्रियल आर्गे-नाइजेशन्स) का विलय हो जाने के बाद यूनियनों के अधिकतर सदस्य समान नेताओं के अधीन संगठित हो गये हैं। सामान्यतः हर मजदूर अपने विशिष्ट व्यवसाय की राष्ट्रीय यूनियन की स्थानीय शाखा का सदस्य होता है। उदाहरण के लिए यूनाइटेड ओटोमोबील वर्कर्स अथवा लिथोग्राफर्स नामक श्रमिक संगठन राष्ट्रीय संगठन हैं, किन्तु जिन व्यव-सायों के श्रमिकों की ये यूनियनें हैं उनके सदस्य इन यूनियनों की अपने शहर की शाखाओं के सदस्य हैं। देश भर में इन स्थानीय यूनियनों की संख्या ७० हजार से भी अधिक है। इन स्थानीय यूनियनों को मिलाकर राष्ट्रीय यूनियनें बनती हैं जो हमारे संघीय शासन के घटक राज्यों या राज्यीय राजनीतिक दलों की भांति स्वशासित और स्वतन्त्र संगठन हैं। संघवाद और केन्द्रीय नियन्त्रण का विरोध केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वे श्रमिक क्षेत्र में भी व्यापक हैं।

सामूहिक सौदेबाजी यूनियन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। यह सौदेबाजी और वार्ता मुख्यतः इन विषयों पर होती हैं : (१) समझौते का स्वरूप और अवधि एवं अवधि बढ़ाने की व्यवस्था तथा हड़तालों

और तालाबन्दियों को रोकने की व्यवस्था; (२) यूनियनों और प्रबन्धकों के अधिकार, यूनियनों की मान्यता एवं मजदूरों की नियुक्ति में उनकी भूमिका; (३) मुआवजा, वेतन और मजदूरी और उनमें वृद्धि की दरें एवं पेन्शन, स्वास्थ्य कोष और सवेतन छुट्टी आदि अन्य लाभ; (४) श्रमिकों की नियुक्ति, स्थायित्व, तरक्की, काम न रहने पर अलहदगी और पुर्ननियुक्ति; (५) काम की परिस्थितियाँ, सफाई, स्वच्छता, सुरक्षा, काम की रफ्तार, दैनिक और साप्ताहिक काम के घंटे।

यूनियनों को सार्वजनिक रूप से मान्यता अभी हाल में ही मिली है, किन्तु अब यह मान्यता अमेरिकन जीवन का अंग बन गई है, हालांकि कुछ उद्योग-संचालक प्राइवेट तौर पर इससे असन्तुष्ट हैं। किन्तु यह बात थोड़ी-बहुत सर्वत्र अनुभव की जाने लगी है कि मजदूर लोग अपनी शक्ति का उपयोग कर ऐसे लाभों की भी माँग कर सकते हैं जिनसे मंहगाई का खतरा पैदा हो जाए, क्योंकि मजदूरों की मांगें पूरी करने के लिए मालिकों का जो खर्च बढ़ेगा उसकी वसूली वे उपभोग्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ाकर करेंगे और अन्ततः उसे उपभोक्ताओं की जेब से निकालेंगे।

अनेक यूनियनों ने इस तथ्य को भली-भांति महसूस कर समझदारी का परिचय दिया है कि उनके सदस्यों का कल्याण भी मालिकों और आम जनता के कल्याण के साथ अविच्छिन्न रूप से बंधा हुआ है। उदाहरण के लिए अमलगमेटेड क्लोदिंग वर्कर्स यूनियन प्रबन्धकों को काम के नियमित प्रवाह की व्यवस्था करने, उत्पादन का स्तर निर्धारित करने, हाथ के काम की जगह मशीन का उपयोग प्रारम्भ करने, काम की कमी से बेकार होने वाले श्रमिकों को दूसरे कामों में स्थानान्तरित करने और पूंजी के रूप में उपयोग के लिए धन उधार देने में सहायता देती है। इंटरनेशनल लेडीज गार्मेण्ट वर्कर्स यूनियन ने अपने निज के इंजीनियर रखे हुए हैं जो मालिकों को उत्पादकता वृद्धि में सहायता देते हैं। अधिकतर सफल यूनियनें जानती हैं कि मजदूरी और अन्य लाभों में

वृद्धि का एकमात्र उपाय उत्पादकता को बढ़ाना है। इसलिए वे यह प्रयत्न करती हैं कि उत्पादकता बढ़े और उसके लाभ में से श्रमिक को भी उचित हिस्सा मिले। वाल्टर रॉयथर जैसे नेताओं का तो यह ख्याल है कि श्रमिकों को कम्पनियों के रिकार्ड भी दिखाए जाने चाहिएं ताकि वे कम्पनी की स्थिति को देखकर उचित और सही माँगें कर सकें और कम्पनी की आर्थिक स्थिति में सुधार कर उससे श्रमिकों के लिए सामाजिक लाभ प्राप्त कर सकें।

श्रमिकों ने अनुभव से यह भी सीख लिया है कि सरकार को बीच में डालने की अपेक्षा मालिकों के साथ सीधी बातचीत और सौदा करने में उनका अधिक लाभ है। यद्यपि यूनियनों की राजनीतिक कार्रवाई समितियां हैं और वे श्रमिकों के साथ सहानुभूति रखने वाले उम्मीदवारों को कांग्रेस (संसद्) के चुनावों में जितवाने के लिए उनके पक्ष में प्रचार भी करती हैं तो भी मूलतः यूनियनों की प्रवृत्तियाँ राजनीतिक न होकर व्यावसायिक होती हैं।

यह प्रणाली श्रमिकों के लिए बड़ी अच्छी और सफल साबित हुई है। हाल के वर्षों में यूनियनों ने बड़े उद्योगों में अपनी निज की दुकानें खुलवाने (१९४१), स्वास्थ्य और कल्याण योजनाएँ मंजूर कराने (१९४६), सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ पेंशन भी दिलाने (१९४९), जीवन-व्यय में वृद्धि के साथ-साथ मजदूरी में भी वृद्धि कराने (१९५०) और बेरोजगारी के समय मजदूरों को राहत दिलाने (१९५५) में सफलताएँ प्राप्त की हैं। यूनियनों की एक बड़ी सफलता यह है कि उन्होंने सिद्धान्ततः यह स्वीकार करा दिया है कि श्रमिकों का कल्याण मालिकों और प्रबन्धकों की जिम्मेदारी है।

यूनियनें स्वयं बहुत बड़े पैमाने पर पूंजीपति बन गई हैं। उनकी बड़ी-बड़ी रकमें सरकारी हुण्डियों और अन्य शेयरों में लगी हुई हैं। अकेली यूनाइटेड ओटोमोबील वर्कर्स के पास ४ करोड़ डालर की पूंजी है। अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर और कांग्रेस ऑफ इण्डस्ट्रियल

आर्गेनाइजेशन्स की संयुक्त संस्था (ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ०) के हैडक्वार्टर का वार्षिक बजट ही ८० लाख डालर का होता है। यूनियनें अपने नेताओं को अच्छा वेतन देती हैं। ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ० के अध्यक्ष जार्ज मीनी को ३५,००० डालर वार्षिक वेतन मिलता है। किन्तु कुछ राष्ट्रीय यूनियनों के अध्यक्षों को इससे भी ज्यादा वेतन मिलता है। स्टील वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष डेविड मैकडोनल्ड को ४०,००० डालर मिलते हैं।

यूनियन आन्दोलन प्रारम्भ में सरकार की सहानुभूति और समर्थन से और उसके बाद अपनी निज की शक्ति के उपयोग से विकसित होकर आज एक प्रतिसन्तुलनकारी शक्ति बन गया है। उसने श्रमिकों की मेहनत के फल को अधिक व्यापक क्षेत्र में वितरित करने में सहायता दी है और इसके लिए अर्थ-व्यवस्था को शक्तिशाली, स्वस्थ और सप्राण बनाये रखने का प्रयत्न किया है।

यदि यूनियन और प्रबन्धक समझौते की वार्त्ता में असफल हो जाएँ तो वे संघीय मध्यस्थता एवं संराधन सेवा (फेडरल मीडिएशन एण्ड कन्सिलियेशन सर्विस) का लाभ उठा सकते हैं, परन्तु इसके लिए दोनों का राजी होना जरूरी है। प्रतिवर्ष यह सेवा हजारों मामले निबटवाती है, जो इसकी सहायता के बिना हड़ताल का रूप धारण कर सकते हैं। सामूहिक सौदेबाजी के तरीके से सम्बद्ध मामलों पर, जैसे अनुचित उपाय बरतना आदि, फैसला कराने या कर्मचारियों के मतदान का निरीक्षण कराने के लिए राष्ट्रीय श्रम सम्बन्ध बोर्ड (नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड) की शरण ली जा सकती है। आजकल हड़तालों की संख्या बहुत कम हो गई है और जो थोड़ी-बहुत हड़तालें होती भी हैं, उनमें १९३० के दशक की भांति खूनी संघर्ष का वातावरण नहीं होता। सन् १९५६ की इस्पात उद्योग की हड़ताल में स्वयं श्रमिकों ने ही इस्पात सयन्त्रों की भट्टियों को सावधानी से बन्द कर दिया था ताकि उन्हें किसी तरह का नुकसान न पहुँचने पाए। कुछ हड़तालियों ने कम्पनी के दरवाज़े पर

डेरा जमा लिया और वे इस बात पर नजर रखने लगे कि कहीं कोई ऐसा आदमी भीतर न चला जाए जो कारखाने को नुक्सान पहुँचाये और बहुत-से श्रमिक मालिकों से छुट्टी के दिनों का पैसा लेकर अपने परिवारों के साथ छुट्टी मनाने बाहर चले गये।

उद्योगों में जैसे पुराने जमाने के मैनेजर नहीं रहे, वैसे ही पुराने श्रमिक नेता भी नहीं रहे। पुराने मैनेजरों की जगह, जो स्वयं मालिक भी होते थे, अब पेशेवर वेतनभोगी मैनेजर आ गये हैं। उसी तरह श्रमिक नेता भी आज पेशेवर होते हैं। उनमें कानूनवेत्ता, अर्थशास्त्रज्ञ, प्रचार-विशेषज्ञ और शिक्षाशास्त्री सभी तरह के प्रशिक्षित लोग होते हैं। श्रमिक आन्दोलन ६०० पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है। सन् १९५० में इण्टरनेशनल लेडीज गार्मेण्ट वर्कर्स यूनियन ने यूनियन के काम को अपनी जीविका का साधन बनाने के इच्छुकों के लिए एक स्कूल खोला था। विस्कौन्सिन विश्वविद्यालय श्रमिकों के लिए एक ग्रीष्मकालीन विद्यालय चलाता है, जो श्रमिकों को विश्वविद्यालयी जीवन का कीमती अनुभव प्रदान करता है। उद्योग-व्यवसाय के प्रबन्धकों की भाँति श्रमिक यूनियनें भी नगर के जीवन में सक्रिय भाग लेती हैं, नगर परिषदों में उनके प्रतिनिधि होते हैं और वे विभिन्न कोशों के लिए धन-संग्रह में सहायता देती हैं।

श्रमिकों की शक्ति बहुत बढ़ जाने से कुछ नई समस्याएं भी पैदा हो गई हैं। बड़े उद्योगों में सामूहिक सौदेबाजी का अर्थ-व्यवस्था पर अर्थात् मूल्यों, रोजगार की स्थिति और नये कारखाने के लिए स्थान के चुनाव के बारे में उद्योग-संचालकों के निर्णय आदि पर, व्यापक प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। इसके अलावा यूनियनों के पास इतनी ताकत है कि वे अधिकारक्षेत्र सम्बन्धी विवादों में मतदान को अपने मन के अनुकूल नियन्त्रित करने के लिए हड़ताल के साधन का उपयोग कर सकती हैं, अपने सदस्यों पर भारी फीस और चन्दा लगा सकती हैं और जो सदस्य

सत्तारूढ़ गुट के आदेश का पालन न करे उसे संगठन से निकाल भी सकती हैं।

कुछ यूनियनों में सत्तारूढ़ गुट की तानाशाही बाकायदा एक राष्ट्र-व्यापी बुराई बन गई है। म्युजीशियन यूनियन और टीमस्टर यूनियन इसके उदाहरण हैं। इस तानाशाही और लोकतन्त्र-विरोधी आचरण के कारण इंटरनेशनल लांगशोरमैन असोसिएशन को तो ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ० ने अपने संगठन से बाहर ही निकाल दिया था। बड़े नगरों में भवन-निर्माण का काम करने वालों ने, ठेकेदारों की मदद से, निर्माण के व्यवसाय पर एकाधिकार स्थापित कर लिया है। उन्होंने यूनियन की सदस्यता सीमित कर दी, काम की गति धीमी कर दी, प्रतिबन्धक कानून पेश कराए, निर्माण के कार्यों में किसी भी तरह की नई विधियां अपनाने में रुकावट डाली और कीमतें ऊँची कर दीं, जिसका फल यह हुआ कि भवन-निर्माण उद्योग शेष अर्थ-व्यवस्था से वर्षों पीछे रह गया। श्रमिकों और इस प्रकार के गोलमाल करने वालों की कितनी ही साजिशों का भंडाफोड़ हो चुका है।

फिर भी आधुनिक श्रमिक आन्दोलन आज इसलिए आवश्यक है कि मजदूर को अपनी मजदूरी की सुरक्षा चाहिए। आज की दुनिया में वह अपनी जीविका के लिए नौकरी और मजदूरी पर ही निर्भर है और यदि वह उनसे वंचित हो जाए तो उसे जीवन-निर्वाह के लिए और कोई सहारा नहीं है। यूनियनें इस परोपजीवी श्रमिक के प्रवक्ता और संरक्षक का काम करती हैं। फिर भी आज एक-तिहाई से भी कम अमेरिकन मजदूर यूनियनों के सदस्य हैं। दक्षिणी राज्यों में, रासायनिक पदार्थों के उद्योगों में और दफ्तरों में काम करने वाले कर्मचारियों में यूनियनों का संगठन बहुत कम है, परन्तु अब यूनियनें उन्हें भी इस आन्दोलन में सम्मिलित करने का प्रयत्न कर रही हैं।

श्रमिक आन्दोलन ने समाज में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है, इसका एक प्रमाण यह है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उसने

अन्य देशों में भी श्रमिकों के आन्दोलन को प्रोत्साहित और अनुप्राणित किया। ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ० संगठन प्रतिवर्ष २,५०,००० डालर विदेशों के साथ सम्पर्क बनाये रखने पर खर्च करता है, अपनी पत्रिकाओं के विदेशी संस्करण निकालता है, ब्रुसेल्स में अपना एक स्थायी कार्यालय चलाता है, और सभी जगह ट्रेड यूनियनों की स्वतन्त्रता और श्रमिकों के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के आन्दोलन का समर्थन करता है। अमेरिकन यूनियनें विदेशी श्रमिक नेताओं को अतिथि के रूप में आमन्त्रित करती हैं, जिससे उन्हें अमेरिकन श्रमिक आन्दोलन की प्रणाली को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिलता है।

शेयर होल्डर

उद्योगों का, जिन पर देश की उत्पादक और निरन्तर विस्तीर्यमाण अर्थ-व्यवस्था निर्भर है, मालिक कौन है ?

कम्युनिस्ट अब भी यह प्रोपेगेंडा करते हैं कि वाल स्ट्रीट के पूंजीपति ही इन उद्योगों के मालिक हैं। वे वाल स्ट्रीट के पूंजीपतियों का चित्रण करते हुए उन्हें रेशमी हैटों और आगे से खुले लम्बे कोटों में लैस होकर गरीब आदमियों की लाशों को रौंदते हुए दिखाते हैं। अमेरिकन परराष्ट्र विभाग का एक अधिकारी एक बार दो रूसी अतिथियों को न्यूयार्क के फिफ्थ एवेन्यू में घुमाने ले गया। उस दिन ईस्टर का रविवार था। लोग गिरजाघर में प्रार्थना करके बाहर आये थे। इन लोगों में से कुछ रेशमी हैट और आगे से खुले लम्बे कोट पहने हुए थे, साल भर में शायद एक ही दिन उन्हें पुराने ढंग की यह पोशाक पहनने को मिलता था। रूसी लोग उन्हें देखकर ऐसे चौंके, जैसे अभी टैक्सी की खिड़की से बाहर गिर पड़ेंगे।

"वह देखो, पूंजीपति लोग जा रहे हैं।" वे चिल्लाए।

किन्तु अगर उन्होंने सचमुच अमेरिका की किसी ठेठ पूंजीपति महिला को देखा होता तो वे उसे पहचान भी न पाते। महिला की बात हम इसलिए कह रहे हैं कि संयुक्त राज्य के ८६,००,०००

शेयर होल्डरों में से आधी से कुछ अधिक संख्या महिलाओं की है। समस्त पूंजी-निवेशकों में से ३४ प्रतिशत गृह-पत्नियाँ हैं। यही नहीं, जिस पूंजी निवेशक (इन्वेस्टर) को लेकर कम्युनिस्ट जगत् में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं, उसकी औसत आयु ४८ वर्ष है और वह २५ हजार आबादी के एक छोटे शहर में रहता है और उसकी औसत वार्षिक पारिवारिक आय ७,०५० डालर से भी कम है। करीब दस लाख पूंजी निवेशकों की वार्षिक आमदनी ३,००० डालर से भी कम है। हर बारह वयस्कों में से एक के पास आज किसी न किसी सार्वजनिक कम्पनी के शेयर हैं और करीब १५ लाख व्यक्ति ऐसे हैं जो प्राइवेट कम्पनियों के शेयर होल्डर हैं। इनके अलावा दस करोड़ व्यक्ति जीवन बीमा या पेन्शन निधि के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से कम्पनियों के शेयरों के मालिक हैं।

शेयरों में पूंजी लगाना अमेरिका में इतना लोकप्रिय हो गया है कि शेयर बाजार के दलाल सार्वजनिक व्याख्यानों का आयोजन कर लोगों को शेयरों की खरीद के सिद्धान्त समझने में सहायता देते हैं। स्थान-स्थान पर पूंजी निवेश क्लबें बन रही हैं ताकि छोटे खरीदार उनमें पैसा जमा कर नियमित रूप से शेयर खरीदते रह सकें। इसी तरह की और भी अनेक योजनाएँ हैं। न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज ने एक मासिक निवेश योजना चालू की हुई है। इसी प्रकार कई पारस्परिक निधियां भी हैं जिनसे छोटे निवेशकों को विविध प्रकार की कम्पनियों में अपना पैसा लगाने का अवसर मिलता है (इन निधियों में इस समय २ अरब डालर लगे हुए है)। कर्मचारी शेयर खरीद योजनाओं के अन्तर्गत कर्मचारियों को भी अपनी कम्पनियों के शेयर खरीदने की सुविधा है। अमेरिकन टेलीफोन एण्ड टेलीग्राफ कम्पनी के करीब ढाई लाख कर्मचारियों के पास और सोकोनी मोबील कम्पनी के ८८ प्रतिशत कर्मचारियों के पास अपनी कम्पनियों के शेयर हैं।

यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के बेंजामिन फेयरलेस ने एक बार यह प्रश्न किया था कि यदि हमारे कर्मचारी ही कम्पनी के मालिक

हो जाएँ तो क्या होगा ? फिर स्वयं ही इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था, "तब कम-से-कम हड़तालों की चिन्ता से हम मुक्त हो जाएँगे, क्योंकि कम्पनी के मालिक स्वयं कैसे हड़ताल कर सकते हैं ?"

यद्यपि यह परिवर्तन बहुत जल्दी होने की सम्भावना नहीं है, तो भी यह सच है कि अधिकाधिक संख्या में सामान्य लोग अब कम्पनियों के शेयर खरीदने लगे हैं, लेकिन शेयरों के बड़े थोक अब भी थोड़े-से लोगों के ही हाथ में हैं। प्रसिद्ध बड़ी कम्पनियाँ अपने शेयरों को छोटे टुकड़ों में बांट रही हैं ताकि सामान्य व्यक्ति भी उन्हें बिना किसी कठिनाई के खरीद सकें। वे जनसाधारण को अपनी स्थिति की जानकारी देने के लिए सरल भाषा में और चार-चार रंगों की आकर्षक रिपोर्टों में अपने विवरण प्रकाशित करती हैं। वे अपनी वार्षिक बैठकें आयोजित करती हैं, जहां कम्पनी का डेढ़ लाख डालर वार्षिक वेतन पाने वाला अध्यक्ष सामान्य शेयर होल्डर तक की शिकायतें धैर्य से सुनता है। कभी-कभी तो उसे स्वयं अपने कर्मचारी को भी, जो कम्पनी का शेयर होल्डर होता है, जवाब और सफाई देनी पड़ती है।

कर्मचारी और कम्पनी के शेयर होल्डर के बीच की और कम्पनी के शेयर होल्डर और उपभोक्ता के बीच की विभाजक रेखाएं अब धीरे-धीरे मिटती जा रही हैं। कम्पनी के शेयर होल्डर को अपने डिविडेंड के चैक के साथ ही छपे हुए ऐसे कागज भी मिलते हैं जिनमें कम्पनी द्वारा तैयार की जाने वाली वस्तुओं का विवरण रहता है और उससे यह अपील की जाती है कि वह इन वस्तुओं का स्वयं उपयोग कर और अपने मित्रों को भी उसकी सलाह देकर अपना मुनाफा बढ़ाए। जब कम्पनी का स्वामित्व इतने व्यापक क्षेत्र में फैला हुआ हो तो वह अर्थ-व्यवस्था किस ढंग की होगी ? आज अमेरिकन प्रणाली में उद्योगों का राष्ट्रीय-करण करने और उसके द्वारा राजनीति और अर्थनीति को परस्पर मिलाने के बजाय, प्रवृत्ति यह है कि उनका स्वामित्व अधिक-से-अधिक

व्यक्तियों के हाथों में फैला दिया जाए ताकि उनका राष्ट्रीयकरण होने के स्थान पर लोकतन्त्रीकरण हो जाए ।

हाल के वर्षों में शेयर बाजार की स्थिरता और दृढ़ता से छोटे निवेशकों को बहुत प्रोत्साहन मिला है। उन्हें नियमित रूप से डिविडेंड और मुनाफा मिलता रहा है और साथ ही उन्होंने यह भी अनुभव किया है कि जहाँ पैसे की क्रय-शक्ति (बीस वर्ष में) घटकर आधी रह गई है, वहाँ सामान्य शेयरों की कीमत बढ़कर तीनगुनी हो गई है। इस प्रकार शेयरों में धन का निवेश मुद्रा-स्फीति को बढ़ने से रोकता है। पार्क एवेन्यू की एक साधारण महिला ने चार हजार डालर की रकम युद्ध से पूर्व शेयरों में लगाई थी, जो अब चालीस हजार डालर बन गई है। इसी तरह बूट पालिश करने वाले एक लड़के ने एक खास कम्पनी के शेयर पर बहुत भरोसा होने के कारण उसमें ८०,००० डालर लगा दिए। आज ये दोनों उद्योगों की बढ़ती हुई उत्पादकता और उत्पादन-क्षमता का लाभ उठा रहे हैं।

इन छोटे निवेशकों की बूंद-बूंद कर लगी पूंजी ने वाल स्ट्रीट का चेहरा बदल दिया है और बड़े पूंजीपतियों के प्रभाव को कम कर दिया है। अब बड़ी औद्योगिक कम्पनियां वाल स्ट्रीट के पूंजीपतियों की शरण में गए बिना स्वयं ही अपने लिए पूंजी का प्रबन्ध कर लेती हैं। वे या तो अपने मुनाफे को फिर से अपने व्यवसाय में लगा देती हैं (आजकल ६० प्रतिशत आय फिर से व्यवसाय में लगाई जाती है, जबकि १९२० के दशक में इससे आधी लगाई जाती थी), या अपने शेयर होल्डरों को डिबेंचर बेचकर धन जमा करती हैं। आज अकेले जनरल मोटर्स की कार्यकारी पूंजी २,१८,३०,००,००० डालर है, जबकि मार्गन कम्पनी कुल ६६,७०,००,००० डालर की पूंजी ही जुटा सकती है।

कमाई और खर्च

लेकिन कम्पनियों में धन का यह निवेश या कम्पनियों का सारा उत्पादन तब तक व्यर्थ है जब तक कि उस उत्पादन की खपत न हो।

इस उपजाऊ अर्थ-व्यवस्था का एक विचित्र विरोधाभास यह है कि उसे उत्पादन की चिन्ता नहीं करनी पड़ती, बल्कि इस बात की चिन्ता करनी पड़ती है कि उसका उत्पादन तैयार होते ही हाथों हाथ बिक जाए।

अर्थ-व्यवस्था में पैसा पैदा करने की, यानी उधार लेने-देने की क्षमता बहुत अधिक है, इसलिए आदमी जो कुछ खर्च करता है, उसका बहुत हद तक उसकी आमदनी के परिमाण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता। जितना अधिक खर्च किया जाता है उतनी ही अधिक आमदनी बाद में होती है। कारण यदि खर्च का स्तर ऊँचा रखा जाय तो उससे रोजगार का स्तर भी ऊँचा रहता है।

इसलिए लोगों की आमदनी का परिमाण कम होने पर भी उन्हें किस्तों पर, बाद में अदायगी की शर्त के साथ वस्तुएँ खरीदने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। यदि उधार की यह सीमा बेकाबू होती नजर आती है तो संघीय रिजर्व बोर्ड तुरन्त सख्ती करता है। अमेरिका में लोगों के व्यक्तिगत व्यय में खूब वृद्धि होने पर भी देश के आधे परिवारों पर किस्तों का कोई कर्ज नहीं चढ़ा है। बल्कि १९५६ में तो उपभोक्ताओं ने अपनी आमदनी में से २०·५ अरब डालर की बचत की थी।

उपभोग और खरीद को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक उपाय इस्तेमाल किए जाते हैं। नई-नई चीजें बिक्री के लिए बाजार में लायी जा रही हैं, क्योंकि खरीदार हर दफा नई-नई किस्म की चीजें आजमाना पसन्द करता है। जब कोई चतुर डिजायनर और निर्माता नये डिजायन की चीज तैयार कर ग्राहक के सामने पेश करते हैं तो पहले से चली आ रही चीजें पुरानी पड़ जाती हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई निर्माता किसी नये रंग का रेफ्रिजरेटर बनाये, जो ग्राहक के कमरे की दीवारों के रंग से मेल खा जाए और उसमें शेल्फ भी नई किस्म के हों और ठंडा पानी निकालने का नल लगा हो, तो ग्राहक झट उसे खरीदना चाहेगा, भले ही उसका पुराना रेफ्रिजरेटर अभी अच्छी हालत में हो।

उपभोक्ताओं को आकृष्ट करने की प्रतिस्पर्धा के अवसर दो परिणाम होते हैं। पहला यह कि निर्माता अपने उत्पादनों की कीमत घटाते और नीची रखते हैं और दूसरा यह कि वे उनकी किस्म में सुधार करते हैं। सन् १६२२ में जहाँ बिजली के रेफ्रिजरेटर की लागत ७८ डालर प्रति घनफुट पड़ती थी, वहाँ १६५५ में वह ३४ डालर प्रति घनफुट पड़ने लगी। यही नहीं, बल्कि नया रेफ्रिजरेटर पुराने रेफ्रिजरेटर से अधिक अच्छा और सुन्दर है। रेडियो सेट की कीमत तो इतनी नीची है कि देश के कुल ३ प्रतिशत घर ही ऐसे हैं जिनमें रेडियो नहीं हैं।

श्रमिक सांख्यिकी विभाग ने, जो साधारण आमदनी वाले परिवारों के जीवन व्यय में परिवर्तन की जानकारी देने के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचक अंक प्रकाशित करता है, इस वर्ग की उपभोग्य वस्तुओं में रेडियो, बिजली से चलने वाली सिलाई की मशीनें और अन्य स्वचालित घरेलू यन्त्र तो पहले ही शामिल किए हुए थे, अब उसने उनमें और भी अनेक वस्तुओं की वृद्धि कर दी है। दर्जनों नये खाद्य-पदार्थ, बिजली के टोस्ट सेकने के उपकरण और टेलीविजन सेट भी इस सूची में आ गये हैं।

अमेरिका में दूर-दूर के ग्राहकों से डाक से आर्डर लेकर उन्हें माल पहुंचाने की व्यवस्था बहुत व्यापक है। सुपर मार्केटों में एक ही स्थान पर तरह-तरह की वस्तुएँ कम मूल्य पर मिल जाती हैं। यन्त्रीकरण और स्वचालित यन्त्रों के प्रयोग से उत्पादन की लागत कम हो रही है। इन सब चीजों का परिणाम यह है कि अमेरिकन उत्पादन दूर-दूर तक पहुंच जाते हैं। अमेरिकन उद्योग बाजार की मांग और उपभोक्ता की रुचि का निरंतर अध्ययन करते रहते हैं जिससे वे उसके अनुकूल उत्पादन कर पाते है।

अमेरिका में उपभोग्य वस्तुओं के बाजार के इस विस्तार का एक नतीजा यह है कि इससे वर्गभेद की दीवारें टूट रही हैं। आज वहाँ प्रायः हर आदमी सिले-सिलाये तैयार कपड़े पहनता है। नल जोड़ने वाले या इस्पात कारखाने में काम करने वाले मजदूर की पोशाक और किसी

डाक्टर की, यहाँ तक कि किसी लखपति की भी पोशाक में भी, अधिक अन्तर नहीं होगा। गरीब और अमीर सब एक जैसी सिगरेट पीते हैं, एक ही जैसे डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थ खरीदते हैं, एक जैसी पत्रिकाएँ पढ़ते हैं, एक जैसी सिनेमा फिल्में देखते हैं, एक ही रेल में और एक ही डिब्बे में सफर करते हैं और एक ही जैसी बिजली की घरेलू मशीनें खरीदते हैं।

संयुक्त राज्य में आय भी विषमता को दूर कर रही है, जैसा कि किसी भी परिपक्व निजी व्यापार-व्यवसाय वाली अर्थ-व्यवस्था में सम्भव है। सन् १९३५ और १९५० के बीच अमेरिका के निम्नतम बीस प्रतिशत परिवारों की टैक्स काटने के बाद बची वास्तविक आय ४२ प्रतिशत बढ़ी है, जबकि उच्चतम बीस प्रतिशत परिवारों की वास्तविक आय में वृद्धि के बजाय कुछ कमी हुई है। शिल्प और कला में लगे हर पाँच परिवारों में से एक की आमदनी ७,००० डालर वार्षिक से अधिक है, जबकि डाक्टरी और वकालत आदि पेशों या टेक्निकल लाइनों में काम करने वाले हर छः परिवारों में से एक की आमदनी इतनी है। इससे स्पष्ट है कि वर्गों के बीच की विभाजक रेखाएँ अब धुँधली पड़ रही हैं। सम्पत्ति से होने वाली आमदनी घट और श्रम से होने वाली आमदनी बढ़ रही है। विशेष व्यवसायों में दक्ष व्यक्तियों की संख्या अब बढ़ती जा रही है और साधारण मजदूरी करने वालों की संख्या या तो जहाँ की तहाँ स्थिर है या कम हो रही है।

संयुक्त राज्य में ३ करोड़ ६० लाख व्यक्तियों ने जीवन बीमा करा रखा है, ३ करोड़ के बैंकों में सेविंग खाते हैं और चालीस लाख परिवार अपने निज के मकानों में रहते हैं। अमेरिका में कई लाख व्यक्ति ऐसे हैं जो काम पर जाने वाले स्त्री-पुरुषों के बच्चों की देखभाल करते हैं। इन लोगों ने १९५६ में अरबों डालर कमाये। यह नया व्यवसाय कई बातों का प्रतीक है—पहली यह कि छोटे परिवार को बाहरी सहायता की आवश्यकता है; दूसरी यह कि बूढ़े और किशोर आयु के लोग इस नये

काम से कुछ पैसा कमा लेते हैं; तीसरी यह कि इस काम के लिए देने को और बच्चों के खेल-कूद और मनोरंजन के लिए खर्चने को पैसा भी होना आवश्यक है; और चौथी यह कि बच्चों की देखभाल का यह काम बहुत जल्दी ही एक पेशा बन गया है। होलीवुड में बाकायदा बच्चों की देखभाल करने वाले पेशेवर लोगों का एक संघ बेबी सिटर्स गिल्ड के नाम से बन गया है, जिसके पंजीकृत सदस्यों की संख्या ४,८०० है। यह संघ अपने सदस्यों की बारीकी से छानबीन करता है। डिट्रॉयट में एक प्राइमरी स्कूल पाँचवीं कक्षा के लड़कों को बच्चों की देखभाल का प्रशिक्षण देता है। लेकिन इन छोटे शिशुओं को यह शिक्षा किसी ने नहीं दी कि अपने माता-पिता के काम पर चले जाने पर वे दूसरों से अपनी देखभाल कैसे कराएँ। सम्भव है, एक दिन यह शिक्षा भी दी जाने लगे।

स्वचालित धुलाई की मशीनों, वैक्यूम क्लीनरों, जमाये हुए खाद्य पदार्थों और वस्तुओं को मिलाने वाले मिश्रकों आदि के आविष्कार और निर्माण ने न केवल उन स्त्रियों का, जिन्हें इन कामों के लिए नौकर रखने पड़ते थे, बल्कि स्वयं अपने हाथ से काम करने वाली लाखों स्त्रियों का भी काम बहुत हल्का कर दिया है। खास तौर से कृषकों की स्त्रियों को, जिन्हें स्वयं पम्प से या घड़ों में पानी ले जाना पड़ता था, हाथ से रगड़ाई, धुलाई और सफाई का काम करना पड़ता था, अपने खाद्य-पदार्थों को जमा कर सुरक्षित रखने के बजाय डिब्बों की शक्ल में बन्द कर अचार-मुरब्बे की शक्ल में रखना पड़ता था, इन नये यन्त्रों और आविष्कारों ने बहुत राहत दी है।

विक्रेता

जिस अर्थ-व्यवस्था को जीवित रहने के लिए तेजी से वस्तुओं की खपत और बिक्री की आवश्यकता है, वह ग्राहकों के इन्तजार में हाथ पर हाथ धर कर बैठी नहीं रह सकती। इसलिए उसे विज्ञापन का सहारा लेकर लोगों की अभाव और बचत की मनोवृत्ति को बदल कर खुले दिल से खर्च करने और खर्च से समृद्धि पैदा करने की मनोवृत्ति में परिणत करना

पड़ता है। संयुक्त राज्य में जिस तरह जोर-शोर से विज्ञापन किया जाता है, उससे हमारे देश में बाहर से आने वालों को ही नहीं, हम में से भी बहुतों को बुरा लगता है, परन्तु वह अनिवार्य है। मनोविज्ञान-वेत्ताओं, जनमत संग्रहों और बाजारों के सर्वेक्षण की सहायता से किया गया विज्ञापन लोगों में वस्तुएँ खरीदने की आकाँक्षा पैदा करता है, जो लोग पैसा खर्च करने में घबराते या उदासीन रहते हैं, उन्हें उकसाता है और ग्राहक बनाने के लिए प्रेरित करता है।

यह दलील दी जा सकती है कि जो धन विज्ञापन करने और विज्ञापित वस्तुओं के उत्पादन पर बर्बाद किया जाता है, उसका कुछ हिस्सा यदि आवश्यक स्कूलों, सड़कों और अस्पतालों के निर्माण पर खर्च कर दिया जाए तो वह अधिक लाभकारी होगा। विज्ञापन परिषद् (एडवर्टाइजिंग कौंसिल), जो एक स्वैच्छिक संगठन है, इस प्रकार की आलोचनाओं से अनभिज्ञ नहीं है, इसलिए उसने राष्ट्रव्यापी विज्ञापन की महान् शक्ति और व्यापक प्रसार का उपयोग सामाजिक सेवा के इन कार्यों के लिए भी किया है। उसका यह सिद्धान्त है कि राष्ट्र को स्कूल भवनों और अध्यापकों की कमी के खतरे से सजग करते रहो। विज्ञापन के द्वारा सजग और सचेत कर दिये जाने के बाद जनता स्वयं स्वैच्छिक समाजसेवी संगठनों की मदद से इन खतरों का मुकाबला अमेरिका की परम्परागत प्रणाली से कर लेगी।

विज्ञापन के नग्न, कुत्सित और अभद्र तरीकों को रोकने का एक उपाय सांस्थानिक जरियों से विज्ञापन करना है। उदाहरण के लिए ड्यूपौंट फर्म को लीजिए। वह अमेरिकन इतिहास के आधार पर रेडियों, और टेलीविजन पर कुछ नाटक प्रस्तुत करती है। वह अपने किसी उत्पादन का विज्ञापन नहीं करती, सिर्फ इतना ही कहती है कि वह रसायन विज्ञान की सहायता से जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने के साधनों का निर्माण करती है। टेक्सास कम्पनी राष्ट्र को सीजन भर प्रति सप्ताह एक दिन तीसरे पहर मेट्रोपोलिटन ओपेरा पेश करती है। वह अपनी

किसी व्यापारिक वस्तु का विज्ञापन नहीं करती। यह ओपेरा ही उसका विज्ञापन होता है।

विज्ञापन निःसन्देह सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कुछ विज्ञापन नितान्त ग्राम्य ढंग के और आपत्तिजनक होते हैं, किन्तु कुछ सौन्दर्य और कला की दृष्टि से बहुत उत्कृष्ट और सामाजिक चेतना को प्रकट करने वाले होते हैं। विज्ञापन बहुत जोर-शोर से किये जाने का कारण सिर्फ ग्राहकों को आकृष्ट करने की प्रतिस्पर्धा और देश के विशाल उत्पादक यन्त्र को गतिशील रखने के लिए व्यापक बाजार की आवश्यकता ही है।

अपने उत्पादनों का बाजार कायम रखने की इस आवश्यकता के कारण ही अमेरिका में ग्राहकों की सुविधा और सेवा का बहुत ध्यान रखा जाता है। यहां तक कि कभी-कभी विदेशी लोग भी इस पर चकित होते है। डाक से आर्डर लेकर माल सप्लाई करने वाली फर्में और बड़ी दुकानें तो माल पसन्द न आने पर ग्राहकों से बिना किसी ऐतराज के उसे वापस भी ले लेती है। विक्रेताओं को ग्राहकों के साथ मित्रता और सौजन्य का बर्त्ताव करने और उनकी सहायता करने की विशेष रूप से शिक्षा दी जाती है। अच्छा स्टैंडर्ड और खास-खास ब्रांड का माल तैयार करके भी उत्पादक लोग ग्राहकों का विश्वास अर्जित कर सकते हैं। किस्तों पर बिक्री-टेलीफोन पर आर्डर लेना, घर-घर विक्रेताओं को भेजना और ग्राहक के घर पर ही माल पहुँचाना आदि कुछ ऐसी विधियां है जो ग्राहक के लिए सुविधाजनक रहती हैं और उसे आकृष्ट करती हैं। इन सुविधाओं से ग्राहक का पैसा खर्चने के लिए तैयार होना राष्ट्र के आर्थिक स्वास्थ्य के लिए अत्यावश्यक है।

समस्याएं

हमारी अर्थ-व्यवस्था के इस उत्कर्ष के बावजूद निराशा और चिन्ता पैदा करने वाली कुछ समस्याएं मौजूद हैं। यदि सचमुच निःशस्त्रीकरण होने लगे और हमें ४० अरब डालर के अपने विशाल सैनिक व्यय में एक

बड़ी कटौती करनी पड़े तब क्या होगा ? जिन प्राकृतिक साधन सम्पदाओं का हम बहुत भारी मात्रा में उपयोग कर रहे हैं, उनके भण्डार के खात्मे को रोकने के लिए हमें क्या उपाय करने चाहिएँ ? यदि सचमुच कोई गम्भीर मन्दी आ गई तो क्या हमें उसका सामना करने के लिए मुद्रा और आर्थिक स्थिरीकरण के उपलब्ध साधनों के उपयोग का साहस होगा ? क्या हम अपनी उत्पादकता के लाभों का विस्तार जारी रखकर देश में विद्यमान गरीबी के कुछ गढ़ों को खत्म कर सकते हैं ? किसानों की आवश्यकता-पूर्त्ति के लिए हमें क्या उपाय करने चाहिएँ ? मौजूदा मुद्रा-स्फीति की प्रवृत्ति क्या एक खतरनाक दौर में पहुँच जाएगी और उसे रोकने के लिए हम क्या उपाय कर सकते हैं ?

ये कुछ समस्याएं हैं जो हमारी अर्थ-व्यवस्था के सामने आज भी मुंह बाये खड़ी हैं ।

आज सबसे स्पष्ट खतरा मंहगाई का है, जो हमारे सामने मौजूद है। जब वस्तुओं की माँग जबर्दस्त होती है तो उद्योगपति और श्रमिक दोनों ही लागत में होने वाली वृद्धि को उत्पादित वस्तुओं का मूल्यों बढ़ा कर ग्राहकों पर डाल देते हैं। इसलिए मंहगाई को रोकने का एक-मात्र उपाय यह है कि सरकार मूल्यों पर नियन्त्रण करे।

अर्थ-व्यवस्था को स्थिर रखने के लिए यह आवश्यक है कि उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाए ताकि वे पूंजीगत सामग्री पर खर्च करने में घबरायें नहीं। साथ ही बैंकों द्वारा लोगों को दिये जाने वाले ऋण और उधार में ज्यादा उत्तार-चढ़ाव को रोकना भी जरूरी है ताकि उपभोक्ता की खर्च करने की प्रवृत्ति पर उसका प्रतिकूल असर न पड़े।

हमारी अर्थ-व्यवस्था के सामने एक समस्या आवास व्यवस्था की भी है। आज भी अमेरिकनों की एक बड़ी संख्या शहरी और ग्रामीण गन्दी बस्तियों में रहती है। गन्दी बस्तियों से मकान मालिकों को बहुत लाभ होता है, इसलिए वे स्वयं उनके सुधार का प्रयत्न नहीं करेंगे। इसके अलावा उनके सुधार या उन्मूलन का खर्च इतना बड़ा है कि या तो

सरकार ही उसे उठा सकती है या स्वैच्छिक तौर पर लोग मिलकर सम्मिलित उद्योग से उसे पूरा कर सकते हैं।

संघीय सरकार ने नगरों की स्वशासन संस्थाओं के साथ मिल कर ७५० शहरी केन्द्रों में गन्दी बस्तियों के उन्मूलन के लिए गृह-निर्माण कार्यक्रम प्रारम्भ किये हैं। सिर्फ सीमित आय वाले परिवारों को ही ये मकान दिये जाते हैं। इन मकानों के किराये आमदनी का पाँचवाँ हिस्सा होते हैं। हर परिवार को उसके सदस्यों की संख्या के हिसाब से कमरे दिये जाते हैं ताकि उनमें बहुत भीड़-भाड़ न हो क्योंकि अत्यधिक भीड़-भाड़ से ही वास्तव में गन्दी बस्तियाँ बनती हैं। शिकागो में तीन सबसे पुरानी बस्तियों के ८० प्रतिशत किरायेदार अब अपने निज के बढ़िया मकानों में रहने लगे है। इस तरह आवास परियोजनाएं परिवार के रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाती हैं और लोगों को अपने निज के मकानों का स्वामित्व प्राप्त करने में भी सहायता देती हैं।

उद्योगों में उत्पादन के प्राचुर्य से जहां श्रमिकों को समृद्धि प्राप्त हुई है, वहां कृषि में उत्पादन के प्राचुर्य से कृषकों की आय में उतनी वृद्धि नहीं हुई। कारण, कारखानों में उत्पादित माल के उपभोग की कोई सीमा नहीं है; किन्तु मनुष्य खेतों में पैदा अनाज या अन्य खाद्य-पदार्थों को एक नियत सीमा में ही खा सकता है। यद्यपि हम लोगों को खान-पान की आदतें सुधार कर उन्हें अधिक प्रोटीनयुक्त पौष्टिक आहार खाने और बासी भोजन के बजाय ताजा भोजन खाने की प्रेरणा दे रहे है और देश में आबादी बढ़ने से खाने वालों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है, तो भी राष्ट्र उस सारी उपज को नही खा सकता, जिसे किसान मशीनों और वैज्ञानिक कृषि के साधनों से बहुत बड़ी मात्रा में पैदा कर बाजारों में भेज रहे हैं।

अन्न के अभाव से ग्रस्त देशों को अनाज भेजने और अपने देश के गरीबों को मुफ्त या सस्ता अन्न देने अथवा स्कूलों और संस्थाओं को अन्न मुहैया करने की योजनाओं से भी सारे फालतू अन्न का उपयोग

नहीं किया जा सकता। संघीय सरकार कृषि-जिन्सों के मूल्यों को स्थिर रखने के लिये जो कार्यक्रम अपनाती है उससे फालतू अन्न की समस्या और भी गम्भीर हो जाती है। किसानों को कम भूमि पर खेती करने के लिए प्रोत्साहन देने को जो पुरस्कार दिये जाते हैं उनका परिणाम यह होता है कि किसान खेती तो कम भूमि में करता है, लेकिन सघन कृषि के उपायों से कम भूमि में भी अधिक पैदावार कर लेता है।

उत्तर के गेहूँ-उत्पादक विशाल मैदानों से मध्य क्षेत्र के मक्का और सूअर उत्पादक इलाकों और दक्षिण के कपास और तम्बाकू उत्पादक इलाकों तक, कैलिफोर्निया की हरी-भरी सिंचित घाटी से वरमौंट और न्यू हैम्पशायर के ऊंचे-नीचे घास के मैदानों तक, टैक्सास के ६,२०,००० एकड़ के किंग रैंच (चरागाह) से अलाबामा की बटाई पर खेती वाली क्षरित भूमि तक, कितनी ही किस्मों की कृषि-भूमियाँ और कृषि जिन्सें अमेरिका में हैं। इन सबकी आवश्यकता पूरी करने के लिए कोई एक कार्यक्रम पर्याप्त नहीं हो सकता।

किसानों ने अपनी सहायता अपने आप करने के लिए सहकारी समितियाँ बनाई हैं, जो उन्हें उनकी आवश्यकता की १२ प्रतिशत चीजें थोक भाव पर दे देती हैं और उनकी उपज को अधिकतम उपलब्ध भाव पर बाजारों में बेच भी देती हैं। ग्रेंज और फार्मब्यूरो जैसे विशाल स्वैच्छिक संगठनों ने किसानों को और भी अनेक लाभ प्रदान किये हैं। वे समानीय स्तर पर सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करते हैं और राज्यीय और राष्ट्रीय राजधानियों में किसानों की राजनीतिक शक्ति को बढ़ाते हैं। संघीय सरकार किसानों को भूमि-संरक्षण विद्युतीकरण, फसल-बीमा, सिचाई परियोजनाओं, कृषि अनुसन्धान, पैम्फलेटों के प्रकाशन और विस्तार सेवा एवं उधार या ऋण सेवा के एजेंटों के गाँवों के दौरे के रूप में जो सुविधाएं प्रदान करती है, उस से आज किसान ने अमेरिका में सबसे अधिक सेवित नागरिक का दर्जा हासिल कर लिया है।

फिर भी उसकी आमदनी देश की अर्थ-व्यवस्था के शेष अंगों की तुलना में कम है। मूल्य-स्थिरीकरण कार्यक्रमों से बड़ी फर्मों के मालिकों या विशाल पैमाने पर खेती करने वाली कम्पनियों को सबसे अधिक लाभ होता है, जबकि उन्हीं को इसकी सबसे कम जरूरत होती है। इन कार्यक्रमों से उन पन्द्रह लाख के लगभग कृषि-मजदूरों को कोई लाभ नहीं होता, जो फसल के मौके पर उत्तर के इलाकों में जाते हैं, वहाँ कमर-तोड़ मजदूरी करते हैं, गन्दे मकानों और अस्वच्छ परिस्थितियों में रहते हैं और चिकित्सा की सुविधा भी भली-भाँति नहीं पा सकते। घुमन्तू और खानाबदोश होने के कारण उन्हें किसी एक जगह का मताधिकार नहीं मिल पाता, वे सामाजिक जीवन नहीं बिता पाते और स्थायी रूप से बच्चों को शिक्षा भी नहीं दे पाते।

आयोवा स्टेट कालेज के कृषि अर्थशास्त्र के प्रोफेसर ज्योफ्रे शेफर्ड के अनुसार "कृषि में फालतू उत्पादन को रोकने का एकमात्र उपाय यह है कि कृषि-आय को बढ़ाने के लिए मूल्य स्थिरीकरण कार्यक्रमों को अपनाना बन्द कर दिया जाए।" शेफर्ड की धारणा है कि किसानों में सन्तान-प्रजनन की दर बहुत अधिक ऊँची होने से हर बरस किसानों की संख्या पांच लाख बढ जाती है और यही कारण है कि किसान परिवारों की आय कम रहती है। एक औसत गेहूँ या दुग्ध उत्पादक अच्छी जमीन होने पर भी साल में केवल दो हजार डालर वार्षिक से अधिक शुद्ध आय की आशा नहीं कर सकता। इस आय को बढ़ाने का तरीका कृषि के क्षेत्र को घटाना नहीं, किसानों की संख्या को घटाना और फिर प्रति व्यक्ति उत्पादन को बढ़ाना है। लेकिन यह सीधी-सादी युक्ति उन लोगों को कभी पसन्द नहीं आ सकती, जो किसानों के वोटों की संख्या घटाने के बजाय बढ़ाने के समर्थक हैं और जो यह समझते हैं कि कृषि का व्यवसाय और कृषक जीवन अपनाने के इच्छुकों को भी अपना व्यवसाय चुनने की पूरी छूट होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ग्रामीण जीवन के

प्रति एक भावनात्मक मोह और ग्रामीण जीवन को ऊँचा समझने की भावना भी कम शक्तिशाली तत्त्व नहीं है।

विदेशी व्यापार

संयुक्त राज्य संसार के वस्तुओं के कुल उत्पादन का चालीस प्रतिशत भाग पैदा करता है और विश्व के कुल व्यापार का दस प्रतिशत उसके हाथ में है। तट-कर में रियायतें देकर, दूसरे देशों को उपहार और कर्ज देकर उसने विश्व के अन्य देशों के उत्पादन और व्यापार को फिर से बढ़ाने में अपना योगदान किया है। उसने अन्य देशों को क्षेत्रीय आर्थिक संगठन स्थापित करने के लिए सफलतापूर्वक प्रोत्साहन दिया है। उसने अन्य देशों के साथ अनेक व्यापारिक समझौते किए हैं और अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (इण्टरनेशनल बैंक फौर रिकन्स्ट्रक्शन एण्ड डेवलपमेंट) एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि (इण्टरनेशनल मॉनिटरी फंड) स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। व्यापार समझौतों के फलस्वरूप हमारे तट-करों में बहुत कमी हुई है। सन् १९३०-३३ में हमारे औसत तट-कर ५३ प्रतिशत थे, परन्तु १९५१ में वे १५ प्रतिशत से भी कम रह गये। जो राष्ट्र इतने समय तक तट-कर लगाता रहा हो उसके लिए उनमें इतनी कमी कर देना मामूली बात नहीं है। विदेशी आयात से जिन फर्मों के व्यापार पर असर पड़ता है, वे तट-कर की रियायतों के इस कार्यक्रम को कम कराने के लिए निरन्तर आन्दोलन करती रहती हैं। जो लोग कांग्रेस में ऐसे व्यक्तियों के मतों से जीतकर आते हैं, जिनको विदेशी माल की प्रतिस्पर्धा से बेरोजगार होने की आशंका रहती है, उन पर अमेरिकन उद्योगों की रक्षा के लिए मतदाताओं की ओर से हमेशा दबाव पड़ता रहता है।

संयुक्त राज्य अपने तांबा, जस्त, सीसा, तेल और अन्य अनेक प्राकृतिक सम्पदाओं के भण्डारों को बहुत तेजी से इस्तेमाल कर खाली करता जा रहा है। इसलिए उसे इन चीजों की कम-से-कम आधी आवश्यकता विदेशों से आयात कर पूरी करनी चाहिए। लेकिन ऐसा

करने की चेष्टा होते ही फिर देश के आन्तरिक हितों के स्वार्थ ही आड़े आ जाते हैं। वे कहते हैं कि यदि खनिज-पदार्थ बाहर से आयात किए गये तो देश की खानों के बेकार मजदूरों का क्या होगा ? जो लोग उनके वेतनों पर निर्भर हैं, उनका भविष्य क्या होगा ?

जब तक अमेरिका में वेतन, उत्पादकता और रहन-सहन के स्तर सारे संसार के औसत स्तरों से ऊँचे हैं तब तक शेष संसार के साथ हमारे व्यवहार और व्यापार में परेशानी रहेगी ही। यहाँ तक कि उदारता की सहज भावना भी हमें चिन्तित करती है। अन्य देशों में हमें अपनी इस उदारता के लिए सफाइयां देनी पड़ती हैं और देश के भीतर हम यह दिखाने का प्रयत्न करते हैं, कि हम किसी को कुछ नहीं दे रहे और दे भी रहे हैं तो सिर्फ सैनिक दृष्टि से कुछ लाभ प्राप्त करने के लिए फिर भी हम अपने मन में यह बात अच्छी तरह समझते हैं कि यदि सारे संसार में ही उत्पादकता बढ़ जाए तो अन्ततः उससे हमारा भी लाभ होगा।

व्यापार-व्यवसाय और सरकार

यह विचार अमेरिका के लिए अपेक्षाकृत नया है कि अर्थ-व्यवस्था को नियन्त्रित करने की जिम्मेदारी सरकार पर है ताकि उससे देश की समृद्धि सुनिश्चित बनी रहे। सरकार की अर्थ-व्यवस्था में एक महत्त्व-पूर्ण भूमिका है, क्योंकि एक तो वह पारस्परिक संघर्ष के समय मध्यस्थ का काम करती है और दूसरे वह बहुत बड़ी खरीदार है। इसके अलावा कम्पनियों का (कुछ छोटी कम्मनियों को छोड़कर) ३८ प्रतिशत मुनाफा सरकार के कोष में जाता है और शेयर होल्डरों को कम्पनियों से जो लाभ होता है, उसका भी कुछ भाग वे टैक्स के रूप में अदा करते हैं।

हमने अपने जीवनकाल में जो कुछ देखा है, वह एक क्रान्ति से कम नहीं है। इस क्रान्ति ने पूँजीवाद का भी सामाजिकीकरण कर दिया है क्योंकि उसने उसकी विराट् उत्पादक शक्ति, उसकी चयन की स्वतन्त्रता और प्रयोगात्मक वृत्ति को विद्युत्-शक्ति की तरह संग्रह कर और

श्रमिक, उद्योगपति और कृषक रूपी सब-स्टेशनों और स्वयंसेवी स्वैच्छिक संगठन रूपी ट्रांसफार्मरों के जरिये सारे देश में फैले उपभोक्ताओं में वितरण किया है। पूँजीवाद ने काफी समय तक सरकार से टक्कर ली, किन्तु अब उसने अन्त में समझौता कर लिया है। उसने अब यह विचार स्वीकार कर लिया है कि अर्थ-व्यवस्था तभी किसी के लिए हितकर हो सकती है, जब वह देश के समस्त नागरिकों के लिए हितकर हो। व्यापारी जगत् और सरकार के बीच की एवं अर्थ-नीति और राजनीति के बीच की दीवारें ढह गई हैं और अब इन सभी को एक ऐसी समाज-व्यवस्था के अंगों और पहलुओं के रूप में देखा जाता है जिनका उद्देश्य जनता का कल्याण करना है। सामाजिकीकृत पूँजीवाद ने लाभों को बढ़ाया और व्यापक बनाया है और किसी भी अन्य समाजवादी या कम्युनिस्ट राज्य की अपेक्षा धनी और गरीब के बीच की खाई को अधिक प्रभावशाली रूप में कम किया है। सम्पदा शुल्कों ने विशाल पारिवारिक ऐश्वर्य और सम्पत्तियों को धीरे-धीरे खत्म कर दिया है।

हमारी आर्थिक प्रणाली पूर्ण और सर्वथा निर्दोष है, यह दावा हम नहीं करते, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि हमारी प्रणाली निरन्तर सही दिशा में गति कर रही है। प्राचुर्य और स्वतन्त्रता—ये दोनों हमें अविच्छिन्न रूप से परस्पर जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। संयुक्त राज्य ने इन दोनों को एक ऐसी सामाजिक प्रणाली के द्वारा पाया है जिसमें व्यक्तिवादिता है, स्वैच्छिक संगठन बनाकर स्वावलम्बन की वृत्ति है और साथ ही संघवाद भी है और ये तीनों एक-दूसरे को प्रतिसन्तुलित करने वाली शक्तियों के रूप में काम कर रहे हैं। इस प्रणाली के फलस्वरूप उद्योगों का स्वामित्व बहुत व्यापक क्षेत्र में फैल गया है, अभिक्रम की भावना और निश्चय करने के अधिकार का विस्तार हुआ है और अर्थ-व्यवस्था से उत्पन्न प्राचुर्य का लाभ अधिकाधिक व्यापक क्षेत्र को पहुँचा है।

भौतिक वस्तुओं का प्राचुर्य हो जाने के कारण अब उधर से निश्चिन्त होकर अमेरिकन लोग अर्थेतर वस्तुओं की ओर अधिक झुकाव

द खाने लगे हैं और उन प्रवृत्तियों में अधिक हिस्सा लेते हैं, जिनका सम्बन्ध केवल भौतिक सम्पदा को बढ़ाने से नहीं है। स्वैच्छिक नागरिक प्रवृत्तियों में तो अमेरिकन लोग हमेशा ही दिलचस्पी और रुचि लेते रहे हैं, किन्तु अब वे उन वस्तुओं को भी महत्त्व देने लगे हैं जो उन्हें व्यक्ति के रूप में और समाज के सदस्य के रूप में ऊँचा उठाती हैं।

जिन लोगों के पास अच्छे जीवन-यापन के लिए आवश्यक भौतिक वस्तुओं की कमी है, उन्हीं के लिए भौतिक मूल्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं, किन्तु अमेरिका में इस बात के अनेक प्रमाण और लक्षण मौजूद हैं कि भौतिक सम्पदा के प्राचुर्य ने वहाँ अन्य मूल्यों को अधिक महत्त्वपूर्ण बना दिया है। अर्थशास्त्री जब मानवीय व्यवहार की व्याख्या करते है तो उसके मूल में हमेशा लाभ की भावना उन्हें दिखाई देती है, परन्तु आज यह जाहिर हो गया है कि अब दूसरे मूल्य और दूसरी भावनाएँ भी अधिकाधिक प्रभावी होती जा रही हैं।

भौतिक वस्तुओं के प्राचुर्य का अर्थ अक्सर भौतिकवाद समझ लिया जाता है। संयुक्त राज्य में भौतिक वस्तुओं के प्राचुर्य के चिह्न स्पष्ट रूप में विद्यमान हैं; किन्तु विदेशी लोगों को वे अक्सर हमारी अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होते है। हम अपनी तड़क-भड़क वाली चमचमाती मशीनों को देख कर खुश होते हैं। कभी यह खुशी सुन्दर खिलौने को देखकर बच्चे को होने वाली प्रसन्नता जैसी होती है और कभी उसका कारण उससे मिलने वाला आराम और सुविधा होती है। किन्तु इन वस्तुओं का दूरगामी प्रभाव हमें भौतिकवाद से मुक्त करने वाला है—क्योंकि इन मशीनों के प्रयोग से हमारा जो समय बचता है, उसे हम अभौतिक वस्तुओं की ओर लगा सकते है।

संयुक्त राज्य ने उन समस्याओं के साथ जूझना अभी से प्रारम्भ कर दिया है जो अन्य देशों के सामने अब तक आयी ही नहीं है। वे समस्याएँ है : जब वर्गभेद समाप्त हो जाएगा और अधिकतर लोगों के पास काफी अवकाश और खर्च करने को पैसा हो जाएगा, तब संस्कृति

का क्या होगा ? व्यक्ति को यांत्रिक अर्थ-व्यवस्था में क्या सन्तोष और क्या निराशाएँ अनुभव होती हैं ? उत्पादक अर्थ-व्यवस्था को उन उद्देश्यों की पूर्ति में कैसे लगाया जा सकता है जो विशुद्ध रूप से आर्थिक नहीं हैं ? रुचि, संवेदनशीलता और शैली पर अर्थ-व्यवस्था का क्या असर पड़ता है ? और वह ललित कलाओं और लोक कलाओं पर क्या प्रभाव डालती है ?



कलाएँ

क्या कोई ऐसी कला संसार में है जो खास तौर से एक सचल, गतिशील और प्रायः वर्गहीन समाज के लिए उपयुक्त हो ?

डि टोकविल का विचार था कि ऐसी कला है। उसका कहना था कि उसका साहित्य ऐसा होना चाहिए जो आसानी से उपलब्ध हो सके और जल्दी से पढ़ा जा सके। उसमें तीव्र अनुभूतियों और भावनाओं की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। उसकी शैली प्रभावकारी और सरल होनी चाहिए, उसमें अप्रत्याशित और सर्वथा नवीन वस्तु का वर्णन होना चाहिए ताकि वह मनोहारी होने के बजाय आश्चर्य की सृष्टि कर सके और रुचि को तृप्त करने के बजाय भावनाओं को झकझोर सके और आन्दोलित कर सके।

यद्यपि डि टोकविल का यह कथन सामूहिक माध्यमों (सिनेमा, रेडियो, टेलीविज़न, समाचार-पत्र आदि) पर बहुत अच्छी तरह लागू होता है तो भी उसमें इस बात को ध्यान में नहीं रखा गया है कि शिक्षा के व्यापक प्रसार और भौतिक समृद्धि के प्राचुर्य के कारण इन माध्यमों के श्रोता और दर्शक या पाठक किसी एक वर्ग के नहीं रहे, बल्कि विविध वर्गों के हो गये हैं। किन्तु तो भी उसने उन खतरों की ओर अवश्य स्पष्ट संकेत कर दिया है जो वणिक् सभ्यता में कला को उठाने पड़ेंगे।

डि टोकविल यह कल्पना नहीं कर सका कि ऐसा समय भी आ सकता है जबकि मेहनत-मशक्कत से मुक्त होकर मनुष्य अपनी निज की रुचियों का विकास कर ले और चाहे तो कुछ घंटे मेहनत करने के बाद स्वयं कलाकार बन जाए। उसने आज के ज़माने की कल्पना नहीं

की थी जबकि सामान्य नागरिक प्रतिवर्ष दस करोड़ डालर के संगीत के रिकार्ड खरीदते हैं, और एक संगीतकार की आलोचनात्मक तुलना दूसरे से करते हैं। आज लोग स्वयं आश्चर्यजनक रीति से संगीत के विशेषज्ञ होते जा रहे हैं।

अमेरिकन लोग अपनी भौतिक सफलताओं की तो खूब डींग हांकते हैं, परन्तु सांस्कृतिक क्षेत्र में एक कदम भी आगे रखने में संकोच करते हैं। उन्हें भय रहता है कि कहीं उनकी संस्कृति यूरोपीय लोगों की आँखों को ग्राम्य और अपरिष्कृत प्रतीत न हो। हम यह दावा करते हैं कि लोकतन्त्र, स्वतन्त्रता, समृद्धि, सुख-सुविधा और यान्त्रिक दक्षता हमारी अपनी चीजें हैं, किन्तु संस्कृति हमारी नहीं, वह यूरोप की है। हमारी दृष्टि में यूरोप बूढ़ा और थका हुआ है, वह आधुनिक और यौवन से परिपूर्ण नहीं है। इसलिए कला के विकास और परिष्कार का काम हमने स्त्रियों के लिए छोड़ दिया। यही कारण है कि कला हमारे लिए स्त्रैण वस्तु बन गई।

अब तस्वीर धीरे-धीरे बदल रही है लेकिन उसका कलंक अभी तक ज्यों का त्यों बना हुआ है।

सचाई यह है कि हम अतीत से विमुख होकर भविष्य की ओर अभिमुख हो रहे हैं और डि टोकविल ने इस सचाई को अपनी विचक्षण दृष्टि से देख लिया था। अतीत से पराङ्मुख होकर भविष्य की ओर हमारा यह मुँह मोड़ना एक तरह से कला के प्रतीकात्मक आकारों से मुँह मोड़ना है। कारण, कला कल्पना और प्रतीकों का आश्रय लेकर जीवन के सम्बन्ध में एक दुःखमय अनुभूति और संवेदन प्रस्तुत करती है, वह मानव की वर्त्तमान परिस्थिति और भावी नियति के सम्बन्ध में अत्यन्त दारुण सत्य को उद्घाटित करती है। किन्तु अमेरिका एक नया नवीन देश था जिसके भविष्य में दुःखान्त परिणति के लिए कोई स्थान नहीं था। उसकी कल्पना उसका स्वप्न आशा से ओत-प्रोत था।

लेकिन इस आशामय सुखपूर्ण भविष्य का सृजन केवल कवि बन कर और काव्य की सृष्टि कर के ही नहीं किया जा सकता। कुरूपता, असौन्दर्य, गरीबी और पतन से खिन्न और उद्विग्न होकर हम अमेरिकन उनके निवारण के लिए कुछ करने को आतुर थे। हमने अनुभव किया कि इन समस्याओं से जूझने की आवश्यकता है—हमें केवल कला से उन्हें साकार और अभिव्यक्त ही नहीं करना, बल्कि उनका उपचार भी करना है। इसलिए हम सामाजिक प्रयोगों और सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन में लग गये।

जो ऊर्जा और जो आन्तरिक प्रेरणा कलाकार की स्फूर्त्ति और प्रेरणा बनती, वही समाजविज्ञान-वेत्ताओं और मनोवैज्ञानिकों की मानव के अध्ययन की उर्जा और प्रेरणा बन गई। कलाकार की-सी धैर्यपूर्ण आशा-आकांक्षा से उन्होंने मानवीय अभिप्रायों और उद्देश्यों का अध्ययन किया, वैसे ही प्रयत्न से मानवीय व्यवहार के अभिप्राय की व्याख्या की। लेकिन उससे अन्त में जो कुछ तैयार हुआ वह है स्कूल में अध्ययन की पाठ्य पुस्तक, पारिवारिक कल्याण सेवा या चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में मानसिक चिकित्सा की पद्धति।

इस तरह हमने कार्यप्रणाली कलाकार की अपनायी है—अर्थात् अनुभव की तात्कालिक अनुक्रिया ही हमारी पतवार है। अपरिमेय उत्कण्ठा से प्रेरित होकर हमने अपने संसार को उसी तरह खोजा और टटोला है, जैसे बच्चा समुद्रतट पर किसी बिल को खोजता और टटोलता है या कवि प्रकृति में किसी अनुभूति या क्षण को खोजता-परखता है। कला की साधना का परिणाम एक ऐसी कृति का सृजन होता है जो सत्ता को प्रस्फुटित करती है, परन्तु हमारी साधना की अन्तिम परिणति एक ऐसी कृति में होती है, जो सत्ता या परिस्थितियों की व्याख्या नहीं करती, उसे बदल देती है।

जब हमारे प्रतिभाशाली लोग कला की ओर प्रवृत्त होते हैं तब भी उनकी प्रेरक शक्ति और भावना परिस्थितियों को बदलने की ही

रहती है, कम-से-कम वे अमेरिका के विशिष्ट अर्थ को, उसके गूढ़ अभिप्राय को अनावृत करने और उसे उसके सौन्दर्य और कुरूपता, दोनों में स्पष्ट रूप से देखने का प्रयत्न करते हैं। इसीलिए ग्राण्ट वुड अपने किसान नर-नारियों के चेहरों पर प्रेयरी प्रदेश के हरे-भरे मैदानों को चित्रित करता है और वाल्ट व्हिटमैन अंगड़ाई लेते, प्राण से स्पन्दित और माँस-पेशियों को अकड़ाते समूचे राष्ट्र को अपने काव्य में समेटने का प्रयत्न करता है।

यद्यपि हमारे देश में महान् कवि हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे तो भी इस तरह की संस्कृति में साहित्य स्वभावतः पत्रकारिता की दिशा में मोड़ लेता है। एक ऐसी दुनिया के लिए, जो तीव्रगति से चल रही है, जिसमें सिर्फ सार्वजनिक घटनाएँ ही तेज गति से नहीं घटती, बलिक वैज्ञानिक अनुसंधान भी तीव्र गति से होते हैं और दैनिक जीवन में उन का उपयोग भी त्वरित गति से होता है, पत्रकारिता अत्यन्त आवश्यक है। आज जबकि विज्ञान के सीधे-सादे और सच्चे वर्णन पुराने कवियों की कल्पना की ऊँची उड़ानों से भी बढ़ गये हैं और प्रकृति के आश्चर्यों का वाल्ट डिस्ने द्वारा सिनेमा के पर्दे पर किया गया चित्रण ओडीसियस के आश्चर्यजनक भ्रमणों से भी कहीं आगे बढ़ गया है, हमें ऐसे व्यावहारिक व्यक्तियों की आवश्यकता है जो हमें अद्भुत आश्चर्यों की इस भूलभुलैयां में से रास्ता दिखाते हुए आगे ले जा सकें, जो हमें उसके रहस्य को समझा सकें।

क्या आप यह जानना चाहते हैं कि संसार में क्या हो रहा है? आप की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए यहाँ साप्ताहिक समाचार-पत्रिकाएं हैं या जान गन्थर जैसे पत्रकार हैं, जो हर महाद्वीप की जानकारी आप को दे सकते हैं। मनोविज्ञान में आपकी दिलचस्पी है? आपकी इस दिलचस्पी को पूरा करने के लिए गली-कूचों और सड़कों पर मनोविज्ञान की अपनी सरल और सस्ती किताबें बेचने वाले आपको मिल जाएंगे। ये लोग जानते हैं कि उपन्यासकार या नाटककार की वर्णन कला का

चीज़ केक (पनीर का केक) बनाने की विधि छापती है, तो अपराधों की तस्वीरें भी छापती है। किन्तु उसके द्वारा उच्च संस्कृति उन लोगों तक पहुँचाती है, जिन्होंने कभी उसका सम्पर्क नहीं पाया। और आज कौन कह सकता है कि यह संस्कृति किन जड़ों को सींचेगी और किस जीवन को परिपुष्ट करेगी ?

आधुनिक यन्त्र विद्या और कलात्मक अनुभूति, दोनों के पारस्परिक सम्मिश्रण से ही आज संगीत के रिकार्डों का निर्माण, टेलीविजन पर नृत्य-नाटकों का प्रदर्शन, चित्रकला की सुन्दर कृतियों का जन-साधारण के लिए प्रकाशन सम्भव हुआ है। ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है जो संस्कृति को एक बहुत छोटे उच्च सम्भ्रान्त वर्ग तक ही सीमित रखने के पक्षपाती हैं ताकि इस संस्कृति पर एकाधिकार रहने से वे दूसरों की अपेक्षा अपने आप को ऊँचा और श्रेष्ठ समझ सकें। हम समझते हैं कि जो कला सचमुच महान् है, वह किसी एक वर्ग को नहीं, समग्र संसार को आकृष्ट और प्रभावित करती है।

कला को लोकप्रिय बनाने और उसे लोककला का रूप देकर जन-सामान्य तक पहुँचाने की यह प्रवृत्ति अमेरिका में आने वाले विदेशियों को आश्चर्य और आघात पहुँचाती है, मानो कला का प्रसार कला को विकृत भी कर देता हो।

साहित्य

यह आशा की जा सकती है कि व्हिटमैन के काव्य की भाँति हमारा सारा साहित्य ही संसार की अटारियों से उच्च घोष के साथ बर्बर गर्जन करेगा; उसमें नई-नई आबादियों को बसाने वाले असभ्य लोगों की-सी स्थूल अपरिष्कृतता, सबल आशावादिता और अपने इर्द-गिर्द के सांस्कृतिक परिवेश की स्वस्थ व्यावहारिकता प्रतिबिम्बित होगी।

किन्तु वस्तुस्थिति यह नहीं है। डब्ल्यू० एच० औडन ने कहा था, "यूरोप से यहाँ आकर मेरे मन पर सबसे पहली और सबसे जबर्दस्त छाप यह पड़ी है कि यहाँ का सारा साहित्य जितना निराशा से भरा है,

उतना संसार में कभी भी और कहीं भी लिखा गया साहित्य नहीं है।" श्रोडन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जो राष्ट्र संसार में सबसे अधिक आशावादी होने के लिए मशहूर है, जो पृथ्वी पर सबसे अधिक स्वतन्त्र है, वह अपने आपको "हताश व्यक्तियों, कलुष चरित्र वालों और अपनी धुरी और स्थान से विस्थापित व्यक्तियों का समाज" समझता है और उसके सब वीर और नायक वे लोग हैं "जिनमें व्यथा और विपत्ति को चुपचाप सहन करने के सिवाय और कोई गुण नहीं है।" वह सोचता था कि इसका कारण क्या है?

इसका एक उत्तर यह है कि अनेक अमेरिकन लेखक अन्तरतम से आदर्शवादी हैं, वे अमेरिकन जीवन-पद्धति की भावी आशापूर्ण सम्भावनाओं को बहुत गम्भीरता से लेते हैं और आदर्श के विकृत होने पर विद्रोह करते हैं। वे उस सिक्के का, जिसके एक ओर बूस्टर यन्त्र की मूर्त्ति अंकित है, दूसरा पार्श्व हैं। अब लेखक का यह भी एक काम हो गया है कि वह गन्दी बस्तियों पर एक आँख रखे। उपन्यासकार शायद अमेरिकन जीवन में सर्वत्र पायी जाने वाली प्रतिसन्तुलनकारी शक्तियों का ही एक अंग है और उस रूप में वह विज्ञापनदाता की कमी को पूरा करता है। सम्भवतः, जैसा कि डी० डब्लू० ब्रोगन ने कहा है, निराशावादिता यहाँ के जीवन में पायी जाने वाली प्रतिस्पर्धा के दबाव और खिंचाव का परिणाम है।

गार्लैण्ड, ड्राइजर और नोरिस से लेकर सिन्क्लेयर लुइस, अपटन सिन्क्लेयर, डॉस पासोस, हेमिंगवे, फॉकनर और स्टाइनबैक तक और उसके बाद युद्धोत्तरकालीन नये लेखकों तक सभी सशक्त उपन्यासकारों ने इसी पृष्ठभूमि पर अपनी रचनाएं तैयार की हैं। सन् १९२५ से १९४० तक अमेरिकन उपन्यास पश्चिमी संसार में सबसे अधिक प्रभावशाली रहे हैं।

हेमिंगवे की विशिष्ट शैली, जिसमें वह शब्दाडम्बर के बिना सत्य को उसके सही रूप में उघाड़ कर रख देता है, और अनुभव को प्रतीयमान

रूप के बजाय अनुभूयमान रूप में प्रकट करने का उसका संकल्प, सबसे अधिक प्रभावशाली थे। उसकी रचनाओं में आधुनिक मानव का यह भय भी अन्तर्निहित रहता था कि कहीं अपनी दुनिया पर से उस की पकड़ और नियन्त्रण ढीला न हो जाए। उसके पात्र आत्मनियन्त्रण खो देने के भय से हमेशा ग्रस्त रहते हैं, इसलिए वे मन्द्र सप्तक में बोलते हैं। उसके नायक आम तौर पर शारीरिक और भौतिक दृष्टि से पराजित हैं और यदि उन्होंने कोई विजय प्राप्त की भी है तो वह निरी नैतिक विजय है। उसके एक उपन्यास में एक बूढ़ा एक मछली और समुद्र के खिलाफ लड़ाई में विजय पा लेता है, परन्तु पुरस्कार नहीं जीत पाता। उसकी रचनाओं में और उसके पात्रों पर विनाश और मौत की छाया झूलती रहती है।

जॉन डोस पासोस अपने पूर्ववर्त्ती अनेक अमेरिकनों की भांति अर्थ-व्यवस्था के परिवर्त्तन से, जिसने जैफर्सन के जमाने की कृषि-प्रधान लोकतंत्री अर्थ-व्यवस्था को हैमिल्टन की बड़े व्यापारियों और उद्योग-पतियों के प्राधान्यवाली अर्थव्यवस्था में बदल दिया था, बहुत नाखुश था, इसलिए उसने १९३० के दर्शक के जन-साधारण का चित्रण एक ऐसे शोषित मानव के रूप में किया जो अपने ही देश में बेघर, बेगाना और अपनी विरासत से वंचित है। कैमरा, न्यूजरील और जीवनकथा की टैकनीक से उसने बेरोजगार और अल्पवेतनभोगी शोषित व्यक्ति की ओर से विद्रोह का झंडा खड़ा किया। उसके नायकों को हेमिंगवे के नायकों की भाँति लड़ने का मौका ही नहीं मिलता, वे हमेशा हारे रहते हैं और विराट् महानगरी, जिसके लिये व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं है, उन्हें हमेशा असहाय बनाये रखती है।

विलियम फॉकनर ने दक्षिण के जीवन का अध्ययन करते हुए उस में हिंसा, पतन और असामान्यता पायी। फॉकनर ने दक्षिण का जो चित्रण किया उसमें वर्त्तमान पर अतीत का प्रभाव और लज्जा के साथ गर्व का सम्मिश्रण था। उसमें जातीय असहिष्णुता के भार से दबी

हुई गन्दी बस्तियां उद्योगों से ैदा किए गए दुःस्वप्न से भी कहीं अधिक भयंकर चित्रित की गई हैं। इन रचनाओं के कथानक एक प्रकार के दुःस्वप्न हैं, यहाँ तक कि कथानक में आने वाले कुछ अस्पष्ट तत्त्वों में दुःस्वप्न की सी भयंकरता है। फिर भी फॉकनर ने अपने साहित्य में दुःखान्तता की सृष्टि की, जो कम-से-कम अर्थहीनता से तो बेहतर ही थी।

अन्य लेखक-लेखिकाओं ने भी, जिनमें बीसियों बहुत अच्छे हैं, अमेरिका के जीवन को भिन्न-भिन्न झरोखों और टेकरियों पर खड़े होकर ऐसे ही अनुज्ज्वल और धुंधले पहलू से देखा है। अर्स्काइन कैल्डवैल ने जॉर्जिया से और जेम्स फैरेल और मेयर लेविन ने शिकागो से अमेरिकन जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है, किन्तु दोनों का ही चित्रण अँधियारे जीवन की झाँकी है। जॉन ओ' हारा ने भी उच्च अभिजात वर्ग में जीवन का खोखलापन देखा है और बड शुलबर्ग को हॉलीवुड में कोरी स्वार्थवृत्ति और घूँसेबाजी आदि के अखाड़ों में और सागर-तट के पुलिन प्रदेशों पर ही नहीं, बल्कि ऐसी सभी जगहों पर, जहाँ सत्ता और शक्ति मनुष्य को सामाजिक रीति-नीति और आचार के उल्लंघन के लिए प्रलोभित करती है, भ्रष्टाचार और कुत्सा दिखाई दी।

किन्तु अमेरिका बहुत बड़ा देश है, उसकी विशालता और विविधता के कारण कुछ स्थानों से ऐसा साहित्य सृजन भी हुआ है, जो अधिक उत्साह और आशा का संचार करता है, क्योंकि वह जीवन को यथार्थ-वादिता से और कम निराशावादिता से चित्रित करता है। डोरोथी कैनफील्ड फिशर ने वरमोंट के ग्राम जीवन को ही चित्रित नहीं किया, बल्कि यांकी संस्कृति को समझने में भी हमें सहायता दी है। वाल्टर डी० एडमंड्स और सेम्युअल हॉपकिन्स ऐडम्स ने न्यूयार्क राज्य के उत्तरी भागों के निवासियों का, मार्था ओस्टेन्सो (और उससे पूर्व विला कैथर) ने उत्तरी मैदानों के एकाकी आप्रवासी किसानों के और ए० बी० गथरी ने सुदूर उत्तर-पश्चिम के पर्वतवासियों के जीवन का चित्रण किया

है। कोनराड रिश्टर ने पेनसिलवेनिया और दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश के अतीत जीवन का, क्लाइड ब्रामन डेविस ने अनेक स्थानों के, विशेषकर मिसूरी और कोलोराडो के और मार्जोरी किनन रॉलिंग्स ने फ्लोरिडा के देहातों के जीवन को अंकित किया है। बेन लूसियन बर्मन ने नदी के माँझी की संस्कृति के चित्रण में विशेषज्ञता प्राप्त की है।

जब हम फिर दक्षिण की ओर आते हैं तो हमें हिंसा और पतन की झाँकी साहित्य में पुनः मिलती है, फिर भी हमारे अनेक दक्षिणी उपन्यासकार अत्यन्त प्रतिभाशाली हैं। इस कोटि में कार्सन मैककलर्स लिलियन स्मिथ, यूडोरा वेल्टी और अन्य अनेक लेखक-लेखिकाओं की गणना की जा सकती है।

अमेरिका में प्रायः सभी लोग आप्रवासी हैं, इसलिए उन्होंने नवागन्तुक आप्रवासियों के अनुभवों, यूरोप और अन्य महाद्वीपों में उनके अतीत जीवन, उनके संघर्ष और धीरे-धीरे नई संस्कृति के आत्मसात्-करण के चारों ओर बहुत-सा साहित्य का ताना-बाना बुना है। इर्विंग फाइनमैन ने पुराने यहूदी जीवन का बहुत बारीक और पैनी दृष्टि से वर्णन किया है और हर्मन वौक ने मौजूदा समाज-व्यवस्था पर तीव्र आघात किया है। ओलिवर ला फार्ज ने अपने 'लाफिंग ब्वाय' और अन्य उपन्यासों में इंडियनों के दो संस्कृतियों के बीच संघर्ष के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। रिचर्ड राइट और अन्य नीग्रो लेखकों ने नीग्रो लोगों पर जाति-भेद के प्रभावों का वर्णन किया है। ऐसे लेखकों की सूची से पूरा एक पृष्ठ भर सकता है, जिन्होंने हमारे जटिल जातीय चित्र में रंग भरे हैं।

अमेरिकनों ने जब अपनी निज की मिश्रित और संकर संस्कृति से बाहर निकलकर अन्तर्राष्ट्रीय जगत् को समझने की कोशिश की, तो फिर उपन्यास ने ही दोनों संसारों के बीच पुल का काम किया। पर्ल बक ने चीन का मर्मस्पर्शी चित्रण किया और जेम्स मिश्नर ने एशिया की अन्य संस्कृतियों का वर्णन। अमेरिकनों ने हमेशा यूरोप की पृष्ठभूमि

पर उपन्यास लिखे हैं। जब उनकी दिलचस्पी अफ्रीका की ओर हुई तो उन्होंने उस दुःखग्रस्त प्रदेश के जीवन और उसकी समस्याओं को समझने के लिए उपन्यासों का ही आश्रय लिया, हालाँकि ये सब उपन्यास अमेरिकनों के ही लिखे हुए नहीं थे।

यद्यपि संयुक्त राज्य का जीवन उसके उपन्यासों के भीतर से देखने पर हमें मुख्यतः निराशा का ही जीवन लगता है, तो भी कुछ चोटी के लेखक ऐसे हैं जिन्होंने इस जीवन की अधिक सन्तुलित झाँकी प्रस्तुत की है। यद्यपि स्टाइनबेक ने मानव पर प्रकृति और उत्तरदायित्वहीन समाज के अत्याचारों पर बहुत रोष और आक्रोश प्रकट किया है, तो भी जीवन के प्रति उसकी अविचल आस्था और जीवित रहने के लिए संघर्ष करने की उसकी भावना उस आक्रोश को सन्तुलित कर देती है। व्यंग्यकार और शुद्धाचारवादी जे० पी० मार्क्वैण्ड ने अपनी रचनाओं में दिखाया है कि जो लोग पिछली पीढ़ी के पैमाने के मुताबिक जीते हैं या दौलत जिन्हें रूढ़िवादी बना देती है, वे कैसे मानवीय शक्ति को बर्बाद करते हैं। फिर भी उसका स्वर सहानुभूति से भरा है, उसमें क्रोध या निराशा नहीं है।

रॉबर्ट पेन वारेन ने अपनी जीवन की तस्वीरों में, खासकर दक्षिण के जीवन की तस्वीरों में दुःख की सच्ची अनुभूति अंकित की है, उसने दिखाया है कि अच्छे इरादों और सदाशयता से किए गए कामों का परिणाम भी अक्सर खराब हो जाता है। उसे यह कथन एक क्रूर व्यंग्य दिखाई देता है कि अक्सर बुराई में से भी भलाई पैदा हो जाती है, जैसा कि विली स्टार्क ने अपने 'ऑल दि किंग्स मैन' उपन्यास में स्पष्ट किया है। फिर भी आशा की बात यही है कि मनुष्य आज भी न्याय के लिए आतुर और व्यग्र हैं, हालांकि वे उससे वंचित कर दिए गये हैं, या स्वयं उन्होंने ही उसे विकृत कर दिया है।

जेम्स गोल्ड कोज़न्स ने अनेक विषयों पर रचनाएँ लिखी हैं, परन्तु वह हमेशा मानव के संघर्ष को आध्यात्मिक मूल्यों के एक ढाँचे के भीतर

ही देखता है। उसकी दृष्टि में मानव की मुख्य समस्या यह है कि अच्छाई को बुराई से अलग करके कैसे पहचाना जाए और कैसे वरणीय का वरण किया जाए। उसकी पुस्तकों में बुराई और कुत्सा के प्रति चिन्ता अवश्य है किन्तु वह उससे अभिभूत नहीं होता।

एडना फर्बर, जिराल्ड वार्नर ब्रेस और हैमिल्टन बासो आदि लेखक-लेखिकाओं की गिनती भी उन्हीं में की जा सकती है जिनके पाँव बुराई और पाप की लहर में उखड़े नहीं और जो सामान्य जीवन के पुनर्निर्माण के इच्छुक हैं और व्यक्ति और समाज की पारस्परिक अनुक्रियाओं में रुचि लेते हैं।

और भी अनेक होनहार लेखक हैं और यह उचित प्रतीत नहीं होता कि उनमें से कुछ का अलग से नामोल्लेख किया जाए, फिर भी नेल्सन आलग्रेन और सोल बेलो सम्भवतः उन लेखकों में विशिष्ट और प्रमुख हैं, जो सामान्य जन में, बल्कि सामान्य से भी निम्न श्रेणी के मानव में दिलचस्पी लेते हैं और जिनमें पाठक को व्यक्तिशः आकृष्ट करके इस श्रेणी के मानव का पुनः सृजन करने की क्षमता है।

संयुक्त राज्य में ऐतिहासिक उपन्यास बहुत लोकप्रिय हैं, क्योंकि अमेरिका को अपने इतिहास पर गर्व है और वह अपने अतीत को बिल्कुल हाल का और अत्यधिक निकटवर्ती होने के कारण सहज में ही देख भी सकता है। ऐतिहासिक उपन्यासकारों की संख्या बहुत बड़ी है, फिर भी उनमें कैनेथ रॉबर्ट्स, सेम्युअल शेलाबर्गर, टामस बी० कोस्टेन, ब्रुश लेंकास्टर और वान विक मेसन विशेष दक्ष हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखे गये उपन्यास अनेक सिद्धहस्त लेखकों की छायानुकृति हैं। उनका बाह्य ढाँचा डोस पासोस से लिया गया है, क्योंकि अपने नायकों को सामूहिक रूप से चित्रित करने के लिए लेखकों को उसकी टैकनीक की आवश्यकता है। उन्होंने पात्रों की मनःस्थिति के चित्रण में स्कॉट फिट्ज़जिराल्ड से, हास-परिहास के लिए स्टाइनबेक से और क्रिया, गति और वार्त्तालाप के

लिए हेमिंगवे से प्रेरणा ली है। इन सब उपन्यासों की एक विशेषता यह है कि उनमें एक ऐसी पलटन या दस्ते का चित्रण अवश्य होता है जिसमें सभी जातियों के लोग होते हैं। इस पलटन या दस्ते में जातीय या इतर विद्वेष उभर आते हैं, किन्तु अन्त में नायक किसी ऐसी जाति का व्यक्ति बनता है जिससे सबसे अधिक घृणा की जाती रही है। असहिष्णु लोग या तो मारे जाते हैं या उनका हृदय-परिवर्तन हो जाता है और शत्रु के आक्रमण की अग्निपरीक्षा के समय सब भाई-भाई बन जाते हैं। जाति-विद्वेष के अलावा उन अफसरों और स्त्रियों के प्रति, जो सुदूर अपने देश में ही हैं, इन विदेश-स्थित सैनिकों में घृणा पैदा हो जाना भी अक्सर इन उपन्यासों में पाया जाता है। ये लोग यद्यपि कठोर अनुशासन को नापसन्द करते हैं, तो भी युद्ध को अनिवार्य मान कर उसे अपने जीवन की एक शर्त के रूप में ग्रहण कर लेते हैं। लेकिन वे किसी मिशन या आदर्श की भावना से नहीं लड़ते, बल्कि इस विश्वास के साथ लड़ते हैं कि यह मुसीबत स्वदेश लौट जाने पर उन्हें कुछ समय तक आराम और छुट्टी मनाने का हक तो दिलाएगी। यह बहुत बड़ी आशा की बात है कि इन उपन्यासों में अच्छे पात्रों और चरित्रों की कमी नहीं होती और वे सब साधारण मानव होते हैं जो संकट के समय अत्याचार के विरुद्ध सीना तानकर खड़े होते हैं।

किसी भी लेखक ने ठेठ अमेरिकन कस्बे की कहानी नहीं लिखी। किसी ने यह वर्णन नहीं किया कि किस प्रकार एक अमेरिकन कस्बे में स्कूलों, गिरजाघरों, कारखानों, दफ्तरों या क्लबों में विभिन्न वर्गों का जीवन स्पन्दित होता है; कैसे वहाँ गेंद के खेल होते हैं, परेडें होती हैं और चौक-चौराहों पर नृत्य-मंडलियाँ थिरकती हैं, कैसे राजनीतिक संघर्ष और आर्थिक उतार-चढ़ाव होते हैं, सड़क और गली के दोनों ओर मकानों की कतारें होती हैं और कितने ही घर आन्तरिक मनोमालिन्य से उजड़े रहते हैं। किसी ने यह नहीं बताया कि इन कस्बों में क्रिसमस के दिन रंग-बिरंगी बत्तियों से सड़कें और गलियाँ जगमगा उठती हैं।

वहाँ के लोगों में उपहासास्पद अभिमान भी है और सीधा-सादा भोलापन भी। आग या बाढ़ के खतरे के समय सभी नगर की रक्षा के लिए उमड़ पड़ते हैं। वहाँ छोटे आदमियों में वीरता और बड़प्पन है और बड़ों में आन्तरिक अधःपतन। कस्बे में अपने लिए एक अनोखी अनुभूति है और अपने शिशु और किशोर वर्ग में वह सुरक्षा और भय दोनों का संचार करता है। लेकिन किसी ने इनकी कहानी को साहित्य में चित्रित नहीं किया।

अमेरिका की संस्कृति निरन्तर बन रही है, इसलिए अमेरिकन लेखक यह भरोसा नहीं कर सकते कि उन्हें ऐसे पाठक मिल जाएँगे, जो उनके इंगित या अर्धस्पष्ट अर्थ को स्वयं समझ सकेंगे। इसीलिए (जैसा कि मार्गरेटमीड ने कहा है, उन्हें ऐसी वस्तुओं को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना पड़ता है जिनका परम्परा से बँधा-बधाया स्पष्ट और गहरा अर्थ है, वे ऐसे शब्दों का सहारा नहीं ले सकते जो अपना अर्थ अपने आप अभिव्यक्त करते हैं। इसी कारण शायद उन्होंने अपसामान्य का चित्रण किया है और व्यंग्य और हास-परिहास का आश्रय लिया है, क्योंकि इसमें संकेतों को आसानी से समझा जा सकता है।

यह भी एक कारण है, जिससे कि कविता ने अपने सन्देश को जन-साधारण तक पहुँचाने का प्रयत्न छोड़ दिया और वह केवल बुद्धिजीवी विदग्ध समाज की दिमागी कसरत बनकर रह गई और इस विद्ग्ध समाज की संख्या भी अधिक नहीं है। चालीस वर्ष पूर्व जिस पीढ़ी ने कविता का पुनरुद्धार किया था, उसमें से सिर्फ रॉवर्ट फ्रोस्ट ही एकमात्र कवि है जो आज भी सार्वभौम वाणी में कविता करता है, जिसकी कविता धरती के साथ इतनी घुल-मिल गई है कि हर कोई उसे प्यार करता है और आसानी से समझ लेता है। फिर भी बहुत-से अन्य अच्छे कवि भी हैं, तरुण भी और प्रौढ़ भी, जो अब भी उनके लिए काव्य का सृजन करते हैं, जिनके पास उसे सुनने के लिए कान हैं।

पाठक अब भी संसार को, जो अधिकाधिक जटिल होता जा रहा है, समझने के लिए कथा और उपन्यास से भिन्न साहित्य की ओर अधिकाधिक अभिमुख हो रहे हैं। इधर इस पेचीदा दुनिया को स्पष्ट करने के लिए अध्ययन के दूसरे नये-नये साधन भी निकलते आ रहे हैं। पाठक राष्ट्र के सब से खूनी अनुभव गृह-युद्ध को पूरी तरह समझने के लिए अनेक उत्तम पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। महापुरुषों के जीवन-चरित, मृत सागर से लेकर बाह्य आकाश की यात्रा की सम्भावनाओं तक सभी प्रकार की वर्णनात्मक पुस्तकें, राजनीतिज्ञों और सेनापतियों के संस्मरण, राजनय सम्बन्धी ग्रन्थ और आध्यात्मिक जीवन सम्बन्धी पुस्तकें सभी यहाँ लोकप्रिय हैं। अमेरिकन लोग अपने ग्रन्थों को अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर रचने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि वे सारी दुनिया में अपना रास्ता बनाना चाहते हैं, और सारी दुनिया के लिए चिन्तित हैं।

अमेरिका में पुस्तकों के पढ़ने का व्यसन काफी बढ़ गया है, क्योंकि एकाएक यहाँ सस्ती किताबों का चलन हो गया है, जो २५ सेंट से एक डालर तक की कीमत में मिल जाती हैं। ऐसा लगता है कि ये सस्ते संस्करण निकालकर टैकनॉलोजी ने अन्त में किताबों की ऊँची कीमत की समस्या का समाधान निकाल लिया है। यद्यपि नई किताबों की कीमत भी और सब वस्तुओं के साथ-साथ बढ़ रही है, तथापि उनके पुनर्मुद्रण (और कहानी एवं उपन्यास साहित्य की कुछ मूल पुस्तकें भी) पत्रिका के बराबर मूल्य पर सुलभ हो रही हैं। इससे देश में पुस्तकों की बाढ़-सी आ गई है। पहले जहाँ अमेरिका में कुल ५०० पुस्तकों की दुकानें थीं, वहाँ आज उनकी बिक्री के स्थान ५० हजार हैं, क्योंकि स्टेशनरी की हर दुकान, यहाँ तक कि दवाइयों की दुकानें भी, पुस्तकें बेचती हैं। गृहिणियाँ रसोईघर का सामान जिस दुकान से खरीदती हैं, उसके पास की दुकान से उन्हें किताबें भी आसानी से मिल सकती हैं। सन् १९५६ में तीस करोड़ सस्ती किताबें बिकीं। आज चूँकि पुस्तकें भी इतनी सस्ती हो गई हैं कि बेफिक्री से पत्रिकाओं की तरह फेंकी

जा सकें, इसलिए आज वे लाखों और करोड़ों की संख्या में प्रकाशित होती हैं।

सस्ते संस्करणों में प्रकाशित कुछ पुस्तकें बिल्कुल निकम्मी होती हैं, जैसा कि उनके घटिया और रद्दी मुखपृष्ठों से स्पष्ट हो जाता है। किन्तु उन में कुछ उच्च कोटि की प्राचीन या आधुनिक साहित्य की पुस्तकें या गम्भीर विषयों की कठिन पुस्तकें भी होती हैं। इतनी बौद्धिक सम्पदा इससे पूर्व कभी भी जनता के लिए इस कदर सुलभ नहीं हुई।

उपर्युक्त सस्ती पुस्तकों के अलावा ११,५०,००,००० महँगी पुस्तकें और ६,५०,००,००० बच्चों की पुस्तकें भी १६५६ में बिकी। इनके अतिरिक्त बाइबिलें, विश्वकोश, पाठ्य पुस्तकें और टैक्निकल पुस्तकें भी भारी संख्या में बिकीं। अनुमानतः इनकी संख्या ८० करोड़ थी।

पुस्तक क्लबें, जिनकी सदस्य संख्या कई लाख है, पुस्तकों की बिक्री में और भी अधिक योग देती हैं।

ब्राडवे के रंगमंचों की आर्थिक दशा को देखते हुए रंगमंच के लिए नाटक लिखना एक तरह का जूआ खेलना है, फिर भी टेनेसी विलियम्स और आर्थर मिलर रंगमच के ऐसे लेखक हैं जिन से दिलचस्प और उच्च कोटि की रचना की आशा की जा सकती है। इस बीच सारे देश में लघु रंगमंच, जिनमें विश्वविद्यालयों के रंगमंच भी शामिल हैं, नये और पुराने नाटकों के अभिनयों का प्रदर्शन करते रहते हैं। अभिनय शैली, प्रस्तुतीकरण और लेखन में उनके नये प्रयोग प्रायः बहुत दिलचस्प और मनोरंजक होते हैं। ग्रीष्मकालीन नाट्य कार्यक्रमों ने अमेरिका में अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। खलिहानों में, सामाजिक केन्द्रों में, टाउन हॉलों में और खास तौर से बनाये गये रंगमंचों में, जहाँ कहीं भी श्रोता और दर्शक उपलब्ध हो गये, ब्राडवे के पेशेवर कलाकार और तरुण शौकिया कलाकार मिलकर शेक्सपीयर के नाटकों से लेकर आधुनिक प्रहसन तक सभी प्रकार के नाटकों का अभिनय करते हैं।

जाज़

जब थाईलैंड का राजा बेनी गुडमैन के संगीत समारोह में सम्मिलित होता है और संगीत की समाप्ति पर उसे राजकीय पदक से विभूषित करता है, जब लुई (सैचमो) आर्मस्ट्राँग लन्दन के रॉयल फेस्टिवल हॉल में रॉयल फिलहार्मोनिक ऑरकेस्ट्रा के साथ अपनी तुरही बजा कर सबको मुग्ध कर देता है, जब मध्यपूर्व के श्रोता जीवन में पहली बार डिजी गिलेस्पी के संगीत कार्यक्रमों में जाज़ संगीत सुनकर विभोर हो उठते हैं, तब यह मानना ही पड़ेगा कि संसार जाज़ संगीत को संस्कृति के लिए एक नई और मोहक देन स्वीकार करता है। लुई आर्मस्ट्राँग ने जर्मनी में अपना जाज़ संगीत प्रस्तुत करने के बाद अपने श्रोताओं के बारे में एक बार कहा था, "वे लोग जब हाथ से तालियाँ बजाते-बजाते थक गये तो कुर्सियाँ खटखटा कर ही अपना हर्ष व्यक्त करने लगे।"

गिलेस्पी और उसका बैंड एक ऐसे वक्त ग्रीस पहुंचे, जब वहाँ अमेरिका-विरोधी भावना बहुत प्रबल थी। किन्तु जिन छात्रों ने एथेन्स के अमेरिकन दूतावास पर पत्थर फेंके थे, वही उनका संगीत सुनने के लिए सभाभवन में आये और उस संगीत से मस्त होकर और होश-हवास खोकर वहाँ व्यवस्था कायम करने के लिए तैनात पुलिस के सिपाहियों के साथ नाचने लग गये। वे गिलेस्पी को कन्धों पर उठा कर घर ले गये।

जाज़ का जन्म और विकास दोनों अमेरिका में हुए। मूलतः यह लोक-संगीत है, किन्तु टैक्निकल दक्षता और निपुणता से इसका विकास किया गया और इसे एक ललित कला का रूप दिया गया। जाज़ संगीत दो महान् संगीत-परम्पराओं का मिश्रण है—एक यूरोपीय संगीत जिस में समस्वरता और असम स्वर दोनों हैं, और दूसरा पश्चिमी अफ्रीकी संगीत जो जटिल ताल और लय से युक्त है। इसमें सन्देह नहीं कि मूलतः यह नीग्रो संगीत है, जिसे अमेरिका में गुलामों के रूप में लाये गये नीग्रो खेतों में काम करते हुए या प्रार्थना करते हुए मस्त होकर

गाते थे। उसे विकसित और परिष्कृत किया अमेरिकन गोरों ने। यह कहना अधिक सही होगा कि यह गोरों द्वारा नीग्रो लोगों के संगीत के आत्मसात्करण से उत्पन्न संगीत है। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि इसका विकास मुख्यतः न्यू ओर्लियन्स में हुआ, जहाँ फ्रेंच और स्पेनिश रक्त वाले नीग्रो लोगों ने दो सांस्कृतिक धाराओं को मिलाकर इसकी रचना की।

यदि नीग्रो लोगों को प्रारम्भ से ही अमेरिका में पूर्णतः आत्मसात् कर लिया गया होता या उनका पूर्णतः बहिष्कार ही कर दिया गया होता, तो जाज कभी विकसित न हो पाता। यह वास्तव में एक ऐसे दुविधाग्रस्त समाज की उपज है, जो नीग्रो के सर्वोत्तम गुणों की प्रशंसा करता है, किन्तु साथ-ही ईसाइयत और लोकतन्त्र के सिद्धान्तों में इतना पूर्ण विश्वास नहीं करता कि उसे समाज में अपने समान पूरा दर्जा दे सके। फिर भी नीग्रो ने अपनी लोक-कथाओं के डरपोक खरगोश की तरह अपने अधिक ताकतवर भाइयों को चुपचाप चतुराई से हरा दिया है, क्योंकि उसका संगीत संसार में प्रायः सर्वत्र संयुक्त राज्य की कला को दी गई सबसे बड़ी देन समझा जाता है।

जाज संगीत निरन्तर विकास की मंज़िलों से गुजरता हुआ पूर्णता की ओर बढ़ा है। जिस समाज का वह अंग है, उसी की भाँति वह हमेशा परिवर्तित होता रहा है और नई-नई राग-रागिनियों, नये स्वरों और नये वाद्यों की संगति से, जो आज भी काम या भक्ति के समय गाये जाने वाले गीतों के निर्माताओं द्वारा विकसित किए जा रहे हैं, निरन्तर प्रवर्द्धमान हो रहा है। वह संगीत की सभी नई विधाओं को अपनाने के लिए तैयार रहता है।

जाज़ उन लोगों पर भी, जिन्होंने उसे पहले कभी नहीं सुना, इतना प्रबल प्रभाव कैसे डालता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए हैम्बर्ग हॉट क्लब के अध्यक्ष ने कहा है कि "जाज़ संगीत की हर बैठक एक तरह से एक छोटा लोकतन्त्र है, जिसमें हर वाद्य का स्वतन्त्र और बराबरी

का दर्जा है। उसमें सब वादकों को एक सूत्र में बांधने वाली शक्ति है हर वादक के प्रति सहिष्णुता की भावना।" एक नया व्यक्ति भी जाज़ संगीत सुन कर तत्काल यह अनुभव करेगा कि उसमें स्वतः-स्फूर्ति, कला और वैयक्तिक सृजनशीलता है और साथ ही परस्पर सहयोग और समवेत वादन की भावना भी है। जाज़ लिखित स्वर लिपि के बिना भी केवल शुद्ध वादन कौशल और पारस्परिक सहयोग से चलता है।

किन्तु मनोविज्ञानशास्त्री जाज़ की माधुरी और आकर्षण की बिल्कुल दूसरी ही व्याख्या करता है। उसका कहना है कि जाज़ एक तरह से अधिकारी सत्ता के प्रति विरोध और विद्रोह है और यही कारण है कि वह किशोरों, बुद्धि-जीवियों और नीग्रो लोगों को सबसे अधिक आकृष्ट करता है, क्योंकि वे सभी समाज से तिरस्कृत होने के कारण उस तिरस्कार का कुछ प्रतीकार चाहते हैं।

एक कला के प्रति संवेदनशीलता मनुष्य को दूसरी कला के प्रति भी संवेदनशील बनाती है। यह सम्भव है कि जाज़, जो किसी समय वेश्यालयों का जुगुप्सित संगीत समझा जाता था, अमेरिकनों में अन्य कलाओं के प्रति भी आकर्षण और संवेदन पैदा करे।

किन्तु जाज़ है क्या? मार्शल स्टन्र्स का कहना है कि "वह एक अर्ध स्वतःस्फूर्त्त अमेरिकन संगीत है, जो तत्काल हृदयग्राही हो जाता है, जिसमें कण्ठस्वर का खुल कर स्वतन्त्रता से उपयोग किया जाता है और उसके साथ ही मिश्रित लय और ताल प्रवाहित होते हैं। वह तीन सौ वर्ष तक संयुक्त राज्य में यूरोपीय और पश्चिम अफ्रीकी संगीत परम्पराओं के सम्मिश्रण के लिए किए गये परीक्षणों का परिणाम है। इसके प्रधान तत्व हैं—यूरोपीय समस्वरता, यूरो-अफ्रीकी राग और अफ्रीकी लय और ताल।"

किन्तु आम प्रचलित लोकप्रिय गीतों को, जिनमें से कुछ अवश्य ही खूब आकर्षक हैं और स्मृति-पट पर अंकित हो जाते हैं, लेकिन अधिकतर

नियत प्रतिमान में बाँध दिए गये हैं और हृदय को झंकृत नहीं कर पाते, जाज़ संगीत समझना भूल होगा।

अन्य संगीत

नीग्रो भक्ति संगीत आज भी रचा जा रहा है। मूलतः यही संगीत जाज़ का आरम्भिक स्रोत रहा है। ये गान हृदय की गम्भीर भक्ति को, परम आनन्द और गहरे दुःख को अभिव्यक्त करते हैं। अमेरिका के उच्चतम संगीत की तुलना में वे बखूबी ठहर सकते हैं। अन्य लोकसंगीत भी हम लोगों के बीच में अभी तक जीवित हैं। लीडवेली के काम के समय गाये जाने वाले गीत, वुडी गथरी और सिस्को हौस्टन के आधुनिक गाथा गीत, चरवाहे और लकड़हारे जॉन जैकब नाइल्स आदि गायकों के पुराने अंग्रेजी गाथा गीत और रेल कम्पनियों के मजदूरों के पुराने गान—ये सब हमें यह स्मरण कराते हैं कि देश में नाना प्रकार की स्वर लहरियाँ और संगीत-शैलियाँ गूँज रही हैं, जिन्हें संसार के सभी भागों से आप्रवासी लोग अपने साथ यहाँ लाये थे और जिनका नई परिस्थितियों के अनुसार यथोचित संस्कार और परिष्कार कर दिया गया है।

अमेरिकन गीतकारों ने संगीत-शालाओं के लिए वृन्द संगीत की आधार-भूत स्वर-लहरियाँ खोजते-खोजते इस लोककला का आविष्कार कर डाला। इस लोक-संगीत की रचना इतनी समृद्ध और इतने बड़ पैमाने पर हुई कि उसके महत्त्व को सहज में आँका नहीं जा सकता।

चार्ल्स आइव्स (१८७४-१९५४) यद्यपि अपने जीवन-काल में अधिकतर उपेक्षित और अज्ञात रहा, तो भी आज एक महान् संगीतकार के रूप में उसे धीरे-धीरे सम्मान मिलने लगा है। उसने शोएनबर्ग और स्ट्राविन्स्की की कुछ नई रचनाओं का पहले ही निर्माण कर दिया था। उसके 'कॉंकोर्ड, मैसाचुसेट्स (१८४०-१८६०)', 'थ्री प्लेसेज इन न्यू-इंग्लैंड' आदि संगीत ग्रन्थों और १५० के लगभग गीतों और संगीतशाला में गाये जाने वाले संगीत में अमेरिकन शैली पायी जाती है। उसकी पुस्तकों के विषय मुख्यतः लोक-संगीत हैं और वह पुराने जमाने की

नीग्रो संगीत मंडलियों या न्यू इंगलैंड के किसी कस्बे में जुड़ने वाले गायकों के दलों का वर्णन करने में खूब आनन्द पाता है। इस लोक-कला सामग्री के बावजूद आइव्स ने संगीत की अपनी निज की शैली का आविष्कार किया, जो उसके जमाने से बहुत आगे की थी। उसमें बहु-स्वरता, मिश्रताल और सम एवं असम स्वर विद्यमान थे।

जाज़ की शैली से महत्त्वपूर्ण तत्त्व ग्रहण कर आरन कोपलैंड ने वृन्द संगीत में एक नये प्राण का सृजन किया। उसका 'लिंकन पोर्ट्रेट' गान और 'एपलेचियन स्प्रिंग' गेय नाटिका स्पष्टतः अमेरिकन हैं, और इस गेय नाटिका की मूल वस्तु एक प्रचलित लोकप्रिय गीत है। रेडियो और सिनेमा फिल्मों के लिए उसने जिन गीतों की स्वर-रचना की है, उनमें उसने लोक गीत, लोक रुचि और आधुनिक वृन्द संगीत—तीनों को मिला दिया है जिससे उनका बहुत व्यापक स्वागत हुआ है।

रॉय हैरिस को, अन्य अनेक संगीतकारों की भांति वाल्ट व्हिटमैन की कविता से प्रेरणा मिली। इस कविता को आधार बनाकर ही उसने अपनी 'सिम्फनी फार वॉयसेज' की रचना की। किन्तु उसकी 'फॉकसाँग सिम्फनी' का आधार लोकसंगीत था।

अमेरिकन विषयों और अमेरिकन पृष्ठ भूमि पर इतनी बड़ी मात्रा में उत्तम संगीत की रचना हुई है कि विशेषज्ञ लोग भी उसे पूरी तरह जान नहीं सकते। आर्थर फरवैल ने अपने गीतों की रचना के विषय नीग्रो, चरवाहे और इंडियन लोगों के समाज से लिए। डगलस मूर ने लोक-कथाओं के आधार पर अनेक गेय नाटिकाएँ लिखी हैं। देहाती सारंगी-वादकों और ब्रास बैंड में, नृत्यशालाओं और सर्कसों में उसे अपनी कितनी ही जीवन्त स्वर-लहरियों के लिए प्रेरणाएं मिलीं। उनके आधार पर ही उसने अपनी रचनाओं में हास-परिहास और विनोद का पुट दिया या विभिन्न दृश्य प्रस्तुत किये। जॉन आल्डेन कार्पेण्टर ने जाज़ से प्रभावित होकर लोकप्रिय हास-परिहास और गली-कूचों में बजाये जाने वाले मामूली बाजों की ध्वनियों को, यहां तक कि कुत्ते के

भौंकने की आवाज तक को अपनी संगीतमय रचनाओं में स्थान दिया। मेरी होव ने ऑरकेस्ट्रा वृन्द संगीत और वृन्द वादन के लिए एक ऐसे समूहगान की रचना की जो हृदय को झंकृत कर मतवाला बना देता है। इसमें आधुनिक और प्राचीन दोनों संगीतों का अत्यन्त उत्कृष्ट सम्मिश्रण किया गया था। वर्जिल टामसन ने 'दि रिवर्स' और 'दी प्लो दैट ब्रोक दि प्लेन्स' जैसी फिल्मों के लिए जो संगीत तैयार किया, उसने खूब लोकप्रियता प्राप्त की। वह लोक-संगीत और लोक-धुनों को अक्सर अपने गीतों का आधार बनाता है।

विलियम ग्राण्ट स्टिल ने, जो नीग्रो संगीतकारों में प्रमुख हैं, जाज़ की लय और ताल का लाभ उठाकर लिंचिंग प्रणाली (अपराधी को न्यायालय में न ले जाकर नागरिकों द्वारा स्वयं उसका फैसला करना और सार्वजनिक रूप से यातना देकर मार डालना) पर एक गीत-नाट्य लिखा और एक अफ्रो-अमेरिकन सिम्फनी की रचना की। रैण्डाल थाम्पसन की सैकंड सिम्फनी अपनी समस्वरता, लोक-गीत की धुन की अनुभूति और सजीव लय के कारण एक ऐसा संगीत प्रस्तुत करती है, जो स्पष्टतः अमेरिकन भी है और आधुनिक श्रोताओं के लिए कर्णप्रिय भी। उसकी अन्य रचनाएँ भी इसी कोटि की हैं।

अमेरिकन संगीतकारों में सबसे प्रसिद्ध जॉर्ज ग्रेश्विन है, जिसने जाज़ की परम्परा का संगीतशालाओं की परम्पराओं के साथ सफलता-पूर्वक मिश्रण किया है और जिसकी 'पोर्गी एन्ड बेस' रचना ने स्वर सौन्दर्य और यथार्थता को सम्मिश्रित कर लोकप्रिय नृत्य नाटिका और संगीत-नाटक की ओर मार्ग-निर्देशन किया है। ये दोनों ही अमेरिकन संगीत के सबसे अधिक लोकप्रिय रूप हैं। सारा संसार 'शो बोट' (जैराम केर्न), 'ओकलाहामा' और 'साउथ पैसिफिक' (रिचर्ड रोजर्स) और 'किस मी, केट' (कोल पोर्टर) के गीतों को जानता और पसन्द करता है। इस प्रकार की रचनाओं में जो स्फूर्ति और सप्राणता है, सार्वभौम मानस को झकझोरने की जो ऊर्जा है, सहज में स्मृति में बैठ

जाने वाली और देर तक मस्तिष्क में गूंजने वाली लोकप्रिय धुनें हैं, उनमें अमेरिका के जन-जीवन के अनुकूल शैली का खूब विकास और परिपाक हुआ है।

इस स्पष्टतः अमेरिकन संगीत की रचनाओं के साथ-साथ बहुत से संगीतकार ऐसी शैलियों में भी रचनाएँ कर रहे हैं, जिन्हें स्ट्राविन्स्की, शोपनबर्ग और हिण्डेमिथ के प्रभावों ने सार्वभौम बना दिया है। सार्वभौम संगीत की रचना में भी अमेरिकन संगीतकार अन्य देशों के संगीतकारों की तुलना में खड़े होने का साहस कर सकते हैं। आधुनिक संगीत में आरोह-अवरोह, लय और बहु-स्वरता की जो विशेषताएँ हैं, उन पर यहाँ बराबर प्रयोग होते रहते हैं। हेनरी डिक्सन कोवल ने पियानो वादन में एक नई विधि का समावेश किया, जिसके टोन क्लस्टर बाँह के कोहनी के आगे के सारे भाग से बजाये जाते हैं। सेम्युअल बॉर्बर ने अपनी सैकंड सिम्फनी में एक ऐसे बिजली के उपकरण का उपयोग किया, जिससे रेडियो संकेतों के समान ध्वनि निकलती है। ओटो लॉयनिंग ने टेप-रिकार्ड की गई ध्वनियों को वाद्य-संगीत में मिलाने का प्रयोग किया है। कार्ल रगल्स ने भी साधारण आरकेस्ट्रा और उसके वाद्यों की सीमाओं को तोड़ कर नई ध्वनियों और नये वाद्यों को अपने वृन्द वाद्य में समाविष्ट करने का प्रयत्न किया है। इन प्रयोगवादियों में सबसे साहसी और रूढ़ि-भंजक एडगर वारेस है जिसका जन्म फ्राँस में हुआ था, किन्तु जो १६१५ में संयुक्त राज्य में आ बसा। वारेस का विश्वास है कि संगीत का विकास तभी हो सकता है जबकि उस में निरन्तर नवीन प्रयोग चलाते रहें। उसका कहना है कि जितने भी बड़े संगीतकार हुए हैं, वे सभी प्रयोगवादी थे और संगीत को स्वतन्त्र होने के लिए शास्त्रीय बन्धनों को काट फेंकना चाहिए। 'डेज़र्टस' जैसी नई संगीत रचनाओं का, जिनमें आरकेस्ट्रा की धुनों के सामान्य शोर-गुल के साथ लाउडस्पीकरों से संगीत के रिकार्डों की तीखी ध्वनि भी आ मिलती है, भौतिक प्रभाव "बहुत जबर्दस्त" बताया जाता है।

संयुक्त राज्य ने स्ट्राविन्स्की हिण्डेमिथ, शोएनवर्ग, बरटोक और मिलहौड जैसे निष्णात संगीतज्ञों के अमेरिकन नागरिक बन जाने या दीर्घ काल तक अमेरिका में रहने से बहुत लाभ उठाया है। अमेरिकन संगीत और यूरोपीय संगीत, दोनों पर ही उनका प्रभाव स्पष्ट है।

आधुनिक शैली पर संगीत की रचना करने वाले और भी सैकड़ों व्यक्ति अमेरिका में हैं, किन्तु उसमें से कुछ का ही यहाँ उल्लेख करना सम्भव है। रोजर सेशन्स, वाल्टर पिस्टन, लुई ग्रुएनबर्ग, व्लाडीमीर डुकेल्स्की, ल्यूकस फोस, जॉन विन्सेन्ट, ल्योनार्ड बर्नस्टाइन, पॉल क्रेस्टन, ल्यो सावरवी, विलियम शुमान, कोलिन मैकफी, जॉन केज और ग्यान-कार्लो मेनोटी इसी श्रेणी के संगीतकार हैं। कोलिन मैकफी के 'टाबू टाबूहान' में बाली के संगीत की-सी लय है। जॉन केज संगीत के लिये एक नये किस्म के पियानो का इस्तेमाल करना पसन्द करता है। ग्यान-कार्लो मेनोटी की 'मनोहारी ओपेरा शैली का, जिसमें गीतिकाव्य की सी अभिव्यंजकता और नाना उज्ज्वल रंग हैं, 'अमाल एण्ड दि नाइट विज़िटर्स, के टेलीविज़न पर प्रसारण से लाखों व्यक्तियों ने रसोपभोग किया है। हावर्ड हैन्सन और डीम्स टेलर ने अपने ओपेरा और सिम्फनियों में रोमांटिक तत्वों को कायम रखा है।

संगीत और संस्कृति

अन्य सभी वस्तुओं की भाँति संगीत का पथ-निर्देशन भी सरकार ने नहीं, बल्कि स्वैच्छिक संगठनों ने किया है। देश भर में गाने-बजाने के लिए हजारों गायक-वादक दल संगठित किए गये हैं। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध बैथलहम, पेनसिलवेनिया का बाख फेस्टिवल और लिंड्सबर्ग, कन्सास में प्रतिवर्ष 'मसीहा' का अभिनय करने वाला शौकिया कलाकारों का दल है। इन शौकिया कलाकारों को पेशेवर विशेषज्ञ संगीत निर्देशन प्रदान करते हैं।

कालेज और विश्वविद्यालय भी संगीत के केन्द्र हैं। अक्सर इन संस्थाओं में छात्रों से कुछ-न-कुछ संगीत के ज्ञान की भी आशा की जाती

है। इनमें आधुनिक और प्राचीन दोनों तरह के उच्च कोटि के संगीत की महफिलों का आयोजन किया जाता है और आस-पास के इलाकों में वे मुफ्त संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। इन संस्थाओं में गीतों की स्वर-लिपि लिखना और उन्हें गायनवादन के द्वारा प्रस्तुत करना, दोनों की शिक्षा दी जाती है।

ग्रीष्मावकाश आते ही संगीत-शिविरों, संगीत सम्मेलनों और संगीत कक्षाओं का जोर-शोर से आरम्भ हो जाता है। शौकिया कलाकारों के दल तरह-तरह की धुनें निकालने लगते हैं, जो पहले से रचे हुए गीतों को स्वरबद्ध करती हैं और नये गीत रचने के लिए गीतकारों को प्रेरणा देती हैं। गायकों और वादकों के संगीत शिविरों में किशोर लड़के-लड़कियां एकाकी एवं समवेत गायन-वादन के उत्तमोत्तम कार्यक्रम पेश करते हैं। बोस्टन सिम्फनी जैसे प्रसिद्ध आरकेस्ट्रा नियमित रूप से देहातों में जाकर तारों की ठण्डी छांह में हजारों श्रोताओं के सम्मुख अपना संगीत प्रस्तुत करते हैं।

कल्पना कीजिए कि आप एकाकी वादक हैं और ओबो या वायलिन बजाते हैं। तब आप म्यूजिक अनलिमिटेड से अपने मन के अनुसार किसी प्रसिद्ध सिम्फनी का ऐसा रिकार्ड खरीद सकते हैं, जिसमें आपके वाद्य के सिवाय शेष सब वाद्य हों। उस रिकार्ड के साथ-साथ अपना वाद्य बजाकर आप मजे से एक पूर्ण सिम्फनी का स्वयं अंग बनकर उसका रसोपभोग कर सकते हैं।

संयुक्त राज्य अब अपने संगीतकारों को स्वयं ही शिक्षा देता है, इस बारे में अब वह यूरोप पर आश्रित नहीं है। हमारे हर तीन पेशेवर गायकों और वादकों में से एक अब अमेरिकन ही है और यह बात सभी स्वीकार करते हैं कि अमेरिका में भी संगीत का स्तर किसी भी कदर यूरोप के अथवा संसार के किसी भी अन्य देश के संगीत से कम ऊंचा नहीं है। किन्तु दुर्भाग्य से इन श्रेष्ठ कलाकारों में से कितने ही ऐसे हैं जिनकी कला को संगीतशालाओं और रंगमंचों के प्रबन्धकों ने खरीद

लिया है, इसलिए जनसाधारण तक उनका रस पहुँच नहीं पाता। अमेरिकन गायक संघ ने ऐसे संगीत के गायन और वादन पर प्रतिबन्ध लगा दिया है, जो उसकी स्वाभाविक अभिवृद्धि और विकास में बाधा पहुँचाता है।

संगीत के श्रोताओं की संख्या में भारी वृद्धि हो जाने से अब संगीत भी व्यापार की वस्तु बन गया है। अब संगीत प्रस्तुत करने वालों को जन-रुचि का भी ध्यान रखना पड़ता है और इसका परिणाम यह है कि वे इस क्षेत्र में परीक्षण और प्रयोग नहीं कर सकते। श्रोताओं की विशाल संख्या को प्रसन्न रखने के लिए संगीतकार को अपनी प्रतिभा पर बन्धन लगा देना पड़ता है, ताकि उसके नए प्रयोगों से कहीं श्रोता बिगड़ न उठें। यह कुण्ठा उसे अपने हृदय में मचल रहे किसी नए स्वर को बाहर अभिव्यक्त करने से रोक देती है। इसका एक परिणाम यह भी होता है कि संगीत का रचयिता गायक-वादक के मुकाबले में ही नहीं, उसकी रचनाओं को प्रस्तुत करने वाले रेडियो स्टेशन या सिनेमा स्टुडियो एवं विज्ञापन कर्ता के मुकाबले भी गौण हो जाता है। दूसरी ओर उसकी रचनाएँ ग्रामोफोन के रिकार्ड आदि के द्वारा लोगों के लिए इतनी आम-फहम और सुपरिचित हो जाती हैं कि जनता फिर नये संगीत की माँग करने लगती है।

लेकिन इस क्षेत्र में भी एक प्रतिसन्तुलनकारी शक्ति मौजूद है। विश्वविद्यालयों के सामने कोई व्यापारिक प्रलोभन नहीं होता और सरकार का भी उन पर कोई अंकुश नहीं होता, इसलिए वे संगीत-रचयिता और प्रयोगवाद-प्रेमी श्रोताओं के लिए अनुकूल वातावरण और अवसर उपस्थित कर देते हैं।

नृत्य कला

कला की खोज और साधना करते हुए अमेरिकनों ने मानो एकाएक नृत्य को फिर से खोज डाला है। 'नृत्य पुराने जमाने में हमेशा ही अमेरिकन जन-जीवन का अंग रहा है। उन दिनों जो सामूहिक लोक-

नृत्य ग्राम-जीवन को सौंदर्य और रंगीनी प्रदान करते थे, उन्हें अमेरिकनों ने नई आवश्यकताओं और नये माध्यमों के अनुसार ढाल लिया है। इसाडोरा डंकन, रथ सेंट डेनिस और टेड शौन और उनकी नृत्य मंडलियों ने सबसे पहले स्वच्छन्द मुक्त नृत्य और जातीय नृत्य लाखों अमेरिकन नर-नारियों तक पहुँचाये। उनके अधिकतर नृत्य आध्यात्मिक नृत्य थे और गिरजाघरों में लोगों ने उन नृत्यों से देवता की आराधना की। उनमें से अनेक नृत्यों की कथा-वस्तु विशुद्ध अमेरिकन विरासत से ली गई थी।

अन्य अनेक महान् नृत्य-विशारदों ने भी एक ऐसी नृत्य-कला का विकास किया है, जो गति, भंगिमाओं और मुद्राओं के साथ संगीत का समन्वय करके केवल मानवीय भावों को ही नहीं, वल्कि सामाजिक अन्याय, व्यक्तिगत दुःख और उद्वेग या विजय एवं प्रकृति के विभिन्न रूपों को अभिरूपित कर सकती है।

इस बीच नृत्य-नाटिका, जो किसी समय यूरोप की एक खास चीज समझी जाती थी, अमेरिका की भूमि और आवो-हवा में भी खूब जम गई और इन नृत्य-नाटिकाओं का प्रदर्शन करने वाली कितनी ही कम्पनियाँ अमेरिका में बन गई। ऐग्निस डि मिल ने जब नृत्य-कला को संगीत की कॉमेडी के अनुकूल ढाला और जब उसने बैले और आधुनिक नृत्य एवं लोक-नृत्य तीनों का 'ओकलाहोमा!' में सम्मिश्रण किया, तब बैले नृत्य असन्दिग्ध रूप से अमेरिका की भी अपनी चीज बन गया। नृत्य अब केवल नाटक के बीच में शोभा की एक पृथक् वस्तु नहीं रह गया था, बल्कि समूचे नृत्य कार्यक्रम का एक अंग बन गया था। सिनेमा फिल्मों में भी, जो फ्रेड एस्टेयर और जेन केली के कुशल नृत्यों से पहले ही काफी समृद्ध थीं, नृत्य अब एक अनिवार्य अंग बन गया। 'सैवन ब्राइड्स फॉर दि सैवन ब्रदर्स' फिल्म में नृत्य कथानक और चरित्र विकास का इतना स्वाभाविक अंग बन गया था कि दर्शक

उसे कथानक से अलग करके देख ही नहीं सके और इसी के लिए दर्शकों ने उसकी सबसे ज्यादा प्रशंसा की।

नृत्य विद्या टेलीविजन में और भी अधिक महत्त्वपूर्ण भाग अदा कर रही है और अब उच्च कोटि के अनेक नर्तक टेलीविजन कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं। नृत्य केवल गम्भीर ही नहीं, हल्के हास्यपूर्ण भी हो सकते हैं, जैसा कि मिमिक हास्य नर्तकी इवा किचेल अपने नृत्य के परिधान और अवगुण्ठनों में फंस कर नृत्य में तरह-तरह के हास्य और विनोद का पुट देती है।

नृत्य की शिक्षा को अमेरिका में प्रारम्भ करने का मुख्य श्रेय मार्था हिल और मार्गरेट डब्लर को है। इस शिक्षा ने अमेरिका में नर्त्तक ही तैयार नहीं किये, नृत्य-दर्शक भी तैयार किये और नृत्य को एक कला और विद्या के रूप में सम्मान दिलाया।

चित्रकला और मूर्तिकला

अमेरिकन चित्रकला पर यदि निष्पक्ष दृष्टिपात किया जाय तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि वह फ्रांस को छोड़ कर, जो इस कला में संसार का नेता है, और किसी भी देश से पीछे नहीं है। यथार्थवाद अमेरिकन चित्रकला में प्रधान भाव रहा है, किन्तु यह यथार्थवाद भी कोरी यथार्थवादिता नहीं, उसमें रोमांटिक भाव भी मिश्रित रहा है। जार्ज इन्नेस, टामस ईकिन्स, विनस्लो होमर, जेम्स ए० मैकनील व्हिस्लर, एलवर्ट राइडर, जॉन सिगर सार्जेण्ट, चाइल्ड हैसम और मेरी कैसेट आदि प्राकृतिक दृश्य के चितेरों ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में फ्रेंच इम्प्रेशनिस्ट सिद्धान्तों को अपना कर वर्तमान शताब्दी की अमेरिकन चित्रकला की ठोस नींव रखी। इनमें से विनस्लो होमर समुद्र के दृश्यों को अंकित करने में निपुण है। ए०मैकनील व्हिस्लर और एलबर्ट राइडर की शैलियां विशुद्ध व्यक्तिवादी शैलियाँ हैं जिनमें गीति-काव्य और रहस्यवाद की छाया है। जॉन सिगर सार्जेण्ट भद्र वर्ग के लोगों के चित्र अंकित करने में कुशल है।

रॉबर्ट हेनरी, जॉन स्लोन और जॉर्ज बेलोज़ के नेतृत्व में, जिन्होंने 'दि एट' (आठ) के नाम से सुप्रसिद्ध कलाकार मण्डल बना रखा था, चित्रकला के क्षेत्र में एक ऐसा आन्दोलन आया, जो उसे पुरानी रूढ़िवादी शैली और यूरोप के प्रभुत्व से दूर पूर्ण स्वतन्त्रता की ओर ले गया। यह स्वतन्त्रता पाकर कलाकार अपनी इच्छा के अनुसार विषय और टैकनीक का चुनाव करने लगे। उनका अधिक आग्रह अमेरिकन दृश्यावली को यथार्थवादिता से चित्रित करने के लिए था। इस स्वतन्त्रता ने ही "ऐश कैन स्कूल" नामक कलाकार संघ की स्थापना की जिसके सदस्य निडर होकर जो कुछ जैसा देखते थे, वैसा ही चित्रित करते थे।

आधुनिक अमेरिकन चित्रकला के इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण मोड़ का वर्ष १९१३ है, जबकि न्यूयार्क में आर्मरी शो प्रदर्शनी ने पहली बार अमेरिकन कलाकारों को इस बात की पूर्ण प्रतीति कराई कि फ्रांस में चित्रकला में निपुण कलाकार क्या कुछ कर रहे हैं। उसके बाद से ही अमेरिका में फोविज्म, क्यूबिज्म, एक्सप्रेशनिज्म, डाडा, सरियलिज्म और इसी तरह के अनेक आधुनिक वाद और आन्दोलन आये। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि कलाकार ने संसार को देखने के लिए आधुनिकवादी रवैया अपनाया (वास्तव में यह रवैया प्राचीन ही था)। वह विश्व को ऐसे देखने लगा, मानो वह कोई सर्वथा नई वस्तु हो, और पुरानी रूढ़ियों के बन्धनों से अपने आपको पूर्णतः मुक्त कर विशुद्ध आन्तरिक प्रेरणा से उसका चित्रण करने लगा। आर्मरी शो ने औद्योगिक डिजाइनों, कपड़े और आन्तरिक सजावट के डिजाइनों में, यहां तक कि मकानों में नल लगाने और धातु के घरेलू भारी सामान एवं मशीनों आदि के डिजाइनों में भी एक क्रान्ति कर दी। लोगों ने इस प्रदर्शनी में से कला की बहुत-सी सामग्री खरीद ली, जो बाद में संग्रहालयों में रख दी गई।

ऐब्स्ट्रैक्ट (अमूर्त्त) कला के प्रारम्भिक अमेरिकन उन्नायकों में मैक्स वेबर, चार्ल्स डेमथ, जॉन मैरिन, स्टुअर्ट डेविस और आर्शिल गोर्की जैसे चित्रित थे। अन्ततः इन लोगों की कृतियों से ही अमेरिकन ऐब्स्ट्रैक्ट

इम्प्रेशनिस्ट शैली का विकास हुआ। सन् १९४० के दशक में जैकसन पोलक, रॉबर्ट मदरवैल, विलियम बैजियोट्स से और मार्क रोथको इस शैली के प्रमुख कलाकार थे। इनके चित्र किसी वस्तु के चित्र नहीं थे, बल्कि स्वयं सृजन-क्रिया के चित्र थे। सन् १९४८ में जब जैकसन पोलक ने फर्श पर एक विशाल कैनवास बिछा कर उस पर रंग बिखेरना और फैलना शुरू किया, तब उसने जिस कलाकृति को जन्म दिया, वह एक तरह से 'सृजन की विस्फोटक गति' को कैनवास पर उतारने वाली उत्कृष्टतम कृति थी। उससे बढ़िया कृति की उस समय कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

आज अमेरिका में अनेक उच्च कोटि के जो ऐब्स्ट्रैक्शनिस्ट कलाकार हैं उनमें विलेम डि कूनिंग, मार्क टोबी, विलफ़ोर्ड स्टिल और फ्रांज क्लाइन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विलेम डि कूनिंग के विशाल कैनवास व्यंग्य में निपुण हैं। मार्क टोबी के चित्र कातिब की लेखनी से चित्रित प्रतीत होते हैं जिन पर पूर्व की छाया है। विलफोर्ड स्टिल के रंग कैनवास पर मानो नक्शा बनाते हैं। फ्रांज क्लाइन के काले और सफेद रंग के चित्रों की जापान में बहुत प्रशंसा हुई है। इस वर्ग के कलाकारों की विशेषता यह है कि वे रंग पर बहुत जोर देते हैं और अपनी तूलिका की गति पर कोई अंकुश नहीं लगाते।

आधुनिकवादी चित्रकला के साथ-साथ यथार्थवाद की पुरानी परम्परागत शैली भी चल रही है जिसकी कृतियों के विषय आम तौर पर अमेरिकन होते हैं। ओहायो में चार्ल्स ई० बर्चफील्ड, मिसूरी में टामस हार्ट वेण्टन, कन्सास में जॉन स्टुअर्ट करी और आयोवा में ग्राण्ट वुड पुरानी शैली के प्रमुख कलाकार हैं एडवर्ड हॉपर अपने सामने विद्यमान सामान्य दृश्य को बहुत महत्त्व देता था, इसलिए उसने गुजरते हुए दृश्यों के भीतर भी नित्यता और स्थायित्व का तत्त्व देखा और उसे अपनी चित्रकला के भीतर से व्यक्त किया। यद्यपि ऐब्स्ट्रैक्ट (अमूर्त) कला का उसके लिए कोई अधिक उपयोग नहीं था तो भी उसकी अपनी

कृतियों ने अनावश्यक विस्तार को दबाकर मोटे समतलों और रंगों के क्षेत्रों को अभिव्यक्त कर अमूर्त्तीकरण और प्रस्तुतीकरण के बीच सेतु का काम किया।

विशिष्ट यथार्थवाद और आकारिक डिजाइन को सम्मिश्रित करने वाले अन्य कलाकारों में जॉर्जिया ओकीफ, चार्ल्स शीलर, पीटर ब्लूम और जॉन ऐथर्टन के नाम उल्लेखनीय हैं।

किन्तु यह सम्भव है कि यदि एक औसत अमेरिकन से पूछा जाए कि उसे किस चित्रकार की कला सबसे ज्यादा पसंद है तो वह नॉर्मन रॉकवैल का नाम ले। यद्यपि रॉकवैल का नाम कला की पुस्तकों में बहुत कम आता है, तो भी उसके टैकिनकल लालित्य और फोटोग्राफी की-सी शैली ने, जिसमें मीठे विनोद और चुभते व्यंग्य, दोनों का पुट था, और उसके भावुकतापूर्ण घरेलू चित्रण ने उसे उन लोगों का प्रिय बना दिया है, जो यह चाहते हैं कि उनकी कला एक कहानी कहे।

पिछले बीस वर्षों में सभी स्तरों पर कला में लोगों की दिलचस्पी बहुत बढ़ी है। आर्थिक मन्दी ने यह स्वीकार कर कि बेरोजगार कलाकारों का भी सरकार पर उतना ही दावा है, जितना कि बेरोजगार ट्रक ड्राइवरों का, कला को सम्मान दिलाया। उन्होंने जो भित्ति-चित्र अंकित किए उन्होंने कला में लोगों की दिलचस्पी पैदा की। इससे पूर्व 'इण्डैक्स ऑफ अमेरिकन डिजाइन' में प्रकाशित लोक कला की कृतियों ने चित्रकला को इतना लोकप्रिय बनाया कि लोगों ने औपनिवेशिक युग के विलियम्सबर्ग (वर्जीनिया) नगर का हमारी सांस्कृतिक विरासत के रूप में पुनर्निर्माण किया। संयुक्त राज्य की सरकार अपनी इमारतों के लिए कलाकृतियों को खरीदकर विश्व की सबसे प्रमुख कला की संरक्षक बन गई।

समकालीन चित्रकला की कृतियों के संग्रह के लिए देश में अनेक संग्रहालय भी स्थापित हुए, खासकर न्यूयार्क में आधुनिक कला संग्रहालय कायम किया गया। छोटे-छोटे कस्बों ने भी अपने निवासियों के लिए

विवादग्रस्त कला की प्रदर्शनियाँ आयोजित करने के लिए धन-संग्रह किया। वर्जीनिया ललित कला संग्रहालय ने सबसे पहले एक चलती-फिरती कला-प्रदर्शनी की स्थापना की, जिसने सारे राज्य में घूम-घूम कर लोगों को सुन्दर कला-कृतियों से परिचित कराया। देश भर में छोटे-बड़े कला संग्रहालयों की स्थापना का एक लाभ यह हुआ कि उनमें बच्चों को आमन्त्रित कर तरह-तरह की कलाओं के लिए प्रोत्साहन दिया गया। उनसे चित्र बनाने, नाटक खेलने, कविता करने, बुनने या अन्य कलाओं में भाग लेने के लिए कहा जाता। इससे कला को जीवन मिला और आज अमेरिका में पाँच लाख व्यक्ति ऐसे हैं जो तैल-चित्र बनाते हैं।

मूर्त्तिकला में भी भारी परिवर्त्तन हुआ। पहले जहाँ वह शरीर के अंगों को यथार्थवादिता से प्रदर्शित करती थी, वहाँ अब वह सर्वथा भिन्न मार्ग पर चल पड़ी है। जैकब एप्सटाइन का जन्म यद्यपि अमेरिका में हुआ था, पर वह इंग्लैंड में चला गया। रूडी ब्लेश ने उसके सम्बन्ध में लिखा है कि "उसने अपनी मूर्त्तिकला से इंगलैंड के लोगों को इतना चमत्कृत किया कि उन्होंने उसे नाइट के खिताब से विभूषित कर दिया।" पॉल मैनशिप ने, जो लोक-कला और उच्चवर्ग की कला, दोनों में निपुण है, अनेक स्मारक मूर्तियाँ गढ़ी हैं। जो डेविडसन, मेहनरी यंग, गरट्रूड वांडर-बिल्ट व्हिटनी, गुट्जन बोर्गलम और मैल्विना होफमैन की कृतियों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। विलियम जोरक, इसामु नोगुची, चेंम ग्रॉस रावर्ट लॉरेंट आदि अनेक प्रमुख मूर्त्तिकारों ने प्राचीन रूढ़िवादी फार्मूलों को ठुकरा कर लकड़ी और पत्थर पर पूर्ण स्वतन्त्रता से काम किया और नई अतियथार्थवादी कल्पनाएँ अपनाईं। पिछले बीस वर्षों में मूर्त्तिकला के क्षेत्र में इतना बड़ा काम हुआ है कि सैकड़ों कलाकारों के नाम गिनाए जा सकते हैं, ऐसी दशा में केवल दस-बीस का नामोल्लेख करना अन्याय होगा।

अलेग्जैंडर कैल्डर और उनका दल स्थान-स्थान पर जाकर विभिन्न मसालों से तरह-तरह की मूर्त्तियाँ या अन्य रचनाएं गढ़ते हैं, जिनमें खाली स्थान को बहुत महत्त्व दिया जाता है। मूर्त्ति कला के क्षेत्र में यही सबसे नई प्रगति है। जेम्स अर्न्स्ट ने टेलीविजन के 'प्रोड्यूसर्स शा केस' नामक प्रदर्शन के लिए जो रचना तैयार की है, उसने लाखों व्यक्तियों को इस किस्म की कला से परिचित कराया है।

वास्तु कला

कार्यात्मकता (फंकशनलिज्म) की जड़ें संयुक्त राज्य में बहुत गहरी हैं। प्रारम्भिक अधिवासियों ने अपने घरों पर जो औजार, फर्नीचर या घरेलू सामान बनाये थे उनमें अनेक बार इतने बढ़िया डिजाइनों की चीजें बनीं कि संग्रहालयों ने अब तक उन्हें संग्रह कर के रखा हुआ है। न्यू इंग्लैंड में अंग्रेजों ने जो साधारण घर बनाये थे या डेलेवारा में स्वीडिश लोगों ने जो लकड़ी के मकान बनाये थे, वे सीधे-सादे तो थे ही, उनमें उपलब्ध सामग्री का यथासम्भव उत्तम उपयोग भी किया गया था।

सन् १८४० में होरेशियो ग्रीनो ने औद्योगिक युग की देहरी पर खड़े होकर कार्यात्मकता की समुचित व्याख्या की थी। उसने लिखा था "सौन्दर्य से मेरा अभिप्राय है कार्यात्मकता का परिणाम।" उसकी नजरों में निरी कला के लिए कला का मूल्य नहीं था, वह जहाजों, पुलों और मशीनरी के निर्माण में कला के सहयोग को ही कला मानता था। वह कहता था कि हर भवन या ढांचा बनाते हुए उसमें खाली स्थान या आकार का आकल्पन ऐसे वैज्ञानिक ढंग से किया जाना चाहिए कि वे उसकी उपयोगिता को बढ़ा सकें और यथास्थान किये गये हों। उसके विचार में लोकतन्त्र, विज्ञान और उद्योग, ये तीनों ही सौन्दर्य बोध के प्रतिमान के आधार हैं।

ग्रीनो के सिद्धान्त जॉन रोब्लिंग द्वारा ब्रुकलिन पुल के डिजाइन और निर्माण में, जो १८६६ में प्रारम्भ हुआ था, साकार हुए। इस डिजाइन में जो कसौटियाँ अपनाई गईं, वे अब भी उपयोग में आ रही हैं।

लेकिन संयुक्त राज्य ने कार्यात्मकवाद और उपयोगितावाद से प्रारम्भ अवश्य किया, किन्तु बाद में वह भी यूरोप की भांति उपयोगिता को भूलकर प्रदर्शनात्मक बाह्य रूप और आलंकारिक सज्जा के फेर में पड़ गया। दुर्भाग्य से यह उस समय हुआ जबकि अधिकतर देश का निर्माण हो रहा था। यही कारण है कि आज हमें देश में ऐसे भवन बहुत बड़ी संख्या में मिलते हैं, जो बाह्य आकार-प्रकार में आडम्बर और प्रदर्शनात्मक कला के नमूने हैं।

किन्तु हेनरी होब्सन रिचर्डसन (१८३८-१८८६) और लुई सुलिवन (१८५६-१९२४) जैसे वास्तु-शिल्पियों के नेतृत्व में शिकागो शैली के परिणामस्वरूप अमेरिकन स्थापत्य-कला फिर से प्रदर्शन और बाह्य आलंकारिकता को छोड़कर उपयोगितावाद में लौट आई। यह एक संयोग मात्र नहीं था कि वित्तीय मनोवृत्ति वाले न्यूयार्क के बजाय शिकागो में, जो कृषि-जीवियों के राजकीय नियन्त्रणवादी आन्दोलन का गढ़ था, लोकतन्त्र पर आधारित कार्यात्मकवाद पल्लवित और पुष्पित हुआ। रिचर्डसन ने इमारतों के सामने के भाग का डिजाइन इस ढंग का बनाया कि वह उसे व्यर्थ की सजावट के साथ मिलाकर गड़बड़ाने के बजाय इमारत की आन्तरिक व्यवस्था की झांकी दे सके। सुलिवन ने यद्यपि इस्पात के ढांचे या ऊँची इमारतों का आविष्कार नहीं किया तो भी उसने सेंट लुई की वेनराइट बिल्डिंग और श्लेसिंगर डिपार्टमेंट स्टोर जैसे कुछ प्रसिद्ध भवनों का निर्माण किया, जिनके डिजाइन आधी शताब्दी तक आदर्श मॉडल का काम करते रहे। सन् १८८० के दशक में सुलिवन ने अपने इस प्रसिद्ध सूत्र की घोषणा की कि "आकार कार्य या उपयोगिता को अभिव्यक्त करता है और कार्य या उपयोगिता आकार को निर्धारित करती है।" सुलिवन सामाजिक चेतना से अनुप्राणित था,

इसलिए उसने कहा था कि हमें ऐसी वास्तु कला अपनानी चाहिए जो समाज की आवश्यकताओं को पूरी कर सके और प्रगति की वाहक और साधन बन सके।

सुलिवन के शिष्य फ्रैंक लॉयड राइट (१८६९-१९५९) ने भी अपने बनाये भवनों में अपने गुरु के आदर्शों को क्रियान्वित किया। उस ने जो भवन बनाये, उनमें उसने इस बात का ध्यान रखा कि अपने बाह्य प्राकृतिक परिवेश के साथ उनका सामंजस्य हो। उसने उनमें समानान्तर धरातलों का उपयोग किया ताकि धरती के साथ उनकी पकड़ मजबूत हो और भीतर के भाग में खुला स्थान हो, वे बन्द बक्से की तरह संकरे न हों। राइट के डिजाइन का आरम्भ इस दृष्टिकोण से नहीं होता था कि मकान बाहर से देखने में कैसा होना चाहिए, बल्कि वह इस विचार के साथ प्रारम्भ होता था कि उसके भीतर रहने वाले की आवश्यकताएं क्या होंगी। वह भवन में रखे जाने वाले फर्नीचर और साज-सज्जा के सामान का डिजाइन भी इस ढंग से करता था कि वह उसका स्वाभाविक अंग बन सके, उसमें सादगी और गम्भीरता हो।

राइट भवनों के नक्शे, रचना और यान्त्रिक ढांचे के मामले में बहुत कुशल और निष्णात था। वह हमेशा नये और अद्भुत आकारों का आविष्कार करता था। गुगेनहाइम म्यूजियम का डिजाइन उसी की देन है। वह भवन-निर्माण की नई टेकनीकों का भी आविष्कार करता था।

हस्तशिल्प की वस्तुओं के उत्पादन में प्रारम्भ में जो सादगी और उत्पादन कौशल की परम्परा कायम हुई थी, वही औद्योगिक युग में भी प्रतिष्ठापित हुई। जॉन्सन वैक्स कम्पनी के लिए राइट द्वारा बनाई गई प्रयोगशाला, जनरल मोटर्स कम्पनी का औद्योगिक अनुसन्धान केन्द्र या एल्बर्ट काहन के कारखाने ऐसी इमारतें हैं जो उपयोगितावादी

दृष्टिकोण की विजय को सूचित करती हैं। इन इमारतों में सादगी और उपयोगिता ही सौन्दर्य है।

कार्यात्मकता या उपयोगितावाद की पहली विजय औद्योगिक भवनों में हुई, जबकि गगनचुम्बी इमारतें और कारखाने बनाते हुए सादगी और द्रुत निर्माण को दृष्टि में रखा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि ये इमारतें बहुत जल्दी बनकर खड़ी होने लगीं। उसके बाद रिहायशी मकानों और स्कूलों में और अन्त में गिरजाघरों और पुस्तकालयों के निर्माण में भी, जहां कि परम्परा के हावी होने से पुरानी शैली की ही पुनरावृत्ति की आशंका थी, इसी पद्धति का उपयोग हुआ। घरों के निर्माण में अब इस सिद्धान्त को ध्यान में रखा जाता है कि उनके भीतरी स्थान का उपयोग बहुविध होना चाहिए। पहले जहां बैठक, खाने का कमरा और शयनागार अलग-अलग छोटे-छोटे कमरों के रूप में होते थे, वहां अब उन्हें मिलाकर एक ही बड़े कमरे में परिणत कर दिया गया है। इस विशाल कमरे का उपयोग इन तीनों कामों के लिए होता है। यहां तक कि आजकल रसोईघर भी इस बड़े कमरे में ही शामिल कर दिया जाता है, सिर्फ एक छोटा काउन्टर उसे उनसे अलग करता है। रसोईघर को इन कमरों से मिला देने का कारण यह है कि आज खाना पकाने का काम नौकरानियाँ नहीं करतीं, गृहिणी को स्वयं करना पड़ता है और उससे पर्दे की कोई आवश्यकता नहीं है।

राइट का यूरोप में बहुत प्रभाव था, इसलिए अनेक यूरोपीय स्थापत्य-कला विशेषज्ञों ने अमेरिकन भवन-निर्माण कला को समृद्ध किया है। रिचर्ड न्यूट्रा, ऐंटोनिन रेमण्ड, मार्सल ब्रॉयर, वाल्टर ग्रोपियस और मीज़ वान डेर रोहे ने यूरोप से यहां आकर एक अन्तर्राष्ट्रीय शैली की स्थापना की है। ल कोर्बूसियर यद्यपि संयुक्त राज्य में बहुत कम समय तक रहा है तो भी शेष संसार की तरह संयुक्त राज्य को भी उसने बहुत प्रभावित किया है। फ्रैंक लॉयड राइट ने टोकियो में इम्पीरियल होटल का डिजाइन तैयार किया था। जापानी स्थापत्य-कला ने भी राइट तथा

कुछ अन्य वास्तुकारों के द्वारा अमेरिकन वास्तुकला को प्रभावित किया है।

इन सब प्रभावों ने और टैक्निकल उन्नति के फलस्वरूप भवन-निर्माण की नई और सस्ती सामग्रियों के आविष्कार ने अमेरिका के चेहरे को बदल दिया है और निरन्तर बदल रहा है। अमेरिका के गगन-चुम्बी भवनों में इन प्रभावों के कारण ही उपयोगितावादी सादापन भी है और विशालता की भव्यता भी। सामूहिक पैमाने पर बनाये गये रिहायशी मकानों की बस्तियां, जिनमें खेलने और मनोरंजन के लिए पार्क हैं और विशाल खुले स्थान से घिरे बाजार हैं, नई आधुनिक शैली की उदघोषणा करती हैं। घरों और नगरों की स्थापना के लिए आज जो नये डिजाइन तैयार किये जा रहे हैं उनमें प्रवृत्ति यह है कि खुला स्थान खूब हो, जहां लोग खुलकर सांस ले सकें, परिवार आन्तरिकता और आत्मीयता से जीवन बिता सके, लोग अपने अवकाश का अधिका-धिक उपयोग कर सकें, घर के भीतर का खाली स्थान और बाहर का खाली स्थान मिलकर एकाकार हो सकें और सामूहिक खेल-कूद के लिए भी पर्याप्त स्थान हो। ऐसा प्रतीत होता है कि संयुक्त राज्य में अब वास्तु कला में भी एक पुनर्जागरण का युग आ रहा है।

सामूहिक प्रचार-माध्यम

जब हम कला के प्रचार से प्रचार की कला पर आते हैं तो हम दोनों में एक बेचैनी भरा सम्बन्ध देखते हैं। सामूहिक प्रचार के साधन सभी प्रकार की कलाओं की प्रतिभा का उपयोग करते हैं। इस उपयोग की उपज कभी-कभी ऐसी होती है कि उसे कला की श्रेणी में रखा जा सके किन्तु सामूहिक प्रचार माध्यमों में ऐसी प्रवृत्तियाँ भी शामिल होती हैं जो कलापूर्ण नहीं होतीं और जिनका प्रयोजन सृजनात्मकता के बजाय मुनाफा होता है।

विज्ञापनकर्त्ताओं ने १९५६ में विज्ञापन पर दस अरब डालर के लगभग व्यय किये, जिनका अधिकांश भाग सामूहिक प्रचार के साधनों —टेलीविजन, रेडियो, समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं—में खर्च किया गया। विज्ञापन ही इनमें से कुछ को जीवित रखे हुए है। हमारे देश में ६२६ सामान्य पत्रिकाएं, १७०० दैनिक समाचार-पत्र, ९,००० साप्ताहिक पत्र, २९४७ रेडियो स्टेशन और ४६५ टेलीविजन स्टेशन विज्ञापनदाताओं की बदौलत ही जीवित हैं। स्वभावतः इन सामूहिक माध्यमों से विज्ञापनदाता का विचार और दृष्टिकोण ही विज्ञापनों और घोषणाओं के रूप में प्रकाश में आता है और वह पत्र-पत्रिकाओं के लेखों, सम्पादकीय टिप्पणियों और रेडियो एवं टेलीविजन के कार्यक्रमों को प्रभावित करता है। विज्ञापनदाता लोगों को मनोरंजन प्रदान कर ग्राहक बनाते हैं और चूंकि हर सिगरेट या साबुन निर्माता अपने माल के अधिकाधिक ग्राहक चाहता है, इसलिए वह सब से अधिक लोकप्रिय रेडिया या टेलीविजन कार्यक्रम को अपनाना और सबसे अधिक प्रसार वाले समाचार-पत्र या पत्रिका में विज्ञापन करना पसन्द करता है।

रेडियो और टेलीविजन स्टेशनों की पत्र-पत्रिकाओं के साथ भी श्रोता और पाठक जुटाने में प्रतिस्पर्धा चलती रहती है।

टेलीविजन

किन्तु सब से अधिक व्यक्तियों को कौन आकर्षित कर पाता है ?

टेलीविजन पर 'फ्लेडरमाउस' पर आधारित नाटक का कार्यक्रम १ करोड़ ३० लाख व्यक्तियों ने और 'ला बोहेम' पर आधारित नाटक का प्रसारण १ करोड़ २० लाख व्यक्तियों ने देखा। जब नेशनल ब्राडकास्टिंग कम्पनी ने पाँच लाख डालर खर्च कर लॉरेन्स ओलिवियर के 'रिचर्ड दि थर्ड' के आधार पर नाटक प्रस्तुत किया तो उसे पाँच करोड़ व्यक्तियों ने सुना। किसी भी कार्यक्रम के लिए इतने श्रोता दिन के समय इससे पूर्व कभी उपलब्ध नहीं हुए थे। यद्यपि यह कहा जाता है कि लोगों में अभी तक बारह वर्ष पुरानी मनोवृत्ति है, तो भी यह स्पष्ट है कि इस तरह की आलोचनाओं के बावजूद जब भी कोई अच्छी चीज प्रसारित की जाएगी तो लोग उसकी ओर आकृष्ट होंगे ही।

लेकिन टेलीविजन को कुछ समय तक देखने के बाद ही आसानी से यह समझा जा सकता है कि उस पर सब कार्यक्रम 'फ्लैडरमाउस' और 'रिचर्ड तृतीय' जैसे उच्चकोटि के ही प्रसारित नहीं किये जाते।

टेलीविजन को कुछ दिन तक निरन्तर देखने के बाद कुछ चीजें सर्वथा स्पष्ट हो जाती हैं। पहली यह कि उसमें विशुद्ध मनोरंजन प्रदान करने की, श्रोताओं और दर्शकों पर तत्काल सीधा प्रभाव डालने की, मानवीय संस्पर्श की और सारे समाज के सांस्कृतिक धरातल को ऊँचा उठाने की भारी क्षमता है। अभी वह न्यूयार्क से संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यक्रम प्रसारित करता है और उसके अगले ही क्षण स्वेज नहर में डूबते किसी जहाज का चित्र दिखाता है और फिर तत्काल ही कैलिफोर्निया में पहुँच जाता है, जहाँ कोई विशाल अग्निकांड घटित हो चुका होता है। इस तरह हम भी उसके साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचते और विचरण करते है। वह कितने ही ऐसे घरों में बैले (नृत्य-

नाटक) को पहुंचाता है, जिन्हें उस शब्द के अर्थ तक का ज्ञान नहीं होता, वह हमें हँसी से लोट-पोट कर देता है और भय से जकड़ देता है। उस से हम उन लोगों के बीच में पहुँच जाते हैं जो उसके कैमरे के सामने आये होते हैं। वह हमें अपनी दुनिया की एक नई जानकारी देता है, हम उसे नई दृष्टि से देखते और नए स्पर्श से छूते हैं। वह हमें सैंकड़ों तरह से यह अनुभव कराता है कि सारा विश्व, सारा मानव समाज एक ही है।

दूसरी चीज यह स्पष्ट हो जाती है कि टेलीविजन में उत्कृष्ट कार्यक्रमों के साथ-साथ नितान्त घटिया कार्यक्रम भी प्रसारित होते रहते हैं। वह उन दोनों के भेद को महसूस नहीं करता। जाहिर है कि जब एक टेलीविजन स्टेशन महीनों तक प्रतिदिन अठारह घंटे कार्यक्रम प्रसारित करता रहता हो तब स्वभावत: उसके कुछ कार्यक्रम निम्न या साधारण कोटि के भी होंगे ही। कठिनाई यह है कि अभी तक वह कोई ऐसी कसौटी निर्धारित नहीं कर सका जिससे अच्छे और बुरे कार्यक्रम में भेद कर सके। किन्तु यह बात रंगमंच पर भी उतनी ही लागू होती है, जो हजारों वर्ष से चला आ रहा है। वह भी किसी नाटक की अच्छाई या बुराई का निर्णय तब तक नहीं कर सकता, जब तक उसे दर्शकों के सामने एक बार प्रस्तुत न कर ले।

टेलीविजन में हम एक और आश्चर्यजनक बात देखते हैं और वह यह कि वह पारिवारिक जीवन में गहरी दिलचस्पी लेता है। टेलीविजन की प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों से उनके परिवारों के बारे में प्रश्न पूछे जाते हैं, बच्चों को बार-बार कैमरे के सामने लाया जाता है और पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध में छोटे-छोटे हास-परिहास के और सुखान्त नाटक प्रस्तुत कर उनमें यह दिखाने का प्रयत्न किया जाता है कि किस प्रकार विनोद की भावना से, या दूसरे का मन रखकर और लिहाज कर के चलने से घरेलू जीवन को सुखी बनाया जा सकता है। टेलीविजन बच्चों के उन्मुक्त जीवन को, उनके बन्धनहीन और बेरोक-टोक कामों

को आत्मीयता से पर्दे पर प्रस्तुत करके यह दिखाता है कि नन्हे बच्चों में कैसी आश्चर्यजनक प्रतिभा होती है और कैसे वे हमारी तरुण, प्रवर्धमान, युक्ति-तर्क हीन, जिद्दी, भयभीत, खर्चीली, अभिमानी उदार और भावना-युक्त संस्कृति के प्रतीक हैं। यह सम्भव है कि बच्चों के प्रति हमारा प्रेम मोहात्मक हो परन्तु हमें वह पावन और आनन्ददायक प्रतीत होता है। टेलीविजन ने हमारी इस कमजोरी को देख लिया है और वह उससे लाभ उठाता है।

अमेरिकनों में यह विशेषता है कि आज जिस चीज पर वे हँसते हैं देर-सवेर उसी को वे अंगीकार कर लेते हैं। किसी समय वे ड्यूशांप की कलाकृति "सीढ़ी से उतरती नग्न नारी" का मज़ाक उड़ाते थे, पर आज उन्होंने आधुनिक कला की सुन्दरतम कृतियों का बढ़िया संग्रह कर डाला है। इस सौभाग्यशाली देश में लोगों को एकाएक जो हँसी आती है, वह बच्चों की-सी हँसी नहीं होती। जैसे कभी-कभी दूर से डराती आ रही एक्सप्रेस ट्रेन एकाएक पास की पटरी से गुजर जाती है और हम भय से मुक्त होकर चैन की साँस लेते हैं, वैसे ही कभी-कभी यह हँसी किसी दुखान्त घटना के पास पहुँच कर फिर उसे बचाती हुई निकल जाती है। वह हमारे इस गहरे विश्वास को द्योतित करती है कि सद्-भावना से सब संघर्षों को टाला जा सकता है, और किसी भी वस्तु का असल तत्त्व उसका सबसे अधिक विनोदकारी अंश ही है। किसी भी चीज को हँसकर सहज में जीता जा सकता है।

बाहर से आने वाले लोग अक्सर यह शिकायत करते हैं कि हममें जीवन को दुःखमय दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति का अभाव है और यह बात सही है। किन्तु जीवन को विनोद के बजाय दुःख और विषाद की दृष्टि से देखना क्या सचमुच गुण है ? जो संस्कृतियां गुलामी, विशेषाधिकार, क्रूरता, शोषण या सामूहिक भुखमरी की बुनियाद पर खड़ी हुई हैं, उनमें जीवन के प्रति दुःखमय और वेदनापूर्ण दृष्टि की बात समझ में आती है, परन्तु अमेरिका की संस्कृति अपनी समस्त त्रुटियों के बावजूद उस

किस्म की नहीं है। वह भावात्मकता पर बल देती है। अमेरिका का यह विश्वास है कि सबके लिए शिक्षा की व्यवस्था और सबके नैतिक और भौतिक कल्याण के लक्ष्यों को प्राप्त करना असम्भव नहीं है। इसलिए स्वभावतः वह जीवन के प्रति दुःखमय और वेदनापूर्ण दृष्टि नहीं अपनाता और विनोद और हास-परिहास का आश्रय लेता है।

टेलीविजन एक काम और भी करता है। वह नाटक और वृत्त चित्र, दोनों का सम्मिश्रण करता है। उदाहरण के लिए टेलीविजन पर 'एण्ड्री डोरिया' के डूबने की घटना का जो चित्रण किया गया वह उस घटना की वास्तविक फिल्म और कुछ दृश्यों के पुनरभिनय का सम्मिश्रण था। जेल-जीवन के सम्बन्ध में प्रस्तुत एक टेलीविजन नाटक में स्वाभाविक अभिनय तो प्रस्तुत किया ही गया, उसमें यह सन्देश भी दिया गया कि यदि अपराधों को खत्म करना है तो जीवन में जो लोग छिन्न-मूल हैं उन पर विश्वास करो और उन्हें भी किसी मूल आधार से जोड़ कर विस्थापित से समाज में स्थापित बना दो। एक डाक्टर के सम्बन्ध में जो एक छोटे से कैरीबियन गाँव में सेवा करके नया जीवन पाता है, एक टेलीविजन कार्यक्रम में उसके इस सन्देश को सशक्त रूप में प्रसारित किया गया कि हर संस्कृति की अपनी अलग जीवन-प्रणाली है, अपने पृथक् उद्देश्य हैं और सभी संस्कृतियों का सम्मान किया जाना चाहिए।

केवल २६ शैक्षणिक टेलीविजन स्टेशन ही नहीं, बहुत-से व्यापारिक स्टेशन भी ज्ञान के सभी क्षेत्रों में उच्च कोटि के कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। कोई भी व्यक्ति प्रतिदिन ये कार्यक्रम देख-सुनकर और उनके नोट लेकर अपने कमरे में ही काफी शिक्षा प्राप्त कर सकता है। वैसे अभी टेलीविजन का उपयोग शिक्षा के लिए प्रारम्भ ही हुआ है। 'शैक्षणिक टेलीविजन के लिए राष्ट्रीय नागरिक समिति' नामक एक स्वैच्छिक संगठन टेलीविजन के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए निरन्तर

उद्योग कर रहा है। लेकिन इस बीच शैक्षणिक टेलीविजन स्टेशनों के कार्यक्रम पाँच करोड़ व्यक्तियों तक अभी से पहुँचने लग गये हैं।

टेलीविजन की और चाहे जो कमियां हों, इसमें सन्देह नहीं कि अभिनय, निर्देशन, प्रस्तुतीकरण और नई-नई चीजों के आविष्कार की सूझ-बूझ की दृष्टि से उसने एक उच्च स्तर प्राप्त कर लिया है। वह संचार और सम्पर्क का एक उर्वर और सजीव माध्यम है। यही नहीं, वह सामूहिक प्रचार के सभी साधनों का मिलन-स्थल भी बन गया है। वह प्रेस एसोसियेशनों की खबरों और तस्वीरों का, पत्रिकाओं और पुस्तकों के कथानकों का, रेडियो के कलाकारों और निर्देशकों का एवं हॉलीवुड की फिल्मों का व्यापक उपयोग करता है।

दर्शकों और श्रोताओं की दृष्टि से टेलीविजन की सबसे अधिक उबा देने वाली चीज है उस पर प्रसारित व्यापारिक विज्ञापन, जो बहुत लम्बे होते हैं और बार-बार दोहराये जाते हैं। कभी-कभी ये विज्ञापन टेलीविजन दर्शक को अपना अपमान भी प्रतीत होते हैं। सबसे ज्यादा गुस्सा तब आता है जब किसी नई ब्रांड की सिगरेट या नये साबुन की बिक्री के लिए टेलीविजन पर उसका विज्ञापन करते हुए यौवन, सौंदर्य, सुख, घरेलू शान्ति और ईसाई धर्म के नैतिक सिद्धान्तों की दुहाई दी जाती है।

रेडियो और टेलीविजन प्रसारकों की राष्ट्रीय एसोसियेशन ने टेलीविजन के बारे में यह संकल्प व्यक्त किया है कि वह अच्छे से अच्छी शिक्षा, ज्ञान और मनोरंजन की सामग्री प्रस्तुत करेगा। सार्वजनिक सेवाओं के सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्य को दृष्टि में रखकर टेलीविजन अपने कार्यक्रमों के बीच-बीच में लोगों से गिरजाघर में नियमित रूप से जाने और साम्प्रदायिक कोष में दान करने की अपीलें करता है और उन्हें मानसिक स्वास्थ्य और जन-कल्याण सम्बन्धी कार्यक्रम समझाता है। संयुक्त राज्य में सरकार का कोई अपना रेडियो या टेलीविजन का देशव्यापी जाल नहीं है, इसलिए वह व्यापारिक स्टेशनों पर अन्य किसी भी देश की सरकार की अपेक्षा अधिक निर्भर करती है। यही कारण

है कि टेलीविजन स्टेशन सरकार को भी अपने प्रसारणों में काफी समय देते हैं। उदाहरण के लिए कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग सिस्टम ने वायु-सेना के सहयोग से हवाई ताकत के बारे में एक पूरी कार्यक्रम-माला प्रसारित करने के लिए दस लाख डालर खर्च किए। संयुक्त राज्य में रेडियो और टेलीविजन कम्पनियाँ एवं स्टेशन व्यापारिक हैं, इसलिए उन्हें आर्थिक प्रश्नों पर विचार पहले करना पड़ता है, अन्यथा वे सफल नहीं हो सकते। किन्तु क्या यह जरूरी है कि हर कार्यक्रम सबको पसंद आये ? इसका उत्तर यह है कि छोटे-से-छोटे कार्यक्रम को सुनने और देखने वाले भी लाखों की संख्या में होते हैं। ऐसी दशा में क्या टेलीविजन स्टेशन का यह नैतिक कर्त्तव्य नहीं है कि वह बौद्धिक दृष्टि से उत्सुक और आलसी दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करे।

सामूहिक प्रचार-साधनों में एक बड़ी खराबी होती है कि वे लाभ में अधिक-से-अधिक एकाधिकार प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं, किन्तु उनकी इस प्रवृत्ति को प्रतिसन्तुलित करने वाली कुछ अच्छी बातें भी हैं। उनके श्रोताओं की संख्या बहुत बड़ी होती है, उनमें सभी प्रकार की रुचियों और अनुभवों वाले लोग होते हैं, इसलिए उन्हें अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए सहिष्णुता का परिचय देना पड़ता है। ऐसे विविध श्रोता इन कार्यक्रमों में जान डालने के लिए भी स्टेशनों को मजबूर करते हैं, जिससे उनमें घिसापिटापन और शिथिलता नहीं रहती। श्रोता उत्कृष्ट कोटि के नाटकों, गेय-नाट्यों और संगीत में बहुत उत्साह और रुचि दिखाते हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में जन-रुचि के जिस स्तर की सम्भावना प्रकट की गई थी, वास्तव में उसका स्तर उससे ऊँचा है। इस प्रकार व्यापारिक दृष्टि से भी वह टेलीविजन कम्पनियों को अपने कार्यक्रमों का स्तर ऊँचा रखने के लिए प्रोत्साहन देती है।

रेडियो

टेलीविजन के आविष्कार के बाद रेडियो का स्थान पीछे हो गया है। किन्तु अब भी वह विशाल जन-समूह तक पहुँचता है और आज भी ऐसे अनेक अवसर होते हैं जबकि टेलीविजन नहीं देखा जा सकता, किन्तु रेडियो सुना जा सकता है। टेलीविजन के साथ प्रतियोगिता में उभर कर रेडियो ने यह अनुभव कर लिया है कि उसमें भी कुछ विशिष्ट शक्ति है।

साबुन के विज्ञापन के लिए रेडियो पर प्रसारित किये जाने वाले गेय-नाटक कार्यक्रम अब भी उन व्यस्त गृहिणियों तक पहुँचते हैं जिनके पास टेलीविजन के सामने बैठने के लिए पर्याप्त समय नहीं है या जो वर्षों तक साथ देने वाले अपने अभिन्न साथी रेडियो को छोड़ना नहीं चाहतीं, या जो टेलीविजन पर नाटक या अन्य कार्यक्रम देखने के बजाय अपने ही कल्पना-लोक में विचरण करना पसन्द करती हैं। रसोईघर स्नानागार, शयनागार और मोटरकार में अब भी रेडियो का ही राज्य है, क्योंकि इनमें लोगों के हाथ और आँखें व्यस्त रहती हैं, वे सिर्फ कान ही कार्यक्रमों को सुनने में लगा सकते हैं। पिकनिक और यात्राओं में रेडियो ही साथ देता है। ट्रांजिस्टर और बैटरी सैट अब इतने छोटे बनने लगे हैं कि जेब में डालकर भी ले जाये जा सकते हैं। रेडियो ने अब अपनी शक्ति को पहचान लिया है—उसका सीधा-सादा और औपचारिकता से रहित होना, तत्काल प्रभावकारिता, संक्षिप्तता और वर्णन कौशल ही उसकी शक्ति है।

लोग आज खबरें और मौसम के समाचार सुनने या किसी गम्भीर संकट अथवा विपत्ति के वक्त ताजा और नवीनतम बुलेटिन सुनने के लिए रेडियो का उपयोग करते हैं। वे संगीत सुनने के लिए भी रेडियो का उपयोग करते हैं क्योंकि हर बड़े नगर में किसी-न-किसी रेडियो स्टेशन से हर वक्त संगीत प्रसारित होता ही रहता है। रात के समय भी रेडियो पर पूरी रात के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं और संगीत

के रिकार्डों के बीच-बीच में उद्घोषक कुछ-न-कुछ बोलता रहता है और इस प्रकार रात को काम करने वाले कर्मचारी के अकेलेपन को दूर करता है।

रेडियो पर आजकल छोटे-छोटे कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते हैं ताकि जिन्हें लम्बे कार्यक्रमों को सुनने की फुरसत नहीं है, वे हजामत या नाश्ता करते अथवा मोटर से काम पर जाते-जाते पूरा कार्यक्रम सुन सकें। जिन्हें लम्बे कार्यक्रम सुनने के लिए फुरसत है उनके लिए भी लम्बे कार्यक्रमों को ऐसे छोटे टुकड़ों में बाँट दिया जाता है, जो अपने आप में पूर्ण होते हैं। इसका लाभ यह होता है कि जो अधिक समय नहीं दे सकते वे भी उनके एक-दो टुकड़े सुनकर आनन्द ले सकते हैं। अखबारों की तरह रेडियो भी यदि अभी ताजा समाचार सुना रहा है, तो अगले ही क्षण आपकी किसी संसत्सदस्य से मुलाकात कराता है, और उसके बाद समुद्रपार की कोई रिपोर्ट या किसी नई वैज्ञानिक खोज या स्त्रियों के किसी नये फैशन की दुनिया में आपको पहुँचा देता है।

सिण्डिकेटों के जरिए अब उच्चकोटि के कलाकारों के कार्यक्रम भी छोटे-छोटे स्थानीय स्टेशनों पर प्रसारित होने लगे हैं। इन कार्यक्रमों के बीच-बीच में स्थानीय स्टेशन अपने स्थानीय विज्ञापन और घोषणाएँ भी प्रसारित करते रहते हैं। इन सिण्डिकेटों की वजह से अब वे लाभ छोटे स्टेशनों और स्थानीय व्यापारियों को भी मिल जाते हैं जिन्हें पहले बड़े स्टेशन और बड़े व्यापारी ही पा सकते थे।

सिनेमा

टेलीविजन ने सिनेमा को बहुत चोट पहुंचाई है। पहले जहाँ प्रति सप्ताह संयुक्त राज्य में नौ करोड़ व्यक्ति सिनेमा देखने जाते थे, वहाँ उनकी संख्या घट कर पहले पाँच करोड़ हो गई, किन्तु बाद में फिर साढ़े-पाँच करोड़ पर पहुंच गई। इस कमी का कारण सिर्फ टेलीविजन ही नहीं था लेकिन वह एक महत्त्वपूर्ण कारण अवश्य था। इसका असली बड़ा कारण था सिनेमा की टिकट-दरें बढ़ जाना। सामान्य आय वाले

जिस व्यक्ति को सपरिवार सिनेमा देखना होता, वह या तो बच्चों का भी टिकट खरीदता या छोटे बच्चों को घर छोड़ जाने पर उसे उनकी देखरेख के लिए पैसे देकर किसी को बैठा जाना पड़ता। बाद में छोटे बच्चों के लिए मुफ्त टिकट की व्यवस्था हो जाने पर इस मामले में लोगों को कुछ सहायता मिली।

शुरू में कुछ समय तक हॉलीवुड ने ऐसा दिखाया जैसे टेलीविजन का अस्तित्व ही नहीं है। किन्तु बाद में उसने अनुभव किया कि टेलीविजन के खिलाफ लड़ाई लड़ना उसके लिए सम्भव नहीं है इसलिए वह टेलीविजन के लिए फिल्में तैयार करने लगा और पुरानी फिल्में टेलीविजन पर प्रदर्शन के लिए देने लगा। यही नहीं, हॉलीवुड के सितारे भी टेलीविजन पर अभिनय करने लगे। टेलीविजन की प्रतिस्पर्धा का एक परिणाम अच्छा भी हुआ और वह यह कि हॉलीवुड ने घटिया फिल्में छोड़ कर अच्छी फिल्में बनानी आरम्भ कीं। इस प्रतियोगिता में टेलीविजन के मुकाबले में हॉलीवुड कुछ लाभ की स्थिति में था, क्योंकि उसका कार-बार विशाल था, सैट बड़े-बड़े थे, अभिनेता-अभिनेत्रियों के दल विशाल थे और वह दूर-दूर जाकर फिल्में बना सकता था। ठीक निर्णायक समय आने पर फिल्म निर्माण उद्योग में कुछ ऐसे टेक्निकल सुधार हो जिनसे हॉलीवुड की ये विशेषताएं और भी निखर आईं। उदाहरण के तौर पर कैमरों के लिए अधिक चौड़े कोण वाले लैन्स बन गये, अधिक बड़े रजतपट बने और तरह-तरह के सुन्दर रंगों का आविष्कार हो गया।

निःसन्देह हॉलीवुड टैक्निकल सुधार और आविष्कार की दृष्टि से हमेशा बहुत उपजाऊ रहा है। धीमी गति वाली फिल्में जिनमें घटना की गति को बहुत बारीकी और विस्तार से दिखाया जा सकता है, पानी की सतह के नीचे फोटोग्राफी, डूबते जहाजों, टकराती रेल गाड़ियों और आग से जलते समूचे के समूचे शहरों के मार्मिक, विस्मयकारी और प्रभावशाली दृश्य, चलते-फिरते मजाकिया कार्टून जिनमें जादू की

तरह किसी वस्तु को नष्ट कर फिर से एकदम पुनर्निर्मित कर दिया जाता है—इन सबने सिनेमा दर्शकों के मन में यह विश्वास बैठा दिया कि वे हॉलीवुड से इसी तरह की बड़ी-बड़ी आश्चर्यजनक चीजों की आशा कर सकते हैं। एक सिनेमा फिल्म तैयार करने के लिए २७६ बड़ी कलाओं और शिल्पों की आवश्यकता पड़ती है।

हॉलीवुड के जादू में कुछ-न-कुछ बात ऐसी अवश्य थी कि वह सभी जगह लोगों को प्रभावित करता था। हॉलीवुड यौन भावनाओं का और संसार के स्वप्न का प्रतीक बन गया। लोग यौन भावनाओं को भड़काने वाली उसकी फिल्मों की आलोचना करते थे परन्तु फिल्में देखना छोड़ते भी नहीं थे। इस तरह हॉलीवुड उनके भीतर जो स्वप्न और कल्पनाएं जगाता उनका वे आनन्द भी लेते और अपनी कमजोरियों के लिए उसे कोसते भी रहते।

हॉलीवुड की अन्तर्राष्ट्रीय सफलता का एक कारण यह था कि उसने प्रारम्भ से ही बहुत बड़ी संख्या में अन्य देशों से आने वाले आप्रवासियों के कारण यह सीख लिया था कि कैसे अपनी फिल्मों में सार्वभौम आकर्षण पैदा करने के लिए उनकी कहानियों में मानव की बुनियादी आवश्यकताओं और मूलभूत भयों को आधार बनाया जाए। उसने काऊब्वाय फिल्में (अमेरिका के प्रारभिक दिनों में पशुओं के चरवाहों का जीवन चित्रित करने वाली फिल्में) बनाईं, जिनमें चरवाहों के आन्तरिक तनाव एवं द्वन्द्व और आक्रमण के लिए उसकी बाह्य अभिव्यक्ति का चित्रण किया जाता था। लुटेरों की भयानक फिल्में बनाई जाती थीं जिनमें अपराधी और अपराध की भावना से युक्त लोग दूसरों का पीछा करते थे और पुलिस की गाड़ियों के चीखते-चिल्लाते भोंपू सुनाई पड़ते थे। हॉलीवुड प्रणयलीला के नग्न और कामुकता भरे चित्र भी बनाता जिनसे दर्शक थोड़ी देर के लिए यह अनुभव करता, मानो सुन्दर और गुदगुदी नायिका उसकी गोद में बैठी है। ये सभी ऐसी फिल्में थीं, जिनका आकर्षण किसी एक देश, जाति या वर्ग तक सीमित नहीं था

बल्कि सार्वभौम था। दक्षिणी सागरों के मूल निवासी हॉलीवुड की फिल्मों को, हर चीज की तह में जाने की अपनी सहज बुद्धि के कारण, दो श्रेणियों में बाँटते थे या तो मारकाट की फिल्में या चुम्बन और प्रणय-लीला की फिल्में। उन्हें दोनों ही पसन्द थीं।

अमेरिका का यह दुर्भाग्य था कि इन सार्वभौम काल्पनिक चित्रों को देखकर अन्य देशों के भोले लोग यह समझने लगते थे कि अमेरिका में सभी लोग गुण्डे, लुटेरे, खूंखार चरवाहे और कामुक प्रेमी हैं, हालांकि अपने देश में बनी फिल्मों को देखकर वे यह भूल कभी न करते और यह कभी न मानते कि उन फिल्मों में लोगों का जैसा चित्रण किया गया है, उनके सब देशवासी वैसे ही हैं। हॉलीवुड की सफलता के लिए अमेरिका को यही सब से बड़ी कीमत देनी पड़ी कि उसके बारे में सारे संसार ने एक गलत और घृणा की तस्वीर अपने मन में बना ली। यह तस्वीर इतनी गहरी थी कि अमेरिका ने वास्तविक सत्य को प्रकट करने के लिए जितने भी प्रयत्न किये, वे सब निष्फल हुए और कम्युनिस्टों ने इस गलत धारणा का लाभ उठाकर संयुक्त राज्य के विरुद्ध खूब प्रचार किया। ऐसा लगता था कि पैगलियानी की भांति अमेरिका सारे संसार का मनोरंजन करेगा, किन्तु उससे दुनिया की नजरों में उसका जो पतन होगा, उससे वह कभी उबर नहीं सकेगा और लोग उसे कभी ठीक-ठीक समझ नहीं सकेंगे।

हॉलीवुड की फिल्मों में जब भी किसी मैक्सिकन या अरब या किसी अन्य जाति के व्यक्ति को खलनायक दिखाया जाता तो उक्त देश या जाति की ओर से बहुत तीव्र विरोध होता। परिणाम यह हुआ कि हॉलीवुड ने अपनी फिल्मों में अमेरिकन के सिवाय किसी भी और को खलनायक न बनाने का फैसला कर लिया (कभी-कभी वह कम्युनिस्ट को भी खलनायक बनाता, परन्तु उसका कोई देश न बताता)। इस तरह इसने स्वयं जान बूझ कर और एक कीमत चुका कर सारे संसार की नजरों में खलनायक बनना स्वीकार किया।

फिल्मों की कहानियों में एक खास तरह का पेच और घुमाव होता, जिससे यह मालूम होता कि वह अमेरिकन है। अमेरिकन फिल्मों में ही ऐसी लड़कियां दिखाई जाती हैं जो प्रतीत बुरी होती हैं, किन्तु वास्तव में होती अच्छी हैं। उसे खराब चित्रित करने का कारण शायद पुरुष कहानी लेखक की अपनी आन्तरिक मनोभावना है। वह ऐसी लड़की की कल्पना करना पसन्द करता है जो आसानी से उसके बाहुपाश में आ जाए। लड़की की ऊपर से प्रतीयमान दुश्चरित्रता ऐसा अवसर लाने में सहायता देती है जबकि एक दिन एकाएक उसकी किसी युवक से मुलाकात होती है। यह मुलाकात एक ऐसी संस्कृति में अनिवार्य ही है जिसमें तरुण-तरुणियां अपना जीवन-संगी स्वयं खोजती हैं। वह नायक के सम्पर्क में आने के लिए तैयार रहती है, इसलिए नायक के मन में उसकी माता द्वारा पैदा की गई नैतिकता की भावना की दुविधा और संकोच धीरे-धीरे मिट जाते हैं। और अन्त में उसकी वासनाओं को भड़का देने के बाद एक ऐसी स्थिति आ जाती है जिसमें ऐसा प्रतीत होता है मानो वह उसके हाथों में अपने आपको सौंप देगी। लेकिन हठात् उसी समय पता लगता है कि वह दुश्चरित्र नहीं थी, बल्कि भोली और निर्दोष थी। तब दोनों के विवाह में सारे काण्ड की सुखद परिणति हो जाती है।

अमेरिका के पारिवारिक जीवन की कुछ विशिष्ट परिस्थितियाँ हैं। इन परिस्थितियों के कारण फिल्मों की कहानियों में कुछ निश्चित विशेषताएं रहती हैं। इन कहानियों का नायक अपने माता-पिता को पीछे छोड़ देता है और इस बात पर जोर देता है कि उसे अपने लिए जीवन का मार्ग स्वयं चुनने का अधिकार है। कथानक में बल उस नये परिवार पर दिया जाता है जिसका वह निर्माण करता है न कि उस पर जिसमें वह पैदा होता है। युवक के यौवन की बड़ी महिमा प्रकट की जाती है। इसके विपरीत युवक के पिता को गंजा, प्रभावहीन और उपहासास्पद चित्रित किया जाता है। मेलोड्रामे के चित्रण में पिता को

बुरा और खतरनाक चित्रित किया जाता है और ऐसा दिखाया जाता है, मानो वह नायक को जीतने की चेष्टा कर रहा है। फ्रॉयड के मनोविज्ञान की भाषा में उसकी व्याख्या की जाए तो यह कहा जा सकता है कि कथानक लेखक पिता के इस आचरण से युवक को पिता से अलग और दूर रहने के अपराध से बरी कर देता है, क्योंकि पिता के इस आचरण से यह स्वाभाविक ही है। जिस खतरनाक संसार से उसे लोहा लेना पड़ता है वह पिता से आगे बढ़ने या उसकी अवज्ञा करने के उसके अपराध को बाहर अभिव्यक्त करता है और पुलिस उसे सन्देह की नजर से देखती है, इसलिए भी वह मानो अपने आप को अभियुक्त ठहराता है।

इस तरह मां-बाप के अत्याचार की यह काल्पनिक कहानी ही अपराध की फिल्मों के मूल मे रहती है। अपराध का पता अन्त में पुलिस नहीं लगा पाती, बल्कि कोई प्राइवेट जासूस या वकील लगाता है। यह जासूस विद्रोही पुत्र को अमेरिकन युवक का एक प्रतीक बना देता है, जिसे न्याय पाने के लिए पिता के अधिकार के रूप में कानून की अवज्ञा करनी पड़ती है। प्रतीक की दृष्टि से यह अमेरिकन एक ऐसा नौजवान है, जिसने एक नई दुनिया मे जाने के लिए अपने पितृदेश को ठुकरा दिया है और जो पश्चिम की ओर नित्य नये संसार मे दौलत और सुख की खोज में जाने के लिए अपने पिता के घर और व्यवसाय का परित्याग कर देता है। वहां उसे कानून को अपने हाथ मे लेना और नया घर बसाना पड़ता है और एक दिन नई पीढ़ी उसे और उसके घर को भी उसी की तरह ठुकरा देती है। माता-पिता के अधिकार को चुनौती और उसका प्रतिरोध ही लोकतन्त्र का सार है, जिसमे सब को समान माना गया है। इसीलिए वह हमारी राजनीति मे ही नहीं, कला में भी निरन्तर दखल किये रहता है। हम कला मे यौवन पर, नर-नारियों की आगे बढ़कर अभिगमन करने की प्रवृत्ति पर, उद्योग और विजय-प्राप्ति पर और अन्त में सुखी जीवन की उपलब्धि पर बल देते हैं।

जो लोग सिनेमा फिल्मों की यह कह कर आलोचना करते हैं कि उनका स्तर ऊँचा नहीं है, वे यह भूल जाते हैं कि सिनेमा फिल्म थोड़े से बुद्धिजीवी भद्र वर्ग को दिखाया जाने वाला रंगमंच नहीं है, बल्कि वह ससार का लोक-नाट्य है। इसलिए सिनेमा फिल्में उन काल्पनिक कहानियों, उन भयों और आकांक्षाओं पर ही हमेशा आधारित रहेंगी, जो हमेशा लोक-कथाओं का आधार रही हैं।

यदि सिनेमा फिल्मों पर सेंसरशिप का लकवा न गिरे तो उनका स्तर कुछ अधिक ऊँचा होगा। सिनेमा उद्योग ने सेंसरशिप की सिरदर्दी से बचने के लिए 'मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स एसोसियेशन ऑफ अमेरिका' के तत्त्वावधान में अपनी फिल्म उत्पादन की एक आचार संहिता का निर्माण किया है। इस संहिता के अनुसार फिल्मों में डरावनी चीजें नहीं दिखाई जातीं, और न ही कामवासना को अत्यधिक भड़काने वाले यौन सम्भोग के अश्लील और गन्दे दृश्य दिखाये जाते हैं। किशोरों और वयस्कों की यौन सम्बन्ध विषयक समस्याओं के आधार पर फिल्में बनाने का निषेध है। 'लीजियन्स ऑफ डिसेन्सी' नामक कैथलिक संगठन और कुछ अन्य प्रोटेस्टेंट संगठन भी हॉलीवुड को वयःप्राप्त युवक-युवतियों की यौन सम्बन्ध विषयक समस्याओं को फिल्मों में पेश करने से रोकने के लिए निरन्तर आन्दोलन करते रहते हैं।

उनकी यह चिन्ता अस्वाभाविक नहीं है, क्योंकि फिल्में बच्चे भी देखते हैं। कामुकता और यौन सम्बन्ध विषयक फिल्में देखकर बच्चों का आचरण बिगड़ सकता है। किन्तु उपर्युक्त आचार संहिता का परिणाम यह हुआ है कि स्त्री-पुरुष का सम्भोग तो फिल्मों में नहीं दिखाया जाता लेकिन युवक-युवतियों का प्रेम और मिलन खूब जोरों से दिखाया जाता है। आचार संहिता में अपराध और हिंसा की फिल्में बनाने की अनुमति है, इसलिए फिल्म जगत् ने फिल्मी अपराधों की एक सर्वथा काल्पनिक सृष्टि कर डाली है। सेंसर विभाग ने फिल्मों को बदल कर समाज को बदलने की चेष्टा की है, किन्तु समाज को बदलने के लिए

अपराधों के मूल कारणों—गन्दी बस्तियाँ, माता-पिता द्वारा अत्याचार या उपेक्षा, मनोरंजन के साधनों का अभाव और धन को अत्यधिक महत्त्व देने वाले और लूट-खसोट में निपुण समाज की शोषण से अपराधों को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति आदि—को दूर करने की कोई चेष्टा नहीं की गई है। कारण यह है कि अपने आपको दोष देने की अपेक्षा फिल्मों के सिर दोष मढ़ना कहीं आसान है।

हाल के उच्चतम न्यायालय के निर्णयों ने सेंसरशिप की आचार-नियमावली को कुछ कमजोर किया है। अब निर्माता लोग आचार-संहिता का प्रमाण-पत्र लिये बिना भी अपनी फिल्मों का प्रदर्शन कर सकते हैं। टेलीविजन पर सेंसर की कोई पाबन्दी नहीं है, इसलिए उसने हॉलीवुड द्वारा निर्धारित आचार संहिता के अनेक निषेधों का उल्लंघन किया है।

किन्तु यदि सेंसरशिप की समस्या हल हो भी जाए तो भी एक बुनियादी समस्या बनी ही रहेगी। हॉलीवुड एक ऐसा उद्योग है जो एक कलात्मक उत्पादन तैयार करता है, लेकिन उद्योग और कला परस्पर विरोधी चीजें हैं। इस उद्योग के लिए पैसा देने वाले बैंक फिल्म निर्माण में कोई नया कलात्मक प्रयोग करने का विरोध करते हैं। वे फिल्म निर्माताओं को किसी ऐसे फार्मूले से परे नहीं हटने देते जिसकी उपयोगिता और सफलता सिद्ध हो चुकी है। फिर भी अनेक उच्चकोटि की फिल्मों की भारी आय से सिद्ध हो गया है कि कलात्मक कल्पना और मौलिक सूझ-बूझ से अन्ततः फायदा ही होता है।

आज ऐसे लोग, जो स्वयं कहानी, सिनारियो और संवाद लिखते हैं, स्वयं निर्देशन करते और स्वयं ही निर्माता हैं, उच्चकोटि की फिल्मों का अधिकाधिक संख्या में निर्माण करने लगे हैं। इन सब कामों का एक ही व्यक्ति में सम्मिश्रण करना और उसे निश्चय करने की स्वतन्त्रता देना स्वभावतः हॉलीवुड में उपलब्ध प्रतिभा के अधिक अच्छे उपयोग का अवसर प्रदान करता है। आम तौर पर यह प्रतिभा निगाना

की दशा में रहती है, इसलिए जब उसे खुलकर अपनी अभिव्यक्ति का मौका मिलता है तो वह अच्छी फिल्मों का निर्माण करती है। किन्तु इससे उस कटुता और विरोध का अन्त नहीं होता जो निर्माता और निर्देशक, निर्माता और अभिनेता एवं अभिनेता और एजेंट के बीच में रहता है।

जहाँ तक अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का सम्बन्ध है, उनमें चोटी के लोग अक्सर प्रेम के चक्कर में पड़े रहते हैं, खूब अपव्यय करते और ठाठ से जीवन बिताते हैं। उनका प्रचार और ख्याति खूब होती है और जब कभी वे अचानक सामान्य लोगों के बीच में आ पड़ते हैं तो लोग उन्हें देखने के लिए ओलम्पिस के देवताओं की भाँति घेर लेते और पूजते हैं, परन्तु यदि गहराई से भीतर जाकर देखा जाए तो उनका जीवन वैसा सुखमय नहीं होता, जैसा उनके प्रशंसक समझते हैं। जब वे किसी चित्र में भूमिका अदा कर रहे हैं तो उन्हें उसके निर्माण के लिए बहुत-बहुत देरी तक कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी उन्हें खूब इन्तजार करना पड़ता है और एक ही दृश्य का छवि अंकन बार-बार होने से वे परेशान हो जाते हैं। एक चित्र का निर्माण समाप्त होने के बाद उन्हें जब तक किसी नए चित्र का अनुबन्ध नहीं मिल जाता तब तक उनका जीवन निराशा से भरा रहता है और अक्सर उन्हें व्यर्थ की उबा देने वाली पार्टियों में शरीक होना पड़ता है या यौन सम्बन्धों से परितृप्ति पाने अथवा मनोविनोद के दूसरे साधन खोजने की कोशिश करनी पड़ती है। उन्हें अपनी आय के मुताबिक शान-शौकत से रहना पड़ता है और आय उनकी फिल्मों की आर्थिक सफलता पर निर्भर करती है। यद्यपि उनकी आमदनी देश के अन्य लोगों से अधिक होती है, किन्तु इस आमदनी के लिए उन्हें गुलामों की तरह सात-साला कण्ट्रैक्टों में बंधे रहना पड़ता है। आम जनता की नजरों में उनका स्थान बहुत ऊँचा और भव्य होता है, परन्तु जिन लोगों के साथ वे काम करते हैं, वे उन्हें हिकारत की नजर से देखते हैं। लेकिन जनता भूल से

यह समझ लेती है कि वे जैसे ऊँचे चरित्र का फिल्मों में अभिनय करते हैं, वैसा ही वास्तव में उनका निजी चरित्र है और इसलिए वे उनकी पूजा करने लगते हैं।

जिस फिल्म में वे नायक का अभिनय करते हैं वह सारे संसार में दर्शकों को आकृष्ट करती है। इसका कारण क्या है ?

हॉलीवुड की सिनेमा फिल्म भी एक व्यवसाय है, जिसमें एक अत्यन्त कठिन और पेचीदा माध्यम की टेकनीक में निपुणता प्राप्त कर हमारी मानवीय सत्ता के मूल में निहित भावनाओं का व्यापार किया जाता है। वह अनुभव का सरलीकरण कर उसे क्रमबद्ध करती है, हमारे संसार को देश और काल में फैलाती है, हत्या की लोमहर्षक विभीषिका में से गुजारने के बाद हमें फिर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देती है, हमें अपने आक्रमणों, आशंकाओं और घृणाओं को बाहर अभिव्यक्त करने, ऐश्वर्य और विलासिता में आलोड़न करने, हास-परिहास में चतुर नायक के साथ बहादुर और खलनायक पर विजयी बनने का अवसर देती है और अन्त में हम इस सारे वैचित्र्यमय अनुभव के बाद सुन्दरी-युवती को पा जाते हैं। साठ सेंट के टिकट में यह क्या घाटे का सौदा है।

समाचार-पत्र

अमेरिका के समाचार-पत्र संसार का ६० प्रतिशत अखबारी कागज इस्तेमाल करते हैं। ये समाचार-पत्र अनेक प्रकार के है। इनमें 'न्यूयार्क डेली न्यूज' जैसा छोटे आकार का लोकप्रिय समाचार-पत्र भी है, जिसके रविवार के संस्करण की बिक्री ३६,९८,८५१ है। इसके अलावा 'क्रिश्चियन साइंस मॉनीटर' और 'वाल स्ट्रीट जर्नल' जैसे भिन्न किस्म के पत्र भी इनमें शामिल है। इन्हीं में 'न्यूयार्क टाइम्स' जैसा विश्व-विख्यात पत्र भी है जो यह दावा करता है कि उसमें संसार भर की खबरें होती हैं और उसका रविवार का संस्करण छापने के लिए २०० एकड़ जंगल लग जाता है। इनके अतिरिक्त अनेक छोटे स्थानीय पत्र हैं जो व्यक्तिगत समाचारों और स्थानीय खबरों पर बल देते हैं और

कस्बे या नगर की भावना को व्यक्त करते और स्थानीय जनता के उत्साह को बनाये रखते हैं। 'क्लीवलैंड प्रेस' जैसे पत्र भी अमेरिका से निकलते हैं, जिसके सम्पादक लुई सेल्ट्जर ने बचपन में अत्यधिक गरीबी के दिन देखे हैं और अपने अध्यवसाय से उन्नति की है। उसने अपने पत्र को सारे कस्बे के अन्तःकरण की आवाज बना दिया है। उसने लेक एरी को साफ करने और नगर में एक चिड़ियाघर स्थापित करने की आवश्यकता पूरी कर दी है। उसका एक कर्मचारी सारे दिन अमेरिकन और विदेशी बच्चों के बीच पत्रों के आदान-प्रदान को बढ़ाने के ही काम में लगा रहता है।

अमेरिका के लोकप्रिय पत्र किस ढंग के हों, इसका निर्णय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अमेरिका के आप्रवासियों ने अदा की। जोसेफ पुलिट्ज़र ने सबसे पहले एक जर्मन समाचार-पत्र से यह मालूम किया कि जर्मन मूल के आप्रवासी किस तरह की सामग्री अखबार में चाहते हैं। इसलिए इन आप्रवासियों की अगली पीढ़ी के समर्थन से उसका पत्र 'न्यूयार्क वर्ल्ड' खूब लोकप्रिय हो गया। इसी तरह हर्स्ट ने आयरिश लोगों की मदद से अपने पत्रों को लोकप्रिय बनाया। दोनों ने विदेशी भाषाओं के पत्रों से यह जाना कि समाचारपत्रों को लोकप्रिय बनाने के लिए सनसनीखेज खबरें देना, सामाजिक एवं वर्गीय प्रवृत्तियों के समाचार प्रकाशित करना और पाठकों को सलाह-मशविरा देना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

समाचारपत्रों की आमदनी का मुख्य स्रोत विज्ञापन हैं और विज्ञापनों के लिए पत्र की बिक्री अच्छी होना जरूरी है, इसलिए बिक्री बढ़ाने के उद्देश्य से सनसनीखेज़ खबरों पर जोर दिया जाने लगा है। समाचारपत्रों ने नौजवान, बच्चे और बूढ़े सभी को आकृष्ट करने के लिये खेल के समाचार, भद्र वर्ग की खबरें, मजाकिया कार्टून, चित्रमय कहानियाँ, किताबों और कलाओं की समीक्षाएँ, घर की साज-सज्जा, घरेलू सामान की मरम्मत की विधियाँ, सिण्डिकेटों से प्राप्त हास्यपूर्ण और

गम्भीर लेख और स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के नुस्खे और व्यक्तिगत समस्याओं के हल के लिए परामर्श छापने शुरू किए।

बड़ी-बड़ी समाचार समितियाँ—असोशियेटेड प्रेस, यूनाइटेड प्रेस और इण्टरनेशनल न्यूज सर्विस—केवल समाचार ही सारे देश मे तारों और टेलीप्रिंटरों से नहीं भेजतीं, बल्कि अखबारों के दफ्तरों मे लगी मशीनो से खबरों के टेप भी तैयार कर देती है, जो कम्पोज करने के लिए सीधे प्रेस में भेजे जा सकते हैं। अमेरिका मे दो सौ के लगभग सिण्डिकेट है जो हर किस्म के फीचर और स्तम्भ प्रकाशन के लिए अखबारों को देती है। इसका लाभ यह है कि अनेक छोटे समाचार-पत्र भी, जो धन की कमी और बड़े अखबारो की प्रतिस्पर्धा के कारण टिक नही सकते थे, इन सिण्डिकेटों से कम पैसे में प्रकाशनीय सामग्री प्राप्त करके अपने पाठकों को दे सकते हैं और इस प्रकार अपना अस्तित्व बनाये रख सकते है, भले ही वह सामग्री उनकी अपनी मौलिक सामग्री नही होती। समाचार-पत्र स्वयं भी अपने नगरो की महत्त्वपूर्ण खबरें दूसरे पत्रों को देने के लिए अपनी तार सर्विस चलाते है, जिससे अखबारों में पारस्परिक सर्विस भी चलती रहती है।

पत्रिकाएँ

आम प्रसार की ५०० पत्रिकाओं मे से ५४ पत्रिकाएँ ऐसी है जिनकी बिक्री सात लाख से १ करोड़ १० लाख प्रतियो तक है। इनमे पहला स्थान रीडर्स डाइजेस्ट का है, जिसकी बिक्री सिर्फ संयुक्त राज्य में ही नही, अन्य देशों में भी बहुत बड़ी है। यह पत्रिका आशावादिता से परिपूर्ण है और अपव्यय एवं जाल-साजी, धोखाधड़ी आदि का भण्डाफोड़ करती है। इसके छोटे-छोटे सरल लेख, कहानी की सी शैली, बड़े व्यक्तियों के व्यक्तित्व का दक्षतापूर्ण परिचय, लोकप्रिय विज्ञान, व्यक्तिगत परामर्श और मनोरंजन एवं हास्य की सामग्री—ये सभी चीजें अमेरिकनों की आवश्यकताओं को पूरा ही नही करती, बल्कि उनकी मनोवृत्ति और मानसिक रुझान को भी द्योतित करती है।

इनके अलावा व्यापार-व्यवसाय की पत्रिकाएँ, विद्वत्तापूर्ण पत्रिकाएँ (जिनमें से कुछ विश्व की श्रेष्ठतम पत्रिकाएँ हैं), कम्पनियों के प्रकाशन स्कूलों की पत्रिकाएँ और विभिन्न संगठनों के समाचार बुलेटिन आदि अन्य हजारों चीजें भी विविध पत्र-पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि करती हैं।

पत्रिकाएँ भी अनेक प्रकार की हैं। 'अमेरिकन स्कॉलर' जैसी दिलचस्प और बौद्धिक पत्रिका के साथ-साथ कॉमिक की पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं जो दिलचस्प अवश्य होती हैं, परन्तु बुद्धिजीवी मनीषी वर्ग के मतलब की नहीं होतीं। इसके अलावा घटिया दर्जे की पत्रिकाएँ जिनका उद्देश्य प्रसिद्ध व्यक्तियों, खासकर फिल्मी सितारों के बारे में, निन्दात्मक सत्य को प्रकाशित करना, गर्भपात की खबरें छापना और इसी तरह की अन्य गन्दी और कुत्सित चीजें प्रकाश में लाना है, जो एक विशिष्ट समाज की हीन मनोवृत्ति, निकृष्ट लोभ और पतन को सूचित करती हैं।

विज्ञापन प्राप्त करने के लिए पत्र-पत्रिकाओं की बिक्री ऊँची होना आवश्यक है, इसलिए उनमें पाठकों को आकृष्ट करने वाली सामग्री छापी जाती है, चाहे वह अच्छी हो या घटिया। फिर भी यह बात बड़ी उत्साहवर्धक है कि जो पत्रिकाएँ सर्वोत्तम लेखकों की रचनाएँ और सर्वोत्तम चित्र प्रकाशित करती हैं और जिनकी साज-सज्जा उच्चकोटि की होती है वही बिक्री के लिहाज से भी सबसे ऊपर रहती हैं। दूसरी ओर गन्दी और घटिया दर्जे की घृणित सामग्री प्रकाशित करने वाली पत्रिकाएँ न केवल समाचार एवं चित्र पत्रिकाओं से, बल्कि अन्य धार्मिक पत्रिकाओं से भी बिक्री के लिहाज से नीचे रहती हैं।

कुछ अमेरिकन इस प्रकार की भद्दी और भोंडी सामग्री के प्रकाशन को रोकने के लिए सेंसरसिप के पक्षपाती हैं। किन्तु आम तौर पर अमेरिकन लोग अब भी यही महसूस करते हैं कि वाणी के स्वातन्त्र्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है, जब तक कि सर्वथा अश्लील और वासनामय

कामोत्तेजक साहित्य को छोड़कर बाकी सब कुछ प्रकाशित करने की स्वतन्त्रता न दी जाए। उनका ख्याल है कि इस प्रकार की गन्दी चीजों के प्रकाशन को रोकने का सबसे अच्छा उपाय लोगों को शिक्षित करना और इस गन्दी सामग्री की जगह सुरुचिपूर्ण सामग्री देना है।

आलोचना

यदि सामूहिक प्रचार के साधन नीचे स्तर पर उतर आते हैं तो उनकी खूब प्रतिकूल आलोचना होती है। सिनेमा, रेडियो, टेलीविज़न, पत्र-पत्रिकाएँ, संगीत, नृत्य, रंगमंच, चित्रकारी और साहित्य—इन सभी पर हमेशा लोगों की पैनी नज़रें लगी रहती हैं और उन्हें आलोचना का पात्र बनना पड़ता है। इस आलोचना का प्रभाव अन्ततः स्वस्थ ही होता है। किसी भी संस्कृति में आलोचनात्मक बात-चीत करने के लिए आलोचकों की इतनी बड़ी संख्या इससे पहले कभी नहीं रही।

आलोचक आम तौर पर बहुत कठोर होते हैं। अमेरिकन उपन्यासकारों ने आम तौर पर अपने राष्ट्र और देशवासियों की त्रुटियों की बहुत कड़ी और कभी-कभी चुभने वाली आलोचना की है। लेकिन अब उपन्यासों को स्वयं आलोचना का पात्र बनना पड़ता है। साहित्यिक कृतियों की अब बहुत बारीकी से हर पहलू से आलोचना की जाती है। समीक्षाकार लेखक की अपनी शैली के विकास की, समाज के प्रति उसके रवैये और दृष्टिकोण की, पुस्तक की भाषा और कथानक आदि की बारीकी से आलोचना करते हैं। जॉन क्रो रैन्सम ने आलोचना की एक नई पद्धति का विकास किया है जिसका उद्देश्य साहित्यिक रचना का एक पृथक् सत्ता के रूप में उसके विशिष्ट नियमों के अन्तर्गत अध्ययन करना है।

साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिकाएँ भी खूब उन्नति कर रही हैं। एड-मन्ड विल्सन, कैनेथ बर्क, लॉयनल ट्रिलिंग और जोसेफ वुड क्रच जैसे प्रख्यात व्यक्तियों ने मुख्यतः आलोचक और समीक्षाकार के रूप में ही

अपना स्थान बनाया है। मार्क वान डोरेन जैसे कवियों ने भी अनेक उच्च कोटि की साहित्यिक समीक्षाएं लिखी हैं।

उपन्यासकार देश की जो आलोचना करता है और समीक्षाकार उपन्यास लेखक की जो आलोचना करते हैं, उससे शायद कुछ लोग यह समझने लगें कि संयुक्त राज्य की हालत बहुत खराब है। लेकिन वास्तविकता यह है कि उपन्यासकार और समीक्षक दोनों ही आदर्शवादी पैमाने से नापने के अभ्यासी हैं। इसका अर्थ यह है कि अमेरिका बहुत आशावादी देश है जो यह मानकर चलता है कि आदर्श को पाया जा सकता है और उसमें शिथिलता नज़र आने पर वह विक्षोभ प्रकट करता है।

जो भी व्यक्ति किशोर आयु के बालक-बालिकाओं से जाज़ संगीत या अन्तर्दहन इंजनों के बारे में जानकारी भरी बातें सुनता है, जो प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली समालोचनाएं पढ़ता है और जो यह जानता है कि ये समालोचनाएँ और समीक्षाएं सिण्डिकेटों के जरिए विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपती हैं, और जो राजनीति और खेलों पर भी टिप्पणियाँ और आलोचनाएं देखता है, वह सहज में यह जान सकता है कि अमेरिकन लोगों में कितनी आलोचनपूर्ण सजग वृत्ति है।

अमेरिकन समीक्षक केवल अमेरिकन साहित्य या कला की ही समालोचनाएं नहीं छापते, बल्कि अमेरिका से बाहर के अंग्रेजी साहित्य की भी कुछ सर्वोत्तम समालोचनाएं अमेरिका में ही छपी हैं। एक फ्रेंच प्रेक्षक का कहना है कि फ्रेंच कला की फ्रांस से बाहर जितनी विशद और व्यापक आलोचनाएं संयुक्त राज्य में हुई हैं, उतनी और कहीं नहीं हुईं।

अमेरिका का आलोचना-शास्त्र मनोविज्ञान, समाज विज्ञान और नृवंश विज्ञान की सहायता से और अलंकार शास्त्र, इतिहास एवं दर्शन की पुरानी परम्पराओं को ध्यान में रखकर अपने आधार का अधिकाधिक विस्तार कर रहा है और अपने अवबोध को गहरा बना रहा है।

अमेरिकन आलोचकों को अपने ऊपर और अपनी आलोचना की विधियों पर पूरा भरोसा है, इसलिए डेलमर श्वार्ट्ज के शब्दों में वे समालोचना की उस रूढ़ि-विरोधी पद्धति की रक्षा का प्रयत्न कर रहे हैं, जिसके बिना 'बौद्धिक' शब्द निरर्थक हो जाता है और प्रतिभा भी अयथार्थ हो जाती है।"

अभिरुचि

किन्तु प्रश्न यह है कि क्या अमेरिकन अभिरुचि में कोई सुधार और परिष्कार हुआ ? या वह अभी तक लड़खड़ा रही है ?

इस प्रश्न का एक उत्तर तब मिला, जब टेलीविजन ने दस या पन्द्रह वर्ष पुरानी सिनेमा फिल्में दिखानी प्रारम्भ कीं। ये फिल्में जिस समय बनाई गई थीं, उस समय पूर्ण प्रतीत होती थीं, परन्तु दस-पन्द्रह वर्ष बाद टेलीविजन पर दिखाई जाने के समय वे टेकनीक की दृष्टि से पुरानी, संवादों की दृष्टि से भद्दी, कथानक में कमजोर और कल्पना की दृष्टि से बहुत हल्की प्रतीत हुईं। आधुनिक टेलीविजन और पुरानी फिल्मों की इस तुलना ने यह साबित कर दिया कि रुचि और स्तर में कितना अन्तर आता जा रहा है।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि सामूहिक प्रचार के माध्यमों के लिए बड़े पैमाने पर दर्शक और श्रोता जुटाने में जो प्रतिस्पर्धा चल रही है और उसमें लाखों व्यक्तियों को आकृष्ट करने वाली सामग्री प्रस्तुत करने का जो उद्यम हो रहा है, उससे लोकरुचि का स्तर बहुत नीचा हो जाता है। किन्तु भोंडी और हीन रुचि की इस सारी सामग्री के मुकाबले में कुछ उच्च कोटि की सुरुचिपूर्ण कलात्मक सामग्री भी रहती है। यूरोपीय लोग सिर्फ छोटे-से कला-पारखी भद्र समाज के सामने कला को प्रस्तुत करने के अभ्यस्त हैं, इसलिए जब वे पत्र-पत्रिकाओं के स्टालों या टेलीविजन पर इस तरह की हीन रुचि की घटिया चीजों को भारी मात्रा में देखते हैं तो उनका विचलित होना स्वाभाविक ही है। किन्तु अमेरिकन लोग परिवर्तन के अभ्यासी हैं, इसलिए वे किसी भी

वस्तु को स्थिर या स्थायी मानने के बजाय परिवर्त्तनशील प्रवृत्ति के रूप में देखते हैं। वे यह अनुभव करते हैं कि उन्होंने संचार के साधनों को विशाल जनसमुदाय के लिए खोल दिया है और वे एक पूरे राष्ट्र की रुचियों का परिष्कार और एक अभूतपूर्व पैमाने पर साँस्कृतिक विकास कर रहे हैं।

वास्तविक समस्या यह है कि सामूहिक प्रचार के साधनों का मुँह भरने के लिए इतनी बड़ी मात्रा में उत्कृष्ट सामग्री कहाँ से लाई जाए और विज्ञापन-दाताओं को उच्च कोटि की वस्तु का समर्थन करने और सहायता देने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए। सम्भव है कि उस प्रतिभा से, जो विदेशों में जाने के बजाय अपने देश में ही विद्यमान है, यह आवश्यकता पूरी की जा सके। इसके अतिरिक्त अब किसी अन्य देश में भी कोई ऐसा सांस्कृतिक स्वर्ग नहीं रह गया है, जहाँ अमेरिकन ग्राम्यता और अपरिष्कृत रुचि से बच कर आश्रय लिया जा सके। इसीलिए, लॉयनल ट्रिलिंग का कहना है कि, अमेरिका में धीरे-धीरे संस्कृति का स्तर ऊँचा हो रहा है। दौलत अब मन और कल्पना के राज्य के सम्मुख आत्म-समर्पण करने को उद्यत है और सुरुचि और संवेदनशीलता के द्वारा अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध कर रही है। बुद्धिजीवी वर्ग का अब निरन्तर विस्तार हो रहा है और उसके सदस्य कलात्मक कृतियों के उत्पादन को बढ़ावा दे रहे हैं। विचार और चिन्तन को आज पहले हमेशा की अपेक्षा अधिक मान्यता और महत्त्व दिया जा रहा है।

जिस प्रकार अमेरिकनों ने अपनी राजनीतिक दृष्टि को विशुद्ध स्थानीय प्रश्नों के ऊपर उठा कर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र तक पहुँचा दिया है, वैसे ही यह आशा की जाती है कि आज द्रुत सांस्कृतिक विस्तार की देहरी पर पहुँच कर अमेरिकन कलाकार भी एक ऐसी भाषा और शैली में कला का सृजन करेंगे जिसे सारा संसार समझ सकेगा।

मनोरंजन

पिछले युद्ध के दिनों में जिन अमेरिकन सैनिकों के दक्षिण-पश्चिमी प्रशान्त क्षेत्र के जंगलों में घिर जाने की आशंका होती थी, उन्हें यह सिखाया जाता था कि वे अपनी जेबों में रस्सी का एक टुकड़ा रखा करें और जब भी उन्हें यह सन्देह हो कि इन जंगलों में मूल निवासी लोग उन्हें मारने के लिए शत्रुता की नीयत से उनकी ओर आ रहे हैं, वे फौरन ही रस्सी से खेलना प्रारम्भ कर दें। अक्सर यह देखा गया कि ऐसे अवसर आने पर मूल निवासी शत्रुता का भाव छोड़ कर स्वयं भी इस खेल में शामिल हो जाते। खेल ऐसी चीज है जो शत्रुता को खत्म कर देती है और जहाँ दो पक्षों में सम्पर्क की कोई सामान्य भाषा नहीं है, वहाँ मैत्री के सेतु का काम करती है।

प्राचीन काल के खेलों और उत्सवों से आधुनिक ओलिम्पिक प्रतियोगिताओं तक और प्राचीन मन्दिरों के नृत्यों से आधुनिक सामूहिक नृत्यों तक सर्वत्र और सर्वदा नर-नारियों ने ऐसी शारीरिक क्रियाओं और गतियों की खोज की है जिनके द्वारा वे अपनी सम्पूर्ण सहजवृत्तियों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकें। खेल भी कला की भाँति अराजकता के बीच से व्यवस्था को और अर्थहीनता के मध्य से अर्थ को अभिरूपित करने का उद्योग करता है। खेल भी कला की भाँति किसी राष्ट्र के उद्देश्यों और जीवन के अभिप्रायों को अभिव्यक्त करते हैं।

अमेरिकन लोग जो खेल खेलते हैं और अपने खाली अवकाश का जिस प्रकार उपयोग करते हैं, उससे हम क्या सीख सकते हैं?

खेल

अमेरिका का स्क्वेयर डांस (चारों दिशाओं से चार जोड़ों का परस्पर सम्मिलित नाच) यद्यपि यूरोपीय लोक नृत्य की ही उपज है तो भी वह सर्वथा अमेरिकन नृत्य है। ग्रामों में इसका जन्म हुआ है और ग्रामों के ही यह अनुकूल है। इस में चार जोड़े चार दिशाओं से भाग लेते हैं, इसलिए वह स्वभावतः यह स्वीकार करता है कि अमेरिकन संस्कृति में विवाहित युगल का बहुत महत्त्व है और साथ ही वह सामूहिक सहयोग पर बल देता है। नृत्य की गतिशील और भव्य मुद्राओं में विचार और गति दोनों का वैसा ही सम्मिश्रण होता है, जैसा कि प्रारम्भिक जमाने का साहसी और अग्रणी अमेरिकन और उसकी बन्दूक या फावड़ा उसकी विचारशीलता और गति के सम्मिश्रण के द्योतक थे।

स्क्वेयर डांस एक प्रकार से सृष्टि का लघु प्रतिरूप है। वह यह द्योतित करता है कि इस नृत्य की भांति समाज-व्यवस्था में हर व्यक्ति की स्थिति अनिवार्य है और सब व्यक्तियों की संयुक्त क्रिया ही समाज को एक भव्य समग्र रूप प्रदान करती है। वास्तव में स्क्वेयर डांस प्रतीकात्मक रूप में समाज के सारे ढांचे को अभिव्यक्त करता है। इसमें व्यक्ति पर बल दिया जाता है, जिसका उस वर्ग के प्रति सामूहिक एवं पारस्परिक लाभ के लिए उत्तरदायित्व होता है, जिसमें वह स्वेच्छा से शामिल हुआ है। इस प्रकार उसमें व्यक्तित्व और स्वैच्छिक सहयोग, दोनों चीजें आ जाती हैं। इस नृत्य में इस तरह के चार-चार जोड़े एक नहीं अनेक होते हैं और वे अलग-अलग नृत्य करते हुए भी एक अनुशासन के भीतर समस्वर होकर नाचते हैं। यह हमारे समाज के संघवाद का प्रतीक है। इसी तरह पुरुषों और स्त्रियों की परस्पर-विरोधी चंचल गतियां समाज की प्रतिसन्तुलनकारी शक्तियों और नर-नारियों को परस्पर मिलाने वाली जटिल नृत्य-गतियां पारस्परिक मिलन की

और चारों जोड़ों की हाथ मिलाकर एक वृत्त बनाने की अन्तिम क्रिया समाज के एकीभाव की प्रवृत्ति के प्रतीक रूप में दिखाई देती है।

इसी तरह हमारे मुख्य खेल भी समाज-व्यवस्था को प्रतीक रूप में प्रकट करते हैं। उनमें खिलाड़ी पर व्यक्तिगत रूप से बल दिया जाता है, किन्तु उसका व्यक्तिगत खेल एक दल के अंग के रूप में होता है और वह दल भी अन्य दलों के साथ एक संघ के रूप में खेलता है।

बेसबॉल अमेरिका का सबसे प्रधान खेल है और वह सामूहिक और सम्मिलित क्रिया पर निर्भर है, किन्तु उसमें हर व्यक्ति को अपना पूरा कौशल अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता और मौका होता है। नपा-तुला काम, तीव्र गति, सूक्ष्म और त्वरित दृष्टि और बाहु का जोर इन सब से खेल में सफलता मिलती है। खिलाड़ी से आशा की जाती है कि यदि एकाएक कोई अनुकूल मौका आ पड़े तो वह उसका लाभ उठाने में नहीं चूकेगा, खेल के मैदान में कहाँ क्या हो रहा है, इसे वह एक ही क्षण में भांप लेगा और झटपट यह हिसाब लगा लेगा कि क्या कदम उठाना सब से अधिक लाभकारी होगा। इसके अलावा सारी टीम बिना किसी प्रकार के आदेश के मिलकर समन्वय, सहयोग और सौहार्द से खेलती है। वह पारस्परिक सहायता और सौमनस्य पर निर्भर रहती है (क्या इसी कारण अमेरिकन सैनिक युद्धकाल में सब से अधिक साहस शत्रु को मारने में नहीं, बल्कि शत्रु से अपने साथियों को बचाने में दिखाते हैं)।

बास्केट बॉल का खेल भी (जिसकी शुरूआत १८९३ से कुछ समय पूर्व स्प्रिंगफील्ड, मैचाचुसेट्स में हुई थी) संयुक्त रूप से काम करने की भावना, त्वरित निश्चय, तीव्र अनुक्रिया और उपलब्ध अवसर का तत्काल लाभ उठाने के गुणों और क्षमता पर निर्भर है।

फुटबाल के खेल में भी, जिसके अमेरिकन रूप का विकास १८६७ के बाद हुआ, सारा दल संयुक्त रूप से काम करता है, और उसमें सिर और टांगों से तेज प्रहार किये जाते है और द्रुत और निरन्तर गति कायम रखी

जाती है, किन्तु उसमें शरीर से शरीर की भयंकर टक्कर और घर्षण पर अधिक बल दिया जाता है। उसके इर्दगिर्द की सब वस्तुएँ भी पुराने जमाने के युद्ध के वातावरण की ही प्रतीक होती हैं—रणस्थल में सैनिकों की हिम्मत बढ़ाने के लिए जैसे सैनिक बैंड बजाया जाता है, वैसे ही इस खेल में भी बैंड बजता है, पुराने जमाने की लड़ाइयों की तरह दर्शक मंडली में बैठी स्त्रियाँ और बूढ़े बुजुर्ग अपने-अपने दल के वीरों का हौसला बढ़ाने के लिए शोर मचाते और उन्हें अपनी लाज बचाने के जिए आवाहन करते हैं। दलों के चिह्न भी प्राचीन काल के आदिवासी लड़ाकों के पशु-पक्षियों के चिह्नों के समान ही होते हैं। उदाहरण के लिए कोलम्बिया का चिह्न सिंह और प्रिंसटन का चीता है।

दर्शकों को भी खेल से उतना ही लाभ होता है जितना खिलाड़ियों को। अपने इतिहास के उन प्रारम्भिक दिनों से ही, जब हम पश्चिम की ओर बढ़ते हुए नये-नये क्षेत्रों को आबाद करने के लिए साहसिक कार्य कर रहे थे, और जब या तो कायदे-कानून थे ही नहीं या बहुत कमजोर थे, हम आत्म-रक्षा के लिए अमूर्त्त न्याय का सहारा लेने के बजाय अपने समूह के बल का ही सहारा लेते रहे हैं। यह भावना हमारे-खेलों में भी आ गई है। हम अपने व्यक्तित्व को एक दक्ष और कुशल टीम में एकाकार कर लेते हैं और इस प्रकार न केवल टीम के साथ, बल्कि उसके द्वारा सब दर्शकों एवं समूचे समाज के साथ भी एकाकार हो जाते हैं।

शौकिया दिल-बहलाव

अमेरिका में लोगों के दिल-बहलाव के शौक इतने अधिक प्रकार के हैं कि उनकी सूची नहीं दी जा सकती। इन कामों में लोग अपना अवकाश का अधिक-से-अधिक समय व्यतीत करते हैं। अमेरिकन स्त्री-पुरुष अपने पूर्वजों की भाँति ही हाथ के काम और श्रम में गौरव अनुभव करते हैं, इसलिए वे पुराने हस्तशिल्प के काम बहुत अधिक करने लगे हैं। यही नहीं, उद्यान क्लबें और पुष्पप्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं, जो लोगों के बागबानी के शौक की सूचक हैं। डाक टिकटों से लेकर बटनों

तक, छोटी-छोटी मूर्त्तियों से हस्ताक्षरों तक तरह-तरह की चीजों के संग्रह करने की लोगों में प्रवृत्ति है। तरह-तरह के जानवर पालने का शौक भी अनेक लोगों को है। अपने हाथ से काम करने का जो दीवानापन अमेरिका में चला है, उसने उन लोगों के लिए भी हाथ से काम करने के अनेक रास्ते खोल दिये हैं, जिन्होंने पहले कभी हाथ का काम नहीं किया था। इस शौक को पूरा करने के लिए लोग जो किताबें, औज़ार और अन्य सामग्री खरीदते हैं उनका हर वर्ष करीब ६ अरब डालर का व्यापार होता है। अपने हाथ से फोनोग्राफ बनाने का शौक (ही फी) तो इतना अधिक व्यापक हो गया है कि पत्रिकाओं में भी उसकी नई-नई चामत्कारिक विधियाँ छपती रहती हैं।

हर शौक (हॉबी) के लिए अलग क्लब है। लोग इन क्लबों के जरिये नये-नये मित्र बनाते हैं। पक्षियों को देखने के शौकीन रात को निर्दिष्ट स्थानों पर एकत्र होते हैं और अपने पक्षी-संग्रह में पक्षियों को मार कर नहीं, बल्कि केवल देखकर ही वृद्धि करते हैं। पुराने जमाने के मॉडलों की कारों में पुराने जमाने के ही कपड़े पहनकर सैर के लिए निकलने का भी एक अजीब शौक कुछ लोगों को है। वे इन पुरानी कारों को खूब सजाते-चमकाते हैं। इनकी अपनी एक अलग क्लब है। लोक संगीत या शास्त्रीय संगीत के शौकीनों की गायन मंडलियाँ भी बनाई जाती हैं। लॉस एंजेलेस में एक संगीत मंडली ऐसी है जिसमें केवल गायन-वादन के शौकीन डाक्टर ही है।

कस्बों में नगरपालिकाओं के रंगमंच नाटक-ड्रामे के शौकीनों को आकृष्ट करते हैं। जो अभिनय नहीं कर सकते, किन्तु नाटक के शौकीन हैं, वे इन रंगमंचों में दृश्यों के पर्दे या वेश-भूषा बनाने के काम में हिस्सा बँटाते हैं। रोआनोक आइलैंड में हर ग्रीष्म ऋतु में 'दि लॉस्ट कॉलोनी' नामक नाटक का आयोजन होता है, पश्चिम के अनेक नगरों में भी नाटक खेले जाते हैं। अल्बुकर्क के उत्सव में लोकनृत्य और लोक नाट्य का उत्साहपूर्ण आयोजन होता है। ये सभी नाटक और उत्वस

उस सांस्कृतिक ताने-बाने को सुन्दर और वैचित्र्यपूर्ण बनाते हैं, जिसमें देश के निर्माण के काम में लगे लोग परिश्रम से थक कर और चूर होकर अपने अवकाश काल में मन-बहलाव के लिए हिस्सा लेते हैं।

गांवों में स्कूल को ही सामाजिक केन्द्र बनाने का रिवाज पुराने समय से चला आ रहा है। आर्थिक मन्दी ने इस पुराने रिवाज को और भी अधिक सबल बना दिया था, जिससे आज भी अधिकाधिक संख्या में सार्वजनिक स्कूल सामाजिक केन्द्रों का काम करते हैं। कोई भी रात ऐसी नहीं जाती जब कि गांव के हाई स्कूल में रोशनी न जलती हो और उसके कारखाने में लोग फरनीचर बनाना न सीखते हों, या माता-पिता बच्चों के प्रदर्शन न देखते हों, किशोर बालक नृत्य न करते हों या पुस्तकालय में अध्ययनशील लोग विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद न करते हों। कुछ बड़े नगरों में इन कामों के लिए अलग मनोरंजन केन्द्र होते हैं।

जिन कस्बों में नवयुवकों के लिए मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं थे, वहाँ उन्नीसवीं शताब्दी में खेल के मैदानों का निर्माण किया गया था। आज ये मैदान सभी जागरूक नगरों के लिए आवश्यक और अनिवार्य समझे जाते हैं। जहाँ नागरिक प्रशासन अपने आपको खेल का मैदान बनाने के लिए समर्थ नहीं पाता, वहाँ नागरिकों के स्वैच्छिक संगठन यह काम अपने हाथों में ले लेते हैं। सन् १९५६ तक ७६ हजार वेतनभोगी कार्यकर्त्ता, इस प्रकार के खेलों और मनोरंजन कार्यक्रमों का निर्देशन कर रहे थे।

पार्कों का निर्माण आज जनता के उपयोग के लिए किया जाता है, पहले की भाँति उन्हें कुछ विशिष्ट उत्सवों के लिए ही सुरक्षित नहीं रखा जाता। मेन से वाशिंगटन राज्य तक फैले विशाल राष्ट्रीय पार्क अमेरिका के सब से प्रसिद्ध पार्क हैं। इन पार्कों में राष्ट्र की प्राकृतिक विरासत की रक्षा की जाती है। इनमें खूब सुन्दर और चौड़ी मोटर सड़कें भी बनाई गई हैं ताकि लोग उनमें घूमकर प्राकृतिक दृश्य और

मोहिनी वन-श्री का आनन्द ले सकें । सब से प्रमुख और बड़ा पार्क यलोस्टोन है जिसका क्षेत्र लगभग ३५०० वर्गमील है । इसके गर्म सोतों और रंगीन कीचड़ के उबलते जलाशयों ने, इसकी सुरम्य झीलों, पहाड़ों और जंगलों ने इसे प्रकृति की एक महान् रचना बना दिया है । ऐतिहासिक और सामरिक उद्यान यद्यपि छोटे हैं तो भी उनमें लिंकन की वह लकड़ी की झोंपड़ी, जिसमें उसका जन्म हुआ था, गेटिसबर्ग का रणक्षेत्र और अंग्रेजों की सब से पहली बस्ती जेम्सटाऊन (वर्जीनिया) आदि महत्त्वपूर्ण स्मारक सुरक्षित हैं ।

इसी तरह १५० राष्ट्रीय वन भी जनता के लिए खुले हुए हैं जिनमें पिकनिक और कैम्प लगाने के लिए ४४०० स्थान बने हैं। इनमें शिकार और मछली पकड़ने, बर्फ पर फिसलने का खेल खेलने, जंगलों में घूमने या पानी के खेल खेलने के लिए भी अनेक स्थान हैं । इन मनोहारी वनों में मामूली-से किराये पर जमीन लेकर प्राइवेट मकान बनाये जा सकते हैं । प्रायः हर राज्य के अपने दर्शनीय ऐतिहासिक स्थान और पार्क हैं, जहाँ कैम्प लगाने की भी सुविधाएँ हैं।

छुट्टी मनाने के लिए अमेरिकन लोग इतनी विशाल संख्या में इन वनों और पार्कों में जाते हैं कि कभी-कभी उनकी सड़कों के लिए इतने यातायात को सँभालना भी मुश्किल हा जाता है । ऐतिहासिक स्थानों को देखने की उत्सुकता से प्रेरित होकर वे अपने बच्चों को भी इनमें ले जाते हैं और उनसे प्लाइमाउथ रॉक, जैफर्सन्स मौंटिसेलो के वैदर कॉक या अलामों के रणस्थल की, जहाँ डेवी क्रॉकेट लड़ा और वीरगति को प्राप्त हुआ था, खोज करने के लिए कहते हैं। अधिक सुविज्ञ लोग अपने साथ राज्य की मार्गदर्शक पुस्तक भी रखते हैं। आर्थिक मन्दी के दिनों में लेखकों की सहायता के लिए संघीय सरकार द्वारा आयोजित परि-योजना के अन्तर्गत ये पुस्तकें तैयार की गई थीं । अमेरिका के इतिहास में इस से पहले कभी भी अतीत के अध्ययन में लोगों ने इतनी व्यापक दिलचस्पी नहीं ली और न अतीत को सुरक्षित रखने या उसका पुन-

निर्माण करने में में ही कभी इतना उत्साह दिखाया गया है। पहले अमेरिकनों ने पुराने सलेम नगर का पुनर्निर्माण किया, फिर विलियम्स-बर्ग का, उसके बाद स्टरब्रिज का और अब प्लाइमाउथ का। यदि यही प्रवृत्ति रही तो हमारे देश में पुराने भवन मिस्र से भी अधिक हो जाएँगे।

संयुक्त राज्य में अब हजारों ऐसे लोगों को भी गर्मी की छुट्टियाँ मिलने लगी हैं, जिन्हें पहले नहीं मिलती थीं। इसका परिणाम यह हुआ है कि अब बहुत बड़ी संख्या में अमेरिकन परिवार अपनी कारों पर सवार होकर देश के विभिन्न भागों में गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए जाने लगे हैं। इससे उन्हें देश-दर्शन का और राष्ट्र का परिचय पाने का अवसर मिला है। वे जहाँ जाते हैं वहाँ उन्हें एक जैसा पैट्रोल और एक ही जैसे सिगरेट मिलते हैं, इससे उनकी यात्रा आराम से बीतती है। साथ ही उन्हें अपने इतिहास की चित्र-विचित्र वस्तुएँ और नाना प्रकार के प्राकृतिक दृश्य देखने का आनन्द भी प्राप्त होता है। जो परिवार छुट्टी बिताने के लिए बाहर जाने योग्य आर्थिक स्थिति में नहीं होते, उनके बच्चों के लिए छोटे नगरों में स्वयं नागरिक ही खुली हवा के कैम्प या आवासगृहों की व्यवस्था कर देते हैं।

भ्रमण और पर्यटन की इस प्रवृत्ति ने संयुक्त राज्य में पहरावे के सम्बन्ध में औपचारिकता को बहुत कम कर दिया है। दूर-दूर तक कार में यात्राएँ करने, जगह-जगह कैम्प लगाकर विश्राम करने, पहाड़ी नदियों में मछली पकड़ने और कारखानों में काम करने से लोगों में कमीज की आस्तीनें ऊपर चढ़ाए रखने और नीली जीन पहनने की आदत पड़ गई है। स्त्रियाँ भी स्लैक्स या हाफपैंट पहनने लगी हैं। यहाँ तक कि बढ़िया होटल भी यह विज्ञापन करते हैं कि "आप जैसे पहरावे में हैं उसी में आएँ"। इस प्रकार के विज्ञापनों से अनौपचारिकता को और भी बढ़ावा मिलता है।

मित्रों का स्वागत और आतिथ्य करने के मामले में भी बहुत अनौपचारिकता बरती जाती है। आतिथेय महिलाएँ नौकरों की सहायता के बिना ऐसे खाद्य पदार्थों की योजना बनाती हैं जो पहले से हीतैयार करके रखे जा सकते हैं, गर्मागर्म हालत में भोजन के कमरे में लाये जा सकते हैं और बूफे के ढंग से परोसे जा सकते हैं। अतिथि अपनी-अपनी तश्तरियों में स्वयं उन्हें डालते और खड़े होकर या बैठक में कहीं भी बैठ कर गपशप करते हुए खा सकते हैं। घर के बाहर खुले मैदान में होने वाली दावतें और भी अनौपचारिक और आडम्बरहीन होती हैं। उनमें आतिथेय स्वयं रसोइये के कपड़े पहन कर चूल्हे पर रसोई तैयार करता है और फिर घासपर बैठे मेहमानों को भोजन परोसता है।

जिन परिवारों को अधिक खाली अवकाश मिलता है और वे उसे इकट्ठे मिलकर बिता सकते हैं, वे घर के भीतर ही बहुत-सी काम की चीजें तैयार कर लेते हैं। अब हर घर में एक छोटा-सा वर्कशाप अवश्य बनाया जाता है। बच्चों को ऐसे खिलौने दिये जाते हैं जिन्हें मनोविज्ञान-शास्त्री बच्चों के मानसिक विकास के लिए उपयुक्त समझते हैं। बड़े होने पर बच्चों को ऐसे खेल सीखने के लिए भेजा जाता है, जो स्कूलों में नहीं सिखाये जाते—मसलन नृत्य, पियानो वादन, घुड़सवारी और टेनिस आदि।

मानस शास्त्रियों ने घर के भीतर एक और खेल की भी अनुमति दी है। वह खेल है पति और पत्नी के दाम्पत्य प्रेम का खेल। अब पुरानी कुण्ठाओं, निषेधों और आशंकाओं का स्थान इस सर्वमान्य सत्य ने ले लिया है कि लैंगिक प्रेम पारिवारिक जीवन की सुदृढ़ नींव है, लैंगिक आनन्द की सहज वृत्ति स्वाभाविक और उचित है और आधुनिक जीवन के अनेक तनाव हँसी से लेकर लैंगिक वासनापूर्त्ति तक सभी प्रकार की प्रेम-वृत्ति के बेरोकटोक परीक्षणों और उपयोगों से दूर किये जा सकते हैं।

सेवा से अवकाश प्राप्त कर रिटायर्ड जीवन बिताने वाले बूढ़ों के लिए मनोविनोद की एक नई आवश्यकता पैदा हो गई है। इसकी पूर्त्ति

के लिए नई मनोरंजक प्रवृत्तियों के कार्यक्रम बनाये गये हैं जिनमें बूढ़े लोग अपने समवयस्कों के साथ उठते-बठते और भाग लेते हैं। सारे देश में सीनियर सिटिज़न्स या गोल्डन एज नामक बूढ़ों के संगठन स्थापित किये गये हैं। इनके सदस्य वाद-विवाद से लेकर नृत्य तक सभी प्रकार के कार्यक्रमों का अपने लिए स्वयं आयोजन करते हैं। अनेक रिटायर्ड अधिकारी सारा जीवन संघर्ष और प्रतिस्पर्धा में बिताने के बाद अपना अवशिष्ट जीवन बिना वेतन लिये समाज की सेवा में लगाकर परम सन्तोष अनुभव करते हैं। वे स्कूलों के प्रबन्धक मंडलों में या अन्य नागरिक संगठनों में शामिल हो जाते हैं। आज अमेरिका में हर व्यक्ति ६५ वर्ष की आयु में सेवा से मुक्त कर दिया जाता है किन्तु जीवन की अवधि इससे भी काफी लम्बी होती है, इसलिए राष्ट्र को इन नागरिकों के खाली समय के रूप में काफी साधन सम्पदा उपलब्ध हो जाती है।

किन्तु जिन मनोरंजन कार्यक्रमों पर हमने ऊपर दृष्टिपात किया है, दुर्भाग्य से वे सभी उत्पादक नहीं होते। उदाहरण के लिए लास वेगास, नेवाडा में, जो राष्ट्र का मुख्य द्यूत नगर है, १९५५ में अमेरिकनों ने (और कुछ विदेशियों ने भी) ६,०३,२०,००० डालर का जूआ खेला। प्रतिदिन औसतन ३८६१ व्यक्ति जूआ खेलने के लिए वहाँ आते और अपना पैसा बरबाद कर चले जाते। इसी तरह राष्ट्र ने १९५२ में ५·३ अरब डालर तम्बाकू का धूआँ उड़ाने में और इससे दुगुनी राशि शराब पीने में उड़ा दी।

अवकाश के समय का उपयोग

अमेरिकन लोग अपने खाली समय का तरह-तरह से जो उपयोग करते हैं और मनोविनोद पर जो अत्यधिक बल देते हैं, वह उनके इस संकल्प को प्रकट करता है कि वे अपने श्रम के फल का पूरा उपभोग करेंगे और जो दौलत उन्होंने अपने कठोर परिश्रम से अर्जित की है उस में से कुछ आत्मिक आनन्द भी प्राप्त करके रहेंगे। इसलिए वे मनोविनोद

और रस-राग की प्राप्ति भी ऐसे उद्दाम आवेग से करते हैं, मानो किसी नई मुहिम पर निकले हों।

इस सारे मनोरंजन और आत्मविनोद की जड़ में सृजनात्मकता की भावना है। अतीत में अमेरिकन लोग अपने काम-धन्धे, व्यवसाय और रोज़गार में भी सृजनात्मकता की भावना का समावेश करते थे। स्वयं काम भी उनके लिए खुराक और शराब की तरह नशा और पोषण जुटाता था। उन्होंने अपने परिश्रम से जो प्राचुर्य और इफरात पैदा की है, उसका उपभोग करना भी आवश्यक है। वे यह जरूरी समझते हैं कि उत्पादन में कम समय दिया जाए और उपभोग में अधिक। अर्थ-व्यवस्था के इस बुनियादी परिवर्त्तन ने लोगों की मनोवृत्ति में भी एक आधारभूत परिवर्त्तन कर दिया है। पहले अमेरिकन को काम में नैतिकता नजर आती थी, आज उसे मनोविनोद में नजर आती है। और वह आज मनोविनोद के सम्बन्ध में औरों से कहीं अधिक गम्भीर है। इसीलिए और चीजों की भांति वह मनोरंजन का तरीका सीखना भी आवश्यक समझता है।

उद्योगवाद ने पुराने जमाने की कला और शिल्प को जो चोट पहुँचाई है उससे अमेरिकन लोग अब उबरने लग गये हैं। टैक्नोलॉजी ने आज हमें ऐसे माध्यम और साधन प्रदान किये हैं जिनके द्वारा नाट्य-कला को लाखों-करोड़ों व्यक्तियों तक पहुँचाया जा सकता है। इस-लिए कला और उद्योग के बीच पूर्ण विच्छेद नहीं हो सकता, वे एक-दूसरे के साथ गुथे हुए हैं। स्वचल यन्त्रों के आविष्कार और उपयोग ने मानव को उसके चिरकालीन बन्धन से मुक्त कर दिया है। उद्योग उसे काफी खाली अवकाश देकर कला, शिल्प और सृजनकारी प्रवृत्तियों की उस पुरानी विरासत में फिर से भेज रहे हैं, जिसने प्राचीन काल में कलाओं और आनन्दोत्सवों को जन्म दिया था। इस प्रकार जिन ताकतों ने मानव को अपनी लोहे की उँगलियों से जकड़ा हुआ था, उन्हीं के हाथों बन्धन से मुक्त होकर अब फिर वह एक लम्बे रास्ते से मनोरंजन और

व्यक्तिगत सृजन की पुरानी विरासत में लौट रहा है। टैकनोलॉजी आज हमारे लिए एक महान् वरदान बन गई है क्योंकि अपनी भौतिक सम्पदा के प्राचुर्य की बाढ़ से ही वह हमें मुक्ति प्रदान कर एक ऐसे जीवन की ओर ले जाएगी जो भौतिक नहीं, सृजनात्मक और आनन्दमय है।

यदि हम एक लम्बी चक्राकार यात्रा कर अन्त में फिर अदन के बगीचे में लौट आएँ, जहाँ से हमारी यह महायात्रा शुरू हुई थी, तो कौन कह सकता है कि यह यात्रा सार्थक नहीं थी ?



विज्ञान और मानव

अमेरिकन गणराज्य का जन्म एक ऐसे बौद्धिक युग में हुआ, जिसमें विज्ञान और वैज्ञानिक पद्धति एक नये जीवन के द्वार उन्मुक्त कर रहे थे, इसलिए उसने विज्ञान को हमेशा एक सामाजिक शक्ति के रूप में ग्रहण किया और उस पर अपनी आशाएँ केन्द्रित कीं। बेंजामिन फ्रेंकलिन के परीक्षणों और टामस जेफर्सन के आविष्कारों से लेकर नवीनतम औद्योगिक उत्पादनों तक सर्वत्र विज्ञान ने अमेरिका के जीवन में एक दुर्बोध और उत्कण्ठापूर्ण वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि जन-सामान्य के सेवक और एक ऐसी शक्ति के रूप में स्थान पाया, जो उत्पादन बढ़ाने और सबको उसके लाभ प्रदान करने के कारण लोकतन्त्री प्रक्रिया के लिए आवश्यक है। विज्ञान ने परिवहन और संचार के द्रुत साधन प्रदान कर हमारे संसार को बहुत व्यापक बना दिया है। उसने हमारी दिल-चस्पियों और जिम्मेदारियों का भी विस्तार किया है, नृत्य, नाट्य और संगीत की कलाओं को हमारे घरों में पहुँचाया है, स्त्री और पुरुष के कामों को बदला है और द्रुत परिवर्तन की अपनी शक्ति से संसार को वह इतनी तेज गति से बदलता है कि हमारे लिए अपने बच्चों को उसे ठीक से समझाना भी कठिन हो जाता है।

विज्ञान ने मानव जीवन को दीर्घकालावस्थायी बनाया है और शिशुओं की मृत्यु-संख्या को कम किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि आज हमारे यहाँ नवयुवकों और बूढ़ों का अनुपात बदल गया है। इसी की बदौलत आज सन्तान पैदा करना या न करना मनुष्य के अपने हाथ की बात हो गई है, इसलिए सन्तानोत्पत्ति आज बोझ का नहीं,

सच्चे आनन्द का स्रोत बन गई है। विज्ञान ने अनेक बीमारियों का हमेशा के लिए अन्त कर दिया है, अनेक के इलाज ढूंढ निकाले हैं और कई बीमारियों की पूर्ण चिकित्सा न करने पर भी वह उनमें राहत दे रहा है। उसे यह मालूम है कि सबको भोजन देने के लिए क्या उपाय करना चाहिए और वह यह भी जानता है कि समूची मानवता को कैसे मुहूर्त मात्र में विनष्ट किया जा सकता है।

विज्ञान के साधन से ही आज हमारी सभ्यता अपनी वर्तमान स्थिति में पहुँच पायी है। उसके अमूर्त्त सिद्धान्तों को, जिन्हें किसी समय प्रयोगशाला में प्रयोग की कसौटी पर कसा गया था, आज क्रियात्मक उपयोग में लाया जा रहा है और उससे अधिकाधिक उपभोग्य वस्तुएँ तैयार की जा रही हैं। विज्ञान के विशुद्ध सैद्धान्तिक अनुसन्धानों ने पूरे के पूरे नये उद्योग खड़े कर दिए हैं, जिनसे नाइलन और प्लास्टिक जैसी सर्वथा नई वस्तुओं का निर्माण होने लगा है।

किन्तु लोगों में विज्ञान के अनुकूल रवैये और मनोवृत्ति पैदा होना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि आज यह सत्य सबने स्वीकार कर लिया है कि समस्याओं पर विचार करने और उनके हल खोजने का सबसे सही रास्ता वैज्ञानिक ही है। और यह बात केवल भौतिक समस्याओं के बारे में ही नहीं, मानवीय समस्याओं के बारे में भी सही है। वैज्ञानिक तरीका पूर्वाग्रह और अन्धविश्वासों का विकल्प है। वैज्ञानिक प्रयोग और परीक्षण किसी वस्तु के प्रति मनुष्य का विश्वास बैठाने के लिए सबसे अधिक सफल साधन हैं, इसलिए विज्ञापनकर्त्ता भी इसका बहुत अधिक सहारा लेने लगे हैं। उदाहरण के लिए विज्ञापनों में कहा जाता है कि "हर पाँच डाक्टरों में से चार मानते हैं कि.........." या "वही कार खरीदिए जिसे इंजीनियर पसन्द करते हैं।" यद्यपि आम तौर पर कोई भी यह नहीं जानता कि 'टोर्शन बार सस्पेन्शन' (मुड़ी हुई तार को लटकाना) का सही अभिप्राय क्या है, फिर भी सुनने में वह एक वैज्ञा-

निक शब्दावली जैसा लगता है, इसलिए विज्ञापनदाता कारों की बिक्री के लिए ग्राहक को प्रभावित करने के लिए इसका उपयोग करते हैं।

विज्ञान आज की दुनिया में जो महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है उसे स्वीकार कर ही कांग्रेस (संसद्) ने १९५० में एक राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिष्ठान की स्थापना की थी, जिसका उद्देश्य विज्ञान के बुनियादी अनुसंधानों और शिक्षा को समुन्नत करने और सामान्य जनकल्याण पर विज्ञान के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए एक राष्ट्रीय नीति को बढ़ावा देना था। यद्यपि इस प्रतिष्ठान की इस बात के लिए आलोचना की जाती रही है कि उसने अपना नीति-निर्धारण का काम पूरी तत्परता से नहीं किया है, तो भी उसने अनेक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त अपने लिए निर्धारित किए हैं। ये सिद्धान्त हैं: (१) जहाँ तक सम्भव हो प्रतिष्ठान क्रियात्मक विज्ञान के बजाय बुनियादी विज्ञान को समुन्नत करे; (२) देश में अधिक वैज्ञानिक तैयार करने के लिए माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान की शिक्षा के तरीकों में सुधार करे; और (३) गुप्त रखे जाने वाले वैज्ञानिक कार्यों के बजाय ऐसे कार्यों को हाथ में ले, जिनको गुप्त रखना आवश्यक नहीं है।

विज्ञान और सामाजिक सुधार

जिस तरह प्रतिभाशाली युवक मैकेनिक घर के पिछवाड़े गैरेज में मोटर या अन्य मशीनों में छेड़-छाड़ कर उन पर प्रयोग करते रहते हैं, वैसे ही अमेरिकन लोग अपने समाज में भी इस सुधार की आशा से कुछ-न-कुछ प्रयोग और परिवर्तन करते रहते हैं। किसी भी संस्कृति के लिए, जिस पर तरह-तरह के दबाव पड़ रहे हों, यह बात बहुत आशा-वर्धक होगी कि उसके सदस्य उसकी निष्पक्ष और वैज्ञानिक आधार पर ऊँचे स्तर की आलोचना करें। यद्यपि यह सम्भव है कि स्वार्थी और संकीर्ण हित जीत जाएँ तो भी यह बात सभी स्वीकार करते हैं कि वैज्ञानिक प्रमाण ही किसी भी नीति-निर्धारण या निर्णय में सबसे अधिक वज़नी प्रमाण होते हैं।

स्वयं हमारे राष्ट्र का निर्माण भी सत्रहवीं शताब्दी के यूरोप में विद्यमान परिस्थितियों के विरोध से हुआ। इसलिए विरोध और विद्रोह ही अमेरिकन समाज का विशिष्ट लक्षण है। लेकिन इस विद्रोह के द्वारा वह सुधार करना चाहता है और उसकी सुधार की प्रवृत्ति सबसे पहले ईश्वर में और उसके बाद मानवीय प्रगति में उसके विश्वास और आस्था पर आधारित रही है। अमेरिकन सुधार आन्दोलन में धर्म और नैतिकता का रंग आज भी विद्यमान है। यही कारण है कि जिन लोगों के कान बार-बार मार्क्स और लेनिन के वचनों को सुनने के अभ्यस्त हो गए हैं, वे अमेरिकन समाज में होने वाले सुधारों को देख ही नहीं सकते और देखते भी हैं तो सन्देह की दृष्टि से।

अमेरिका के विद्रोह और सुधार के विशाल साहित्य को अन्य देशों के लोग बहुत कम जानते हैं। इस साहित्य का आरम्भ अमेरिका के आरम्भ से ही होता है, जैसाकि विलियम ब्रैडफोर्ड द्वारा अमेरिका में लिखी गई सर्वप्रथम महान् अंग्रेजी पुस्तक 'ऑफ प्लिमथ प्लाण्टेशन' से विदित होता है। इस साहित्य में अमेरिका के औपनिवेशिक युग से जैफर्सन के युग तक का, विलियम लॉयड गैरीसन, सूसन बी० एन्थनी, डेमारेस्ट लॉयड आदि समाज-सुधारकों के वचनों और कार्यों का, १८४० के दशक में गुलाम-प्रथा उन्मूलन, अध्यात्मवाद, समाजवाद और सब वस्तुओं को मानवीय मन की उपज बताने वाले शेलिंग और इमर्सन आदि के सिद्धान्त के रूप में हुए समस्त सुधारवादी आन्दोलनों का और उसके बाद समाज की गन्दगी को साफ करने वाले अगली शताब्दी के सुधारकों तक का वर्णन है।

ब्रायन और टेडी रूज़वेल्ट से विल्सन और लाफोलेत तक, उसके बाद फ्रैंकलिन रूजवेल्ट की नई नीति (न्यू डील) तक और फिर आइज़न-हावर के युग तक सुधारवाद ने राजनीति को प्रभावित किया है। अब यह ज़ाहिर हो गया है कि अनुदार लोगों के दल ने भी समाज-सुधार को अपने लक्ष्य के रूप में अपना लिया है, हालांकि यह सम्भव है कि

उसके कुछ सदस्य अब भी जन-जाधारण के समाज के इतने निकट सम्पर्क में आने से घबरायें। पोपुलिस्ट, सोशलिस्ट और प्रोग्रेसिव आदि सभी समाजसुधारक वर्गों द्वारा सुझाये गये प्रस्ताव देर-सवेर कानून का रूप धारण करते ही रहे हैं।

विरोध और सुधार के आन्दोलन के मूल में दो सिद्धान्त अन्तर्निहित रहे हैं। पहला यह कि मानवीय तर्क-बुद्धि और निरन्तर प्रवर्धमान वैज्ञानिक ज्ञान जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठा सकता है और दूसरा यह कि देश में जो दौलत पैदा होती है उसमें सभी को हिस्सा मिलना चाहिए। दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों के कथनों और कार्यों से यह स्पष्ट हो गया है कि ये सिद्धान्त अब अमेरिकन सिद्धान्त बन गये हैं। हाल के वर्षों में दोनों राजनीतिक दलों और जनता ने यह भली-भाँति समझ लिया है कि उनका अपना भला इसी में है कि इन सिद्धान्तों का विश्वव्यापी प्रसार किया जाए और सारे संसार का जीवन-स्तर ऊँचा उठाया जाए।

एक ओर शुद्धाचारवादी प्योरिटन लोगों का समाज-व्यवस्था के प्रति विरोध और विद्रोह और दूसरी ओर तर्कबुद्धि का युग, एक ओर ईसाइयत का समाज कल्याण का सन्देश और दूसरी ओर वैज्ञानिक पद्धति का विकास—इन सबने मिलकर संयुक्त राज्य में विज्ञान को मानव की उन्नति का साधन बना दिया है। जेम्सटाउन और प्लाइमाउथ की प्रारम्भिक बस्तियों से लेकर ब्रुक फार्म और ओनीडा कम्युनिटी तक और बाइबिल कॉमनवेल्थ से सर्वजातीय आवास-गृहों के विकास तक हर मंजिल और दौर में देश ने तरह-तरह के सामाजिक परीक्षण किए हैं। अमेरिका के इतिहास के प्रारम्भिक युग में जब जंगलों में नई बस्तियाँ बसाई जाती थीं, तब प्रायः उनमें कोई-न-कोई नया कार्यक्रम हाथ में लिया जाता था। उदाहरण के लिए जॉन जे शिफर्ड ने ओबर-लिन, ओहायो में अपनी नई बस्ती एक स्कूल को केन्द्र बनाकर स्थापित की। इस स्कूल का उद्देश्य ऐसे युवक तैयार करना था जो ईसाइयत

के सन्देश को और ओबरलिन की समाजवादी पद्धति को तमाम नये इलाकों में पहुँचा सके।

ये बस्तियाँ एक प्रकार की सामाजिक प्रयोगशालाएँ थीं। बाद में समाजशास्त्रियों ने इन प्रारम्भिक बस्तियों का अध्ययन कर यह मालूम करने की चेष्टा की कि क्यों वे सफल हुईं और क्यों असफल। इन अध्ययनों में सबसे प्रसिद्ध रॉबर्ट और हेलन लिण्ड द्वारा किया गया मिडिलटाउन का अध्ययन है। इससे पूर्व कुछ ऐसी सामाजिक व्यवस्थाएँ की जा चुकी थीं, जिनमें पड़ोसी गरीब बस्तियों की समस्याओं का अध्ययन कर उनकी आवश्यकताएँ पूरी करने का प्रयत्न किया गया था। मिडिलटाउन के अध्ययन के बाद और भी अनेक अध्ययन किए गए, जिनमें सबसे विस्तृत और व्यापक अध्ययन डब्लू. लॉयड वार्नर और उनके साथियों की यांका सिटी परियोजना थी।

इन विस्तृत अध्ययनों के आधार पर समाजशास्त्रियों ने मानवीय व्यवहार, सामूहिक बस्तियों और सामाजिक संस्थाओं के बारे में एक विस्तृत वैज्ञानिक जानकारी का संग्रह किया। जीवकोशों का खुर्दबीन से अध्ययन करने वाले जीवविज्ञान शास्त्री और परमाणु की रचना का अध्ययन करने वाले भौतिक विज्ञान शास्त्री की भाँति इन लोगों ने भी मानवीय क्रियाकलाप का अध्ययन अत्यन्त निष्पक्षता से किया। उन्होंने यह मालूम किया कि सामाजिक व्यवहार को पहले से ही कैसे जाना जा सकता है और सामाजिक बुराइयों को रोकना या सुधारना कैसे सम्भव है।

डार्विन और फ्रायड के सिद्धान्तों की भाँति इन समाजशास्त्रियों के सिद्धान्त भी जन-चेतना में प्रवेश करने लगे। एक बार जब समाजशास्त्र के सिद्धान्त जन-साधारण के लिए विज्ञान का अंग बन गए तो सामाजिक न्याय की ओर प्रगति का रास्ता अपने आप ही खुल गया, क्योंकि जन-साधारण विज्ञान को समझ न पाने पर भी उसकी चामत्कारिक सत्ता को स्वीकार अवश्य करता था। विज्ञान अपने आपको

इतनी अधिक बार सफल सिद्ध कर चुका था कि उसकी समस्त सफलताओं ने इस नये विज्ञान को अपनी जड़ें मजबूत बनाने के संघर्ष में बहुत सहायता दी। समाज शास्त्र ने समाज के जिन दुखते और सड़े अंगों की परीक्षा की थी, उन्हें काटकर फेंक देना या उनका इलाज करना जरूरी था। जिस तरह चिकित्सक केवल रोग का निदान ही नहीं करता उसका इलाज भी बताता है, वैसे ही सामाजिक चिकित्सक भी केवल सामाजिक रोगों का निदान ही नहीं करता, वह जातीय तनाव, बाल-अपराध और पारिवारिक असन्तोष और अशान्ति के रोगों का इलाज करने के लिए कार्यक्रम भी सुझा सकता है।

समाज-सुधार का काम सबसे पहले कस्बों और बस्तियों की आवश्यकताओं का निर्धारण करने के लिए उनके सर्वेक्षण से आरम्भ हुआ। उदाहरण के लिए ग्रीनविल, दक्षिणी कैरोलाइना, के सामने सबसे बड़ी समस्या उसके नीग्रो निवासियों की थी। इसलिए वहाँ की नगर-परिषद् ने यह अनुभव किया कि यह हर व्यक्ति की समस्या है, सभी विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाले गोरों और नीग्रो लोगों की एक समिति नियुक्त की। इस समिति ने बारह उपसमितियाँ आवास से लेकर रोजगार तक सभी समस्याओं के अध्ययन के लिए कायम कीं। हर उपसमिति के दो-दो अध्यक्ष थे, एक गोरा और एक नीग्रो। दो सौ व्यक्ति इन समस्याओं के बारे में सर्वेक्षण के लिए नियुक्त किए गए। गृहिणियों को अपने पड़ोसियों की समस्याओं का अध्ययन करने का और पादरियों को बसों में नीग्रो लोगों के साथ किए जाने वाले व्यवहार की जाँच करने का काम सौंपा गया।

ग्रीनविल ने जब सारी सामाजिक समस्या का अध्ययन कर लिया तो नीग्रो और अन्य लोगों के लिए आवास एवं गन्दी बस्तियों के उन्मूलन के कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिए गए। नीग्रो डाक्टरों को पहली बार मैडिकल सोसाइटी की बैठकों में आमन्त्रित किया गया। सम्भवतः सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि गोरे और नीग्रो दोनों इन समितियों में एक

साथ मिलकर काम करते थे जो अपने आप में एक बड़ी सामाजिक प्रगति था। इस सर्वेक्षण में जो पद्धति अपनाई गई उसमें पहले समस्या का पता लगाया जाता और फिर मिलकर उसका विश्लेषण और उसके बाद इलाज किया जाता। यह पद्धति जॉन ड्यूई की लोकतन्त्र की परिभाषा को साकार करती है। जॉन ड्यूई लोकतन्त्र को एक ऐसी पद्धति मानता है जिसमें प्रयोगों और परीक्षणों द्वारा मानवीय प्रकृति की शक्तियों को मुक्त कर स्वैच्छिक प्रयत्नों पर आधारित सहकारितापूर्ण स्वतन्त्रता की सेवा में नियोजित किया जाता है।

समूचे नगर और समाज के स्तर को ऊँचा उठाने और उसे सुखी बनाने का विचार अमेरिकनों को प्रारम्भ से ही आकृष्ट करता रहा है। जीवन के स्वप्न को साकार करने के लिए हर प्रकार की समाज-सेवा का आश्रय लिया जाता है—जैसे मनोरंजन कार्यक्रम, पारिवारिक सेवा केन्द्र, मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सालय, नगर परिषदों द्वारा नियुक्त नर्सें, शिशु चिकित्सालय, प्रसव से पूर्व गर्भवती स्त्रियों की देखभाल, रोजगार दिलाऊ कार्यालय, बालचर और गर्लगाइड, वृद्धों और निराश्रित बच्चों की देख-भाल आदि। इन सब सामाजिक सेवाओं के लिए धन संग्रह करने को बीस लाख से अधिक व्यक्ति हर वर्ष घर-घर जाते हैं और सामूहिक नगरकोषों और परिषदों के कार्यक्रमों के लिए ३० करोड़ डालर से अधिक राशि एकत्र करते हैं। यही नहीं, सेवाभावी लोग अस्पतालों में सेवा करके या स्काउटों को प्रशिक्षण देकर लाखों घण्टे समाज-सेवा के लिए प्रदान करते हैं। समाज के स्तर को ऊँचा उठाने का काम सरकार का नहीं है। वह स्वयं समाज का काम है और उसके लिए यह आवश्यक है कि समाज-सेवी लोग स्वेच्छा से धन और समय दें।

समाज-विज्ञानों के द्वारा किये गये अध्ययनों के निष्कर्षों का उपयोग समाज के सभी क्षेत्रों में किया जा रहा है। पादरी इन निष्कर्षों के आधार पर गिरजाघर में उपदेश करता है। स्कूल अपने मार्गनिर्देशन कार्यक्रमों में और छात्र के व्यक्तित्व और उसकी आवश्यकताओं के

अध्ययन में उनका उपयोग करता है। उद्योग अपने कर्मचारियों के साथ अच्छे सम्बन्ध और जनता के साथ सम्पर्क स्थापित करने में उनका इस्तेमाल करता है। हॉलीवुड जनता की आवश्यकता और माँग का पता लगाने और विज्ञापनकर्त्ता जनता की उत्पादित वस्तुओं की माँग का अध्ययन करने के लिए इसी पद्धति का आश्रय लेता है।

व्यक्तियों के आपसी सम्बन्धों की टैकनीक का अध्ययन कर ऐसे उपाय निकाले जाते हैं जिनसे विभिन्न वर्गों, दलों और समितियों का काम अधिक अच्छे सौहार्दपूर्ण तरीके से हो सके। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान हमें महत्त्वपूर्ण और उपयोगी साधन प्रदान करते हैं और उनका मूल्य उनके उपयोग से ही जाँचा जा सकता है। बारूद एक नई सड़क बनाने के लिए रास्ता साफ करने के काम में भी लाया जा सकता है और एक बेगुनाह व्यक्ति की जान लेने के काम में भी। इसी प्रकार धन का उपयोग भी मनुष्य को ऊँचा उठाने या पतन की ओर ले जाने, दोनों में किया जा सकता है। यही नहीं, धर्म का उपयोग भी वैमनस्य और घृणा को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। इस प्रकार समाज विज्ञान के उपकरण भी यदि स्वार्थी और अविवेकी लोगों के हाथों में पड़ जाएं तो वे उनका उपयोग कर्मचारियों को मालिकों की इच्छा का दास बनाने, जन-मत को प्रभावित करने और व्यावसायिक एवं राजनीतिक प्रयोजनों के लिए जन-भावनाओं को उभाड़ने में कर सकते हैं।

वैज्ञानिक सिद्धान्तों को मानवीय कल्याण और उत्कर्ष के लिए उपयोग में लानेवाली तमाम परियोजनाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण थी टेनेसी घाटी परियोजना, जिसकी टैक्निकल सफलताओं और उपलब्धियों का पहले ही उल्लेख किया जा चुका है। लेकिन इसकी सामाजिक सफलता उनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। टेनेसी घाटी प्रशासन ने अपने कार्यक्रम अपने क्षेत्र के किसी गाँव पर जबर्दस्ती नहीं थोपे, बल्कि उसने इनमें धीरे-धीरे इन कार्यक्रमों के प्रति दिलचस्पी पैदा की। प्रशासन के अधिकारी किसानों से उनके घरों पर जाकर मिले। उन्होंने उन्हें ग्राम के

स्कूल में छोटे-छोटे समूहों में मिलने के लिए निर्मंत्रित किया और समझाया कि पारस्परिक सहयोग से वे क्या लाभ उठा सकते हैं। धीरे-धीरे लोगों की समझ में बात आ गई। कृषि के तरीकों में सुधार हुआ। फसलें अधिक अच्छी हुईं। लोगों में सामूहिकता और सहयोग की भावना का विकास हुआ। फलतः स्वच्छता, सफाई, अच्छे घरों का निर्माण, अच्छी शिक्षा-व्यवस्था और मनोरंजन के साधनों का आयोजन किया गया। सरकार ने जनता को अपने दक्ष व्यक्तियों की सेवाएँ अर्पित कीं किन्तु उन्हें उसपर थोपा नहीं। उसने तब तक प्रतीक्षा की, जब तक कि लोगों में सहयोग की भावना स्वेच्छा से विकसित न हो, क्योंकि वह जानती थी कि स्वयं भीतर से पैदा होने वाला परिवर्तन ही सुनिश्चित और स्थायी होता है।

नई सीमाएं

चिकित्सा विज्ञान आन्त्रपुच्छ को आपरेशन कर निकाल सकता है, टूटी हुई टाँग को ठीक बैठा सकता है और शिशु पक्षाघात पर विजय पा सकता है। कृषि विज्ञान सस्ते खाद्य-पदार्थ इतनी बड़ी मात्रा में पैदा कर सकता है कि उससे भूख का नाम ही संसार से मिटाया जा सके। किन्तु इन्सान की यह लड़ाई अधूरी है। कारण, बीमारी मनुष्यों को इतनी चोट और नुकसान नहीं पहुँचाती, जितना कि वे अपनी संस्थाओं और परम्पराओं के दबावों से स्वयं अपने आपको पहुँचाते हैं। आज लोग रोगों के विषाणुओं और जीवाणुओं के शिकार उतने नहीं होते, जितने कि तनाव, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा और आर्थिक लोभ और लूट-खसोट के शिकार होते हैं।

इसलिए अब प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान, दोनों को ही समान समस्याओं का समाधान करना है। डाक्टर आज रोगी की चिकित्सा के लिए मानस-चिकित्सक को भी बुलाता है। भारत या थाईलैंड के किसी गाँव में जब कृषि-टैक्नीशियन किसी नई टैक्नीक का प्रयोग करता है तो वह नृवंशशास्त्रियों को भी यह जानने के लिए,

सहायता लेता है कि कहीं उसका कोई कार्य इन ग्रामों में प्रचलित सामाजिक विधि-निषेधों या रूढ़ियों का उल्लंघन तो नहीं करता। वह अपना कार्यक्रम जनता के सामने इस ढंग से प्रस्तुत करता है कि स्थानीय लोगों के नैतिक आचार-विचार, परम्पराएँ और रूढ़ियाँ उसे अंगीकार कर लें। जो उद्योगपति अपने कारखाने में कोई नई मशीन लगाना चाहता है, वह भी पहले मानवीय विषयों और सम्बन्धों के ज्ञाताओं से, फिर अपने प्रबन्धक अधिकारियों से और उसके बाद कर्मचारी संघ के प्रतिनिधियों से विचार-विनिमय करके उसके लिए भूमिका तैयार करता है।

सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञान केवल उन्हीं समस्याओं के समाधान का प्रयत्न नहीं करते, जिनके लिए उनके संयुक्त प्रयत्न की आवश्यकता है। बल्कि वे एक-दूसरे के एकाकी क्षेत्रों में भी प्रवेश करने लगे हैं। पहले जो क्षेत्र केवल भौतिक विज्ञान के या केवल जीव-विज्ञान के क्षेत्र समझे जाते थे, उनके मध्य में आज जीव-भौतिक विज्ञान और जीव-रसायन के नये क्षेत्र आ गये हैं। इसी तरह जीव-विज्ञान और समाज-विज्ञान के बीच की खाई भी भरती जा रही है। आज जैविक क्रियाओं के रासायनिक आधार को और सामाजिक व्यवहार के जीव-विज्ञान सम्बन्धी आधार को पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझा जा रहा है। जब विभिन्न विज्ञानों के बीच की लुप्त कड़ियाँ मिल जाएँगी, तब यह सम्भव है कि मानव के व्यवहार और रुझान और सामाजिक प्रगति को रासायसिक साधनों से नियन्त्रित किया जा सके। वह जमाना तो आ ही चुका है जब कि मनुष्य सुबह उठकर और ब्रुश से दाँत साफ कर अपने दवाओं के बक्से से ऐसी गोली ले सकता है जो उसे बर्फ पर स्की से फिसलने का खेल खेलने के लिए शारीरिक शक्ति या किसी महावपूर्ण बिक्री के सौदे के लिए अनुकूल मानसिक शक्ति प्रदान कर सके।

साइबरनेटिक्स का विज्ञान मशीनरी और समाज दोनों को सन्देशों द्वारा नियन्त्रित करने के उपायों का अनुसन्धान कर रहा है ।* यहाँ मशीनरी के साथ समाज को भी जोड़ देना यह सूचित करता है कि हमने सभ्यता को किस हद तक मशीनी सभ्यता बना लिया है या मशीन का किस हद तक सामाजिकीकरण कर लिया है । नॉर्बर्ट वीनर ने सन्देशों के विज्ञान में केवल भाषा, संचार के माध्यमों और गणना-यन्त्र आदि मशीनों का ही समावेश नहीं किया है, बल्कि उन सभी साधनों का समावेश किया है जिनसे समाज को नियन्त्रित करने वाले संकेत भेजे जाते हैं । उसका विश्वास है कि समाज को पूरी तरह समझने के लिए उन सब सन्देशों को पूर्ण रूपेण समझना जरूरी है, जो समाज में आदान-प्रदान किये जाते हैं । यही नहीं, भविष्य में इन सन्देशों के भावी विकास को पूरी तरह समझना और भी अधिकाधिक आवश्यक होता जाएगा क्योंकि सन्देशों के प्रेषण और ग्रहण का काम, जो अब तक केवल मानवीय कार्य ही समझा जाता था, धीरे-धीरे मशीनों के हाथ में चला जा रहा है ।

गणना यन्त्र (कम्प्यूटिंग मशीन) जिन्हें इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क भी कहा जाता है, अभी से उस काम को कुछ मिनटों में पूरा करने लग गये हैं, जो पहले वर्षों में होते थे और जिनमें इतना समय लगने पर भी गलती की सम्भावना अधिक रहती थी । अब ऐसे यन्त्र बनाये जा रहे हैं जिनसे किसी भी विषय पर एक पूरे पुस्तकालय का ज्ञान तत्काल ही उपलब्ध हो सकेगा । एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने की मशीनें तो बना भी ली गई हैं । मशीनरी आज मानव को केवल उबा देने वाले शारीरिक श्रम से ही नहीं, बल्कि मानसिक श्रम से भी, जिस में उसने सारी जिन्दगी लगा दी थी, धीरे-धीरे मुक्त करती जा रही है । वह युग अब नजदीक ही आ गया है, जबकि मनुष्य स्वतन्त्र होकर अपनी सृजन की शक्तियों का पूर्णतः उपयोग कर सकेगा ।

*नॉर्बर्ट वीनर : 'द ह्यूमन यूज़ ऑफ ह्यूमन बीइंग्स' ।

लोकतन्त्र का विज्ञान

विज्ञान या वैज्ञानिक पद्धति का दर्शन जब एक लोकतन्त्री समाज की आवश्यकताओं पर लागू किया जाता है तब उसे फलवाद (प्रैगमेटिज्म) कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि अच्छे और बुरे अथवा सत्य और मिथ्या के बीच चुनाव कुछ अमूर्त्त सिद्धान्तों के साथ चिपटे रह कर नहीं किया जा सकता, बल्कि किसी काम के फल को देखकर ही किया जा सकता है। अधिकतर दार्शनिक विचारधाराओं का आधार यह विचार रहा है कि यह संसार एक सुनिश्चित प्रणाली का अंग है और यदि उसके मूल सिद्धान्त एक बार खोज और निर्धारित कर लिये जाएँ तो उससे सभी समस्याएँ हल हो जाएँगी। लेकिन फलवादी संसार को एक प्रतिक्षण परिवर्तमान वस्तु मानता है जिसमें किसी सिद्धान्त के साथ कट्टरपन से चिपटे रहना और किसी सत्य को बिल्कुल अन्तिम और अपरिवर्तनीय मान लेना केवल हानिकारक ही होता है।

विलियम जेम्स ने फलवाद की व्याख्या करते हुए (प्रैगमेटिज़म नाम भी उसे जेम्स ने ही दिया है) अस्पष्ट और अमूर्त्त सिद्धान्तों के क्षेत्र में युगों से चले आ रहे दार्शनिक विवादों का अन्त कर दिया और इस बात पर आग्रह किया कि किसी भी सिद्धान्त की कसौटी सिर्फ यह है कि मनुष्यों की दुनिया पर उसका क्या क्रियात्मक असर पड़ता है। इसलिए फलवादी पद्धति ने अन्तहीन दार्शनिक विवादों को लमहे भर में ही फल और उपयोगिता की कसौटी से खत्म कर दिया। जेम्स का कहना है कि "सत्य उसी वस्तु का नाम है जिसके बारे में हमारा यह विश्वास हो कि वह अच्छी है और जिसके अच्छी होने के भी कुछ निश्चित कारण हों।"

वैज्ञानिक पद्धति की दार्शनिक विचारधारा के साथ जॉन ड्यूई ने साधनवाद का भी समावेश किया और इन दोनों को मानव के दैनिक जीवन की दुनिया की सेवा में प्रवृत्त किया। उसका यह आग्रह था कि किसी उद्देश्य का सही मूल्यांकन करने के लिए यह देखना आवश्यक है

कि उसकी प्राप्ति के लिए काम में लाये गये साधनों का परिणाम क्या होता है। साधन भी उद्देश्य का ही हिस्सा हैं। हम यह तब तक नहीं जान सकते कि हमने किस वस्तु का चयन किया है, जब तक कि हम यह न जान लें कि उस चयन का परिणाम क्या होगा। आदर्शों में आस्था रखने से भी हमें उनके परिणामों के मूल्यांकन से छुटकारा नहीं मिल सकता।

एक ओर जहां जॉन ड्यूई वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग से समाज के पुनर्निर्माण के लिए एक उपयागी दार्शनिक आधार तैयार कर रहा था, वहाँ ओलिवर वैंडल होम्स यथार्थवाद (रीयलिज़्म) के नाम से कानून के क्षेत्र में एक नया आन्दोलन चला रहा था। उसका कहना था कि कानून को एक अमूर्त्त वस्तु नहीं माना जाना चाहिए, बल्कि उसे एक ऐसा साधन समझा जाना चाहिए जो मानव की बदलती हुई आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है और सामाजिक परिवर्त्तनों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

जेम्स हार्वे रौबिन्सन का कहना था कि इतिहास केवल अतीत की घटनावली का वर्णन ही नहीं है, बल्कि वह एक साधन है जिससे वर्तमान को जाना जा सकता है और भविष्य को प्रभावित किया जा सकता है। इस प्रकार इतिहास सामाजिक विज्ञानों का सहगामी बन गया। ड्यूई, रौबिन्सन और उनके अनुयायियों का विश्वास था कि एक समय ऐसा आएगा जबकि औद्योगिक क्रान्ति द्वारा घोषित वैज्ञानिक दृष्टिकोण राजनीति में भी आ जाएगा। विज्ञान की पद्धति से उद्योगों ने संसार को बदल दिया है। किन्तु टैकनोलॉजी के क्षेत्र में इतनी उन्नति कर लेने के बाद भी सामाजिक क्षेत्र में हम बहुत पीछे रह गये हैं। ड्यूई का कहना था कि जिस वैज्ञानिक पद्धति ने उद्योगवाद को जन्म दिया है, उसकी निन्दा करने या उसे ठुकराने के बजाय यह कहीं बेहतर है कि हम समाज में भी उसके सिद्धान्तों का उपयोग करें और उनसे ग़रीबी, अज्ञान और विषमता को दूर करने का प्रयत्न करें।

अत्यधिक फलयुक्त और लाभप्रद सिद्ध होना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है।"*

अमेरिकनों ने विज्ञान को अपनी निज की चीज़ के रूप में अपनाया, उसे एक ऐसी विचार-प्रणाली की शक्ल में ग्रहण किया, जो उनके अनेकत्ववादी, नये-नये क्षेत्रों में अग्रणी बनने वाले, आशावादी, परिवर्तनशील और अधिनायकवाद-विरोधी समाज को सबसे अच्छे तरीके से अभिव्यक्त करती है। विज्ञान उनके लिए एक अन्तहीन सीमा था; उन्नति, अभिवृद्धि और सुधार का प्रशस्त मार्ग था।

प्रतिष्ठान

विज्ञान में यह गहरी आस्था और इस आस्था की क्रियात्मक अभिव्यक्ति जितनी हमारे देश में संस्थापित विभिन्न प्रतिष्ठानों में नजर आती है, उतनी और किसी चीज में नहीं। टैकनोलॉजी की बदौलत अर्जित की गई विशाल सम्पदाओं के फलस्वरूप बीसवीं शताब्दी में मानवीय उन्नति के लिए अनुसन्धान कार्यक्रमों को समुन्नत करने के लिए ये प्रतिष्ठान कायम किये गये।

देश में इस समय चल रहे सैकड़ों, प्रतिष्ठानों में से कुछ का यहाँ उदाहरण के लिए उल्लेख किया जा सकता है। कारनेगी कार्पोरेशन आफ न्यूयार्क (जो स्काटलैंड से बचपन में अमेरिका में आकर बसे कारनेगी द्वारा, जो अपने अध्यवसाय से संसार का बहुत बड़ा इस्पात उद्योगपति बन गया, स्थापित अनेक प्रतिष्ठानों में से एक है) ज्ञान की उन्नति और प्रसार के लिए स्थापित किया गया था। यह प्रतिष्ठान अब उन संस्थाओं को अनुदान देता है जो मानव को अधिक सुखी बनाने के लिए आवश्यक नये ज्ञान के द्वार खोलने वाले अध्ययन और अनुसन्धान के कार्यक्रमों को चला रही हैं। रसेल सेज प्रतिष्ठान अपना अधिकतर धन सामाजिक विज्ञानों के अनुसन्धान के परिणामों और निष्कर्षों को समाज

*मॉडर्न साइंस एण्ड मॉडर्न मैन, पृष्ठ १८७।

परिसम्पत्ति ५० करोड़ डालर थी किन्तु १९५५ में उसने यह सारा धन एक ही बार में बिना किसी धार्मिक विश्वास के भेदभाव के चार हजार से अधिक प्राइवेट कालेजों, विश्वविद्यालयों और अस्पतालों को दे डाला।" यह सारा धन मोटर उद्योग के मुनाफे से प्राप्त हुआ था और एक नाटकीय ढंग से इस बात को अभिव्यक्त करता था कि किस प्रकार प्राइवेट उद्योगों को अपने सार्वजनिक दायित्व का बोध है और किस तरह वे राष्ट्र के कल्याण में योगदान करते हैं।

फोर्ड प्रतिष्ठान की नीति और कार्यक्रम को निर्धारित करने के लिए किये गये सर्वेक्षण और अध्ययन से मालूम हुआ है कि इन पांच क्षेत्रों को सबसे अधिक सहायता की आवश्यकता है—शान्ति की स्थापना, लोकतन्त्र का सुदृढ़ीकरण, अर्थ-व्यवस्था का दृढ़ीकरण, लोकतन्त्री समाज में शिक्षा का प्रसार और व्यक्तिगत व्यवहार और मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन। यह एक विचित्र, किन्तु सही बात थी कि यह अध्ययन करने वालों ने भौतिक विज्ञानों और टैकनोलॉजी के विकास के लिए, जिसकी बदौलत इतनी विशाल सम्पदा एकत्र की जा सकी, धन की सहायता देने की कोई आवश्यकता नहीं समझी।

इन प्रतिष्ठानों के द्वारा, जिनमें कैन्सर अनुसंधान या शिशु पक्षाघात के नियन्त्रण के लिए स्थापित ऐसे प्रतिष्ठान भी शामिल हैं, जो छोटे-छोटे दाताओं से थोड़ा-थोड़ा कर लाखों डालर प्राप्त करते हैं, अमेरिकन लोग अपना यह विश्वास प्रगट करते हैं कि ज्ञान और प्रतिभा अर्जित करना मानव का एक नैतिक दायित्व है और विज्ञान में मानवीय समस्याओं को हल करने की क्षमता है। इससे यह भी प्रकट होता है कि वे इस कार्य में सहायता देना अपनी जिम्मेदारी और कर्त्तव्य समझते हैं। और सबसे बढ़कर यह उनके इस विश्वास को द्योतित करता है कि यदि हम भविष्य के प्रति समझदारी और तत्परता एवं सजगता का दृष्टिकोण अपनाएं तो वह अवश्य ही अच्छा और कल्याणमय होगा।



हम किधर जा रहे हैं ?

हर संस्कृति को व्यक्ति और समाज के सापेक्ष महत्त्व के प्रश्न पर विचार करना चाहिए और हर युग को दोनों के सन्तुलन को नये सिरे से खोजना चाहिए। संयुक्त राज्य अपने इतिहास के व्यक्तिवादी युग में से गुजर चुका है। इस युग में संयुक्त राज्य में ऐसे स्वतन्त्र नागरिक और किसान थे, जिन्हें अपने काम पर गर्व था। इस युग में उसके पास बड़े-बड़े लुटेरों के सरदार थे, बड़े-बड़े धन-कुबेर थे, गरीबी के गढ़ थे, ऐसे लोग शासनसत्ता हाथ में लिये बैठे थे, जो अपने ही दल के लोगों को या अपने अनुयायियों को ही उच्च पद देते थे और ऐसा राजनीतिक भ्रष्टाचार भी रह चुका था, जिसे देखकर लज्जा अनुभव होती। इस प्रकार संयुक्त राज्य व्यक्तिवाद की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ, दोनों देख चुका है। उसने व्यक्ति और समाज के बीच सन्तुलन के परीक्षण हजारों तरह से किये हैं।

अमेरिका की संस्थाओं का निर्माण करते हुए व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बहुत बल दिया गया है। हमने व्यक्ति की स्वतन्त्रता के इस आग्रह के लाभ और हानि, दोनों का अनुभव किया है। किन्तु हाल के वर्षों में हमने अपना रुख बदलकर समूह और समाज पर अधिक बल देना शुरू कर दिया है। विलियम एच० ह्वाइट जूनियर ने अपनी पुस्तक "दि आर्गेनाइजेशन मैन" में कहा है कि इस सम्बन्ध में हम सीमा का अतिक्रमण कर गये है। उसका कहना है कि औद्योगिक संगठन में हम सब लोगों को समानता देने पर बहुत जोर देते है और व्यक्तिगत दृष्टि से सोचने के बजाय वर्गीय प्रक्रिया के रूप में सोचते हैं और खुशी से यथास्थिति को स्वीकार कर लेते हैं, जिसे देखकर आश्चर्य होता है।

'संगठन मानव' के सामाजिक जीवन में उसे समूह पर अधिक बल दिखाई देता है। यह बल व्यक्ति की पृथक् एकान्त निजी सत्ता को नष्ट कर देता है। उपनगरों में रहने वाले लोग सामाजिक समुदायों में बंट जाते हैं और सारा समुदाय हर चीज को संयुक्त रूप से उपभोग करता है। लोग घास काटने के लिए अलग-अलग मशीनें खरीदने के बजाय मिलकर एक मशीन खरीद लेते हैं। स्त्रियाँ आपस में मिलकर एक-दूसरे के बच्चों की बारी-बारी से देखभाल करती हैं। चाँदी के बर्त्तन, खाने के बर्त्तन, किताबें और संगीत के रिकार्ड आदि का भी परस्पर आदान-प्रदान होता रहता है।

उपनगरों में रहने वाले इन नये आदमियों में से बहुत-से ऐसे हैं जो बड़े नगरों से आये हैं, जहाँ सामुदायिक जीवन जैसी कोई चीज नहीं होती। इन उपनगरों में छोटे इलाके का सौहार्दपूर्ण पड़ोसीचारा और सामुदायिक जीवन पाकर वे सिर्फ पुराने अमेरिका को ही, जो यहाँ के वीरान जंगलों में बसी पहली आबादी के जमाने से ही छोटे कस्बों और गाँवों में हमेशा विद्यमान रहा है, फिर से पाते हैं। इस जीवन में उन्हें उन पुराने अमेरिकन कस्बों की नवीनता, उनका स्वल्प आकार, बाह्य अधिकारी सत्ता के हस्तक्षेप से मुक्ति और पारस्परिक सहायता की आवश्यकता के पुनः दर्शन होते हैं। आज अन्य अनेक नई वस्तुओं की भाँति समूह और वर्ग पर हम जो नये सिरे से जोर दे रहे हैं, वह भी पुरातन की ही नूतन पुनः प्राप्ति है। प्रारम्भिक युग की प्लाइमाउथ बस्ती, उस जमाने के पश्चिमाभिमुख गाड़ियों के काफिलों और १८४० के दशक की आदर्श बस्तियों में व्यक्तिगत मानव और समूहगत मानव के बीच जो सन्तुलन और समन्वय था, उसी का आज जीर्णोद्धार हो रहा है।

यह आशंका करना कि अनुसन्धान और प्रशासन में सामूहिक रूपसे कार्य करने का वर्त्तमान प्रणाली हमें उलट-पलट देगी, एक ऐसे समाज की आत्म-सन्तुलन की शक्ति को नजरन्दाज करना है, जो लाखों छोटे-

छोटे प्रारम्भिक समूहों से और फिर लाखों ही बड़े संगठनों से मिलकर बना है। ये संगठन नागरिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और साँस्कृतिक सभी क्षेत्रों में निर्मित हैं।

इस प्रकार का अनेकत्व पूर्ण समाज जिसमें हरेक समूह दूसरे को अपनी ओर आकृष्ट करने का उद्योग करता है या सब समूह परस्पर समझौते से काम करते हैं, उत्साह से परिपूर्ण होता है। इस बहुत्वमय समाज में हम से यह या वह कार खरीदने की, विमान के बजाय रेल से यात्रा करने की, सरकार की सत्ता के बजाय व्यक्ति की सत्ता का समर्थन करने की या डेमोक्रेटिक अथवा रिपब्लिकन उम्मीदवार को वोट देने की ही अपील नहीं की जाती, बल्कि उद्योगों के प्रबन्धक और श्रमिक, अन्नोत्पादक किसान या डेयरी फार्म संचालक, भूमि और अन्य प्राकृतिक सम्पदाओं की रक्षा के समर्थक और उनका दोहन करने वाले, प्रगतिशील शिक्षा-प्रणाली के समर्थक और शिक्षा-क्षेत्र के रूढ़िवादी और नाना धर्मों के अनुयायी—अर्थात् सभी प्रकार के लोग अपने-अपने पक्ष में हम से अपीलें करते हैं। जो जीवन हमारे सामने इतने विकल्प प्रस्तुत करता हैं, जो हमें इतने अधिक स्तरों पर उसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है, वह हमें उत्साह और स्फूर्त्ति प्रदान नहीं करेगा तो और क्या करेगा।

इधर यान्त्रिकीकरण से हमारा काम का बोझ घट रहा है और उधर हमारे सामने एक नहीं अनेक प्रकार के विकल्प उपस्थित हो रहे हैं जिनमें से हम इच्छानुसार चुनाव कर सकते हैं। एक उद्योग में व्यक्तियों की भरती के लिए हाल में ही तीन सौ कॉलेज छात्रों के इंटरव्यू लिये गये, लेकिन उनमें से एक ने भी यह नहीं पूछा कि जिस काम के लिए उनका इंटरव्यू लिया गया है, उसके लिए वेतन कितना मिलेगा। देश में दौलत का जो प्राचुर्य है, वह इतने व्यापक पैमाने पर वितरित किया जा रहा है कि अब आदमी अपने स्वास्थ्य और आराम को भी खतरे में डालकर दूसरों से आगे बढ़ने की अभिलाषा नहीं करता। केवल

भौतिक क्षेत्र में उन्नति करने के लिए उद्योग करना उतना आवश्यक नहीं रहा है। मानसिक शान्ति, सुखी पारिवारिक जीवन, मनोरंजन आदि जीवन के अन्य मूल्यों का महत्त्व आज बढ़ता जा रहा है, क्योंकि काम का अधिकार लोगों के समय और चिन्तन पर पहले से कम हो गया है।

भविष्य में सफलता की परख इस बात से की जाएगी कि कोई व्यक्ति अपने खाली समय का उपयोग किस तरह करता है—अर्थात् कौन खेलों में विजयी होता है, कौन दूर-दूर तक आनन्दपूर्ण दिलचस्प यात्राएँ करता है, अपनी उपलब्धियों की चर्चा करना है, समाज में अपने अच्छे कार्यों से अपनी उपस्थिति अनुभव कराता है और कौन भौतिक वस्तुओं के उपभोग के बजाय अवकाश के समय का सदुपयोग कर सन्तोष अनुभव करता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि समय का अच्छे से अच्छा उपयोग कर व्यक्ति, परिवार और समाज को लाभ पहुँचाना ही सफलता की कसौटी होगा।

उपलब्धि और सफलता

आज जबकि शेष सारा संसार उथल-पुथल में से गुज़र रहा है, संयुक्त राज्य ने विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का संयोजन कर एक रहने और जीवन-यापन के लायक समाज का निर्माण कर लिया है। उसने यह सिद्ध कर दिया है कि परस्पर विचार-विनिमय और सत्ता एवं सम्पदा के विकेन्द्रीकरण के द्वारा शासन ही सभ्य जीवन का सबसे सीधा मार्ग है। अब भी हम स्वतन्त्र हैं—हमें इच्छानुसार कहीं भी जाने की स्वतन्त्रता है, अपनी सरकार की आलोचना करने की आजादी है और कतार में खड़े होने के बन्धन या अयुक्तियुक्त कानूनों के विरुद्ध संघर्ष से भी हम पूर्णतः मुक्त हैं।

लेस्ली ए० फीडलर ने लिखा है कि "यूरोपीय लोगों में मानव की अशक्तता की जो धारण बनी हुई है, उससे अत्यधिक अभिभूत होने के कारण वे ऐसे किसी भी राष्ट्र या समाज को भय और सम्भ्रम मिश्रित प्रशंसा के भाव से देखते हैं, जो उन चीजों को जिन्हें यूरोपीय

सैद्धान्तिक दृष्टि से असम्भव समझते हैं, कोरे सिद्धान्तों के प्रति आस्था न होने के कारण सम्भव करके दिखा देते हैं।"

किन्तु अमेरिकनों ने जो सफलता या उपलब्धियां अर्जित की हैं, उनका अन्तिम मूल्यांकन करने के लिए हमें कुछ समय प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। लेकिन यह बात तो हर आदमी सहज में बता सकता है कि आज अमेरिका में एक बौद्धिक उफान आया हुआ है, आत्मालोचन बहुत ऊंचे स्तर पर हो रहा है, सामाजिक विज्ञानों और टैकनोलॉजी की उन्नति हो रही है, रहे-सहे वर्ग-भेद पर भी प्रहार किया जा रहा है और परमाणु युग को मानव के लोकतन्त्री स्वप्न की पूर्त्ति का साधन बनाने के संकल्प को साकार करने का उद्योग हो रहा है।

इतने विशाल और इतने विविधतापूर्ण समाज की उपलब्धियों का वर्णन करना साधारण काम नहीं है, फिर भी एक व्यक्ति का संक्षिप्त इतिहास देकर यहां उसकी एक झांकी अवश्य दी जा सकती है। यद्यपि हम बहुत-से लोगों की जीवन-झांकी दे सकते हैं, परन्तु फिर भी हमने उन में से उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश विलियम ओ० डगलस को सिर्फ इसलिये चुना है कि उन्हें विदेशों में भी लोग जानते हैं। विलियम डगलस का जन्म मिनेसोटा में एक सामान्य धर्मप्रचारक के घर में हुआ था। छः वर्ष की आयु में ही पिता की मृत्यु हो जाने पर वे अपने परिवार के अन्य लोगों के साथ पश्चिमी तट पर अवस्थित वाशिंगटन राज्य में आ गये। उन्होंने स्वयं परिश्रम करके स्कूल की पढ़ाई की और छोटा-मोटा काम कर उसकी फीस और अन्य खर्च निकालते रहे। स्कूल की पढ़ाई खत्म होने पर ह्विटमैन कालेज में पढ़ने के लिए उन्हें छात्रवृत्ति मिल गई। कालेज की पढ़ाई के साथ-साथ वे खिड़कियां साफ कर और एक दुकान में सहायक का काम कर दस सेंट प्रति घंटा कमाते रहे। वे एक होटल में वेटर का काम भी करते रहे जिससे उन्हें भोजन मुफ्त मिल जाता। कालेज जीवन के चार वर्षों में से अन्तिम तीन वर्ष उन्होंने एक खाली प्लाट पर तम्बू गाड़कर बिताये और इस प्रकार कुछ

पैसा बचाया। गर्मियों की छुट्टियों में वे बगीचों में फल तोड़ने, जंगलों में लकड़ी के लट्ठे घसीटने और जंगल की आग बुझाने का काम करते। प्रथम विश्व-युद्ध के दिनों में कुछ समय देश से बाहर रहने के बाद लौट कर उन्होंने कालेज की पढ़ाई समाप्त की। उस समय वे छात्र संघ के अध्यक्ष थे। अन्त में वे फे बीटा कापा विश्वविद्यायल के ग्रेजुएट बन गये।

दो वर्ष तक विलियम डगलस ने अपने कस्बे में शिक्षक के रूप में काम किया। इसके बाद वे भेड़ों के चरवाहे के रूप में एक मालगाड़ी से पूर्व की ओर गये और शिकागो जा पहुँचे। वहाँ से अपनी बची-खुची पूँजी से उन्होंने न्यूयार्क का टिकट खरीदा। जब वे वहाँ पहुँचे तो उनके पास कुल छः सेंट ही शेष थे। वहाँ वे कोलम्बिया लॉ स्कूल में भरती हो गये और अपना खर्च चलाने के लिए ट्यूशन करने लगे। उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी। स्कूल की अन्तिम परीक्षा में वे कक्षा में दूसरे स्थान पर आये। उन्होंने कुछ समय तक बड़ी कम्पनियों के कानूनी काम की देखभाल करने वाली एक फर्म में काम किया, कोलम्बिया और येल विश्वविद्यालयों में कानून का अध्यापन किया और दीवालियेपन का विशेष अध्ययन करने के कारण सरकार के व्यवसाय-वाणिज्य विभाग ने उन्हें अपने यहाँ बुला लिया। इसके बाद वे शेयर और एक्सचेंज कमीशन के अध्यक्ष बनाये गये, जहाँ उन्होंने वित्तीय जगत् में अनेक सुधार किये। सन् १९३९ में उन्हें उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्त किया गया। अमेरिका के इतिहास में छोटी आयु में ही यह उच्च सम्मान प्राप्त करने वाले वे दूसरे व्यक्ति थे। उसके बाद के जीवन की कितनी ही ग्रीष्म ऋतुएँ उन्होंने संसार के विभिन्न भागों की यात्रा में व्यतीत की हैं और अन्य संस्कृतियों की समस्याओं और विशेषताओं का अध्ययन किया है।

अमेरिकनों का विश्वास कहता है कि आज जो लड़के अखबार बेचकर या मैदानों की घास काटकर अपनी जीविका चला रहे हैं, उनमें

कितने ही और डगलस हैं, जो धीरे-धीरे बड़े हो रहे हैं। ये लोग अपनी पीढ़ी की समस्याओं का समाधान करना इसी तरह सीख लेंगे।

आज राष्ट्र के सामने जो समस्याएँ हैं, वे बहुत गम्भीर हैं और कभी-कभी हिम्मत तोड़ देती हैं—उदाहरण के लिए बाल अपराध, मदिरापान, मानसिक विक्षिप्तता, अन्य अपराध, पक्षपात एवं भ्रष्टाचार। किन्तु हमने प्रवृत्तियों का अध्ययन और उनके समाधान का प्रयत्न करना सीख लिया है, क्योंकि हम जानते हैं कि ये बुराइयाँ हमारे साथ कुछ हद तक रहेंगी ही। इन समस्याओं के समाधान की प्रवृत्ति से हममें से बहुतों का उत्साह बढ़ा है। कितनी ही सरकारी और स्वैच्छिक संस्थाएँ इन समस्याओं के समाधान के प्रयत्न में लगी हैं। लेकिन इनसे हमारा उत्साह केवल इसीलिए नहीं बढ़ता कि इस दिशा में बहुत बड़ा काम किया जा रहा है, बल्कि इसलिए भी बढ़ता है कि यह प्रयत्न लोक-तन्त्री पद्धति से किया जा रहा है।

हम यह आशा करते हैं कि १९८० तक हमारी अर्थ-व्यवस्था का विस्तार और विकास इतना हो जाएगा कि हर व्यक्ति को साल भर काम मिलता रहेगा और उसे प्रति सप्ताह ३४ घंटे से अधिक काम नहीं करना पड़ेगा। अगले दस या पन्द्रह वर्षों में हमें कालेजों के अध्यापकों की संख्या बढ़ाकर दुगुनी कर देनी है ताकि तमाम कालेज छात्रों की शिक्षा की आवश्यकता पूरी हो सके। साथ ही छात्रों के लिए हमें कालेजों और छात्रावासों के भवन भी इतनी बड़ी संख्या में बनाने पड़ेंगे, जितनी संख्या में हमने गत तीन सौ वर्ष में बनाये हैं।

हमें यह भी आशा है कि हमारे देश में जैसी प्राचुर्यमय अर्थ-व्यवस्था है, जिसमें किसी वस्तु का अभाव नही है, वैसी ही सारे संसार में हो जायेगी। हम यह भी आशा करते हैं कि इस विश्वव्यापी प्राचुर्यपूर्ण अर्थ-व्यवस्था के निर्माण में पारस्परिक सहायता और सम्मान में दिलचस्पी लेने वाले राष्ट्रों के साथ हम सहयोग कर सकेंगे।

संयुक्त राज्य में श्रम और काम की प्रतिष्ठा और सामाजिक सहयोग के आदर्शों का सम्मिलन हो रहा है और उससे जो संस्कृति बन रही है, वह बिल्कुल नई है और जो उसके बीच से गुजर रहे हैं; उन्हें उत्साह और स्फूर्ति प्रदान करती है। हम नारी की विशेष अन्तर्दृष्टियों का उपयोग कर उससे लाभ उठाना और हर समस्या को पुरुष और नारी दोनों के दृष्टिकोणों के समन्वय से हल करना भी सीख रहे हैं। इस प्रकार नारी के रूप में मानव जाति का जो आधा भाग अब तक घर की चार-दीवारी के भीतर कैद था, उसकी योग्यताएँ, प्रतिभाएँ और अन्तर्दृष्टियाँ हमें यह समझने में सहायता दे रही हैं कि समाज क्या है और क्या होना चाहिए ?

अमेरिकन पौराणिक गाथा

हर राष्ट्र की एक पौराणिक गाथा होती है, जो वास्तव में उसकी आशाओं और आकाँक्षाओं को और उसकी सफलताओं और असफलताओं को अभिव्यक्त करती है। उसमें उस राष्ट्र की एक अपनी प्रतीकात्मक तस्वीर होती है, और उस तस्वीर के अनुसार अपने आदर्श को पाने का वह प्रयत्न करता है। अमेरिका की पौराणिक गाथा यूरोप के एक ऐसे स्वतन्त्रता-प्रेमी धुमक्कड़ युवक की गाथा है, जो घूमता-घूमता एक नये देश में पहुँच जाता है और वहाँ के जंगली और असभ्य लोगों को पराजित कर बर्बरता और असभ्यता के स्थान पर सभ्यता और कानून के शासन की स्थापना करता है। इस शासन में सब लोग स्वतन्त्र और बराबर हैं। नये देश की विशाल साधन-सम्पदा उन सबके लिए खुली पड़ी है, जिसका वे यथेच्छ उपभोग कर सकते हैं। साहस और सूझ-बूझ से वे जंगल में ही मंगल कर सभ्यता की स्थापना करते हैं। उनके कामों से यह सिद्ध हो जाता है कि उनके गुण, उनका धर्म और उनकी कलाएँ मूल निवासियों के गुण, धर्म और कला से उच्चकोटि के हैं, इसलिए नियति ने उस नये महादेश पर अधिकार करना और उसे विकसित करना उनके भाग्य में लिख दिया है।

कारीगरों, आविष्कारकों, वैज्ञानिकों, यन्त्र-विशारदों और व्यवसायियो के रूप में ये लोग एसी उत्पादक प्रणालियों और मशीनरी का निर्माण कर लेते हैं, जो सबके लिए भौतिक सम्पदा के प्राचुर्य का उनका स्वप्न लगभग पूरा कर देती है। सबके लिए शिक्षा और उन्नति के अवसर के लक्ष्य भी उस स्वप्न के अंग हैं और उनकी भी अधिकाधिक पूर्ति होती रहती है।

अमेरिकन लोग यूरोप में अपने पूर्वजों का घर-बार छोड़ कर इस नई धरती पर आए हैं, इसलिए वे शोषित, दलित और उपेक्षित व्यक्ति के उद्धार के ध्येय का हमेशा समर्थन करते हैं। वे ऊपर से थोपी गई अधिकारी सत्ता को हमेशा सन्देह की नजर से देखते हैं और उसका प्रतिरोध करते हैं। अमेरिकन नागरिक को उन सब वस्तुओं में आनन्द मिलता है, जो युवकों को उल्लसित करती हैं—वह सब तरह के प्रतिबन्धों और बन्धनों को उखाड़ फेंकना, चंचल सुन्दरी युवतियों के साथ मनोरंजन करना, मर्दानगी के खेल खेलना, साहसपूर्ण कृत्यों में भाग लेना और अमेरिकन लीजियन या राष्ट्रीय राजनीतिक सम्मेलन जैसे उत्साहपूर्ण और उत्सवमय समारोहों में हिस्सा लेना पसन्द करता है। प्रगाढ़ आशावादिता और फिर आकस्मिक किन्तु अल्पकालावस्थायी निराशा, अपनी शक्ति से आनन्द और हर्ष की अनुभूति, और एक ऐसे युवक की भाँति, जो अपनी रहस्यमय आकाँक्षाओं और किशोरावस्था की अनुभूति को फिर से लौटा लाना चाहता है, वृद्धि, सौंदर्य और जीवन-व्यवस्था की अटूट लालसा—यही अमेरिकन नागरिक की विशेषताएँ हैं।

अमेरिका अब भी अपने आपको एक तरुण पुत्र के रूप में देखता है और शायद वह हमेशा ही अपने आपको उस रूप में देखता रहेगा। इतिहास ने उसे हमेशा के लिए एक ऐसे सीमावासी साहसी मानव-समूह के रूप में गढ़ दिया है, जो पिता की, अतीत की और अधिकारी सत्ता की सब पाबन्दियों और बन्धनों को उखाड़ फेंकता है। इसलिए किसी को भी इस बात से डरने की आवश्यकता नहीं है कि अमेरिकन उस पर

प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा करेंगे, क्योंकि किसी पर प्रभुत्व स्थापित करना उनका आदर्श नहीं है। ऐसा अवसर आने पर यह सम्भव है कि वे पीछे हट जाना, फिर से अपने पुराने वन-प्रदेशों को खोजना और पुरानी दुनिया के प्रभुत्व और सत्ता की स्थापना के आदर्शों को ठुकरा देना अधिक पसन्द करें। उनके भाग्य में ही हमेशा विद्रोह करना और संसार पर प्रभुत्व स्थापित करने के बजाय पारस्परिक सहयोग से व्यवस्था स्थापित करना लिखा है। इसीलिए अमेरिका में सामाजिक विज्ञानों की उन्नति हो रही है, वर्ग-भेद को खत्म करने की पद्धतियों का विकास किया जा रहा है, मालिक और अफसर को भी कर्मचारी के बराबर स्तर पर रखा जाता है और श्रमिकों और गैर-श्रमजीवियों की समानता पर बल दिया जाता है।

षड्विध प्रक्रिया

आज इस बारे में किसी को भी सन्देह नहीं है कि हम संयुक्त राज्य में एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहे हैं, जिसे व्यक्तिवाद, प्राइवेट उद्यम, पूँजीवाद जैसे पुराने शब्दों से, यहां तक कि लोकतन्त्र शब्द से भी ठीक-ठीक व्यक्त नहीं किया जा सकता। हमारी समाज-व्यवस्था के विभिन्न खण्डों के अत्युत्तम विश्लेषण किए गये हैं, फिर भी हम अपने समाज के बारे में कोई एक समग्र चित्र और सिद्धान्त प्रस्तुत नहीं कर सके हैं।

अमेरिकन समाज को समझने के लिए उसे एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए, जिसकी छः विशेषताएँ हैं—व्यक्तिवाद, स्वैच्छिक कार्यवाद, संघवाद, प्रतिसन्तुलन, पारस्परिक सहयोग और क्रिया अनुक्रिया एवं एकला और सम्मिलन। यह प्रक्रिया हमारी समाज-व्यवस्था को अब भी विकसित कर रही है और आत्म-विकास और परिस्थितियों के साथ समायोजन के द्वारा एक दिन यह समाज-व्यवस्था बहुत व्यापक हो जाएगी।

उदाहरण के तौर पर इस प्रक्रिया को समझने के लिए हम सबसे पहले व्यक्ति को लेते हैं। मसलन प्लाइमाउथ के गवर्नर विलियम ब्रैडफोर्ड को लीजिए। ब्रैडफोर्ड जब नौजवान था, तब उसने स्वेच्छा से ही भिन्न विचार रखने वाले एक विरोधी समूह में शामिल होने का निश्चय किया, जिसे आज हम 'तीर्थ-यात्रियों' के रूप में जानते हैं। उस समय उसके व्यक्तित्व ने समान विचारों वाले लोगों के एक समूह में, जो धार्मिक प्रयोजनों से संघबद्ध हुए थे, शामिल होकर अपने आपको विराट् बनाया। इसके बाद ये लोग उत्तरी अमेरिका में आये तो उन्होंने अपने स्वैच्छिक संगठन के सिद्धान्त को और भी व्यापक बनाकर और कार्य-रूप देकर प्लाइमाउथ की अपनी छोटी-सी बस्ती बसाई और उसके व्यावसायिक कामों को संभालने के लिए एक व्यापारिक कम्पनी का निर्माण किया। बाद में जब अनेक छोटे-छोटे कमजोर ग्राम गणराज्यों ने सैनिक उद्देश्य से परस्पर मिलकर न्यू-इंगलैण्ड महासंघ की स्थापना की तब संघवाद का सिद्धान्त भी अमल में आ गया।

प्रारम्भ में कुछ समय तक इन गणराज्यों की शक्तियाँ परस्पर सन्तुलित होती रहती थीं। उदाहरण के लिए बोस्टन और प्लाइमाउथ दोनों ही कनैक्टिकट घाटी के लिए लड़ते-झगड़ते रहे और इस तरह एक दूसरे की ताकत का प्रतिसन्तुलन करते रहे। पारस्परिक सहयोग और क्रिया-अनुक्रिया की अगली मंजिल तब आयी जब इन छोटी-छोटी जागीरों ने (उदाहरण के लिए हार्टफोर्ड, वैदर्सफील्ड, सेब्रुक आदि) मिलकर एक प्रान्तीय सरकार बनाई। और अन्त में एकता और सम्मिलन का दौर आया जबकि कनैक्टिकट एक राज्य बन गया।

यही प्रक्रिया संघीय सरकार के निर्माण में भी देखी जा सकती है।

षड्विध प्रक्रिया का यही सिद्धान्त हमारे समाज में भी कार्य कर रहा है। उदाहरण के लिए शिक्षा को लीजिए। हमारी स्कूली शिक्षा इस व्यक्तिवादी सिद्धान्त पर आधारित है कि हर नागरिक के लिए समान अवसरों का द्वार खुला है और वह यह अवसर शिक्षा के द्वारा ही

पा सकता है। स्कूल प्रणाली में स्वैच्छिक संगठनवाद तो इस बात से ही स्पष्ट है कि हर कस्बे की अपनी निज की स्थानीय स्कूल व्यवस्था होती है। नागरिक स्कूलों का खर्च चलाने के लिए स्वयं अपने ऊपर टैक्स लगाते हैं। वे स्कूलों का निर्माण और अध्यापक के लिए वेतन की व्यवस्था स्वयं सहयोग से करते हैं।

किन्तु स्वयं सेवा का सिद्धान्त दो अन्य तरीकों से भी हमें यहां अमल में दिखाई देता है। इसलिए यह समझने के लिए कि हमारा समाज किस प्रकार कार्य करता है, हमें इन दोनों में थोड़ा भेद करना चाहिए। अध्यापक परस्पर मिल कर अपना एक स्वैच्छिक संगठन बनाते हैं जिसका ध्येय सामाजिक भी होता है और उनके पेशे से सम्बद्ध भी। यह संगठन बड़े प्रादेशिक और राष्ट्रीय संगठनों से सम्बद्ध रहता है। इस संगठन की प्रणाली को हम कार्यात्मक प्रणाली कह सकते हैं, क्योंकि अध्यापक इसका निर्माण अपने पेशे की दृष्टि से अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाने के लिए करते हैं।

अध्यापक और अभिभावक मिलकर दोनों का संयुक्त संगठन भी बनाते हैं। इस संगठन को हम सामाजिक संगठन कह सकते हैं, क्योंकि उसका सम्बन्ध समाज में स्कूल का क्या स्थान है, इस प्रश्न से रहता है। यह संगठन स्कूल और परिवार, इन दो बुनियादी चीजों को कुछ ऐसे उद्देश्यों के लिए एक-दूसरे के सम्पर्क में लाता है, जिनका स्थानीय समाज के लिए एक विशिष्ट मूल्य और महत्त्व है और जो स्थानीय समाज का सर्वमान्य अंग हैं।

संघवाद का सिद्धान्त कार्यात्मक और सामाजिक, दोनों शाखाओं के राष्ट्रीय संगठनों में स्पष्ट दिखाई देता है। संघीय रूप धारण कर लेने के बाद ये कमजोर संगठन भी एकाएक शक्तिशाली हो जाते हैं। अब ये संगठन राष्ट्र के जटिल शक्ति-जाल में प्रतिसन्तुलनकारी शक्तियों के रूप में कार्य करते हैं। वे स्कूलों में सुधार करने, कर या सीमा-शुल्क कम कराने, किसानों को सहायता देने, श्रमिक कानूनों को अधिक उदार

बनाने, वन्य जीव-जन्तुओं की रक्षा करने और इसी तरह की हजारों अन्य चीजों के लिए आन्दोलन करते और उनके पक्ष में अपने संगठन बल का उपयोग करते हैं । हमारा समाज असंख्य स्थानीय स्वैच्छिक संगठनों से निर्मित है और ये स्थानीय संगठन अपने संघों या राष्ट्रीय प्रधान कार्यालयों के द्वारा अखिल देशीय रूप धारण कर इतने शक्ति-शाली बन जाते हैं कि वे वाशिंगटन में संघ सरकार के निश्चयों को प्रभावित कर सकते हैं ।

यहां तक हमारे विश्लेषण में ऐसा लगता है कि हमारी सामाजिक प्रणाली विरोध और संघर्ष पैदा करने वाली है, परन्तु इसके बाद सहयोग और क्रिया-अनुक्रिया का आरम्भ होता है । एक-दूसरे पर अनु-क्रिया और प्रतिक्रिया पैदा करने वाले समूह एक-दूसरे के प्रति शत्रुता पैदा नहीं करते, बल्कि एक-दूसरे का अनुकरण करते हैं । जो शिक्षा पहले केवल स्कूलों और अध्यापकों का ही विशेषाधिकार समझी जाती थी, वह अब समाज के अन्य वर्गों और पहलुओं में भी प्रवेश करने लगी है । श्रमिक यूनियनें अब अपने निज के स्कूल और कक्षाएं स्थापित करती हैं । उद्योग भी अपने कर्मचारियों को काम की अधिक ऊँची शिक्षा देने के लिए आन्तरिक प्रशिक्षण के कार्यक्रम चलाते हैं और उनके जो कर्मचारी काम पर रहते हुए अध्ययन जारी रखना चाहते हैं, उनका खर्च भी वहन करते हैं । कृषि-संगठन किसानों के लिए विचार-गोष्ठियां, व्याख्यान, वृत्त-चित्र और निबन्ध प्रतियोगिता आदि का आयोजन करते हैं ।

हमारे समाज के किसी भी वर्ग में यही आंगिक प्रतिक्रिया देखी जा सकती है । एक वकील को लीजिए । वह स्थानीय स्तर पर अपनी बार एसोसिएशन (कार्यात्मक संगठन) का और कानूनी सहायता संघ एवं कम्युनिटी कौंसिल (दोनों सामाजिक संगठन) का सदस्य है । इस प्रकार के और भी सैकड़ों उदाहरण दिये जा सकते हैं, जिनसे पता लगता है कि अमेरिकन लोग अपने पेशे और समाज, दोनों की उन्नति के लिए किस प्रकार परस्पर सहयोग से चलते हैं और व्यक्ति एवं समाज, दोनों

का एकीकरण कर देते हैं। श्रमिक और उद्योगपति, दोनों एक समय मूलतः परस्पर-विरोधी समझे जाते थे, लेकिन अब वे सहयोग और पारस्परिक क्रिया-अनुक्रिया के दौर में पहुँच रहे हैं। यूनियनें उद्योगों के प्रबन्ध की समस्याओं में दिलचस्पी लेती हैं और प्रबन्धकों ने भी अब यूनियनों के साथ सहयोग करके चलना सीख लिया है। स्वचालित यन्त्रों के प्रयोग से श्रमिकों के काम के घंटे कम होने और मजदूरी एवं वेतन में वृद्धि होने से एकीकरण की मंजिल नजदीक आ जाएगी। एक ऐसा समय आ जाएगा, जबकि आर्थिक सम्पदा, मनोरंजन और जीवन के प्रति दृष्टिकोण के पैमाने से मजदूर और प्रबन्धक के बीच का अन्तर कम होता-होता इतना घट जाएगा कि उसका कोई महत्त्व नहीं रहेगा।

इस षड्विध आंगिक प्रक्रिया के और भी सैकड़ों उदाहरण दिये जा सकते हैं। चर्च पहले अपने आपको केवल धर्म सम्बन्धी मामलों तक ही सीमित रखता था, परन्तु आज वह राजनीतिक और सामाजिक गति विधियों में भी हिस्सा लेता है। इसी तरह राजनीतिक दलों के इतिहास को देखने पर हमें प्रतीत होगा कि किसी समय दोनों बड़े दल एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे, किन्तु आज उनमें इतना कम अन्तर है कि वह दीख नहीं पड़ता और अवसर दोनों दल एक-दूसरे के साथ घुल-मिल कर मतदान के लिए बिल्कुल नये गठजोड़ बनाते हैं। इस तरह दोनों एक-दूसरे का प्रतिबिम्ब हैं, क्योंकि अन्ततः उन्हें अपने भीतर विद्यमान सभी बड़ी राजनीतिक ताकतों को एकत्र कर शासन-सत्ता हस्तगत करनी या कायम रखनी है।

यहाँ हम एक ऐसी चीज का उदाहरण लेते हैं जो अभी धीरे-धीरे अपना विकास कर रही है और उपर्युक्त सिद्धान्त का प्रयोग कर उसके भावी मार्ग की भविष्यवाणी करते हैं।

हाल में ही सारे देश में ऐसे व्यक्तियों के छोटे-छोटे समूह बन गये हैं, जो एक लाभमय अर्थ-व्यवस्था में सम्पत्ति के स्वामी होने की हैसियत

से अपनी बचत की राशि को काम में लगाना चाहते हैं। ये लोग अपनी निवेश-क्लबें (इन्वेस्टमेंट क्लब) बनाते हैं, उनमें अपना पैसा जमा करते हैं, किसी व्यक्ति को आमंत्रित कर शेयरों और बांडों के बारे में उससे जानकारी हासिल करते हैं, जिन शेयरों को खरीदने लायक शेयरों की कोटि में रखते हैं, उन पर विचार-विनिमय करते हैं और हर महीने अपना धन संयुक्त रूप में शेयरों आदि में निवेश करते हैं।

यह अनिवार्य है कि ये निवेश-क्लबें एक दिन संघीय स्तर पर अपने संगठन बना लेंगी। उनके राज्यीय और राष्ट्रीय स्तरों पर सम्मेलन होंगे। ये संगठन वाशिंगटन में या न्यूयार्क में या दोनों जगह अपने कार्यालय स्थापित करेंगे। वे बड़े निवेशकों (इन्वेस्टर), बैंकों और बड़ी कम्पनियों के निवेश सम्बन्धी दबावों को प्रतिसन्तुलित करने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करेंगे। वे छोटे निवेशक को कर सम्बन्धी रियायतें दिलाने के लिए आन्दोलन करेंगे। किन्तु इसी प्रक्रिया में वे अपने हितों का एकीकरण भी कर डालेंगे। व्यक्ति के तौर पर ये सब निवेशक कर्मचारी भी हैं और उपभोक्ता भी, संगठन के सदस्य के रूप में वे निवेशक हैं, और राष्ट्रीय संघ के सदस्य के तौर पर वे एक राजनीतिक प्रभाव डालने वाली शक्ति हैं। इस सारी प्रक्रिया में योग देकर वे एकीकरण की दिशा में काम करते हैं। सम्मिलन और एकीकरण की यह स्थिति आ जाने पर उनके विविध रूपों में और इन विभिन्न कार्यों और हितों के बीच अन्तर घटता चला जाता है।

किन्तु एकीकरण का अर्थ एक ऐसी स्थिति नहीं है जो अपरिवर्त्तनीय और स्थायी हो, बल्कि वह एक प्रवृत्ति है। हमारा समाज परिवर्त्तनशील है, और यही उसकी शक्ति है। किन्तु उसके बुनियादी तत्त्व—यानी पूर्ण और प्रचुर उत्पादन, उत्पादित वस्तुओं का अधिकाधिक व्यापक वितरण और आय, शिक्षा एवं वर्ग के भेद की धीरे-धीरे समाप्ति—इन दृष्टिकोणों का अधिकाधिक एकीकरण और सम्मिलन अनिवार्य कर देते हैं। मजदूर, पादरी और कारखाना मालिक—तीनों के लड़के एक

साथ हाई स्कूल में जाते हैं, यहां तक कि कालेज में भी इकट्ठे पढ़ते हैं। जब ऐसे सभी लोग, जिन्होंने कालेज में भरती होने की अर्हता प्राप्त कर ली है, एक साथ कालेज में जाने लगेंगे, तो शिक्षा विभेदक तत्त्व नहीं रहेगी। इसी प्रकार विभिन्न राष्ट्रों और जातियों से आप्रवासी के रूप में अमेरिका में आये लोगों में परस्पर एकीकरण हो रहा है और वह भी इसका एक उदाहरण है। प्रोटेस्टैंट ईसाई धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय अपने संघ बना रहे हैं और अन्त में उनका भी एकीकरण हो जाएगा।

निराशावादी लोगों को हमारे यान्त्रिक समाज में ऐसी शक्तियां नजर आ रही हैं, जो मनुष्य को अशक्त और वन्ध्य बनाती हैं, क्योंकि इस समाज में इन्सान एक विशाल मशीन का पुर्जा भर रह जाता है। ये लोग अपने आपको यथार्थवादी कहते हैं, परन्तु वास्तव में कल्पना-लोक में विचरण करते हैं। ये औद्योगिक युग से पहले के उस युग को याद करते हैं, जबकि छोटे-छोटे कारीगर और शिल्पी छोटे पैमाने पर काम करते थे, और उस याद में ही सन्तोष अनुभव करते हैं, लेकिन वह युग अब चला गया है। वे अपने ही लिए स्वतन्त्र रूप से काम करने में एक तरह की सुरक्षा महसूस करते हैं, परन्तु वह सुरक्षा अब अतीत की वस्तु । यह कैसा पागलपन है!

अठारहवीं शताब्दी के कारीगर और शिल्पी को व्यापारिक प्रतिस्पर्धा से, लाइलाज समझी जाने वाली बीमारियों से और अत्याचारी शासन से कौन-सी सुरक्षा प्राप्त थी? आज कौन-सा ऐसा आदमी है जो फिर से १२ घंटे दैनिक काम और बाल-श्रम के युग में लौट जाना चाहता हो? आज चालीस घंटे काम का सप्ताह (शीघ्र ही वह तीस घंटे का रह जाएगा) सामाजिक सुरक्षा के लाभ, बेरोजगारी भत्ता, आधुनिक चिकित्सा और उच्च एवं सार्वजनीन शिक्षा—इन सबने मिल कर आधुनिक अमेरिकन श्रमिक के चारों ओर सुरक्षा का एक ऐसा जबर्दस्त घेरा बना दिया है कि पचास वर्ष पूर्व कोई उसकी कल्पना भी नहीं कर

सकता था। और सुरक्षा ही नहीं, और भी अनेक लाभ आज के नागरिक को प्राप्त हैं।

कुछ लोगों में यह प्रवृत्ति देखी जाती है कि वे पुराने जमाने के गाँवों या नगरों के समाज की खूब प्रशंसा करते हैं और कहते हैं कि उस समाज में सब लोग मिल कर सहयोग से काम करते थे। यह प्रशंसा वे इस प्रकार करते हैं, मानो उस समाज में कुछ सहज आन्तरिक विशेषता थी। किन्तु आज जो स्वैच्छिक संगठन बनाए जाते हैं, वे आज की पहले से कहीं अधिक जटिल समाज-रचना का परिणाम हैं। इस स्वैच्छिक संगठन की प्रक्रिया से हमें ऐसे विचारों को आज़माने का अवसर मिलता है जो बाद में सरकार का प्रश्रय भी पा सकते हैं। इस आज़माइश का परिणाम यह होता है कि यदि उनमें कोई गलती होती है तो वह बड़ी नहीं होने पाती।

जैसे-जैसे विभिन्न हित संघ का रूप धारण करते हैं, एक-दूसरे को प्रतिसन्तुलित करते हैं और फिर परस्पर समन्वय भी स्थापित करते हैं वैसे-वैसे इस प्रक्रिया के फलस्वरूप एकीकरण और सम्मिलन अधिकाधिक बढ़ता जाता है, भले ही हमें बीच-बीच में मतभेद और अनैक्य की आवाजें भी सुनाई देती रहें। सौहार्दपूर्ण विविधता ही अमेरिकन जीवन का चिह्न है—यानी परस्पर मतभेद और अनैक्य के द्वारा संघनित होने वाला सौहार्द और प्रतिसन्तुलनकारी शक्तियों के द्वारा परस्पर एकत्व में बाँधी गई अनेकता।

जो लोग यह समझते हैं कि समाज एक अपरिवर्त्तनीय और चारों ओर से बन्द संस्थान है, यह विश्वास भी नहीं कर सकते कि अमेरिकन समाज, जो तरह-तरह के समूहों, वर्गों और हितों से भरा हुआ है, किसी तरह चल रहा होगा। अमेरिका में बाहर से जो ऊपरी साम्य नजर आता है, वह इसलिए नहीं है कि सब लोग एक जैसे और एक बराबर हैं, बल्कि वह परस्पर-विरोधी हितों के एकीकरण के अनवरत प्रयत्नों का, मतभेद के बजाय मतैक्य पर अधिक बल देने का और

भावनात्मक एवं विध्यात्मक तत्त्वों को प्रबल बनाने की चेष्टाओं का परिणाम है। हमने फूट में से एकता, मतभेदों में से मतैक्य का निर्माण किया है। इसमें सन्देह नहीं कि हमने देश में जो साम्य और सादृश्य पैदा कर लिया है, उसे हम बहुत महत्त्व देते हैं। बाहरी प्रेक्षकों को ऐसा लगता है, जैसे हम यह जानते ही नहीं कि एक-दूसरे से भिन्न होना क्या चीज है। हमने बड़े प्रयत्न और संयम से अपने मतभेदों और भिन्नताओं को दूर किया है, ताकि हम शान्ति से रह सकें। यदि हमारे एकता के प्रतीक लोगों को बहुत अस्पष्ट नजर आते हैं तो हम इतना ही कह सकते हैं कि वह अस्वाभाविक नहीं है, क्योंकि हम सब को उस में समाविष्ट करने के लिए उनका अस्पष्ट होना स्वाभाविक ही था। आज जिन चीजों में हम में समानता है,—उदाहरण के लिए हमारे तौर-तरीकों की समानता और अपनी आर्थिक प्रणाली के साथ हमारे सम्बन्ध —वे हमारी कठिनाई और परिश्रम से प्राप्त एकता की प्रतीक हैं।

हमारे सिक्कों पर जो 'ए प्लुरिबस ऊनम' लिखा रहता है, वह केवल एक वाक्य ही नहीं है। कारण, हमारे यहाँ सचमुच अनेकता में एकता है, हमारी संस्कृति में धार्मिक और राजनीतिक विचार साथ-साथ चलते हैं, सरकारी और गैर-सरकारी दोनों तरह की चीजों में एकीभाव है, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय हित अविच्छेद्य हैं, जॉन ड्यूई के हाथों राजनीतिक सिद्धान्त ने एक अनूठे शिक्षा-दर्शन का रूप धारण कर लिया है और आदर्शवादी यह अनुभव करने लगे हैं कि प्राचुर्य और समानता की उनकी दुनिया में उनके ध्येय यथार्थवादियों के ध्येयों के साथ मिल कर एकाकार हो गये हैं।

समानता अपने आपमें एक संयोजक तत्त्व बन जाती है, वह आदर्श भी है और तथ्य भी, एक नैतिक आवश्यकता भी है और सामाजिक यथार्थता भी। जैसा कि डेनियल बूरस्टिन ने अपनी 'दि जीनियस ऑफ अमेरिकन पौलिटिक्स' नामक पुस्तक में कहा है, समानता शरीर क्रिया विज्ञान से

धर्मशास्त्र तक एक संयोजक और एकीकरण करने वाली सतत प्रक्रिया है।

जैसे-जैसे विभिन्न तत्त्वों का पारस्परिक सहयोग होता जा रहा है, वैसे-वैसे एक नया संश्लेषण एक नया समन्वय बनता जा रहा है। कारण जैसे-जैसे लोगों के हितों का एकीकरण होता जाएगा वैसे-वैसे उन के प्रयोजन और उद्देश्य भी एक होते जाएंगे।

जॉन ड्यूई ने यह आशा इन शब्दों में व्यक्त की है : "जब दर्शन-शास्त्र घटनाक्रम के साथ सहयोग कर के चलेगा, और दैनिक जीवन की विस्तृत बारीकियों के अर्थ को स्पष्ट और परस्पर संगत रूप में पेश करेगा, तब विज्ञान और भावना एक-दूसरे से अलग नहीं रहेंगे, और क्रियात्मक अमल और कल्पना भी एक-दूसरे में गुंथ जाएंगे। कविता और धार्मिक भावनाएं तब बिना किसी दबाव के प्रस्फुटित होने वाले जीवन के फूल होंगी। वर्त्तमान घटनाक्रम के अर्थ को अभिव्यक्त और स्पष्ट करना संक्रमण काल में दर्शनशास्त्र का ही काम है।"*

गतिशील समाज वह है जिसमें मूलतः सब व्यक्ति समान हों; जिसमें परस्पर सहयोग से काम करने के लिए स्वैच्छिक संगठन बनाने की प्रवृत्ति हो, जो राष्ट्रीय स्तर पर संघ-निर्माण के द्वारा और सबल हो जाए और जो सामाजिक सन्तुलन और विकास में पासंग का काम कर सके; जिसमें हितों, पैमानों और लोगों की अभिवृत्तियों में परस्पर क्रिया-अनुक्रिया और अन्योन्य-निर्भरता हो; और जिसके सामने एक ऐसा सुदूर लक्ष्य भी हो जो समानान्तर रेखाओं के आपस में मिलन की तरह असाध्य हो। गतिशील समाज का यह चित्र हमारे भविष्य के लिए और शायद अन्य राष्ट्रों के भविष्य के लिए भी, एक योजना है, जिसके आधार पर वे आगे बढ़ सकते हैं। कारण, यह उन लोगों की दुविधा और संशयों का भी समाधान कर देता है, जो समाजवाद के सामाजिक न्याय के ध्येय की लोकतन्त्री पूंजीवाद के

*'रिकन्स्ट्रक्शन इन फिलॉसफी', पृष्ठ २१२।

व्यक्तिगत प्रोत्साहन के आदर्श के साथ संगति बैठाना चाहते हैं। हम अमेरिकन लोग तो इन दोनों मार्गों से बनी पटरी पर रेल में बैठकर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। इस रेलगाड़ी के शक्तिशाली मोटर उसे आगे बढ़ा रहे हैं और उसकी प्रतिसन्तुलनकारी ताकतें उसे संभाले हुए हैं। केवल प्रतिक्रियावादी ही यह समझते हैं कि यदि इस रेल मार्ग की एक पटरी निकाल दी जाए तो यात्रा अधिक सरल हो जाएगी।

साँस्कृतिक विरासत

यह अमेरिकन सभ्यता एक लम्बी विरासत का परिणाम है, क्योंकि यह सम्भव है कि सभ्यताएं लड़खड़ा जाएं या कहीं रुक जाएं, परन्तु जीवन अपनी धारा में बहता रहता है। अमेरिका को भी ग्रीक लोकतन्त्र उसी तरह विरासत में मिला है, जैसे यूरोप को। इसी तरह ग्रीक लोगों के तार्किकवाद, सौन्दर्य-प्रेम और शरीर-साधना में भी अमेरिका यूरोप के समान ही साझी है। अमेरिका में लैंगिक सम्बन्धों के बारे में जो अगोपनीयता है, धार्मिक आवेश हैं या मद्यपान की विलास वृत्ति है, उन सब की जड़ भी प्राचीन काल में निहित है। नैतिक नियमों का हमारा आग्रह, ब्रह्माण्ड को ईश्वर द्वारा नियन्त्रित और व्यवस्थित मानने का हमारा विश्वास और अपने आपको ईश्वर द्वारा एक विशिष्ट ध्येय के लिए चुना गया राष्ट्र मान कर गर्व करने की भावना हमें यहूदियों से विरासत में मिली है। प्रेम, पड़ोसी की सहायता और जरूरत-मन्दों के साथ बाँट कर उपभोग करने के नियम और हर व्यक्ति को ईश्वर की प्रतिमूर्त्ति मानना हमारी ईसाई धर्म की बहुमूल्य विरासत है, जिसे हम अपने इतिहास की मुख्य प्रेरक शक्ति और अपने अस्तित्व का मूल कारण मानते हैं।

रोमन लोगों से हमें कानून और व्यवस्था के प्रति आस्था मिली है, भारत से अतीन्द्रियज्ञानवादियों की मार्फत समस्त प्रकृति की रहस्य-पूर्ण एकता का विचार मिला है, अफ्रीका से संगीत और लय प्राप्त हुई है और संसार के विभिन्न भागों से, जहां लोग न्याय के भूखे और अपनी

प्रसुप्त शक्तियों के उपयोग के लिए अवसर पाने के इच्छुक थे, आये आप्रवासियों से दृढ़ता और उद्यमी वृत्ति मिली है—और इन सब गुणों को नई दुनिया द्वारा पैदा की गई आशाओं और ऊर्जा के खमीर ने खूब उद्‌बुद्ध कर निखार दिया है।

जिन लोगों ने अटलांटिक के तट पर सब से पहले आकर बस्तियाँ बसाई थीं, वे भली-भांति जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं। उनका परीक्षण और प्रयोग एक सजग और चेतन परीक्षण था, क्योंकि विलियम ब्रैडफोर्ड के शब्दों में, "जैसे एक छोटी मोमबत्ती एक हजार आदमियों को रास्ता दिखा सकती है, वैसे ही यहाँ जलाई गई रोशनी ने बहुतों को रास्ता दिखाया है और एक तरह से तो सारे राष्ट्र को ही कुछ न कुछ आलोक दिया है।" अमेरिकन लोग अब भी अपने राष्ट्र को एक परीक्षण समझते हैं। लिंकन ने तो अपने गैटिसबर्ग के सुप्रसिद्ध भाषण में अमेरिकन गृह-युद्ध को भी यह देखने के लिए एक कसौटी बताया था कि क्या जनता के लिए जनता द्वारा जनता का शासन स्थायी हो सकता है।

उद्योगवाद ने इन्सान को जमीन से अलग कर दिया है, एक स्थायी घर-द्वार से विस्थापित किया है और एक ऐसे धन्धे और रोजगार से भी विच्छिन्न कर दिया है जिसमें मनुष्य जो कुछ बनाता था उसकी पूर्णता का सन्तोष और सुख अनुभव करता था, परन्तु इससे भी बढ़कर इसने उन बन्धनों को काटकर फेंक दिया है जो इन्सान को जीवन के लंगर के साथ बांधे रखते थे। घर, प्रकृति, मौसम और उपजाऊ धरती माता आदि जिन प्रतीकों के रूप में हम अब तक जीवन के अर्थ को समझते रहे हैं, उनको उसने बहुत कुछ निरर्थक कर दिया है।

लेकिन हाल के वर्षों में हम उस निरर्थकता को दूर कर इन प्रतीकों को फिर से अर्थपूर्ण बनाने लग गये हैं। सामाजिक विज्ञानों के विकास, जॉन ड्यूई के दर्शन, उद्योगपतियों में बढ़ती हुई सामाजिक चेतना, नये ढंग के आवास की परियोजनाओं में सामुदायिक आवश्यकताओं की

अनुभूति, स्कूलों की पथ-प्रदर्शन सेवा और इसी प्रकार के सैकड़ों अन्य तरीक हमारी संस्कृति मानवीय गतिविधि के अर्थ को खोजती और शुरू के दिनों की सहयोग की भावना का विकास करती रही है।

ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकन लोग मिलकर संयुक्त रूप से काम करने की भावना और प्रवृत्ति को हमेशा पसन्द करते रहे हैं। मिलकर एक टीम की तरह काम करने की वृत्ति का मूल स्रोत परिवार है और अपनी टीमों में, क्लबों में, संगठनों में, राजनीतिक दलों में और एक जीवन्त समाज की शेष सभी सामूहिक कार्रवाइयों में हम इस पारिवारिक भावना का प्रसार करते हैं। हर समाज एक भावनात्मक संस्कृति पर आधृत होता है और चूंकि हमारी भावनाएं हमारे बचपन के सम्बन्धों और सम्पर्कों में बनती हैं, इसलिए समाज को अपनी संस्कृति का मूल आधार पारिवारिक सम्बन्धों को बनाना चाहिए। एक ग्राम, नगर या समुदाय एक सामाजिक इकाई है जिसमें हम अपनी पारिवारिक संस्कृति का विस्तार करते हैं। यही कारण है कि हम अपने कालेज को विद्या का मातृमन्दिर कहते हैं, गिरजाघर को माँ कहकर पुकारते हैं। राष्ट्र को मातृभूमि या पितृदेश कहते हैं और अपने संगठनों को बिरादरी कहते हैं। पारिवारिक भावना और पारिवारिक प्रतीकों का समाज, राष्ट्र और विश्व में विस्तार करना, लोकतन्त्र का तर्कसंगत स्वाभाविक परिणाम है। कारण, लोकतन्त्र अपने नागरिकों से यह आशा करता है कि वे सामाजिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से रत होंगे। लोकतन्त्र, जैसा कि हमने पहले कहा है, केवल एक शासन प्रणाली ही नहीं है, वह एक जीवन-पद्धति है।

स्कॉट फिट्ज़जिराल्ड ने कहा था, "अमेरिका हृदय की एक आवेगमय उत्कण्ठा है।" यदि यह बात भावुकतापूर्ण लगती है तो हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि अमेरिका भावुक भी है।

विश्व की एकता और संयुक्त राज्य

अमेरिकन लोग अनेक वर्ष तक अत्याचार के विरुद्ध क्रान्ति, समस्त देशों के आत्म-निर्णय के अधिकार, व्यक्ति के हितों, शासन की लोकतन्त्री प्रणाणी और सब के लिए न्याय और समानता के समर्थक रहे हैं। हम लोग ही विश्व का अन्तःकरण रहे हैं, हमने आक्रमण की निन्दा की है, सभी जगह स्वतन्त्रता के संघर्ष को प्रेरणा और स्फूर्त्ति प्रदान की है, इस संघर्ष के कारण अपने देश से निर्वासित और भागकर आने वाले देशभक्तों को आश्रय दिया है और अमेरिकन डालरों से स्वतन्त्रता के आन्दोलनों को सहायता दी है। लेकिन इस सब के बावजूद हमने अपने आपको संसार के झगड़ों से अलग रखने का प्रयत्न किया है और हमारी इस पृथक्ता का आधार जार्ज वाशिंगटन की सलाह और मनरो सिद्धान्त रहे हैं।

यद्यपि हम स्पेन के विरुद्ध अविवेकपूर्ण लड़ाई में कूदे और हमने अपने आपको एकाएक प्रशान्त महासागर के उस पार फिलिपाइन्स तक फैले हुए देखा, तो भी हमने अपने इन साम्राज्यवादी कार्यों के लिए गहरी लज्जा अनुभव की। हमने अपने अधिकृत प्रदेशों को उपनिवेश नहीं कहा और जल्दी ही फिलिपाइन्स को स्वतन्त्रता के लिए तैयार करने की बातचीत प्रारम्भ कर दी। जब हम चीन के बॉक्सर विद्रोह में यूरोपीय ंग के साम्राज्यवादी झगड़े में उलझे तब भी हमने उस झगड़े के फलस्वरूप प्राप्त हरजाने का अपना हिस्सा संयुक्त राज्य में चीनी छात्रों की शिक्षा के खर्च के लिए लौटा दिया।

अमेरिकन महाद्वीपों के अन्य देशों के साथ अच्छा पड़ोसीचारा बनाये रखने की हमारी नीति के परिणामस्वरूप इन देशों के साथ हमारी

कितनी ही सन्धियाँ और समझौते हुए। हमने फिलिपाइन्स को स्वतन्त्रता देने की अपनी योजना क्रियान्वित की। हम स्वयं किसी समय औपनिवेशिक दासता के बन्धन में रह चुके थे, इसलिए उपनिवेशों की जनता के साथ हमारी सदा सहानुभूति रही। अपने शान्ति के इरादे का प्रमाण देने के लिए १६२० और १६२१ में हमने एक तरह से अपनी नौसेना को बिल्कुल ही खत्म कर दिया। सन् १६३३ के मॉंटेवीडियो सम्मेलन और १६३६ के ब्यूनोस एयर्स सम्मेलन में हमने अपने निज के हितों की रक्षा के लिए भी शक्ति के प्रयोग का परित्याग करने की घोषणा की। सन् १६२२ और १६३० में हमने क्रमशः गुआम और फिलिपाइन्स में किलेबन्दी न करना स्वीकार किया। ये और इसी प्रकार के हमारे अन्य कार्य यह जाहिर करते थे कि शान्ति और छोटे राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के लिए हमारी आकांक्षा कितनी प्रबल है और किस तरह हम इन उद्देश्यों की खातिर अपनी निज की शक्ति और सुरक्षा को भी खतरे में डाल सकते हैं।

सन् १६३० के दशक में हमने पारस्परिक व्यापार सन्धियों से एक स्वस्थ विश्व अर्थ-व्यवस्था के निर्माण का भी उद्योग किया। सन् १६३६ में कॉर्डेल हल ने यह रिपोर्ट दी कि संसार के १६ देशों ने, जो संसार के ६० प्रतिशत व्यापार का प्रतिनिधित्व करते हैं, हमारे साथ समझौते कर लिए हैं। यद्यपि इन समझौतों से व्यापार के मार्ग में बाधा डालने वाली तटकर की दीवारों को गिराने में सफलता नहीं मिली, तो भी उन्होंने इन दीवारों को और ऊँचा उठाने से रोक अवश्य दिया।

इस बीच हम शान्ति की गारण्टी करने वाली अनेक योजनाओं में शामिल हो चुके थे। यह सम्भव है कि आज हमारे ये काम कितने ही व्यर्थ और गलत प्रतीत हों, परन्तु वे इस बात के प्रमाण अवश्य थे कि अमेरिकन लोग अपने अन्तरतम से ही युद्ध को एक गम्भीर अपराध समझते थे और यह महसूस करते थे कि अपनी बुनियादी स्वतन्त्रता और अपनी लोकतन्त्री प्रणाली के सिवाय और किसी भी कीमत पर

उससे बचना चाहिए। अमेरिकन लोगों में यह उक्ति प्रसिद्ध थी कि संसार में अच्छी लड़ाई या बुरी शान्ति जैसी कोई चीज नहीं है।

सन् १९२९ में हमने केलोग-ब्रायण्ड समझौते पर हस्ताक्षर किए। अमेरिकन शान्ति आन्दोलन के फलस्वरूप हुए इस समझौते में संयुक्त राज्य और ५९ अन्य राष्ट्रों ने युद्ध को हमेशा के लिए गैर-कानूनी ठहराने और उसका परित्याग करने की शपथ ली। यद्यपि आक्रमणकारी देश फिर से शस्त्र-सज्जा करने लग गये थे, तो भी हमने अपने शस्त्रास्त्र निर्माताओं को ही प्रथम विश्वयुद्ध के लिए दोषी ठहराया और अपनी गतिविधियों को तटस्थता कानून की मर्यादाओं के भीतर रखा। इससे हिटलर और जापान दोनों को ही प्रोत्साहन मिला, क्योंकि उन्होंने यह अनुभव किया कि हम तटस्थता की नीति पर चलने के कारण उनके आक्रमण का शिकार होने वाले देशों को कोई शस्त्र-सहायता नहीं देंगे। मंचूरिया पर जापान के अधिकार से लेकर पोलैंड पर हिटलर के आक्रमण तक संयुक्त राज्य युद्ध से अलग रहने की अपनी नीति पर अटल रहा, जिससे आक्रमणकारियों का हौसला बढ़ा और उसका परिणाम विश्वयुद्ध के रूप में सामने आया।

दोनों विश्वयुद्धों के मध्यवर्ती काल में हमने विश्व शक्ति की वास्तविकताओं के बजाय नैतिक और कानूनी दृष्टिकोण अपनाने का प्रयत्न किया। हमने यह स्वीकार करने से इन्कार किया कि आर्थिक तत्त्व भी विश्व में महत्त्वपूर्ण भाग अदा करते हैं। इसीलिए हमने अपने तटकर बढ़ा दिए और परिणाम यह हुआ कि जो राष्ट्र पहले हमारे साथी रहे थे, उन्हें हमने अपना ऋण चुकाने का मौका नहीं दिया। हमने जापान के लोगों को आप्रवासी के रूप में अमेरिका में आने से रोका और उसका सामान खरीदने से इन्कार किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपने तैयार माल की बिक्री के लिए बाजारों और कच्चे माल की खरीद के लिए स्रोतों की तलाश दूसरी जगह प्रारम्भ कर दी।

अपनी शक्ति से दुविधा में पड़कर हमने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को टाला। हमने मदिरा पीकर मतवाले होने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए मद्य-पान पर प्रतिवन्ध लगाया और युद्धों का अन्त करने के लिए शस्त्रास्त्रों पर पावन्दी लगाई। हमारी ये दोनों प्रवृत्तियाँ मूलतः पाप को नैतिक सिद्धान्त की दुहाई देकर जीतने की हमारी कैल्विनवादी सहजवृत्ति का परिणाम थीं। लेकिन जो लोग हमारी नैतिक दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति के आलोचक हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि आक्रमण के प्रति घृणा के विना अमेरिका का जनमत आक्रमणकारी के विरुद्ध शक्ति को कभी संगठित न होने देता।

कूटनीति या राजनय अन्य किसी भी देश की अपेक्षा संयुक्त राज्य में जनता के समर्थन पर अधिक निर्भर है। संयुक्त राज्य में ऐसा कोई विशिष्ट वर्ग नहीं है जिसका काम ही शासन करना या राजनय को चलाना हो। जनता से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह हमारे अत्यधिक व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय सम्वन्धों की तमाम वारीकियों और पेचीदगियों को समझ लेगी, इसलिए ये मामले उसे अत्यन्त सरल भाषा में समझाने पड़ते हैं। इसीलिए हमारी वातों में नैतिकता वहुत अधिक होती है, जो हमारे विदेशी मित्रों को अच्छी नहीं लगती। लेकिन इस नैतिकता के कारण हमारी सारी कूटनीति कमजोर के, छोटे राष्ट्र के, स्वतन्त्रता, शान्ति एवं ऐसी विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था के इच्छुक देश के पक्ष में रहती है जो उन्हें अपने उत्पादन का न्यायपूर्ण हिस्सा दे सकें।

द्वितीय विश्व युद्ध और उसके बाद

यूरोप में पुनः युद्ध छिड़ने और फ्रांस के पतन के बाद हमने अपने स्वाभाविक साथी राष्ट्र ग्रेट ब्रिटेन के साथ मिल कर अटलाँटिक घोषणा-पत्र तैयार किया जिसमें स्वतन्त्रता, आजादी और आर्थिक एवं सामाजिक अधिकारों के उन्हीं सिद्धान्तों की घोषणा की गई, जो हमेशा हमारे पथ-प्रदर्शक रहे हैं, भले ही हम उनकी प्राप्ति में सफलता न पा सके हों।

युद्ध की समाप्ति तक हम अपने सैनिक मुख्य कार्यों के अलावा ६० अरब डालर की सहायता उधार पट्टे के रूप में दे चुके थे। रूस को मित्र बनाने और राष्ट्रों के परिवार में उसका स्वागत करने के लिए हमने अटलांटिक घोषणा-पत्र और अपने निज के आदर्शों तक की अवहेलना कर दी। बाल्टिक राज्यों, पोलैंड की पूर्वी सीमा और बाल्कन राज्यों और मंचूरिया में रूस के प्रभाव आदि के मामलों में हम झुक गए। जब हिटलर की सेनाएँ रूस को उसकी अपनी सीमाओं में बहुत दूर तक धकेल रही थीं, उस समय हम चाहते तो उसे सहायता देना बन्द कर देते और तभी सहायता देते जबकि वह हमारी शर्तें स्वीकार कर लेता। किन्तु इसके बजाय हमने अधिक उदार और अधिक सम्मानपूर्ण मार्ग अपनाया।

युद्ध खत्म होने पर हमने जल्दी ही अपनी सेनाएं विघटित कर दीं, नियन्त्रण खत्म कर दिये, अपनी युद्धकालीन संस्थाएं बन्द कर दीं और आराम और चैन के साथ एक ऐसे युग का आरंभ किया, जिसे हम शान्ति का युग समझते थे और महसूस करते थे, कि हमें अब उसका हक हासिल हो गया है। हमने अपने परमाणु शक्ति के ज्ञान में दूसरों को भी साझेदार बनाने का प्रस्ताव किया और परमाणु युद्ध के उन्मूलन के लिए अचेसन-लिलियन्थाल प्रस्ताव के द्वारा एक बहुत बड़ी रियायत देने की घोषणा की, क्योंकि हमें आशा थी कि इससे हम शान्ति की स्थापना कर सकेंगे। किन्तु रूसी सरकार ने हमारे इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और इसके बदले में एक ऐसा प्रस्ताव रखा जो एक मजाक के सिवाय कुछ नहीं था।

इस बीच रूसियों ने अपने साम्राज्य का विस्तार करना जारी रखा। उन्होंने बाल्टिक राज्यों को हड़प लिया, पूर्वी जर्मनी का सोवियतीकरण कर दिया और पोलैंड, चैकोस्लोवाकिया, हंगरी, बलगेरिया, रूमानिया और अलबेनिया को अपने नियन्त्रण में ले लिया और इस प्रकार ३,९२,००० वर्गमील के इलाके को अपने अधिकारक्षेत्र में और

९ करोड़ जनता को अपनी अधीनस्थ आबादी में मिला लिया। दूसरी ओर इसी समय संयुक्त राज्य फिलिपाइन्स को आजादी देने की अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर रहा था और ब्रिटेन ने भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका और बर्मा को स्वतन्त्रता देना स्वीकार कर लिया था। इण्डोनेशिया ने नीदरलैंड्स से स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। इन परिवर्तनों ने ५५ करोड़ ५० लाख व्यक्तियों और २८,६४,००० वर्गमील क्षेत्र को मुक्ति प्रदान की।

संयुक्त राज्य पहले ही ऐसे सम्मेलनों का श्रीगणेश कर चुका था, जिनके परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई। अमेरिकनों को आशा थी कि लीग ऑफ नेशन्स अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के जिस काम में असफल रही थी, संयुक्त राष्ट्रसंघ उसे पूरा कर सकेगा। किन्तु रूस के अपने पड़ोसी देशों को हड़पने और दूरस्थ देशों की सरकारों के विरुद्ध षड्यन्त्र के संकल्प ने उसे असम्भव बना दिया। यह भी स्पष्ट हो गया है कि राजनीतिक क्षेत्र की भाँति आर्थिक क्षेत्र में भी (संयुक्त राष्ट्रसंघ के विभिन्न संगठनों के द्वारा) रूस सहयोग करने को तैयार नहीं है।

सन् १९४७ में जब ब्रिटेन ने घोषणा की कि वह टर्की और ग्रीस को आर्थिक और सैनिक सहायता देना जारी नहीं रख सकता, तब हमें इस तथ्य का सामना करना पड़ा कि हमारी शक्ति ने आज हम पर एक ऐसी जिम्मेदारी डाल दी है, जिसे उठाने से हम इन्कार नहीं कर सकते। अन्त में ट्रूमन सिद्धान्त के द्वारा अमेरिका की परराष्ट्र नीति ने एक बड़ा मोड़ लिया। अब हमारे लिए अपने आप को इस स्वप्न से भरमाये रखना सम्भव नहीं था कि हम अपनी सीमाओं में ही सिमट कर आराम से रह सकते हैं। न हम यही आशा कर सकते थे कि ब्रिटेन की नौसेना समुद्र में गश्त लगाती रहेगी और शक्ति-सन्तुलन कायम रखेगी या संयुक्त राष्ट्रसंघ हर संकट काल का मुकाबला कर लेगा। जब तक रूस की ताकत साम्राज्यवादी प्रसार और अशान्ति एवं विद्रोह

कराने के लिए कृतसंकल्प थी, तब तक केवल हमारे पास ही ऐसी शक्ति थी, जो उसके इन कार्यों को प्रतिसन्तुलित कर सकती थी।

ट्रूमन सिद्धान्त का सार यह था, "संयुक्त राज्य की नीति ऐसे स्वतन्त्र लोगों के समर्थन की होनी चाहिए जो सशस्त्र अल्पसंख्यकों के प्रयत्न या बाहरी दबाव से गुलामी की कोशिशों का प्रतिरोध कर रहे हों।"

यूरोप में आर्थिक संकटों का सामना करने के लिए हमने मार्शल योजना प्रस्तुत की। किसी एक देश ने अन्य देशों को इससे पूर्व कभी भी इतनी बड़ी आर्थिक सहायता का प्रस्ताव नहीं किया था। इसका उद्देश्य सहायता प्राप्त करने वाले देशों को अपना अहसानमन्द बनाना नहीं था, बल्कि उन्हें इस लायक बनाना था कि वे अपने पांवों पर खड़े होकर अपना हित-साधन स्वयं कर सकें। इसमें हमारा अपना हित भी था, क्योंकि अब हम यह स्वीकार करने लग गए थे कि सारे संसार में एक स्वस्थ अर्थ-व्यवस्था का होना हमारी अपनी सुरक्षा के लिए हितावह है।

सन् १९४७ में हमने पश्चिमी गोलार्ध के अन्य देशों के साथ भी एक रक्षात्मक संगठन का निर्माण किया और प्रतिरक्षा विभाग बना कर अपनी निज की सेनाओं को मजबूत बनाया। बाद के वर्षों में हमने यूरोप और प्रशान्त क्षेत्रों में भी अपने रक्षात्मक सैन्य संधि संगठन बनाये।

सन् १९४८ में चैकोस्लोवाकिया में कम्युनिस्टों की क्रान्ति के बाद, जो कि सीमा के निकट अवस्थित शक्तिशाली सोवियत सेना की उपस्थिति के कारण सम्भव हुई, हमने अनुभव किया कि अपनी सैनिक शक्ति को मजबूत बनाये बिना हमारा काम नहीं चलेगा। रूस के पास आबादी के लिहाज से हमसे तीन गुनी अधिक सेना थी।

इसके बाद कोरिया पर हमला आया। अब यह स्पष्ट हो चुका था कि कम्युनिस्ट नेता अपनी प्रभुत्व और नियन्त्रण स्थापित करने की योजना के अंग के रूप में संसार के किसी भी भाग में युद्ध का खतरा मोल लेने के लिए तैयार थे। अमेरिका के तत्काल कार्रवाई करने और संयुक्त

राष्ट्रसंघ के अविलम्ब सहायता देने के फलस्वरूप इस खतरे का मुकाबला कर लिया गया।

यद्यपि संयुक्त राज्य का जन्म ही अपनी औपनिवेशिक स्थिति का अन्त करने के लिए एक युद्ध के द्वारा हुआ था और बाद में भी उसने दक्षिण अमेरिका, फिलिपाइन्स तथा अन्य देशों में स्वतन्त्रता चाहने वालों का समर्थन किया, तो भी रूस के कम्युनिस्ट शासक स्वयं अपने चारों ओर के छोटे-छोटे स्वतन्त्र देशों को हड़पते जाने के बावजूद संयुक्त राज्य के बारे में यही प्रचार करते रहे कि वह उपनिवेशवाद का समर्थक है। यह सही है कि जहां हम यूरोप में अपने मित्र राष्ट्रों को शक्तिशाली बनाने में व्यस्त थे, वहाँ हमने अल्जीरिया जैसे औपनिवेशिक क्षेत्रों के मामले में जहाँ अल्जीरिया में उत्पन्न यूरोपीयों का भी ख्याल रखना जरूरी था, फूंक-फूंक कर कदम रखा। फिर भी गत दस वर्षों की किसी भी निष्पक्ष समीक्षा से यह जाहिर हो जाएगा कि जहाँ पश्चिमी राष्ट्र अन्य देशों के लोगों की आजादी को समर्थन और सहायता प्रदान करते रहे हैं, वहाँ रूस उन्हें गुलाम बनाता रहा है और यदि उन्होंने उसका प्रतिरोध किया तो उसने उनका बिल्कुल सफाया ही कर दिया।

अब आखिरकार ठोकरें खाने के बाद अमेरिका ने यह सीख लिया है कि आक्रमणकारी अपने विरोधियों को शस्त्रहीन देख कर अपनी दुरभिसन्धियों से बाज नहीं आते, और इसीलिए उसने अन्त में मजबूर होकर अपनी निज की सैनिक शक्ति का स्तर काफी ऊँचा रखकर आक्रमण की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की नीति अपनाई है। यही कारण है, कि वह सोवियत रूस की विश्व-प्रभुत्व की दुरभिसन्धि के विरोधी समस्त देशों की स्वतन्त्रता को सुनिश्चित बनाये रखने के लिए उनको अपनी आर्थिक शक्ति में भी हिस्सेदार बनाता है। किन्तु अमेरिकनों को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि जैसे ही उन्होंने यह कठिन और मंहगा निश्चय किया, बहुत से लोगों ने उसके अभिप्राय को सन्देह की नजर से देखा और उसकी नीयत पर अविश्वास किया। अमेरिका पर यह आरोप

लगाया जाता रहा है कि उसने दोनों विश्व युद्धों से पूर्व अपने आपको शक्तिशाली नहीं बनाया था इसीलिए वह युद्ध को रोक नहीं सका, किन्तु अब यह सबक लेकर जब उसने अपने आपको शक्तिशाली बनाने का निश्चय किया तो लोगों ने उसे युद्धलिप्सु कहना शुरू कर दिया।

लेकिन फिर भी अमेरिकन लोग अपने इस पुराने स्वप्न से अभी तक चिपटे हुए हैं, कि संसार में युद्धों का हमेशा के लिए अन्त कर दिया जाना चाहिए। इसीलिए उन्होंने निःशस्त्रीकरण करने, परमाणु युद्ध को हमेशा के लिए गैर-कानूनी ठहराने और निःशस्त्रीकरण को सफल बनाने के उद्देश्य से सैनिक संस्थानों का अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण करने के लिए समझौते के प्रस्ताव बार-बार रखे। लेकिन वर्षों तक धैर्य से प्रयत्न करने का परिणाम सिर्फ एक ही हुआ और वह यह कि रूस किसी भी तरह के निरीक्षण कार्यक्रम को स्वीकार करने के लिए राजी नहीं हुआ।

संयुक्त राज्य अपने अब तक के इतिहास पर गर्व कर सकता है, क्योंकि उसने फिनलैण्ड और पोलैण्ड पर किये गए सोवियत आक्रमणों की भांति कभी किसी देश पर आक्रमण का षड्यन्त्र नहीं रचा। यही नहीं, उसने पुराने जमाने के राजनय के समान ऐसा कोई समझौता नहीं किया जिसमें किसी अन्य तीसरे पक्ष को नुक़सान पहुँचा कर अपना हित साधा गया हो। (यहाँ तक कि मंचूरिया को सोवियत रूस के प्रभाव-क्षेत्र में लाने के बारे में याल्टा में जो समझौता हुआ और जिस पर बहुत से अमेरिकन शर्मिन्दगी भी महसूस करते हैं, वास्तव में अमेरिका ने रूस को उतना देने की सिफारिश नहीं की थी, जितना कि चीन ने अन्ततः स्वयं दे दिया)।

युद्ध का परिणाम कठोर नियन्त्रण, ऋण, भारी टैक्स और भौतिक सम्पत्ति के ऐसे विनाश के रूप में होता है, जिसे उत्पादकता को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण मानने वाली कोई भी संस्कृति एक बड़ा अपराध समझेगी। यह तथ्य भी सारहीन है कि उद्योगपति स्वभावतः युद्ध को पसन्द करते

हैं, क्योंकि उससे उन्हें बहुत भारी मुनाफा होता है। कारण अमेरिका में युद्ध-कालीन ठेकों के अनुसार कमाये गये मुनाफे सरकार को वापस करने की व्यवस्था है। इस व्यवस्था के अनुसार दूसरे विश्व युद्ध के दौरान में और उसके बाद उद्योगपतियों ने १०,४३,१६,३७,००० डालर सरकार को लौटाये। शेप मुनाफों पर भी भारी टैक्स लगाये गये। ये टैक्स लगने से सामान्य युद्ध कालीन मुनाफे से ऊपर की मुनाफे की सारी रकम का ६५ प्रतिशत भाग सरकार के हाथ में चला गया। इसके अलावा उद्योगों से प्राप्त मुनाफा व्यक्तियों को डिविडेंड के रूप में बांटने पर उस पर फिर बहुत भारी आयकर लगाया गया, जिसकी दर उच्च व्यक्तिगत आय वाले वर्ग पर बहुत ऊँची पड़ती है।

अमेरिकनों का मुकाबला एक ऐसे प्रतिद्वन्द्वी से पड़ा है जो सशस्त्र आक्रमण को राजनीतिक शस्त्र के रूप में इस्तेमाल करता है। इसलिए अमेरिका ऐसे प्रतिद्वन्द्वी से अवश्य ही घाटे में रहेगा, क्योंकि वह इस ढंग से सोच ही नहीं सकता। अमेरिकन लोग हमेशा यह प्रतीक्षा करेंगे कि दूसरा पक्ष ही पहल करे, क्योंकि वे युद्ध को राजनीति का साधन नहीं मानते और अमेरिका की कोई भी सरकार यदि इस नीति पर चलने लगेगी तो उसे जनता का समर्थन नही मिलेगा।

जैसा कि हमने पहले बताया है, कुछ कारणों से संसार में हमारी स्थिति एक नैतिक शक्ति के रूप में है, इसलिए हम ऐसे किसी भी देश को सहज में अपना मित्र स्वीकार नहीं कर सकते, जिसकी आन्तरिक नीतियां स्वतन्त्रता के विरुद्ध हों। किन्तु जिस तरह युद्ध में हिटलर और मुसोलिनी की एक के बाद एक विजय को देखते हुए हमें रूस को अपना मित्र स्वीकार करना पड़ा, उसी तरह यदि आज भी रूस की शक्ति का मुकाबला करना हो तो इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं है।

इसके साथ ही हमें एक ऐसी परराष्ट्र नीति का अवलम्बन करना पड़ता है, जिसे हमारे देश में सब लोग, जो नाना देशों से आकर यहां बसे हैं, स्वीकार करें। विदेशी भाषाएं बोलने वाले अमेरिकन लोग

हमारी सरकार से अनेक तरह की मांगें कर सकते हैं, जैसे कि अमेरिकन पोलिश एसोसियेशनों की समन्वय समिति ने यह माँग की थी कि अमेरिका पूर्वी यूरोप की उन सब सरकारों को मान्यता देना बन्द कर दे जो सोवियत रूस की कठपुतली हैं और उनके स्थान पर इन देशों की विदेशों में स्थापित निर्वासित सरकारों को मान्यता प्रदान करे। अमेरिका में श्रमिक, व्यवसायी, कृषक, भूतपूर्व सैनिक, स्त्रियां और विभिन्न धार्मिक वर्ग—सभी परराष्ट्र नीति में दिलचस्पी लेते हैं और हमेशा वाशिंगटन में सरकार के सामने अपने विचार रखते रहते हैं।

हमारी आप्रवास नीति के विपक्ष में भी विरोधी ताकतें सक्रिय रहती हैं। इस शताब्दी के पहले दो दशकों में अमेरिका में आप्रवासी लोग इतनी जबर्दस्त बाढ़ के रूप में आये कि वह उन सब को आसानी से खपा नहीं सकता था। इससे घबराकर काँग्रेस ने इस बाढ़ को रोकने के लिए कई प्रतिबन्धक कानून पास किये। इनमें से, सब से बाद का कानून मैकर्करनवाल्टर कानून है जो १९५२ में पास किया गया। इस कानून ने उन अभागे किन्तु वस्तुतः योग्य व्यक्तियों के लिए, जो अतीत में अत्याचार और गरीबी से पनाह पाने के लिए संयुक्त राज्य को ही अपना एकमात्र आश्रय समझते रहे हैं, अमेरिका के द्वार बन्द कर दिये। इस कानून ने लोगों के मन में संयुक्त राज्य की उस छवि को भी धुंधला कर दिया है, जिसमें उसे अत्याचार से पीड़ित व्यक्तियों का सहारा और समुद्धारक अंकित किया जाता था।

अमेरिकन प्रशासन और विभिन्न धार्मिक, नागरिक, शैक्षणिक और श्रमिक वर्गों की सहायता से, जिन्होंने आप्रवास नीति को अधिक उदार बनाने का समर्थन किया है, मौजूदा कानून को संशोधित करने के लिए अनेक विधेयक पेश किये जाते रहे हैं। हंगरी में कम्युनिस्ट अत्याचार से पीड़ित शरणार्थियों को अमेरिका में प्रवेश की अनुमति देने के लिए विशेष व्यवस्था की गई। किन्तु विश्व की परिस्थितियों के कारण

आप्रवास की नीति सम्भवतः अभी अनेक वर्ष तक एक सजीव प्रश्न बनी रहेगी।

एक ऐसे राष्ट्र में, जो सौ वर्ष से भी अधिक समय तक विना किसी परराष्ट्र नीति के रहा और जिसे अव वे सवक रातों-रात सीखने पड़ रहे हैं, जिन्हें पुराने देश सादियों से सीखते रहे हैं, ये कठिनाइयाँ पैदा होना स्वाभाविक ही है। हमने अपनी परराष्ट्र नीति को दोनों मुख्य राजनीतिक दलों की सामान्य नीति वनाने में वहुत हद तक सफलता प्राप्त की है और हमारी जनता ने सारे संसार में लोगों के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने और उनकी आजादी की रक्षा करने के अनवरत संघर्ष में अपने नैतिक और भौतिक साधनों का योगदान किया है।

सन् १९४६ तक हमारी सव से वड़ी त्रुटि थी हमारी तटस्थता की नीति। लेकिन अन्त में हम जाग उठे और हमने इस त्रुटि को अनुभव किया परन्तु अव भारत जैसे देशों में यही नीति देखकर हमें भारी आघात लगा है। भारत दर असल आज उसी दौर में से गुजर रहा है जिसमें से हम अपनी स्वतन्त्रता की लड़ाई के दिनों में और उसके वाद गुजर रहे थे और, और जिसमें हमें अपनी कठिनाई से अर्जित स्वतन्त्रता को मजवूत बनाने के सिवाय और किसी चीज का खयाल नहीं था।

हमने अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में काफी नुक्सान उठाया है और खतरे और तनाव मोल लिये हैं, इसलिए हम यह मानकर चलते रहे हैं कि इससे हमें कम-से-कम लोगों का प्रेम और सम्मान तो मिलेगा ही। यही कारण है कि जव हमारे मित्रदेश भी हमारी जीवन-पद्धति की कठोर आलोचना करते हैं, हमारी क्षमताओं में सन्देह करते हैं और हमारी शक्तिशालिता देखकर नाराज होते हैं तो हमें दुःख होता है। हम देखते हैं कि यूरोप हम से वहुत ऊँचे दर्जे के व्यवहार की आशा करता है और जव हम दूसरों के कोपभाजन बनते हैं तो वह खुश भी होता है जैसा कि पी० जी० वर्स्टहोर्न ने लिखा है, यूरोप यह आशा करता है कि संयुक्त राज्य उसकी ढाल भी बने और आत्मा भी, या दोनों में से जो भी उसके लिए लाभकर हो वही वह बने।

इसीलिए ब्रिटेन चाहता था कि इंडोचीन में हम अपने उपनिवेशवाद-विरोधी सिद्धान्तों पर बल दें, किन्तु साथ ही वह यह भी चाहता था कि ईरान में हम अपने आदर्शवाद को भुलाकर ब्रिटिश नीति का समर्थन करें।

अमेरिकन राजनय के सामने एक और कठिनाई भी है और वह यह कि संयुक्त राज्य दूसरे देशों के साथ सब वार्त्ताएं बिल्कुल खुले मंच पर बिना कुछ छिपाये करना आवश्यक समझता है। वह अखबारों से कुछ छिपाता नहीं, और अखबार स्वभावतः विवाद और संघर्ष पर अधिक जोर देते हैं और हर घटना को संयुक्त राज्य की विजय या पराजय के रूप में पेश करते हैं (हमारी सरकार ने भी सिद्धान्ततः यह बात स्वीकार की हुई है कि सब वार्ताएँ खुल्लमखुल्ला तौर पर हों)। फिर भी राजनय एक ऐसी चीज है जिसमें समझौते अवश्य करने पड़ते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी संगठनों और संस्थाओं की प्रभावकारी सफलताओं की खबरें अधिक पूर्ण रूप में देने से वार्त्ता में लोगों का विश्वास अधिक दृढ़ हो सकता है।

नया साहसपूर्ण कार्यक्रम

कभी यहाँ और कभी वहाँ आक्रमण की आशंकाएं होती रहने से संयुक्त राज्य आर्थिक सहायता की अपेक्षा सैनिक गठबन्धनों और सैनिक व्ययों पर अधिक बल देने लगा है। लेकिन इतना होने पर भी दूसरे विश्व-युद्ध के बाद अब तक संयुक्त राज्य अन्य देशों को ५६ अरब डालर की आर्थिक सहायता दे चुका है। यह राशि इतनी बड़ी है कि इसका अनुमान सहज में नहीं लगाया जा सकता। इसके अलावा अमेरिकनों की १० अरब डालर की प्राइवेट पूंजी भी अन्य देशों में लगी है। कई बार जिन देशों में यह पूंजी लगाई उनके मुनाफाखोरों ने उसका एक बड़ा हिस्सा स्वयं हड़प लिया। कई बार ऐसा भी हुआ है कि हमने यह सहायता उन देशों को दी जिनकी हमारे साथ संधियां हैं और दूसरे अल्प-वकसित देशों को, जो उनसे कम जरूरतमन्द नहीं थे, हमने उससे वंचित

रखा। फिर भी जितनी बड़ी सहायता हमने दी है उसकी मिसाल दुनिया में कहीं भी नहीं मिल सकती।

यूरोपीय उद्योगों को हमने जो सहायता दी है उससे उनका उत्पादन युद्ध-पूर्व के स्तर से ७० प्रतिशत ऊँचा हो गया। अमेरिकन पर्यटकों और सैनिकों के जरिये ३·२ अरब अमेरिकन डालर और हर वर्ष यूरोप में पहुँच रहे हैं और उनका असर हर यूरोपीय घर पर स्पष्ट नजर आता है। प्रसिद्ध ब्रिटिश अर्थशास्त्री बार्बेरा वार्ड का कहना है कि अमेरिका के सहायता कार्यक्रमों ने निश्चित रूप से उसे संसार का नेता होने का दावेदार बना दिया है "और इन्हीं कार्यक्रमों के कारण आज संसार के सब स्वतन्त्र राष्ट्रों में एकता है।"

वैदेशिक कार्यक्रम प्रशासन के भूतपूर्व निदेशक हैरल्ड ई० स्टास्सन को दी गई एक रिपोर्ट में कहा गया था कि अमेरिका अन्य देशों को जो टैक्निकल सहयोग दे रहा है, वह वास्तव में अमेरिका की नये-नये क्षेत्रों में साहसिक कार्य करने की हमेशा से चली आ रही प्रवृत्ति का ही दूसरा नाम है। अमेरिकन लोग प्रारम्भ से ही आबाद इलाकों में सीखे गये ज्ञान को संचित कर पारस्परिक सहयोग के द्वारा नई परिस्थितियों में इस्तेमाल करने के अभ्यस्त रहे हैं। ये नई परिस्थितियाँ भी कालान्तर में आबाद इलाकों में परिणत हो जाती हैं और फिर इनमें संचित ज्ञान और अनुभव अगले नये इलाकों को दे दिया जाता है। इसी भावना से अमेरिकन विशेषज्ञ टैक्निकल सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्य देशों में जाकर स्वैच्छिक पारस्परिक सहयोग से उनके विशेषज्ञों के साथ काम करते हैं।

इस टैक्निकल सहयोग के परिणाम देखने हों तो जोर्डन के हाशिमी राज्य में देखिए जहाँ ऊसर और सूखे मरुस्थल पर हरे-भरे नखलिस्तान लहलहा रहे हैं, भारत में देखिये जहां गेहूँ की फसल में पाँचगुनी वृद्धि हो गई है, ईरान में देखिये जहाँ किसानों को खेती की नई-नई विधियाँ सिखाई जा रही हैं और बोलीविया से लेबनान, पाकिस्तान और थाईलैंड

तक फैली उन ग्राम-सुधार परियोजनाओं में देखिए, जिनमें लोगों को सहकारिता के तरीके सिखाये गये हैं, उत्पादन बढ़ाया गया है और गाँवों को स्वास्थ्य सेवाएँ और अच्छा पेय पानी उपलब्ध कराया गया है।

लेबनान में चतुःसूची कार्यक्रम का एक विवरण देते हुए कहा गया है कि "चतुःसूची कार्यक्रम एक ऐसा वाहन है जिस पर सवार होकर वैज्ञानिक ज्ञान, टैक्निकल आविष्कार और भौतिक प्रगति अमेरिकन आदर्शों, अमेरिकन आशाओं और मानव समाज में सच्चा भ्रातृत्व स्थापित करने की अमेरिकन आकाक्षाँओं के साथ सहयात्री के रूप में अन्य देशों में पहुँचते हैं।"

चर्चों और 'केयर' एवं वर्ल्ड नेबर्स आदि संस्थाओं द्वारा संचालित अनेक स्वैच्छिक कार्यक्रम, छोटे होने पर भी काफी प्रभावशाली हैं, क्योंकि वे अमेरिकन जनता की अपनी भौतिक सम्पदा और टैक्निकल ज्ञान को दूसरों के साथ बाँट कर उपभोग करने की सहज आकांक्षा की अभिव्यक्ति हैं।

पॉल रश नामक अमेरिकन, जो युद्ध से पहले टोकियो के एक एपिस्कोपल विश्वविद्यालय में अध्यापक था, इसका एक अच्छा उदाहरण है। युद्ध के बाद जब वह अमेरिका से जापान लौटा तो वहाँ उसे यह अनुभव हुआ कि जापान की आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही है और खाने को आहार उतना उपलब्ध नहीं है। इससे उसके मन पर इतना जबर्दस्त आघात पहुँचा कि उसने स्वयं ही थोड़ा बहुत धन संग्रह किया और कियोसातो नामक एक छोटे से पहाड़ी गांव में छोटे पैमाने पर उत्पादन का एक प्रयोग आरम्भ किया। वह यह देखना चाहता था कि एक पहाड़ी जमीन पर जो अब तक बिल्कुल उपजाऊ नहीं थी क्या कुछ किया जा सकता है। आज कियोसातो शैक्षणिक परीक्षण परियोजना १९ किस्म की सब्जियाँ और सात किस्म के अनाज पैदा करती है, हीयरफोर्ड और जर्सी नस्ल की पशुशाला, एक आधुनिक ढंग की डेयरी और हजारों मुर्गियों वाली मुर्गीशालाएं चलाती है। यह डेयरी और मुर्गीशालाएँ

[खिलाने] के लिए प्रारम्भ में कुछ अमेरिकन मित्रों ने गौएँ और मुर्गियाँ दी थीं। हर किसान ने, जिसके पास दस मुर्गियाँ थीं, कम-से-कम दस अंडों से चूजे पैदा करना स्वीकार किया और यह वचन दिया कि वह दस स्वस्थ मुर्गियाँ किसी अन्य साथी किसान को देगा।

इस गांव के लोगों को जो कुछ वर्ष पूर्व बड़ी कठिनाई से अपना निर्वाह कर पाते थे, आज एक गिरजाघर, एक पुस्तकालय और एक अच्छा साधन-सम्पन्न अस्पताल भी उपलब्ध हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि कियोसातो के लोगों ने पारस्परिक सहायता से अपनी सहायता करना सीख लिया है। यहाँ २०० आदमी श्रमदान से सड़कें बना रहे हैं। 'फोर-एच' क्लबें भी चल रही हैं। जब बूढ़े और अपंग लोगों के एक आश्रम में भोजन की कमी हो गई तो चार सौ कृषक बच्चों ने एक-एक आलू दान कर चार बुशल आलू जमा कर दिए। पाँच वर्षों में इस गाँव ने पिछली पाँच शताब्दियों से भी ज्यादा तरक्की कर ली। हजारों लोगों ने आकर वहाँ इस कायाकल्प को देखा। अब इस परियोजना की भाँति और भी कतनी ही परियोजनाएँ जापान के पहाड़ी इलाकों में शुरू हो गई हैं।

इसी तरह विलफोर्ड विलण्टन भी एक कल्पनाशील व्यक्ति था। उसका 'मील्स फॉर मिलियन्स' (लाखों के लिये भोजन) आन्दोलन बिना किसी लाभ के अन्नाभाव से ग्रस्त इलाकों में सस्ता बहूद्देश्यक आहार बेचता है।

संयुक्त राज्य के विशाल सूखे इलाके में अवस्थित आठ हजार आबादी के छोटे से शहर फ्लैगस्टाफ (एरिजोना) में एक अखबार यह ऐलान करता है कि 'केयर' नामक स्वैच्छिक समाज सेवी संगठन को नवम्बर में दिए जाने वाले हर एक डालर में एक स्थानीय नागरिक एक और डालर की वृद्धि कर देगा। और इन डालरों में से हर एक अन्य दशों में अवस्थित १६ संकटग्रस्त क्षेत्रों में से एक के हर

शरणार्थी या बेरोजगार परिवार को २२ पौंड अमेरिकन खाद्य-पदार्थ—दुग्ध चूर्ण, पनीर, चावल, सेम, गेहूँ और मकई का आटा—मुहैया करेगा।

पत्र का सम्पादक इस ऐलान के साथ टिप्पणी करते हुए कहता है कि "इस दान के द्वारा अन्य देशों के भूखे लोगों के पेट भरने और उनके प्रति अपनी मैत्री का भावना का सबूत देने का उत्तम अवसर है।" फ्लैगस्टाफ के निवासी उन लोगों को कभी देख नहीं सकेंगे जिन्हें ये पैकेट मिलेंगे। फिर भी उन्हें इस पुण्य कार्य में योग देकर खुशी होती है।" पचास से अधिक अन्य संगठन भी ऐसे हैं जो अन्य देशों को सहायता के पैकेट भेजते हैं। इनमें से सबसे बड़े दस संगठनों ने १९५६ के पहले छः महीनों में १६ करोड़ २० लाख डालर से अधिक राशि इस कार्य पर खर्च की।

'वर्ल्ड नेबर्स' (विश्व पड़ोसी) नामक संगठन भी एशिया और अफ्रीका के देशों में स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि के क्षेत्र में प्रायोगिक परियोजनाएँ चला रहा है। इस संगठन का जन्म एक दिन एक ईसाई पादरी के इस उपदेश से हुआ कि व्यक्तिगत स्वैच्छिक दान के आधार पर ईसाई धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार जन-सेवा का कार्य करना ही कम्युनिज्म को रोक सकता है। यह संगठन वहीं सहायता कार्य करता है जहां लोग उसके लिए इच्छा प्रकट करते हैं। यह संगठन ग्रामीणों को स्वावलम्बन में सहायता देता है, उन्हें खेती, शिल्प, स्वच्छता और शिशु-परिचर्या के बेहतर तरीके सिखाता है।

वर्ल्ड लिटरेसी, इन्कार्पोरिटेड नामक संगठन प्रौढ़ों को पढ़ना सिखाने की डा० फ्रैंक लॉबक की विशिष्ट पद्धति की शि ।देता है। इस पद्धति से पढ़ना सीखकर गाँव के प्रौढ़ लोग अपनी खेती की विधियों और स्वास्थ्य रक्षा के तरीकों में सुधार कर सकते हैं। युद्धकालीन बच्चों के लिए धर्म पिता योजना, स्वतन्त्र यूरोप के लिए राष्ट्रीय समिति, स्वतन्त्रता के लिए धर्मयुद्ध, अन्तर्राष्ट्रीय उद्धार समिति आदि अनेक

संगठन विदेशों में सहायतार्थ व्यय करने के लिए अमेरिकनों से भारी मात्रा में स्वैच्छिक दान संग्रह करते हैं।

यदि अमेरिकन मजदूर यूनियनों, विद्वत्संघों और राटरी आदि क्लबों की भाँति और भी बहुत से स्वैच्छिक सेवा-संगठन अन्य देशों में अपने जैसे संगठनों के साथ मिलकर अपने अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बना लें तो अन्य देशों में सहायता का यह कार्य और भी बड़े पैमाने पर हो सकता है। विश्व सौहार्द के लिए जिन घनिष्ठ सम्बन्धों और सम्पर्कों की आवश्यकता है वे सरकारों के बीच राजनयिक सम्बन्धों की स्थापना से नहीं बन सकते। विश्व में एकता और सच्ची मैत्री तब तक स्थापित नहीं हो सकती, जब तक कि लाखों और करोड़ों व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे के सम्पर्क में आकर और विचारों का आदान-प्रदान कर आपस में मानवीय और भावनात्मक सम्बन्धों की स्थापना न कर लें।

कल्पना कीजिये कि विभिन्न देशों के बीच इस प्रकार का मिलन और आदान-प्रदान बीस, तीस या पचास वर्ष तक चलता रहे। तब क्या यह सम्भव नहीं है कि वे विद्वेष और पूर्वग्रह जो आज लोगों को एक-दूसरे से अलग रखे हुए हैं, उसी तरह मिट जाएँ, जिस तरह महासंघ निर्माण के समय अमेरिकन लोगों को एक-दूसरे से अलग करने वाले विद्वेष और पूर्वग्रह नष्ट हो गये थे? और क्या हम यह कल्पना नहीं कर सकते कि लोगों का यह स्वेच्छा से मिल कर काम करना ऐसे संगठनों और सम्बन्धों को जन्म देगा जो संयुक्त राष्ट्रसंघ को उसी तरह नियन्त्रित और प्रभावित कर सकेंगे, जिस तरह आज हमारे राष्ट्रीय संगठन संयुक्त राज्य की सरकार को नियन्त्रित और प्रभावित करते हैं?

एक नई विश्व संस्कृति?

एक ऐसी दुनिया में, जहाँ हर वक्त ही संकट और झगड़े बने रहते हैं, एकत्व की भावना पैदा करने के लिए संयुक्त राज्य क्या कर सकता है?

चीन की चित्रलिपि में 'संकट' के लिए जो चित्राक्षर है, वह दो अन्य चित्राक्षरों—खतरा और अवसर—से मिलकर बना है। सचमुच ही आज इन दोनों—खतरा और अवसर—का जैसा मिलन हम देख रहे हैं, वैसा इससे पहले कभी नहीं देखा गया। आज हमारे हाथ में यशस्विता की जो आशा और अनुकूलता आ गई है, उससे हम यह देख पा रहे हैं कि भूख और बीमारी की बाधाएँ आज दुर्लंघ्य नहीं रहीं, बल्कि स्वयं मनुष्य के पैदा किये हुए झगड़ों ने ही प्रगति का रास्ता रोका हुआ है।

जैसा कि चेस्टर बोल्स ने कहा है, "मध्य संसार के लोगों को इतना अधिक प्रभावित करने वाले चार क्रांतिकारी सिद्धान्त हैं राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, मानवीय प्रतिष्ठा, आर्थिक उन्नति और शान्ति।" कोई भी निष्पक्ष पर्यवेक्षक बिना किसी कठिनाई के यह अनुमान लगा सकता है कि कम्युनिस्ट देशों को शेष संसार से अलग करने वाले लोहे के पर्दे के किस ओर इन सिद्धान्तों के पनपने और जीवित रहने की अधिक गुंजाइश है।

मार्क्सवादियों की भांति हमारे पास सामाजिक सुधारों की कोई ऐसी पेटेंट दवा नहीं है जो तमाम बीमारियों का अचूक इलाज हो। लेकिन यही लोकतन्त्र की सब से बड़ी ताकत है, क्योंकि हम किसी के ऊपर अपनी कोई विशिष्ट प्रणाली थोपते नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और आर्थिक समृद्धि की ऐसी परिस्थितियां पैदा कर देते हैं, जिनमें लोग अपने उद्देश्यों को स्वयं पूरा कर सकें। हम जिस हाथ को थामते हैं, उसमें हथकड़ी नहीं पहनाते, बल्कि उसमें मदद के लिए कुछ रख देते हैं। हम रूस की तरह बाहर से क्रान्ति को नहीं भड़का सकते, क्योंकि हमारे इतिहास ने हमें यह विश्वास करा दिया है कि सामाजिक और आर्थिक उन्नति हर देश में भीतर से होती है और वह उस देश के लोगों द्वारा अपने संविधान के आधार पर, जो मानवीय अधिकारों की रक्षा की गारंटी करता है, की गई राजनीतिक कार्रवाई से ही सम्भव है।

किन्तु हमारा इतिहास अधिकाधिक लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के लि ए एक स्थायी क्रान्ति की योजना अवश्य प्रस्तुत करता है—इस स्थायी क्रान्ति से लोगों को अधिक मात्रा में और बेहतर भोजन मिल सकता है, उनके लिए अधिक अच्छे स्वास्थ्य की परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं, उन्हें अधिक अवकाश, अधिक अच्छी शिक्षा और अधिक समानता और अवसरों की प्राप्ति हो सकती है,

अन्य देशों में संयुक्त राज्य का सम्मान इस बात पर निर्भर है कि हम अपने ही देश में अपनी समस्याओं को कैसे हल करते हैं—कैसे हम बच्चों और दूसरों की अपराध-वृत्ति की, गन्दी बस्तियों और अपनी औद्योगिक सभ्यता के नीचे छिपे भद्दे और मलिन रूप की समस्याओं को सुलझाते हैं, क्या हम अपने सब नागरिकों को समान संरक्षण और लाभ प्रदान करते हैं और क्या हम में वह परिपक्वता और जिम्मेदारी है जो संसार में हमारी ऊँची स्थिति को कायम रखने के लिए आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री के बारे में हम चाहे कुछ भी कहें, उसका उतना असर कभी नहीं होगा, जितना अपने देश के भीतर किये गये हमारे कामों का होगा।

अमेरिकन लोग कभी-कभी अपने लोकतन्त्र के उपभोग में दूसरों को भी हिस्सा बंटाने का अवसर देने के अत्युत्साह में आकर उन्हें लोकतन्त्र 'सिखाने' लगते हैं। इससे उनकी स्थिति बड़ी विषम हो जाती है। जिन लोगों ने फ्रांस और इंडोनेशिया में, ग्रीस और फिनलैंड में अपनी आजादी के लिए लड़ाई लड़ी है, उन्हें किसी तरह का 'सबक' लेने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही हमें यह आग्रह भी नहीं करना चाहिए कि हर देश संयुक्त राज्य और सोवियत रूस में से किसी एक का चुनाव कर ले। हम स्वयं एक शताब्दी से भी अधिक समय तक पृथक्ता की नीति का अवलम्बन करते रहे हैं, इसलिए यह मानते हुए भी कि आज संसार पर उन दिनों की अपेक्षा अधिक भयंकर खतरा विद्यमान है, हमें उन देशों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए जो शक्ति-

संघर्ष से अलग रह कर अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करना चाहते हैं। हम पनी संस्थाओं और परम्पराओं को अन्य देशों की मिट्टी में नहीं रोप सकते। हम सिर्फ पद्धतियों और अभिवृत्तियों के आदान-प्रदान की ही आशा कर सकते हैं।

सारा संसार पश्चिम के वैज्ञानिक तरीकों को और सार्वभौम शिक्षा कानून के शासन, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और जन-कल्याण के लिए सरकार के उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में हमारे स्टैण्डर्ड को अपनाने के लिए खुशी से तैयार रहता है। किन्तु पश्चिमी सभ्यता भी अन्य संस्कृतियों से बहुत कुछ शिक्षा ले सकती है।

पूर्व की विशेषता यह है कि वह संसार को एक सर्वसमावेशी और अव्यवहित रूप में ग्राह्य सौन्दर्य की सतत विद्यमान धारा के रूप में ग्रहण करता है। वह समय को एक बहती नदी के बजाय एक स्थिर जलाशय के रूप में देखता है। पश्चिम जहाँ सब अनुभवों का विश्लेषण करने का प्रयत्न करता है, वहाँ पूर्व यह मान कर चलता है कि सभी चीजें अंशतः अपूर्वनिर्धारित हैं। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति अपने आपको किसी बात से बाँधता नहीं है, क्योंकि बांधने का अर्थ यह है कि यदि घटनाक्रम के बदलने से पीछे हटना पड़े तो वह गुंजाइश भी उसके लिए नहीं रहेगी। यह दृष्टिकोण विश्व की राजनीति पर बहुत गहरा और महत्त्वपूर्ण असर डालता है।

आज इस जमाने में हमारे सामने सबसे बड़ा काम एक ऐसा दृष्टिकोण अपनाना है जो वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यधिक उन्नत और सैद्धान्तिक दृष्टि से प्रेरित पश्चिमी राष्ट्रों के ऊंचे जीवन-स्तर के साथ पूर्वी देशों की सौन्दर्य की सार्वभौम अनुभूति, स्थायी स्थितप्रज्ञता, आध्यात्मिकता और सर्वात्मबुद्धि का समन्वय कर सके।

जब से अमेरिकन अतीन्द्रियवादियों ने भौतिकवाद पर आक्रमण किया और पूर्व के आध्यात्मिक स्रोतों से प्रेरणा ग्रहण की, तब से पूर्व की विचारधाराओं, दर्शन और कला में हम लोग अधिक रुचि लेने लगे

जिस जमाने में अमेरिकन जहाज चीन से दौलत और कीमती खजाने कर आया करते थे, तभी से अमेरिकन कला पर पूर्व की छाप नजर ाती रही है। अमेरिकन चित्रकला पर, खास कर स्थापत्य कला पर, ापान का प्रभाव काफी व्यापक है और निरन्तर बढ़ रहा है। पूर्व के र्म अमेरिका में अनेक धार्मिक मतमतान्तरों और सम्प्रदायों के आधार । पूर्व सम्बन्धी अध्ययन का अमेरिका के सभी बड़े विश्वविद्यालयों में जी से प्रसार हुआ है। पहले पूर्व की सभ्यताओं के बारे में आम मेरिकन जनता को केवल पुस्तकों या चित्रों से ही जानकारी मिलती ी किन्तु आज विदेशों से लौटे सैनिकों और पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या द्वारा इन सभ्यताओं की कुछ हद तक प्रत्यक्ष जानकारी भी मिल ही है। हवाई द्वीप पूर्व और पश्चिम का मिलन-स्थल है, जहां अनेक तरों पर दोनों की सभ्यता और संस्कृति का परस्पर विलय हुआ है। स द्वीप में अमेरिका की धरती पर दोनों जीवन-दर्शनों का सम्मिश्रण ो रहा है।

विश्व परिभ्रमण और सामूहिक प्रचार के साधनों के जरिये सब ो निरन्तर सुलभ होने वाली जानकारी के द्वारा अमेरिकन लोग पहले मेशा की अपेक्षा आज दुनिया के अधिक निकट सम्पर्क में हैं। श्रमिकों, कसानों, युवकों और महिलाओं के संगठन आज अपने सदस्यों को देशिक मामलों के बारे में तथ्यों की जानकारी देने में पहले से कहीं अधिक मय व्यतीत करते हैं। आजकल आप किसी भी सर्विस क्लब या यूनियन ी पत्रिका को उठाइये आपको विदेशी मामलों के सम्बन्ध में कम-से-म एक लेख अवश्य मिलेगा और इससे अधिक लेख भी मिल सकते । ये संगठन विदेशी मामलों के बारे में एक व्यापक जनमत के लिए ाधार प्रस्तुत करते हैं, जो बाद में काँग्रेस को प्रभावित करता है और शासन को समर्थन प्रदान करता है। आज इस बात के अनेक ठोस माण उपलब्ध हैं कि अब अमेरिका का जनमत बहुत स्थिर हो गया है ौर उसमें अधिक परिवर्तन नहीं होते।

अमेरिका शेष संसार में अपनी जिम्मेदारी को जितना अधिक महसूस करता है और संसार के मामलों में जितना ज्यादा हिस्सा लेता जा रहा है, उतना ही उसकी व्यक्तिवादिता, स्वैच्छिक संगठनवाद और संघवाद की भावनाएं भी आगे बढ़ती जाती हैं। पॉल रश और विलफोर्ड किलटन जैसे लोगों के वैयक्तिक प्रयत्न, उनकी सफलता के लिए जनता का स्वैच्छिक संगठनों के जरिये सहयोग और संयुक्त राष्ट्रसंघ और उसके विविध संगठनों में संघवाद के सिद्धान्त का उपयोग, ये सभी आज के जमाने के चिह्न और प्रतीक हैं। हमारी दुनिया ऐसी है जिसमें दूरगामी दृष्टि से शक्ति-सन्तुलन का महत्त्व उतना नहीं है, जितना कि संस्कृतियों के पारस्परिक सम्पर्क, समन्वय और आदान-प्रदान का जो एक नई विश्व सभ्यता का निर्माण कर रहा है, विज्ञान की विश्लेषण-पद्धति और कला की संश्लेषण-पद्धति के बीच सन्तुलन कायम कर रहा है और जीवन-स्तर को ऊंचा उठा कर समस्त नर-नारियों को अपनी बौद्धिक और आध्यात्मिक विरासत के पूर्ण उपभोग का अवसर प्रदान करता है।

सन् १९२० के दशक में, जैसा कि जॉर्ज सोल ने कहा है, संयुक्त राज्य में 'सिक्योरिटी' शब्द का अर्थ होता था बॉंड, हुण्डी या शेयर। सन् १९३० के दशक में उसका अर्थ हो गया बुढ़ापे में गरीबी से सुरक्षा। सन् १९४० के दशक में उसका अर्थ हुआ संसार की तानाशाही से रक्षा। उससे अगले १९५० के दशक में अक्सर उसका अर्थ समझा जाने लगा किसी सम्भावित शत्रु से राज्य के गोपनीय रहस्यों और भेदों की हिफाजत। और अब १९६० के दशक में उसका अर्थ एक ऐसा जीवन हो सकता है जो सृजनात्मक और सोद्देश्य क्रिया-कलाप और गतिविधियो के कारण सुरक्षित और निश्चिन्ततापूर्ण हो गया हो, बशर्त्ते कि हम अपनी क्षमताओं और योग्यताओं से अधिकतम लाभ उठाएं।

इस सुरक्षित जीवन के बीज बोये जा चुके हैं। हमने एक उन्मुक्त समाज का निर्माण कर लिया जो अपनी संस्थाओं और परम्पराओं में सुधार के लिए हमेशा प्रयत्न करता रहता है, जो अपनी निज की अग्र-

स्पर्धा के दबाव के कारण हमेशा एक तरह को उत्तेजना अनुभव करते हुए भी औपचारिकता से रहित और मैत्रीपूर्ण रहता है, जिसमें संघर्ष और विरोध भी है और ऐक्य भी, जो भविष्य के लिए आशाओं से ओत-प्रोत है और वर्त्तमान के अन्यायों से विक्षुब्ध भी और फिर भी जो आध्यात्मिक, मानसिक, भौतिक और शारीरिक सभी प्रकार की शक्तियों और ऊर्जाओं से अनुप्राणित और चिर-नवीन है। इस समाज की वर्चस्विता अंशतः उसके यौवन का परिणाम है और उसकी आशावादिता इसके भौतिक प्राचुर्य का फल है।

इस समाज और संस्कृति के बारे में सब से बड़े श्रेय की बात यह है कि उसका स्वर भावात्मक है, अभावात्मक नहीं, आशामय है निराशापूर्ण नहीं, प्रेमपूर्ण है घृणामय नहीं। वह विनाश करना नहीं चाहता, चाहता है निर्माण करना। वह वर्ग-विद्वेष पैदा करना नहीं चाहता, बल्कि वर्ग-भेद का ही अन्त कर देना चाहता है। वह असमानता को मिटाने के लिए संसार में विद्यमान अभाव और दैन्य का बँटवारा करना नहीं चाहता, बल्कि चाहता है कि उत्पादन को इतना बढ़ा दिया जाए कि जो प्राचुर्य किसी समय कुछ थोड़े-से लोगों को प्राप्त था, वह सभी को प्राप्त होने लगे। शताब्दियों से यह समाज पड़ोसीचारे के सहयोग से समृद्ध और परिपुष्ट जीवन का अभ्यस्त रहा है, इसलिए उसने अब इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि उसका नया पड़ोस यह सारी दुनिया है।

